॥ श्रीः ॥

सुफेद शैतान

[दूसरा खण्ड]

(भाग ३ तथा ४)

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री रचित

लहरी बुक डिपो

वाराणसी

—०—
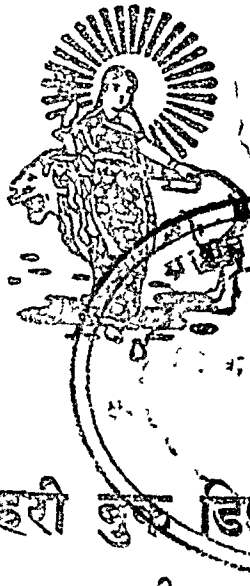
प्रकाशक—
श्री कमलापति खत्री,
लहरी बुक डिपो,
वाराणसी ।

SUFED-SHAITAN

[Vol. 2]

पहिला संस्करण—सन् १६२६ ई०
तेरहवां संस्करण—सन् १६७५ ई०

मुद्रक—
लहरी प्रेस,
वाराणसी ।

सुफेद शैतान

तीसरा भाग

वासन

[१]

यों तो श्याम देश मे अनगिनत त्योहार मनाए जाते है जिनमे से कुछ आर्य (ब्राह्मण) मत के अन्तर्गत आते है और अधिकाश वौद्ध मत के, पर उन सभो में सब से ज्यादे पवित्र और शान-शौकत के साथ मनाए जाने वाले त्योहार दो है—विशाखा और वासन । विशाखा का त्योहार उस पवित्र दिन की स्मृति में है जिस रोज भगवान वुद्ध का जन्म तथा निर्वाण हुआ था अथवा जिस दिन उन्हें वुद्धत्व प्राप्त हुआ था (कहा जाता है कि ये तीनों घटनाएं एक ही दिन अर्थात् छठे मास की पूर्णमासी को हुईं जो अंगरेजी हिसाब से अप्रैल के महीने मे पड़ता है) और वासन का त्योहार जिसके वास्तव मे दो अंग है, 'खो-वासन' और 'ओक-वासन' । ये वरसात के आरम्भ और उसके अन्त से सम्वन्ध रखते है । पहिला (खो-वासन) उस दिन मनाया जाता है जिस दिन से वरसात के मास आरम्भ होते है, तथा दूसरा (ओक-वासन) उस दिन जव कि वे अन्त होते है और अक्सर ये महीने जुलाई और अक्टूबर मे पड़ा करते है । जिस तरह हिंदुओं

के साधू महात्माओ और मठाधीशो मे वरसात के दिन भ्रमण के नही माने जाते, उनमे यात्रा या देशाटन नही किया जाता, ओर उन दिनो मे साधू मन्त जो जहा हो वही रह कर भगवद्भजन पूजा पाठ आदि करना उचित समझते है, करीव करीव वही हाल इन पूर्वी देशो मे भी है और यहा भी वरसात के दिनो मे यहा के वड़े वड़े पंडे पुजारी मठधारी और सत लोग अपने अपने मुख्य स्थानो पर जाकर वैठ जाते और वहा से फिर वरसात के वाद और जाड़े के आरम्भ मे ही निकलते है। इतने महीनो के वीच साधू समाज मे तरह तरह के व्रत होम जप और पूजन आदि हुआ करते है और खास कर श्याम देश में तो यह समय पूजन भजन के लिये विशेष रूप से पुनीत समझा जाता है। समाप्ति वाले दिन अर्थात् 'ओक-वासन' पर पवित्र मन्दिरो मूर्तियो और मठ स्थानो पर अनेक तरह के उत्सव और मंगल-कृत्य होते है, तरह तरह की पूजाएं भोग राग आदि किए जाते है, और इन देशो का शासक-समाज राजा राजपुत्र आदि भी इनमे भाग लेते है। कितने ही पवित्र देवमंदिरो मे तो वहा के राजा को स्वय जाकर देवमूर्तियो का पूजन और पुजारियो को वस्त्रदान आदि करना पड़ता है। इन देशो की प्रजा भी इनमे पूरी तरह से भाग लेती है और इस दिन हजारो लाखो रुपयो का खैरात हो जाता है।

पर फिर भी यह त्योहार 'वासन' मुख्यत साधू सतो का ही त्योहार है और उनमे इस अवसर पर एक विचित्र चैतन्य और ऐक्य दिखाई पड़ता है। गुरु या मठधारी इसी अवसर पर अपने 'चेले' मूड़ते है, साधारण लोग इसी अवसर पर 'साधू' वनते है, और तरह तरह के मगल-कार्य इसी अवसर पर गैरिक सम्प्रदाय और उसे मानने वालो मे होते है जिनका विशेष वर्णन करने की इस जगह आवश्यकता नही है, हा इतना कह देना जरूरी है कि जो जो त्योहार जिस जिस तरह इन श्याम आदि देशो मे माने जाते है वे ही और करीव करीव उसी तरह उन प्रान्तो मे भी मनाए जाते है जो अव फ्रांस या अन्य विदेशी शक्तियो के आधीन है, अगर कुछ अन्तर

पड़ता है तो केवल उतना या वैसा ही जैसा कि पराधीन देशों के त्योहारो मे पड़ना अवश्यंभावी है।

[२]

साधारण जनता के लिए यह त्योहार आनन्द मनाने का समय होते हुए भी फ्रान्सीसी शासक मण्डली के लिए इस बार बड़े ही चिन्ता और डर का अवसर बन बैठा है। भिन्न भिन्न कितने ही सूत्रो से उन्हें यह समाचार मिल चुका था कि 'वासन' के मौके पर साधू और पुजारी मण्डली उपद्रव मचाने वाली है। अपने अधिकृत प्रदेशो, और पड़ौसी श्याम आदि देशों से भी, तरह तरह से उन्हें पता लग चुका था कि पुजारियो में बहुत असंतोष फैल रहा है पर वह किस प्रकार का है या समय पाकर कौन सा रूप धारण कर लेगा, इसका ठीक ठीक पता बहुत कोशिश करने पर भी लग नही रहा था ओर इसी कारण शासक समाज मे एक प्रकार की बेचैनी फैल रही थी।

बडे अधिकारियों को पुजारियो का वह दंगा भूला नही था जो पिछले 'त्रिशाखा' वाले त्योहार पर 'काई-माऊ' मे उठ खड़ा हुआ था। यद्यपि उसे बहुत कड़ाई के साथ दबा दिया गया था पर वे लोग अच्छी तरह जानते थे कि उसकी आग अन्दर ही अन्दर अभी तक सुलग रही है, बुझी नही है, और यह जानने का भी उनके पास काफी कारण था कि इस बार 'वासन' पर जो उपद्रव होगा उसका सूत्रपात यद्यपि किसी अन्य स्थान से होगा, पर उसका असर 'फ्रेन्च इन्डोचाइना' पर पूरी तरह से पड़ेगा। पूर्व का पुजारी सम्प्रदाय कितना बलवान है, और 'श्याम' तथा 'फ्रेन्च इन्डोचाइना' के पुजारी प्रजा पर अब भी कितना प्रभुत्व रखते है यह बात ये विदेशी शासक अच्छी तरह जानते थे और बराबर उस प्रभाव को तोड़ने की चेष्टा किया करते थे पर अकसर उनके उद्योग का असर वैसा नही होता था जैसा वे चाहते थे बल्कि उलटा ही पड़ा करता था। श्याम तथा इन्डोचाइना की प्रजा को पल पल पर अपने पुजारियों से काम पड़ता था। सन्तान

उत्पन्न होने से लेकर उसके वृद्ध होने अथवा मर जाने तक उसके चूडाकरण, मुण्डन, शिखाधारण, शिखात्याग, पठनपाठन, विवाह, सन्तानोत्पत्ति आदि आदि सभी मौको पर पूजा प्रतिष्ठा पाठ आदि के लिये पुजारियो की जरूरत पड़ती थी जिससे उनका प्रभाव जनता पर सदा अक्षुण्ण ही बना रहता था। जैसा कि हमने पहले लिखा, इस प्रभाव को तोड़ने के लिए फ्रान्स सरकार बराबर चेष्टा करती रहती थी और इसी इरादे से इधर उसने एक कानून ऐसा बनाया था जिससे विवाह के समय सरकारी दफ्तरो में जाकर केवल रजिस्टर पर दस्तखत कर देने मात्र ही से कानूनी दृष्टि से विवाह पूरा मान लिया जाता था। फ्रान्स सरकार ने खयाल किया था कि इससे पुजारियो का एक बहुत बड़ा प्रभाव कम पड़ जायगा और होता भी ऐसा अवश्य, पर इसी कानून की आड़ लेकर उपद्रवकारियो ने पुजारी और प्रजा दोनो ही को ऐसा भड़काया कि इसका फल बिल्कुल उलटा ही हो पड़ा।

एक दूसरी बात भय की फ्रान्स के लिए यह थी कि वहां के पुजारी सम्प्रदाय मे संगठन ऐक्य और धन ही केवल नही था बल्कि शारीरिक बल भी था। और जगहो के पुजारी—मसलन भारत के साधु महात्माओ मे—शरीर को क्षीण करते जाना ही मोक्ष प्राप्ति का एक मुख्य उपाय समझा जाता है, और श्याम अनाम कबोडिया और फ्रेन्च इडोचाइना आदि देशो मे भी पहिले ऐसा ही था, पर इधर कुछेक ऐसे उपदेशक पैदा हो गए थे जो यह प्रचार कर रहे थे कि कमजोर शरीर के अन्दर रहने वाली आत्मा भी कमजोर ही होती है अतएव साधुओ को अपना शरीर खूब मजबूत रखना चाहिए और अस्त्र सचालन की क्रिया भी जाननी चाहिए जिसमे यदि कभी शत्रु उनके मठो मन्दिरो और पवित्र स्थानो पर आक्रमण करें तो वे उनकी सफलता पूर्वक रक्षा कर सकें। यह भाव खास तौर पर इस लिए तेजी से जड़ पकड़ रहा था कि इधर उत्तर और पश्चिम मे डाकुओ के कई प्रबल दल पैदा हो गए थे जो बराबर आक्रमण करके सीमाप्रान्त के मन्दिरो और मठो को तोड़ और वहा के पुजारियो

और निवासियो को मार वहां की पवित्र मूर्तियो को भ्रष्ट कर धन लूट ले जाया करते थे। इन डाकुओ से रक्षा दिलाने में सरकार भी सफल न हो रही थी इसलिए साधु पुजारियों मे क्षोभ वढ़ रहा था और साथ साथ अपनी रक्षा करने में आप समर्थ होने का भाव भी जागृत हो रहा था जिससे साधुओ ओर पुजारियो में तरह तरह की कसरत और हरवा चलाने की कला सीखने की ओर अभिरुचि वड़ी तेजी से वढ रही थी, पर फ्रान्सीसी गवर्नमेंट इसी वात मे अपने लिए एक अशुभ लक्षण देख रही थी क्योंकि वह खूव समझती थी कि उसकी अधीनस्थ साधारण प्रजा तो विद्रोह करने की शक्ति नहीं रखती, उसके पास न धन है न वल और न शिक्षा, पर यह पुजारी सम्प्रदाय सभी दृष्टि से सम्पन्न है और यह यदि कभी कुछ और मजवूत होकर विद्रोह कर वैठा तो कठिनता होगी—और आखिर वही अवसर आ भी पड़ा। वलवे की आग, जो अभी तक केवल भीतर भीतर सुलगती हुई कही कही और कभी कभी धूएं मात्र के रूप मे प्रकट हो जाया करती थी, अव आग की लपटें फेकने लग गई थी। अस्तु—

× × ×

आज, फ्रेन्च इन्डोचायना की राजधानी सैगन मे, गवर्नर के महल के अन्दर के एक वड़े कमरे मे वैठे हुए कई मुख्य फ्रान्सीसी ऊंचे अफसर इसी विषय पर वातें कर रहे थे। हमारे परिचित प्रायः सभी सज्जन इस जगह मौजूद थे और उनके इलावे कुछ और भी नए मुल्की तथा फौजी अफसर दिखाई पड़ रहे थे, केवल एक मार्शल फाक यहा नही थे, न जाने वे इस समय कहा या किस फिक्र मे पड़े हुए थे। आइए हमलोग भी चल कर इन सभो की वातें सुनें।

काउन्ट शैवर०। वड़ी मुश्किल तो यह है कि हमारे आदमी इनके मन्दिरो और मठो में जाने नही पाते कि इन लोगो की भीतरी वातो का कुछ सही सही भेद पा सकें। इन लोगो ने धर्म को कुछ ऐसी छुई-मुई सी चीज वनाया हुआ है कि सिवाय साधुओ या पुजारियों के और कोई इनकी

देवमूर्तियो के सामने गया नही कि मूर्तिया भ्रष्ट हुई ! इसीलिये भीतरी हाल हमे कुछ मालूम ही नही होता। अभी तक हम यह भी न जान पाए कि ये लोग जो उपद्रव रचने वाले है वह किस मौके पर शुरू होगा, 'खौ-वासन' पर 'ओक-वासन' पर या किसी ओर ही मौके पर ? चारो तरफ से बस यही खबर सुनने मे आती है कि 'वासन पर दगा होगा', पर वह कब होगा, बरसात के शुरू मे या अन्त मे अथवा बीच मे ही सो भी कुछ ठीक ठीक पता नही लगता !

एक दूसरा अफसर०। जहा तक मेरी समझ मे आता है, वासन के अन्त मे, जब इनके राजा महाराजा और अन्य अधिकारी तथा अमीर लोग-मन्दिरो की यात्रा करने निकलते है उसी मौके पर यह दंगा होगा, क्योकि उस वक्त भीडभाड़ बहुत रहती है, सभी बड़े बड़े मन्दिरो और मठो मे लाखो आदमी भरे रहते है, और सर्वसाधारण भी देवताओ की भक्ति मे दीवाने हुए रहते है। उस वक्त कोई जरा सी बात भी चिनगारी का काम कर सकती है और लाखो आदमी थोडे से मे पागल बनाए जा सकते है।

दूसरा अफ०। मेरा भी यही ख्याल है, दूसरे उस मौके पर देहात और गावो की सब पुलिस भी भीड का नियत्रण करने के लिए बडे बडे शहरों और मदिरो मे बुला ली जाती है जिससे देहात बिल्कुल अरक्षित पड जाने है। मैं तो ऐसा भी समझता हूँ कि यह आग देहातो से ही शुरू भी होगी।

तीसरा अफ०। नही, देहातों से तो जहां तक मेरा खयाल है यह दंगा शुरू न होगा, क्योकि देहातो के भी लोग शहरो और पवित्र स्थानो मे आ इकट्ठे होते है। यह दगा अगर वास्तव मे कुछ बड़े पैमाने पर होने को है तो उन्ही जगहो से शुरू होगा जहा आदमियो की भीड़ भाड़ होगी।

काउन्ट शैवर०। मेरा भी यही ख्याल है मगर इस बारे मे हमारा खुफिया विभाग चुप क्यो है ? मेजर डुमरे, आप अपनी राय कुछ कहिए, आपके जासूस गोइन्दे और मुखबिर आपको क्या खबर दे रहे है ?

मेजर डुमरे, जिनकी तरफ लक्ष्य कर काउन्ट ने यह सवाल किया था

सैगन और फ्रेन्च इन्डोचाइना के सी. आई. डी. विभाग का अध्यक्ष था। यह आदमी वड़ा ही वुद्धिमान और दूर तक की सोचने वाला था लेकिन एक ऐव इसमे यह था कि इसमे अपनी जातीयता का घमंड वहुत ज्यादा था और यह काले आदमियों से वडी नफरत करता था। यही सवव था कि इसके अधीनस्थ नेटिव अफसर इससे खुश न थे और इसका काम उतना दिल लगा कर न करते थे जिस तरह कि सी. आई. डी. वालो को करना चाहिए। गवर्नर की वात सुन कर अदव से एक वार झुक डुमरे वोला, "मेरी समझ मे तो यह दंगा खौ-वासन वाले दिन ही आरम्भ होगा। उस दिन जितने भी साधू संन्यासी महंथ और गेरुए वस्त्रधारी हैं सवको अपने अपने मठो आश्रमो और मन्दिरो को लौट जाना लाजिम होता है अस्तु सव मन्दिरो ओर पवित्र स्थानो मे वड़ी चहल-पहल और भीड़भाड़ रहती है तथा आपस मे संदेसा भुगताने ओर सगठन करने का भी अच्छा मौका रहता है।

शैवर०। मगर उस वक्त से तो यह गैरिक सम्प्रदाय अपने अपने स्थानो पर वन्द हो वैठता है? खौ-वासन के वाद फिर ओक-वासन तक कोई भी साधू सन्त या मठाधीश वाहर नही निकल सकता, फिर दंगा क्योकर हो सकता है?

डुमरे०। यह दगा ये साधू या मठाधीश तो करेंगे ही नही, इसकी शुरू-आत तो पुजारी लोग करेंगे जिनकी तूती उस वक्त वोलने लगती है जव गेरुआ वस्त्रधारी अपने अपने मठों मे वन्द हो वैठते है। उनके न रह जाने से जनता के सव धार्मिक कृत्य ये पुजारी ही कराते है। अन्य मौको पर साधू लोगों को छोड़ कोई इन्हे पूछता नही पर खौ-वासन से ओक-वासन के वीच के समय मे इन पुजारियो की कद्र वहुत वढ़ी रहती है क्योकि उन दिनों साधू लोग इनके रास्ते मे नही आते।

शैवर०। आपको कोई नई खवर लगी है जिसके आधार पर आप ऐसा कहते है?

डुमरे०। जी हां, आखिरी खवर जो आज सुवह मुझे मिली है यही

है कि खौ-वासन से ओक-वासन तक साधू वर्ग अपने अपने स्थानो मे वन्द रह कर तैयारी करेगा। आप जानते ही है कि कई वडे वडे पवित्र स्थान और मठ ऐसे है जिनके दरवाजे इन तीन महीने मे पक्के वन्द कर दिए—चुन दिए—जाते है, न कोई वाहर का आदमी भीतर और न भीतर का वाहर जाने पाता है, अत ऐसे अवसर पर अगर वे लोग भीतर वम और मशीनगने भी वनाते रहे तो हमलोगो को कुछ पता नही लग सकता, अस्तु इन महीनो मे साधू-वर्ग तो तैयारी करता रहेगा और पुजारी लोग दगे की शुरूआत करेगे। तव जव कि पुजारी जनता को काफी उत्तेजित कर चुके रहे गे, ओक-वासन आ पहुचेगा ओर गैरिक सम्प्रदाय अपनी पूरी तैयारी ओर जोशखरोग के साथ वाहर निकल कर हमलोगो को नष्ट भ्रष्ट कर देगा— (क्रूर हसी हंस कर) कमसे कम यही तो उन लोगो का प्रोग्राम है।

शैवर०। लेकिन अगर ऐसा ही है तौ भी तो कुछ कम चिन्ता की वात नही। पुजारी सम्प्रदाय पर यदि हम कुछ जोर जवर्दस्ती करेंगे तो धार्मिक जनता, जो अधिकाश मे धन वाली जनता भी है, गरम हो जायगी ओर अगर शरीर से नहीं तो कम से कम रुपै पैसे से उनकी मदद करेगी, ओर इस वीच मे उन वन्द हो जाने वाले मठो ओर मन्दिरो मे क्या होता रहेगा इसकी किसी को कुछ खवर न रहेगी। अगर सचमुच इस वीच साधू लोग हथियार वनाते रहे और ओक-वासन पर उन्हे ले के निकल पडे तो हमारे लिए वडी मुश्किल आ पडेगी। आपको यह खवर क्या किसी विश्वसनीय सूत्र से लगी है ?

डुमरे०। हा, इस खवर की सचाई मे कोई सन्देह नही है।

इतना कह डुमरे ने गुप्त रीति से आख का इशारा किया जिसे काउन्ट शैवर के सिवाय और कोई देख न सका पर जिससे काउन्ट समझ गए कि उस व्यक्ति का नाम इतने आदमियो के वीच मे वताना या पूछना उचित न होगा अस्तु वे चुप रहे। इसी समय एक दूसरा अफसर वोल उठा, "अगर उन वन्द हो जाने वाले मठो और मन्दिरो की तरफ से हमे कुछ

खतरा है तो वहां अपने जासूस भेजने की क्या कोई कोशिश आप नही कर सकते ?"

डुमरे० । जरूर कर सकता हू और कर भी रहा हूँ, पर सब जगह मेरे भेदिए पहुच सकेंगे इसकी सम्भावना नही जान पड़ती । इन साधुओ में कई संप्रदाय और कई वर्ग होते है और उन सभो मे भी साधना और अधिकार के भेद से कई दर्जे है, एक से दूसरे मे उठना पड़ता है ओर कम से कम तीन तीन वर्ष एक एक दर्जे मे साधना करनी पड़ती है, अस्तु आखिरी दर्जे मे वही पहुच पाता है जो कम से कम तीस वर्ष तक साधू रह चुका हो । ऐसे साधू, और हमारी तरफ हो जाने वाले, वड़ी कठिनता से मिलते है, और जो मठ ओर मंदिर ऐसे है कि उनके दरवाजे खिड़किया ओक्र-त्रासन तक वन्द कर दी जाती है, वे अकसर ऐसे ही ऊंचे दर्जे के वृद्ध और प्रतिष्ठित साधुओं से भरे रहते है । उनमे साधारण, वीवी से नाराज हो के गेरुआ रंगा लेने वाले, साधुओ की गुजर नही होती ।

दूसरा अफ० । मगर साधुओ को राजनीति मे पड़ते तो मैंने इसी अभागे देश मे देखा, उन्हें अपनी आध्यात्मिक उन्नति करनी चाहिए न कि राजनीति मे पड़ना चाहिये !

तीसरा अफ० । यह उस नए 'स्कूल' की करतूत है जो यह प्रचार कर रहा है कि साधुओ और पुजारियो को केवल अपनी आत्मा ही नही अपने शरीर का भी उत्थान करना चाहिए । जहा आत्मा से हट कर ध्यान शरीर पर गया तहां फिर जो न हो जाय सो थोड़ा है ।

डुमरे० । आप वहुत ठीक कहते है । इसी लिए तो जव कुछ नोजवान ऐसा प्रचार करने निकले थे उसी समय मैंने कहा था कि कानून वना कर इनका प्रचार रोक देना चाहिए, पर लोगों ने न सुना, अव उसका फल देखिए पाच ही वरस मे क्या से क्या हो गया है ? कोई भी साधू संन्यासी और गेरुआ वस्त्रधारी ऐसा तो दिखेगा ही नही जो अगर तलवार और वन्दूक नही तो कम से कम पटा वनेठी लाठी और तीर कमान चलाना न जानता

हो, और उसका फल भी सामने है। जब शरीर मजबूत होता है तो शरीरो को काम मे लाने की इच्छा भी जागृत होती है, साधू सम्प्रदाय धनशाली और प्रभुत्वशाली तो था ही अब बलवान, शारीरिक-बलशाली भी होकर हमारे रास्ते का भयानक काटा बन गया है।

डुमरे ने यह बात कुछ जोर से कही जिससे सभी पर इसका असर पडा और सब लोग चुप होकर इस पर विचार करने लगे। जरा देर के लिए कमरे मे सन्नाटा हो गया जिसे आखिर काउन्ट शैवर ने यह कह कर तोडा—"अच्छा अबकी ये त्योहार किन किन तारीखो को पड़ रहे है?" डुमरे ने जवाब दिया, "खो-वासन तो अबकी तेरह जुलाई को पड रहा है और ओक-वासन ।"

यकायक डुमरे रुक गए। एक अफसर उसी समय कमरे मे आया और गवर्नर को अदब से सलाम करने बाद उसने एक पुर्जा मेजर डुमरे के हाथ मे दे दिया जिन्होने उस पर उत्कण्ठा से निगाह डाली और तब तुरत काउन्ट से यह कह कर कि 'मै दस मिनट के लिए इजाजत चाहता हूँ' उठ खडे हुए। काउन्ट शैवर ने प्रश्न की दृष्टि उन पर डाली जिसके जवाब मे झुक कर बहुत धीरे से उन्होने कहा, "वह पुजारी आ गया है, अब हम लोगो को सब ठीक ठीक हाल मालूम हो जायगा।"

[३]

वह डरावना दिन—तेरहवी जुलाई, आया और चला भी गया। बडे धूमधाम, बाजे, जलूस जलसे और भजन पूजन तथा होमो और यज्ञो के साथ खौ-वासन का त्योहार मना कर श्याम अनाम कंबोदिया और फ्रेन्च इन्डो चाइना की प्रजा अथवा मुख्यत. वहा का पुजारी सम्प्रदाय, शात हो बैठा। प्रजा अपने अपने काम धधे मे लग गई और साधूवर्ग मठो मदिरो और पवित्र तीर्थ स्थानो मे याने अपने अपने विशाल आश्रमो मे बंद हो कर पूजा पाठ भजन साधन करने लग गया। धीरे धीरे आठ दस दिन और बीत गए, और वह आशंका तथा अधीरता का भाव जो फ्रांसीसी सरकार की

शासक-मण्डली में घर कर वैठा था वहुत कुछ दव सा गया जव कि वडे ही अप्रत्याशित ढंग पर शत्रु का पहिला आक्रमण हुआ—काउन्ट शैवर यकायक गायव हो गए, अद्‌भुत, आश्चर्य-जनक रीति से, एक भूत-लीला की तरह पर !

वात यह हुई कि वासन के आरंभिक दिनों मे तो काउन्ट वहुत ही व्यस्त और चिन्तित रहे, न जाने कव, किधर से, किस प्रकार दंगा शुरू हो जाय, पर जव आठ दस दिन वीत गए, चारो तरफ शान्ति का वायुमण्डल व्याप्त हो गया ओर आशंका की कोई वात कही किसी तरफ नजर न आई तो उनका मन कुछ स्वस्थ हुआ ओर वे एक दिन मछली का शिकार खेलने निकले। इन पूर्वी देशों मे वरसात वहुत ज्यादा होती है और नदियो की भी वहुतायत है जिसके साथ साथ कई प्रान्तो की भूमि नीची होने के कारण वरसात मे पानी कितनी ही जगहो मे इकठा होकर उन्हें विशाल झीलो का रूप दे देता है। सर्वसाधारण के आने के कितने मार्ग, रास्ते, पगडंडिया, कही कही सड़कें तक, जल-मग्न हो जाती है जिससे लाचार होकर जो जहां रहता है उसे अधिकांश मे वही रह जाने पर मजवूर हो जाना पड़ता है, पर इन सभो के साथ ही साथ मछलियों की भी एक वाढ़ उस देश में एक सिरे से दूसरे सिरे तक आ जाती है। इन देशों में वहुत सी ऐसी जाति की मछलिया होती है जो रहती तो समुद्र मे है पर अपने अंडे दलदली भूमि मे ओर मीठे पानी की नदियो के किनारे पर दिया करती है। पहली वरसात के साथ साथ जैसे ही मैला गन्दा पानी नदियो को भरता हुआ समुद्र में पहुचता है वैसे ही ये मछलिया लाखो ही नही करोड़ो की तादाद में इन नदियों के तेज वहते हुए पानी को चीर कर ऊपर चढ़ना शुरू करती है और तव तक वरावर चढ़ती ही चली जाती है जव तक कि शात पानी से भरा कोई जलाशय इन्हें नही मिल जाता। वहा, किनारो की दलदली भूमि मे ये अपने अंडे देती है और तव धीरे धीरे, वरसात के अन्त होते होते, फिर वापस समुद्र को लौटने लगती है पर सभी पुनः लौट नही पाती।

वहुतेरो को मछुए और जाल डालने वाले पकड़ कर उदरस्त कर जाते है क्योकि वरसात मे अन्न की पैदावार और रफ्तनी रुक जाने के कारण वहा हजारो ही गावो को खाने पीने की तकलीफ हो जाती है जिससे मछली ही उन दिनो उनका मुख्य आहार वन जाती है । अस्तु—

वरसात का आरम्भ हुआ, नदियें अपनी छाती फुला फुला कर समुद्र की ओर दौडी, और मछलियो की चढाई शुरू हुई, वायुमण्डल भी शान्त सा दिखाई पडा, अतएव एक मनहूस संध्या को काउन्ट शैवर मछलियो का शिकार करने निकले । छोटी छोटी आठ दस नावे और मोटरबोटें काउन्ट के मित्रो और साथी अफसरो से भरी निकली और मेकग नदी के विशाल वक्षस्थल पर अठखेलिया करने लगी जो राजधानी सैगन से तीस चालीस मील पर पडती है । इनमे मे सव से वड़ी, सव से सुन्दर, और सव से तेज जाने वाली मोटरवोट काउन्ट शैवर की थी जिस पर वे अपने दो मित्रो तथा कुछेक अन्य शरीररक्षको तथा माझियो आदि के साथ सवार थे । तीन फल वाले भालो, वरछो, तथा वसियो से मछलियो का शिकार करता हुआ यह दल मेकंग मे इधर से उधर घूमने लगा । समुद्र वहुत ही पास होने के कारण यहा नदी मे वहाव वहुत कम था और मछलियो की वाढ सी आई हुई थी जिनके पीछे पड कर सव नावे तितर वितर हो गई और काउन्ट की मोटरवोट भी उस तरफ जा पडी जहा जल के अन्दर पैदा हुए परन्तु उसके ऊपर एक एक दो दो पुरसे तक निकले हुए सरकडो का एक जंगल सा लगा हुआ था । मछलियो को इन सरकडो का सहारा लेते हुए ऊपर चढने मे सुविधा होती थी और साथ ही साथ यहा पर वोट की मोटर वन्द करके शिकार खेलने की भी सुविधा थी अस्तु काउन्ट शैवर की बोट इसी स्थान मे घूमने फिरने लगी और घूमती ही फिरती हुई कही गायव हो गई ।

कुछ समय तक तो वाकी के शिकारियो और वोटवालो को कोई सन्देह न हुआ पर जव देर तक उनका कही पता न लगा तथा लौटने का वक्त आया और संध्या वल्कि रात होने को आई तो ढुंढाई शुरू हुई, पर काउन्ट की

वोट तो ऐसी गायव हुई मानो कोई उसे उठा ही ले गया हो। वाकी की सव नावें और उनके सवार जगह जगह ढूंढने आवाजें देने और तलाश करने लगे पर काउण्ट की वोट का कही भी पता न लगा। जव वहुत देर हुई और आशंका वढ़ी तो पुलिस की और वाद मे जंगी जहाजो की वोटें मंगाई गईं जिन्होने सर्चलाइट की मदद से तलाश करना शुरू किया मगर सव व्यर्थ हुआ, काउण्ट शैवर और उनके मित्रों अफसरो तथा साथियों समेत उनकी मोटरवोट ऐसा गायव हो गई मानों जल मे डूव गई हो। यही आशंका अधिकांश को हुई भी, मगर जव दूसरे दिन गोताखोरों और जालो के जरिये कोसो तक की नदी छान डाली गई और तव भी न तो वोट और न उसके किसी आरोही का ही कुछ पता लगा तव लोगो को चिन्ता हुई और किसी दूसरी वात का खयाल आने लगा। कई लोग दवी जुवान से कहने लगे—कहीं यह षड्यंत्रकारियो की कार्रवाई तो नहीं है।

दो चार दिन खोज ढूंढ तलाशी और परेशानी मे वीते, शासकवर्ग घवरा गया और एक कोई अनजान सी आशंका अफसरो के दिलों को दवाने लगी जव कि शत्रु का दूसरा वार हुआ। घोर रात्रि मे, काले आकाश से, फ्रांस की नेटिव और यूरोपियन सेना पर, किलों पर, उनके फौजी संग्रहालयो पर, और रसदघरो पर वज्रपात होने लगा। शान्त अंधेरे आस्मान मे, वहुत दूर पर, यकायक कहीं एक विजली सी चमकती, एक छोटा सा पुच्छल तारा सा आकाश मे उठता नजर पड़ता जो वड़ी तेजी से वढ़ता और अग्निपुंज फेंकता हुआ किसी फौजी स्थान की तरफ झपटता, एक वडे जोर का भयानक दन्नाटा होता, और हजारो लुक आकाश से चिनगारी सी छटकाते और फैलाते हुए जमीन की तरफ गिरते। लुक कुछ इस तरह के होते थे कि इनकी आंच इनके जमीन पर गिर जाने के वाद भी किसी तरह वुझती नही थी वल्कि जलती ही रहती थी और आस पास की चीजो को भस्मसात करके ही दम लेती थी। इसमें का कोई लुक जहां कहीं भी किसी वारूदखाने, मेगजीन, स्टोर, गुदाम, या तंवू पर गिरा कि झट वहां आग

लग जाती और देखते देखते प्रलय का दृश्य उपस्थित हो जाता, चारो तरफ हाहाकार मच जाता।

कोई नही जान पाता था कि ये लुक कहा से आते है, कौन इन्हे चलाता है, या किस तरह ये फेंके जाते है, पर दूर दूर तक से इसी किस्म के समाचार आने से मालूम हुआ कि सैकड़ो कोस के दायरे मे ये गिर रहे है। यद्यपि इनमे से अधिकाश, करीब करीब सौ मे पंचानवे खुली जमीनों मैदानो जंगलो या सडको और छतो पर गिरते और बिना कुछ अधिक नुकसान किए ही जल कर बुझ जाते पर जो बाकी के पाच प्रतिशत नाजुक जगहो मे गिरते वे गजब ढा देते थे। केवल तीन ही चार दिन के अन्दर इन लूको ने इतना फौजी सामान जला दिया कि जितना शायद छ महीने की किसी गहरी लड़ाई मे भी काम न आता। चारो तरफ, कम से कम फौजी मण्डली मे, त्राहि त्राहि मच गई।

ऐसे मौके पर, जब कि मुल्की और जगी दोनो ही विभाग अस्त व्यस्त और घबडाए हुए से हो रहे थे, शत्रु का तीसरा आक्रमण हुआ। फ्रास के समुद्र तट वाले विशाल जंगी बन्दरगाह मे खडे कई जंगी जहाज, ड्रेडनाट, क्रूजर और सबमेरीन बोटो पर भयंकर विस्फोट आरम्भ हुए। ये विस्फोट कुछ ऐसे थे कि उनमे ये जहाज अगर एक दम उड़ ही नही जाते तो कम से कम महीनों के लिए पंगु तो अवश्य ही हो जाते क्योंकि जहा कही भी ये विस्फोट हुए, अधिकांश इजिन रूमो के पास ही हुए, जिससे अगर जहाज समूचा ही नष्ट नहो हो गया तो कम से कम इंजिन रूम तो उड़ ही गया और वे युद्धपोत एक सुन्दर कातिल की जगह पर लोहे के व्यर्थ ढेरो की तरह रह गए। यह तीसरा हमला दुश्मन का बहुत ही भयानक साबित हुआ क्योंकि इसमे फ्रांसीसी सरकार के करोड़ो रुपयों की लागत के जहाज देखते देखते क्षण भर मे नष्ट हो जाते, और करोड़ो की ऐसी सम्पत्ति जलमग्न हो जाती जिसकी पुनर्स्थापना में महीनो नही वर्षो लग सकते थे।

इस तीसरी प्रकार के हमले ने चारो ओर हाहाकार मचा दिया। शासक

वर्ग को यह समझ लेना पड़ा कि फ्रान्स सरकार का कोई ऐसा दुश्मन पैदा हो गया है जो केवल कड़ी चोट ही नही पहुचाता वल्कि इस तरह से पहुचाता है कि जिसका प्रतिकार सम्भव नही और जो हर दफे मर्मस्थानो पर ही आघात करता है।

पैरिस और फ्रेन्चइन्डोचाइना के वीच तार खटखटाने लगे, दौड़ धूप खोज तलाश शुरू हुई। अभी तक तो समझा जाता था कि वासन पर दंगा होगा और पुजारी या साधू लोग दंगा करेगे पर अव जो आक्रमण शुरू हुआ यह तो एक तीसरे ही प्रकार का था जिसके न तो कर्ताओ का पता लगता था ओर न जिसके वारे मे यही मालूम होता था कि किस तरह पर और कहां से यह सव कार्रवाई की जा रही है।

[४]

रात की काली चादर मे अपने को छिपाए हुए एक वड़ा वायुयान तेजी से उड़ा जा रहा है।

अगर दिन का वक्त होता और आप इस वायुयान पर होते तो इसे जरूर ही पहिचान लेते क्योकि यह पण्डित गोपालशंकर का वही प्रसिद्ध यान 'टाइगर' है जिस पर उनकी 'रेडियम-गन' रक्खी हुई है और इसको चलाने वाले 'गोविन्द' को भी पहिचान जाने में उन्हें कुछ देर न लगती जो इस समय इसके चालक की जगह पर वैठा नीचे को नजर किए हुए इस तरह उन भिन्न भिन्न कल पुर्जों को चला रहा था जो इस वायुयान की चाल रुख और उंचाई को कावू में रखते है मानों यह दिन का समय हो और वह अपने नीचे काला आस्मान नही वल्कि दूर तक फैली हुई पृथ्वी को देख रहा हो।

लेकिन, अगर आप इस वायुयान पर न होते, नीचे कही होते या किसी दूसरे वायुयान पर होते, तो आप इनमे से कोई भी वात जान या समझ न सकते चाहे दिन का ही वक्त क्यो न होता, कारण यह कि इस वायुयान

'टाइगर' मे भी वे ही सब गुण पूरे पूरे विद्यमान थे जो पडितजी के ऐतिहासिक वायुयान 'श्यामा' मे थे, और इस समय न तो इसके इ जनो में ही कोई आवाज हो रही थी और न यह किसी को दिखाई ही पडता था। पाठको को याद होगा कि शत्रुओ ने गोपालशकर के 'श्यामा' वायुयान से ही नकल करके स्वयम् भी अपने 'अलोपी' वायुयान तैयार किए थे, अस्तु इस 'टाइगर' मे भी वही अलोप हो जाने वाला गुण रहना कोई आश्चर्य की वात न थी, या अगर कुछ होती भी तो सिर्फ यही कि केवल उतना ही गुण इसमे रहता उससे अधिक नही, पर नही, टाइगर मे श्यामा के उस गुण से बढ़ के कई गुण है जिनका पाठको को अब तक तो पता नहीं लगा पर अब लगे विना भी न रहेगा।

इस समय 'टाइगर' पर किसी तरह की जरा भी रोशनी नही है इससे पाठक पहिचान न पावेगे कि इस पर गोविन्द के इलावे और कौन कौन सवार है पर यह हम वता देते है। इस पर इस समय सिर्फ दो आदमी और है और दोनो ही हमारे पाठको के परिचित है, एक तो है मार्शल फाक और दूसरा है वही अर्धपागल पुजारी 'किंग-हो' जो उन नौजवानो का भारी दुश्मन है जिन्होने उसके पवित्र देवता 'सीह-फु ग' के मन्दिर को अपवित्र किया है और जिन्हें वह 'गेहुए' कहा करता है। इन दोनो के इलावे एक तीसरी कुर्सी पर कुछ कपडे और कम्वल आदि ऐसे पडे दिखाई देते है जिससे सन्देह होता है कि ये लोग किसी तीसरे को लेने जा रहे है।

गोविन्द ने कुछ झुक कर वहुत गौर से अपने पैरो के नीचे की तरफ देखा और तव वोलने वाले चोगे मे मुंह लगा कर कहा, "हम लोग उस स्थान के पास आ पहुचे। सीह-फु ग की गुफा अव हमारे दाहिने केवल दो तीन मील के फासले पर है।"

मार्शल फाक ने यह सुनते ही चमक कर गौर से खिडकी की राह वायुयान के नीचे की तरफ देखा, पर उस काले पर्दे के भीतर से उनकी आखें किसी चीज को पहिचान न सकी। तव उन्होने घूम के गोविन्द से

कहा, "मुझे तो कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता कि नीचे क्या है ?" गोविन्द हंस के बोला, "मगर मुझे दिखाई दे रहा है और जो कुछ मैं कह रहा हूं वह बिल्कुल ठीक है। देखिए इस समय हमारे ठीक नीचे वह जगह है जहां पर आपको शत्रुओं ने दौड़ाया था और इन पुजारीजी ने एक गुफा में छिपा कर आपकी रक्षा की थी।"

मार्शल ने फिर नीचे की तरफ देखा और पुजारी किंग-ही भी देर तक आंखें फाड़ फाड़ कर नीचे देखता रहा पर किसी को कुछ नजर न आया। आखिर फाक वोले, "तुम न जाने क्या कह रहे हो ? मुझे तो नीचे न कुछ दिखाई पड़ता है न सुनाई, क्या जानूं नीचे गुफा है कि नदी ?"

गोविन्द यह सुन कर हंसा और वोला, "यहां, मेरे पैरों के नीचे झुक कर देखिए, आपको सव कुछ साफ साफ दिखाई पड़ेगा।" फाक यह सुनते ही अपनी कुर्सी पर से उठे और गोविन्द के पाछे जा उसके कंधे पर से झुक कर नीचे को देखने लगे। जो कुछ उन्होंने देखा उसने उन्हें चमका दिया। उन्होंने देखा कि गोविन्द के पैरों के नीचे करीव हाथ भर लम्वा और उससे कुछ कम चौड़ा एक शीशा लगा हुआ है जो इस तरह चमक रहा है जैसे वायस्कोप का कपड़े का पर्दा रोशनी पड़ने से चमकता है, और उसी पर वायुयान के नीचे की तरफ का दृश्य सिनेमा के चित्र की तरह चमक रहा है। अंधकार के पर्दे से ढंका हुआ एक काला जंगल घने और भयानक पेड़ों से भरा हुआ, उस शीशे पर फैला दिखाई पड़ रहा था जिसके एक सिरे पर कुछ ऊंची पहाड़ियों की काली आभा नजर आ रही थी। यह समूचा दृश्य एक तरफ से दूसरी तरफ इस तरह खसक रहा था मानों ये चीजें एक के वाद एक वायुयान के नीचे से गुजर रही हों और फाक इसे देखते ही आश्चर्य में डूव कर गोविन्द से वोले, "यह क्या तमाशा है गोविन्द, इस शीशे पर क्या हमारे नीचे का दृश्य वन और मिट रहा है ?"

गोविन्द ने जवाव दिया, "जी हां, यही वात है, और यह भी पण्डितजी की कारीगरी का ही एक नमूना है। उन्होंने रात के समय उड़ने की सुविधा

के लिए इन्फ्रा-रेड किरणो की मदद से काम लिया और यह चीज तैयार की थी और इसी की मदद से घोर अंधकार और कुहासे या कुहरे के पर्दे में छिपी हुई चीजों को भी उनका यह शीशा प्रकट कर देता है और उनका अक्स यहा पर इस तरह वनता चलता है मानो हम लोग उन्हें अपनी आखो से देख रहे हो। पण्डितजी ने इसी तरह की एक और भी... ..।" गोविन्द का गला भर आया और उसने रुंधे गले से अस्पष्ट तौर पर कहा, "ओफ पण्डितजी, देखा चाहिए हम लोग आपको जीता भी पाते हैं या....!" इसके आगे गोविन्द से कुछ कहा न गया। उसका गला वन्द हो गया और आखो मे आसू भर आए। मार्शल फाक की भी आखें भर आईं और वे चुप हो रहे, पर पुजारी किंग-ही एक दम शान्त वना रहा। एक क्षण के लिए उसने अपनी आखें वन्द की और तव नाक पर हाथ रख कर कुछ विचार किया, इसके वाद वोला, "घवडाओ नही गोविन्द, जो वातें तुम्हारी किरण और तुम्हारे यंत्र नही वता सकते उन्हें मेरा मंत्र वताता है, पण्डितजी अभी तक जीवित है यद्यपि उनकी जान घोर संकट में है।"

फाक के होठो से कोई अस्पप्ट प्रार्थना निकली, गोविन्द ने पूछा, "अच्छा कहिए अव मै किधर चलूं ?" पुजारी विना विलम्व वोला, "सीधे वही चलो जहा वह यान रहा करता था, उस जगह उतर सकोगे तो?" गोविन्द वोला, "वखूवी।" और तव एक डण्डे पर हाथ रख कुछ करने लगा। वायुयान की चाल कम हुई और वह एक तरफ को टेढा हो के नीचे की तरफ झुका। फाक और पुजारी पुनः अपने अपने स्थानो पर जा वैठे।

वायुयान नीचा होने लगा और देखते देखते वहुत ही नीचे उतर आया। अव फाक को नीचे झाक कर देखने से उस घने जगल की कुछ आभा दिखाई पडने लगी जो उनके नीचे था। ऊचे पेडों की चोटियो पर से टाइगर तेजी के साथ एक तरफ को चला जा रहा था। फाक के मन में यह प्रश्न उठा, "क्या इस अंधेरे मे गोविन्द यान को सकुशल जमीन पर उतार सकेगा ?" पर उससे कुछ पूछ कर उसका ध्यान भंग करना इस समय अनुचित जान

'जो होनी हो सो हो' कहते हुए वे जम कर अपनी जगह पर वैठे रहे। पर आरोहियो के मन मे चाहे जो कुछ भी आशंका हो, गोविन्द को इस वात में कुछ भी डर न था और वह अपने नीचे के शीशे में सब कुछ स्पष्ट देखता हुआ वेधडक बढ़ा जा रहा था।

यकायक अपने सामने की तरफ मार्शल फाक को कोई ऊंची काली चीज दिखाई पड़ी। उसे पहाड़ या इसी तरह की कोई चीज समझ उनका कलेजा धड़क उठा क्योंकि 'टाइगर' सीधा उसी की तरफ बढ़ रहा था, पर जिस समय वे यह सोच रहे थे कि बस अव टक्कर हुई और यान चूर चूर हुआ, उसी समय टाइगर ने तेजी से चक्कर काटा और घूम कर उस काली दीवार के साथ साथ जाने लगा। अब फाक को अपने दूसरे वगल भी उसी तरह की एक पतली काली दीवार उठती दिखाई पड़ी और वे समझ गए कि दो ऊंचे पहाड़ों के वीच मे वनी किसी दरार के अन्दर टाइगर जा रहा है। अगर किसी तरफ से जरा टक्कर लगी तो उसकी क्या गति होगी यही उनका परेशान दिमाग सोच रहा था कि टाइगर के इंजिनो का चलना जो विना किसी आवाज के काम कर रहे थे, वन्द हो गया और टाइगर सन्नाटा भरता हुआ नीचे को झुका। एक हलका झटका लगा और गोविन्द के मुंह से निकला—"हम लोग पहुंच गए।" वायुयान रुका और पहिले गोविन्द ओर उसके वाद मार्शल फाक तथा पुजारी किंग-ही नीचे उतरे।

मार्शल फाक ने पुजारी से पूछा, "अव ?" वह वोला, "मेरे पीछे पीछे आइए।" ओर तब गोविन्द से यह कह कर कि 'तुम इसी जगह रहो, मैं सब हालत देख समझ के दस मिनट में आता हू।' वाईं तरफ को घूमा, मार्शल उसके पीछे पीछे जाने लगे।

लगभग सौ कदम के किंग-ही चला गया, इसके वाद एक जगह पर रुक उसने अपनी उंगलिएं मुंह मे डाली ओर एक विचित्र तरह की सीटी वजाई जो किसी चिड़िया की वोली की तरह जान पडती थी। एक सायत के लिए सन्नाटा हो गया और तव दूर कही से उसी तरह की आवाज सुनाई

पडी। कुछ ठहर कर पुन दो वार वैसी ही आवाज आई और पुजारी एक सन्तोप की सास लेकर वोला, "शुक्र है, भगवान सीह-फुंग की कृपा से पण्डितजी कुशल से है ! आइए, इधर आइए, मगर देखिए जरा सम्हाल कर पैर रखिएगा !" मार्शल फाक के पैर के नोचे नम वालू और तव किसी पहाडी सोते का जल पडा मगर पुजारी की देखादेखी इन्होंने वेधड़क इस छोटे नाले को पार किया और तव एक ढालुई पगडण्डी पर चलने लगे जो साप की तरह वल खाती हुई अव पहाड के ऊपर चढ रही थी। कुछ ही दूर गए होंगे कि सामने के अंधकार से निकल कर एक नई शकल इनके सामने आ खडी हुई जिससे पुजारी ने पूछा, "कौन, सा-लिन ?" उसने जवाव दिया, "जी हा गुरूजी, मैं ही हू !" पुजारी ने पूछा, "पण्डितजी कैसे ह ?" सा-लिन बोला, "अच्छे है, मगर वहुत गहरी चोट खा गए है।" फाक घवरा कर वोले, "जान तो वच जायगी न ?" सा-लिन वोला, "चोट से तो वच जायगी मगर दुश्मनो से वचेगी या नही मैं कह नही सकता। इस पहाड के चारो तरफ दुश्मन के जासूस घूम रहे है। अभी तक तो उन्हें इस जगह का पता नही लगा हैं पर कव कौन यहा आ धमकेगा मैं कह नही सकता।" फाक वोले, "अच्छा जल्दी हम लोगो को उनके पास ले चलो !"

विना कुछ जवाव दिए सा-लिन घूमा और वे लोग उसके पीछे पीछे जाने लगे।

× × ×

अपने हाथ की विजली की वत्ती (टार्च) की रोशनी में जव पत्तियो और घासो के ढेर पर पडे गोपालशकर की सूरत मार्शल फाक ने देखी तो उनकी आखो से आसू निकल पडे।

पण्डित गोपालशकर का समूचा शरीर काला पड़ गया था और तमाम वदन पर इस कदर पट्टिएं लपेटी हुई थी कि दूर से देखने से यकायक किसी ईजिप्शियन ममी (मसाले में लपेटी लाश) का भ्रम होता था, फिर भी वडी से वडी मुसीवत ही क्या साक्षात् मृत्यु को भी हंसते हुए देखने की ताकत

रखने वाली उनकी आंखो में अभी भी वही तेजी और वही विनोद मौजूद था जो उनमें बराबर रहा करता था। उन्होंने मार्शल फाक को देखते ही कहा, "आ गए मेरे दोस्त ! मगर क्या इस ममी को रखने के लिए कोई बक्स भी लाए हो ?" उनकी मन्द हंसी गुफा में गूंज उठी मगर फाक बिलख कर उनके बगल में घुटनों के बल बैठते हुए बोले, "हाय पण्डितजी, आपकी यह क्या हालत है ?"

गोपालशंकर बोले, "जो कुछ है सो बहुत अच्छा है। मेरे शरीर के टुकड़े टुकड़े नही उड़ गए यही बहुत हुआ ! और ये पट्टिएं जो तुम देखते हो यह तो मेरे दोस्त किंग-ही ने मुझसे किसी समय का बदला लिया है, न जाने कौन सी जड़ी बूटी पीस पास के लेप कर दी है कि मुझे तो ऐसा जान पड़ता है मानों बरफ की सिलों के भीतर दबा दिया गया होऊं !"

किंग-ही यह सुनते ही कुछ आगे बढ़ आया और बोला, "पण्डितजी का समूचा बदन उस भयानक बम की आंच से झुलस गया था। इनकी ऐसी हालत थी कि इनके बदन में उंगली लगाने से चमड़ा छूटता था। मगर जो जड़ी मैंने इनके बदन पर लेप कर दी है वह इनकी समूची चमडो को ऐसा दुरुस्त कर देगी कि लेप उतारने पर यह भी पता न लगेगा कि कहां चोट लगी थी !"

इसी समय सा-लिन ने आगे बढ़ कर नम्रता से कहा, "अगर आप लोग पण्डितजी को लेने आए हों तो मैं प्रार्थना करूंगा कि इन्हे लेकर तुरन्त चल दें। इस पहाड़ के इर्द गिर्द दुश्मन आ गए है और न जाने कब कौन मट्टी सूंघता हुआ यहां आ पहुचे सो नही कहा जा सकता।" किंग-ही यह सुनते ही घबडा के बोला, "हां, तुम ठीक कहते हो ! मार्शल, इस समय बात करने का मौका नहीं है, पण्डितजी को सीधे वायुयान पर ले चलिए और उड जाइए।"

मुलायम हाथों ने बड़ी सावधानी से पण्डित गोपालशंकर को उठाया और गुफा के बाहर निकाल लाए। वह छोटा फासला जो उनमे और 'टाइ-गर' के बीच में था, देखते देखते तय किया गया और पण्डितजी वायुयान

के अन्दर एक लम्वे कोच पर लिटा दिए गए क्योंकि वे बैठने लायक नहीं थे। किंग ही बोला, "आप लोग जाइए, मैं यहीं रहूंगा।" और तब गोविन्द को इन्जिन चलाने का इशारा कर पीछे हटता हुआ घने अंधकार में लोप हो गया। एक साधारण 'खस खस' के शब्द के साथ टाइगर के इन्जिन चलने शुरू हुए और देखते देखते वायुयान ने जमीन छोड दी।

जब तक टाइगर जमीन से काफी ऊंचा न हो गया मार्शल फाक का कलेजा धडकता ही रहा, पर जब वह सही सलामत दो पहाडो के बीच में छिपी उस दरार के भी वाहर निकल गया और ऊचे ऊचे पेड़ों की चोटियां वहुत नीचे काली चादर की तरह दिखाई पडने लगी तो उनकी घबराहट दूर हुई और वे यान के किनारे से हट कर पण्डितजी के पास बैठते हुए बोले, "हां पण्डितजी, अब बताइए कि क्या क्या हुआ? आपको दुश्मनों ने कैसे पहिचान लिया और कैसे आपकी जान बची?"

—:o:—

'पूर्व-गौरव-संघ'

[१]

एक लम्बे चौड़े मैदान के बीचोबीच में तीन चार छोटे बड़े तम्बू लगे हुए हैं।

सब से बड़े तम्बू के आगे हम कई आदमियो को खड़े और बैठे देख रहे है। एक टेबुल पर कुछ कागज पत्र पड़े है और उसके चारो तरफ तीन चार कुरसियां हैं जिनमें से बाकी तो खाली है सिर्फ एक पर कोई फ्रांसीसी अफसर बैठा हुआ है। पाठक इसे देखते ही पहिचान जांयगे क्योकि इसे मार्शल फाक के साथ वे कई दफे देख चुके हैं। इसका नाम रुकमस है और पहिले यह मार्शल का एड-डी-कैम्प और सक्रेटरी था, आजकल किसी गुप्त कारण से इस जगह पड़ा हुआ है। रुकमस के अलावे भी दो तीन फ्रांसीसी यहा और दिखाई पड रहे हैं, और थोड़े से सिपाहियों का एक छोटा सा रिसाला भी एक तरफ मौजूद है जो किसी मुहिम पर रवाना होने को एक दम तैयार मालूम होता है।

किसी तरह की आहट सुन रुकमस ने अपना सिर उठाया और सामने की तरफ देखा जिधर उसके आस पास वालो की भी निगाहें घूम गई थी।

उसने देखा कि दूर से एक सवार वेतहाशा घोड़ा फेंकता चला आ रहा है। रुकमस ने अपनी दूरवीन उठाई जो उसी जगह एक तरफ पडी हुई थी और गौर से कुछ देर तक देख के कहा, "अरे, वह तो....!" रुक के उसने एक फ्रासीसी को अपने पास वुलाया और उसके कान मे कुछ कहा जिसके साथ ही वह सलाम कर पीछे हटता हुआ उस रिसाले के पास चला गया। किसी फौजी हुक्म की आवाज आई और साथ ही वे सव के सव सिपाही अपने घोडो पर दिखाई पडने लगे।

उधर वह अकेला सवार भी पास आ गया। उसके घोडे की चाल कुछ कम हुई और उसने उस तरफ को मुंह घुमाया जिधर रुकमस का खेमा था, मगर क्या जाने वह वहुत थक गया था, या जख्मी हो गया था, या क्या वात थी कि उसे यकायक एक चक्कर आया, लगाम उसके हाथ से छूट गई, और वह सीधा जमीन पर आ रहा। कई आदमी यह देखते ही दौडे दौडे गए और उसे उठा कर ले आए तथा एक ने उसके घोडे को थाम लिया।

सहानुभूतिपूर्ण हाथो ने उस आदमी को खेमे के अन्दर ले जाकर एक विछावन पर डाल दिया और कई लोग तरह तरह से उसे होश मे लाने की कोशिश करने लगे, मगर वह वेहोश नही हुआ था केवल कमजोरी थकावट और उस जख्म की वदौलत वदहवास हो रहा था जो उसके सिर पर दिखाई पड रहा था और जिसमे से अभी तक खून निकल रहा था। उसके मुंह से कुछ अस्पष्ट आवाज निकली जिसका मतलव समझ रुकमस ने उसके मुंह के पास अपना कान कर दिया और उसने रुकते और अस्पष्ट शब्दो मे कहा, "......दुश्मनो को पता लग गया है...... .वे उन्ह छुडा ले जाना चाहते है. ... .जल्दी अपने आदमी भेजें.... ...गैडी पहाडी के पीछे वाले जंगल मे.. ..।" वस इतना ही कह उसने अपनी आखे वन्द कर ली मगर रुकमस उसका मतलव वखूवी समझ गया। उसने रिसाले के अफसर से कुछ कहा और उसके एक इशारे के साथ ही वे घुड़सवार तेजी के साथ उसी तरफ को रवाना हो गए जिधर से यह आदमी अभी आयाया।

[२]

थोड़ी ही देर वाद उस आदमी की तवीयत इतनी सम्हल गई कि वह उठ कर वैठ गया और सव तरह से चैतन्य मालूम होने लगा। रुकमस इस वीच में कई दफे उसकी हालत के वारे में दरियाफ्त कर चुका था, अस्तु यह खवर पाते ही इस खेमे के अन्दर आ गया। उसका इशारा पा वे लोग जो वहां मौजूद थे वाहर हो गए और उसके पास की एक कुरसी पर वैठता हुआ रुकमस वोला, "मैं तुम्हारा हाल सुनने को वेचैन हो रहा हू, कहो क्या मामला है, तुमने क्या क्या किया, और तुम्हारी यह हालत क्योंकर हो गई? मगर पहिले यह वता दो कि अव तुम्हारी हालत ठीक है न और तुम वात-चीत करने लायक हौ तो?"

वह आदमी वोला, "मैं अव विल्कुल ठीक हूँ, यह चोट तो शायद हफ्तों ले लेगी जो मेरे सिर में लगी है मगर और सव कुछ ठीक है।"

रुकमस०। तो वताओ फिर कि क्या हुआ और यहां से जा के तुमने क्या क्या किया?

आदमी०। आपके पास से विदा हो मै सीधा उसी जगह गया जहां क पता आपने वताया था, या जहा जंगल के वीच में एक गुफा का मुहाना है। दिन भर उसी जगह वैठा रहा और कोई उधर से आया गया नही पर शामा को उस गुफा के अन्दर से एक काला कलूटा नंगा धडंगा आदमी निकला जिसे आपके वताए निशानो से मैंने पहिचान लिया कि यही वह पुजारी है। शक मिटाने के लिए मैंने आपका वताया इशारा किया और जवाव में उसने भी वही निशान वनाया जो आपने वताया था अस्तु मेरा शक जाता रहा और मैंने आपकी चीठी उसे दे दी। उसने गौर से पढ़ा और कुछ सोच के कहा, "काम तो जरा मुश्किल है पर मै कोशिश करूंगा। तुम चौवीस घन्टे की मोहलत मुझे दो और कल इसी समय पुनः यही पर मुझसे मिलो, जो कुछ हो सकेगा कल ही तुम्हें वताऊंगा।" यह कह वह वहां से एक तरफ को चल दिया मगर थोड़ी देर वाद पुनः लौट आकर मुझसे वोला, "क्या तुम

अकेले ही हो या तुम्हारे साथ और भी कोई है ?" मैने जवाव दिया, "पांच सिपाही मेरे साथ और हैं पर मै उन्हें जंगल के वाहर छोड आया हू ।" वह वोला, "तो वस ठीक है, उनकी शायद जरूरत पडे, उन्हे भी कल तैयार रखना, मगर यहा तक न लाना, कुछ दूर ही कही छिपा कर रखना ।" यह कह वह चला गया और फिर उसने एक वार भी मेरी तरफ नही देखा ।

दूसरे दिन उसी समय मै फिर वहा पहुचा । वह पुजारी वहां मौजूद था वल्कि मालूम होता था कि कुछ देर से मेरी राह देख रहा था । मुझे देखते ही वोला, "ओफ तुमने देर कर दी, एक अच्छा मौका हाथ से निकल गया ।" मेने घवडा के पूछा, "क्या हुआ ?" वह वोला, "पाच छ. आदमी, वही जिनकी तुम्हारे साहव को तलाश थी—इधर ही से गए है । अगर उनमे से किसी एक को भी पकड पाते तो तुम्हारा काम वखूवी हो जाता ।" अभी वह इतना कह ही रहा था कि यकायक कुछ घोडो के टापो की आवाज आई । उसने मुझे एक झाडी की आड़ में कर लिया और थोडी ही देर वाद मैंने देखा क्या कि दो सवार जिनमें से एक औरत और एक मर्द है उधर ही से चले जा रहे है । दोनो ही कम उम्र नौजवान और खूवसूरत थे और दोनो ही श्यामदेशवासी मालूम होते थे पर इन्हें देखते हो वह पुजारी घवड़ा कर और भी झाड़ी के अन्दर घुस गया और मुझे भी अच्छी तरह छिपा कर धीरे से वोला, "ये शैतान इस वक्त कहा जा रहे है !" मैने पूछा, "ये कौन है ?" वह वोला, "ये उन षड़यन्त्रकारियो के वडे गहरे साथी है, इन्हें उनका सव भेद मालूम है, अगर इन्हे या इनमे से किसी भी एक को तुम पकड़ सको तो तुम्हारे साहव का काम वखूवी हो जायगा, मगर इनका पकड़ना जरा टेढी खीर होगी !" मैने पूछा, "क्या ये 'उस पूर्व-गौरव-सघ' के सदस्य है ?" उसने जवाव दिया, "केवल सदस्य ही नही उसके मुखियाओ मे से है ।" मैने कहा, "तव तो मै इनमे से किसी न किसी को जरूर गिरफ्तार करूंगा ।" वह वोला, "कोशिश कर देखो, अगर पकड सको तो क्या वात है !"

मुख्तसर यह कि मैं उस झाडी के वाहर निकला और उन दोनो के

पीछे हो लिया। वे दोनों आपस में धीरे धीरे बातें करते हुए बेखबर चले जा रहे थे और मुझे तो रंग ढंग से प्रेमी-युगल से मालूम हुए। भाग्यवश वे जा भी उधर ही को रहे थे जिधर मेरे साथी छिपे हुए थे अस्तु जब मुझे विश्वास हो गया कि ये लोग उस जगह के पास ही से गुजरेंगे जहां वे छिपे हैं तो मैं चक्कर काटता हुआ आगे जाकर अपने साथियों से मिल गया और उन्हें होशियार कर उन दोनों के पहुंचने की राह देखने लगा। थोड़ी ही देर बाद वे दोनो आ भी पहुंचे। बात पहिले ही से तय हो चुकी थी अस्तु दोनों के घोड़ों को हमलोगों ने अपने तीरों का निशाना बनाया और जैसे ही वे गिरे उनके सिर पर पहुंच दोनों को गिरफ्तार कर उठा ले भागे।

हमने तो समझा था कि हमारा काम बन गया और हम बेखटके अपने ठिकाने तक जा पहुंचेंगे मगर न जाने कैसे उनके साथियों को खबर लग गई। यद्यपि इसीलिए मैंने पिस्तौलें या बन्दूकें इस्तेमाल न की थी कि आवाज फैलेगी और लोगों को शक होगा पर फिर भी कोई दो ही तीन कोस जाते जाते हमें पता लग गया कि हमलोग दुश्मनों से घिर गए हैं। हम लोगों ने अपने घोड़े तेज किए पर साथ में उन दोनों कैदियों के रहने के कारण हमें तरद्दुद हो रहा था और हम उतनी तेजी से भाग न सकते थे जैसा कि चाहते थे जिसका नतीजा यह निकला कि 'गैंडी पहाड़ी' के पास आते आते दुश्मनों ने हमें घेर लिया। वे लोग गिनती में दस बारह से कम न होंगे मगर कुशल इतनी ही थी कि उनमें से केवल तीन घोड़ों पर थे और बाकी सब के सब पैदल, फिर भी उन लोगों ने हम पर बहुत जबर्दस्त हमला किया। मौका खराब देख मैं वहां से भागा, इस इरादे से कि आपको आकर खबर करूं, पर एक दुश्मन का तीर मेरे माथे में लगा और मैं बदहवास सा हो गया, केवल घोड़े की पीठ पर बैठे रहने की ताकत मुझमें रह गई। वह तो कहिए कि घोड़ा अच्छी नसल का था जो मुझे यहां तक ले आया कहीं रास्ते में गिरा के भागा नहीं। बस इतना ही तो किस्सा है। मगर मुझे ताज्जुब मालूम हो रहा है कि आपके सिपाही लोग अभी तक लौटे क्यों नहीं, गैंडी

पहाडी यहा से वहुत दूर तो है नही ?"

इसी समय खेमे के वाहर से कुछ शोर गुल की आवाज आने लगी और रुकमस ने देख कर कहा, "हमारे सिपाही आ पहुचे, मै जा के देखता हू कि क्या करके आ रहे हैं, मगर तुम उठने की कोशिश मत करो अपने ठिकाने पर पड़े रहो, जो कुछ हाल होगा मै खुद आ कर तुमसे कहूगा ।"

रुकमस खेमे के वाहर आया और तव तक वे सवार भी आ पहुचे जो अपने वीच मे तीन चार कैदियो को लिए थे । उनमे एक औरत को देखते ही रुकमस समझ गया कि उसकी मशा पूरी हुई और जिस काम के लिए वह इतने दिनो से इस वीहड स्थान में पडा हुआ था वह पूरा उतरा । वह खुशी खुशी उस तरफ वढा और उसी समय रिसाले के अफसर ने उसके पास पहुच सलाम करके कहा, "मै वडी खुशी के साथ इत्तिला देता हू कि केवल वे ही दोनो नही जिन्हे हमारे साथी पकड कर ला रहे थे वल्कि दुश्मनो के दो और भी आदमी गिरफ्तार होकर हमारे कब्जे में आ गए और इस जगह मौजूद है।"

रुकमस ने कहा, "शावाश !" और तव उस तरफ वढ़ा ।

[३]

थोडी देर के लिए एक क्रूर दृश्य देखने को पाठक तैयार हो जाय ।

लकडी के चार मोटे खम्भे जमीन में मजबूती से गडे हुए है और उनके साथ चार व्यक्ति रस्सियो द्वारा खूब कस कर वाधे हुए है । वे खम्भे करीव हाथ भर मोटे और जमीन से तीन चार हाथ ऊचे होगे, जमीन के अन्दर कितना घुसे है यह कहा नही जा सकता ।

इनके चारो तरफ एक गोल कनात घिरी हुई है जिससे कोई वाहरी निगाहे उस दृश्य को देख नही सकती जो इस जगह हो चुका या होने वाला है ।

इन चारो कैदियो के सिवाय सिर्फ दो फ्रासीसी अफसर यहा पर और है जिनमे से एक तो रुकमस है और दूसरा उससे ऊंचा दर्जा रखने वाला कोई जान पडता है, क्योकि रुकमस उससे वहुत अदव के साथ वातें करता है । पाठको को ज्यादा देर तक सन्देह मे न डाल हम वताए देते है कि यह

कौन है। यह वही मेजर डुमरे है जिसे पाठक पहिले भी देख आए है और जो यहां के सी० आई० डी० विभाग का अध्यक्ष है। इन दोनों के सिवाय यहां और कोई भी नही है, मगर हम नही कह सकते कि उस कनात के बाहर कौन कौन है या किस तरह का इन्तजाम कर रक्खा गया है।

चारो खम्भों में से पहिले खम्भे के साथ जो आदमी बंधा हुआ है उसकी हालत बता रही है कि वह बहुत ही सख्त जख्मी हो चुका और शायद मर चुका है। उसके नंगे बदन में कडी मार के अनगिनती निशान बने हुए है, और साथ ही जगह जगह पडे हुए दाग बतला रहे है कि इसे बर्छे भाले या किसी और नुकीली चीज से छेदा गया है क्योंकि जगह जगह निशान ही नही पड़े हुए है बल्कि खून की धारें निकल कर नीचे जमीन पर और दूर दूर तक पड़ी हुई है। इस समय उस आदमी की जो सूरत शकल से श्यामी जान पड़ता है गरदन आगे को लटक आई है और वह जरा भी हिलता डोलता नही है न अब उसके बदन से खून ही निकल रहा है, इसी से हम समझते है कि वह मर गया है और उस पर से अपना ध्यान हटा उस दूसरे आदमी की तरफ चलते है जिसके सामने मेजर डुमरे इस समय खड़ा है और डपट कर कुछ पूछ रहा है।

डुमरे ने क्या पूछा यह तो हम कह नही सकते, पर उसके जवाब में अपने कैदी को सिर हिलाता देख उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया और वह डपट कर बोला, "मालूम होता है कि अभी अभी तुम्हारे साथी की जो दुर्दशा मैंने की है उसे देख के भी तुम्हें होश नही आया है! मगर ख्याल रक्खो कि उसमे भी कड़ी तकलीफ तुम्हें दी जायगी अगर तुम नही बताओगे कि काउन्ट शेवर कहां पर है?"

उस आदमी ने एक बार सिर उठा कर अपने बगल में बंधे तीसरे व्यक्ति की तरफ देखा और तब सिर नीचा कर लिया। डुमरे गरज कर पुनः उससे कुछ पूछना ही चाहता था कि रुकमस ने झुक कर धीरे से उसके कान मे कहा, "मुझे सन्देह होता है कि यह तीसरा जो आदमी उसके बगल

मे है इस आदमी का कोई अफसर है और इसके सामने यह कुछ कहते डरता है।" डुमरे ने अकड कर कहा, "ओफ, मेरी तरकीव उसकी जुबान खोल देगी !" ओर तव पुन उस व्यक्ति से वोला, "तुम मेरी वात का जवाव न दोगे ! अच्छा तो सुनो, तुम्हारे लिए अव मैं अपनी किरिच को काम मे न लाऊ गा ओर इस पिस्तौल को हाथ में लू गा ! देखो, इसमे छ गोलिया है। इनमे से एक मै तुम्हारी वाई फिल्ली पर, एक दाहिनी फिल्ली पर, एक तुम्हारे वाए घुटने पर, एक दाहिने घुटने पर, एक दाहिनी जघा मे, और एक वाई जघा में मारू गा। अगर इतनी यातना भी तुम्हारी जुवान न खोलेगी तो फिर मै अपनी दूसरी पिस्तोल हाथ में लूंगा और ऊपर की तरफ वढूंगा ! सुन लिया न ? अच्छा अव वताओ काउन्ट शैवर कहा है ?"

उस आदमी का चेहरा कुछ पीला पड गया और वदन में एक हल्की कंपकंपी आई। उसने जरा सा आखें घुमा कर वगल मे वधे व्यक्ति की तरफ देखा और तव उसका सिर जरा सा हिला। मानो इसके इशारे के जवाव मे उसने भी जरा सा आखें वन्द की ओर गरदन हिलाई जिसे यद्यपि गुस्से मे भरे डुमरे ने नही देखा पर रुकमस ने अच्छी तरह लक्ष्य किया। वह कुछ कहना ही चाहता था कि इसी समय डुमरे का पिस्तौल वाला हाथ ऊंचा हुआ और साथ ही 'धाय' के शव्द के साथ एक गोली उस अभागे की फिल्ली को तोडती हुई एक तरफ छटक गई। हड्डी के छोटे छोटे टुकडे उसके चमडे को फोड वाहर निकल आए। धीरे धीरे खून वहके नीचे जमीनको तर करने लगा।

डुमरे ने कठोर स्वर मे कहा, "वताओ ?" उस व्यक्ति का सिर आगे को लटक आया था और एक कमजोर 'आह' उसके मुंह से वाहर निकली थी पर इसके सिवाय उसने कुछ न कहा। डुमरे ने कहा—"अच्छा तो लो !" और साथ ही दूसरी गोली मारी। अभागे कैदी की दूसरी फिल्ली भी टूट गई और उसका शरीर कुछ नीचे को लटक आया, मगर इस वार उसके मुंह से कोई भी आवाज न निकली।

डुमरे ने पुनः पूछा, "वता अव वतावेगा, कि मै तीसरी गोली मारूं ?"

मगर जवाब में उस कैदी से कुछ सुनने के बदले उन्हें अपने बगल से किसी के खिलखिला कर हंसने की आवाज सुनाई पड़ी। उसने चौंक कर सिर घुमाया तो उस तीसरे व्यक्ति को मुस्कुराते पाया जो बगल वाले तीसरे खम्भे से बंधा था। डुमरे को अपनी तरफ देखते पा वह पुनः हंसा और बोला, "मेजर डुमरे, क्यो अपनी पिस्तौल को पापी बना रहे हो! तुम्हारा अभागा शिकार अब जीता नही है, वह तो पहिली गोली खाने के कुछ पहिले ही इस दुनिया से चल निकला!!"

डुमरे चौंक के बोले, "मर गया! नही नहीं, बेहोश हो गया होगा! इतनी चोट से कोई यकायक मर नही सकता!" पर वह तीसरा व्यक्ति बोला, "आप जांच देखिए!" डुमरे ने एकमस की तरफ देखा जिसने आगे बढ़ कर उस आदमी के कलेजे पर हाथ रक्खा और तब वहां कान लगा गौर के साथ देर तक सुनने के बाद कहा, "बेशक मर गया, दिल की धड़कन एक दम बन्द है।" डुमरे के मुंह से यह सुन ताज्जुब के साथ निकला, "बड़ी कमजोर तबीयत थी इसकी।" जिसे सुन वह तीसरा व्यक्ति पुनः हंसा और बोला, "कमजोर-तबीयत वालों को ले के 'पूर्व-गौरव-संघ' नही बना है मेजर डुमरे! उसने जान-बूझ के अपनी जान दे दी है क्योंकि इससे आगे तकलीफ सहना व्यर्थ था।" डुमरे ने पूछा, "सो कैसे दे दी?" पर उस आदमी ने कुछ जवाब न दे केवल जरा कंधा हिला दिया। मेजर डुमरे ने पुनः चुप रह जाने पर गरज कर कहा, "अच्छा अब तुम्हारी पारी आती है, यह ऐंठ छोड़ दो?" इसके साथ ही दो कदम हट कर वह इस तीसरे आदमी के सामने हो गया।

अगर हमारे पाठक गौर से इस तीसरे आदमी की तरफ देखेंगे तो इसे जरूर पहिचान जाएंगे, सिर्फ इसे ही नही बल्कि इसके बाद वाली उस कमसिन लड़की को भी वे शायद पहिचान लेंगे जो पहिले भी पाठकों के सामने आ चुकी है। अगर उन्हें याद न आता हो तो हम बताए देते हैं कि यह पुरुष तो वही 'कागा' है जो तारा के साथ नामतू बने हुए गोपालशंकर

की हिफाजत पर त्रिकंटक की ओर से तैनात किया गया था, और यह लड़की वही तारा की सहेली 'गामी' है जिसके साथ नहाने जाकर तारा 'मंग-सोत' में वह गई थी जब अजित ने उसे बचाया था।

मेजर डुमरे की बात सुन 'कागा' जरा हंसा और फिर बोला, "मेजर, मुझे तुम्हारी बात सुन कर हंसी आती है! केवल तुम पर ही नही तुम्हारी इस सुफेद खाल पर, तुम्हारी इस सुफेद जाति पर हंसी आती है। स्पेन के 'इनक्विजिशन' का हाल जब मैं पुस्तकों में पढता था तो मुझे खयाल आता था कि कोई मनुष्य-हृदय इतना कठोर नही हो सकता और यह सब वर्णन अतिरंजित कर दिया गया है। तब एक पुस्तक में पुर्तगाल ने 'माया' देश के 'इन्का' लोगो के साथ जो कुछ बर्बरता की और जिस प्रकार की क्रूरता करके उन्हें लूटा उसका हाल पढ़ मेरा मन कुछ डिगने लगा। तब मैंने एक तीसरी पुस्तक मे बेल्जियम द्वारा अफ्रिका मे किए जाने वाले अत्याचारो और काले हबशियो पर हाथी दांत और हीरो की खानें बताने के लिए किए जाने वाले नृशंस अत्याचारो की कथा पढ़ी जिस पर मेरा मन और डिगा। बाद में मैंने 'जर्मन ईस्ट अफ्रिका' में रबर के लिए वहां के 'जंगलियों' पर होने वाले अत्याचारो का हाल एक पुस्तक में देखा और तब मैं सोचने लगा कि क्या समूची यूरोपियन जातियां ऐसी ही निर्दय होती है? पर मुझे इससे भी बडा सबूत मिलने को था। तुम शायद समझ रहे होगे कि आज तुमने जो कुछ इन दोनो अभागों के साथ किया वह तुम्हारे ही उर्वर मस्तिष्क की उपज है पर नही, तुमसे भी क्रूरतर लोग इस सजा को तुमसे पहले निकाल चुके है। रूस मे किसानो और सिपाहियो का (सोवियट) विद्रोह जब हुआ, तो भाग्यवश उन दिनो मैं रूस में ही था। उस समय मैंने यह दृश्य देखा था। वहां विद्रोही सिपाहियो की एक टुकडी की अफसरी एक औरत के हाथ मे थी। अगर तुम इतिहास के पन्ने उलटोगे तो अब भी कहीं न कहीं दबा हुआ तुम्हें उस पिशाची का नाम दिख जायगा। तुम तो खैर दुश्मनों का भेद लेने और अपने लाट का पता लगाने के लिए यह सब

कर रहे हो पर वह कम्बख्त तो ऐसी क्रूर थी कि केवल अपनी तबीयत खुश करने के लिए वैसी सजा अपने कैदियों को दिया करती थी जैसी कि तुमने मेरे पड़ोसी के लिए तजवीज की। उसके अफसर जिन लोगों को मार डालने का हुक्म उसे देते थे, उन्हें वह तुम्हारी ही तरह पेड़ों से बंधवा देती और तब धीरे धीरे, छोटी पिस्तौल से गोली मार मार कर, कभी उनकी फिल्ली, कभी घुटना, कभी रान, कभी जंघा कभी कलाई तोड़ती थी, मगर कभी किसी सांघातिक स्थान पर गोली नही मारती थी कि वह यकायक मर जाय और उसका मजा किरकिरा हो जाय। मैंने स्वयम्, अपनी इन आंखों से, एक बार उसे ऐसा करते देखा था। और उस समय की उसके अभागे शिकार की कातर चीख अब भी कभी कभी मेरे कानों में गूंज जाती है। उस क्रूर.....!"

मेजर डुमरे डपट कर बोले, "बस बस, बकबक मत करो! तुमने मुझे, मुझे ही क्यो समूचे फ्रांस को, फ्रांस ही क्या पूरे यूरोप को 'शैतान' कहा है, अस्तु मैं दिखा देना चाहता हू कि शैतान अपने शिकार के साथ किस तरह का बर्ताव करता है! बताओ, कि काउन्ट शैवर को तुम लोगों ने कहां पर छिपा रक्खा है?"

कागा हंस कर बोला, "मै इस बात को बता सकता हू पर बताऊंगा नहीं। मैं उस संघ का मंत्री और एक प्रमुख कार्यकर्ता हू, अगर तुमको विश्वास न हो तो मैं इस बात का सबूत दे सकता हूं, पर मेरे होंठ उस भेद को नही बतावेंगे जो तुम जानना चाहते हो!"

ताज्जुब के साथ मेजर डुमरे ने पूछा, "तुम उसके सेक्रेटरी हो!" उन्होने एक आश्चर्य की निगाह रुकमस पर डाली, मानो यह कहने के लिए कि—"क्या ऐसा हो सकता है! क्या हमलोग ऐसे खुशकिस्मत हो सकते हैं कि उक्त संघ का कोई अफसर हमारे हाथ में लग जाय!" और तब पुन: उस कैदी की तरफ देखा।

कागा भी उस नजर का मतलब समझ गया। वह एक दफे हंसा, मगर फिर तुरत ही उसका स्वर कुछ कठोर हो गया और वह कड़े स्वर में बोला,

"आपको मैं वतला देना चाहता हू कि 'पूर्व-गौरव-संघ' किस तरह के आदमियो का वना है और इसीलिए आपको वताता हू कि मैं कौन हूं, नहीं तो शायद न वताता ! देखिए—अपनी वात के सबूत मे मैं कहता हूं कि 'नामतू' वने हुए आप लोगो के दोस्त पंडित गोपालशंकर की निगहवानी मेरे सपुर्द थी ! नही नही, चौकिए नही, आप लोगों को 'काई माऊ' में नामतू के पकडे जाने पर भी खवर न थी कि वह कौन है पर हम लोगो की उस समय से गोपालशंकर पर निगाह थी जिस समय उसके वहुत पहिले आगरे की अपनी कोठीमें उन्होंने अपना वाना मुरली को पहना कर खुद नामतू का भेप धरा था।'

डुमरे आश्चर्य का मुंह कर कागा की तरफ देखने लगा जो कहता चला गया—"यह सव मैं इसलिए आपको वता रहा हूं जिसमें आपको यकीन हो जाय कि मै वास्तव में 'पूर्व-गौरव-संघ' का एक जिम्मेदार कार्यकर्ता और उसके भेदो से परिचित हू, और यह वात भो मै इसलिए आप पर प्रगट करना चाहता हू जिसमे आप जान जायं कि इस संघ के कार्यकर्ता किस श्रेणी, हिम्मत, और किस कलेजे के लोग है ! देखिए, मुस्कुराइए नही, और न इस भ्रम में पडिए कि इस दुनिया की कोई भी तकलीफ मुझसे मेरी इच्छा के विरुद्ध कुछ कहला सकेगी।"

मेजर डुमरे हंसे और वोले, "नौजवान, तकलीफ वह शय है कि भूतो का मुंह खोल देती है, तुम तो फकत एक इन्सान हो ?"

कागा गरज के वोला, "तेरा वही भ्रम मै दूर कर देना चाहता हू डुमरे देख यह देख !" कागा ने अपनी गरदन जरा घुमाई और सिर नीचा किया, साथ ही अपना मुंह जरा सा खोला। उसके दांतों मे कोई काली गोल चीज, मटर जितनी, एक पल के लिए दिखाई पड गई। तुरत ही उसने इसे पुन भीतर कर लिया और तब कहा, "देखा ? यह क्या चीज है जानता है ? यह रवर की एक छोटी कुप्पी है। इसके भीतर 'साइनाइड आफ पोटाशियम' का एक विशिष्ट अंग भरा है। इसमे की कुप्पिएं हर एक 'पूर्व-गौरव-संघ' का सदस्य अपने गले के भीतर रखता है। कभी

कैदियों द्वारा अपने गले के भीतर दुअन्नी चवन्नी आदि रक्खे रहने का हाल सुना है ? सुना है न ! गले के अन्दर, कंठनली के दोनों तरफ, पुराने कैदी अभ्यास और उद्योग से एक गढा सा बना लेते है जिसमे वे रुपया पैसा रक्खे रहते हैं । 'सिग-सिग' के एक कैदी ने एक वार मुझे वारह गिन्निएं उस जगह से निकाल के दिखाई थी, खैर—तो यही अभ्यास 'पूर्व-गौरव-संघ' के हर एक सदस्य को रखना पड़ता है और हरेक अपने गले में विप की ये पोटलियां रखता है । उस पहिले आदमी के पास जिसे तूने संगीनों से कोच कोच कर मारा, यह पोटली न थी, क्योकि वह 'पूर्व-गौरव-संघ' का सदस्य न था, वह तो एक दम वेकसूर कोई अजनवी था इसीलिए तुझ शैतान के हाथों इतनी यंत्रणा उसे सहनी पड़ी, मगर इस दूसरे आदमी के पास थी जिससे उसने तुरत अपनी जान दे दी । वही इस समय मेरे मुंह में भी है और दांतो से जरा सा उसे दवाते हो मैं दूसरे लोक का राही वन कर तेरे हाथ मे केवल निराशा ही निराशा छोड जा सकता हू मगर नही, मै तुझे यह दिखाना चाहता हूं कि 'पूर्व-गौरव-संघ' के सदस्य इतने कमजोर कलेजे के नही होते कि यंत्रणा वर्दाश्त न कर सकें । देख, मै वह गोली थूक देता हू, इसलिए थूक देता हू कि अव तू अपनी क्रूरता की परीक्षा मेरे ऊपर कर ले और देख ले कि 'पूर्व-गौरव-संघ' का सदस्य और मंत्री किस तरह मरता है ! आ, कर क्या करता है, ला, तेरे क्रूर खजाने मे कौन सी यंत्रणा है जिसका तू मुझ पर इम्तिहान लेना चाहता है, मैं तुझे दिखा देना चाहता हू कि मेरा हृदय वली सावित होता है कि तेरी क्रूरता !"

कांगा ने जरा सा सिर हिलाया और साथ ही जोर से सामने की तरफ थूक दिया । मटर से कुछ वड़ी काली काली तीन गोलियां सामने की तरफ फैल गईं जिनको आश्चर्य के साथ रुकमस ने उठा लिया । वे रवर की छोटी गोलियों की तरह जान पड़ती थी । नाखून से जरा जोर से दवाते ही एक फूट पड़ी और उसके अन्दर से एक सफेद वुकनी सी निकल आई जिसकी तीक्ष्ण कड़ए वादाम जैसी गंध ने रुकमस को वतला दिया कि यह सचमुच वह विप

है जिसका जोड दुनिया मे नही। मगर डुमरे की निगाह इस पर न थी, उसके चेहरे पर सफलता की झलक थी और वह एक कदम आगे बढ़ कर कागा से बोला, "नौजवान, तुम्हारा दिल मजबूत है यह मै समझ गया मगर अपनी अकड मे यह जहर फेंक तुमने अपने को मेरे हाथ में दे दिया ! अव मै तुम्हें एक ऐसी यंत्रणा पहुचाऊंगा जिसे तुम भी सह न सकोगे और जो मुझे सब भेद वतला देगी। मै इस लडकी के जरिए तुम्हारे दिल पर चोट पहुचाऊंगा, जो अवश्य तुम्हारी प्रेमिका है और इसकी जुवान से तुम्हारा वह भेद छीन लूंगा जिसे तुम ऐसी हिम्मत से छिपाया चाहते हो !"

डुमरे उस लड़की की तरफ घूमा जो अव तक चुपचाप सब कुछ देख सुन रही थी पर जिसने मुंह से एक शब्द भी निकाला न था। अन्य तीनो आदमियो की तरह यह लडकी भी खम्मे के साथ जकड कर बाधी हुई थी, अगर कुछ फर्क था तो यही कि इसके हाथ खुले हुए थे जिनमें से एक को पकड डुमरे ने कहा, "लडकी, तुम्हारे हाथ वड़े कोमल है ! तुम्हारे प्रेमी को ये कैसे प्रिय लगते होगे ! (कागा की तरफ देख के) मगर इन हाथो की ललाई अव शीघ्र ही कालिमा मे बदल जाना चाहती है, मै इन्हें जला देना चाहता हू, क्या तुम इसे सह सकोगे ? (रुकमस से) रुकमस, मेरे तम्बू में पेट्रोल का टिन पडा है, जरा उठा तो लाओ !"

लडकी और कागा की एक क्षण के लिए निगाहे चार हुईं। डुमरे ने देखा कि दोनो का चेहरा जरा पीला हो गया। उसे अपनी तर्कीव की सफलता पर विश्वास हुआ। उसने रुकमस को पुन इशारा किया और वह जाकर पेट्रोल का टिन उठा लाया। डुमरे ने अपनी जेव से रूमाल निकाल कर लडकी के एक हाथ पर लपेटा और तव उसे पेट्रोल से अच्छी तरह तर करके दियासलाई की डिविया हाथ में ले के कांगा से वोला, "कहो अव वताते हो कि अव भी नही ?"

कागा का चेहरा सूख गया, उसका बदन एक क्षण के लिये कांप गया। बड़ी मुश्किल से उसने अपने को सम्हाला और गरज के कहा, "दुष्ट !

राक्षस ! पिशाच ! शैतान ! क्या तू एक कोमल वालिका का वदन जलाना चाहता है ! ओफ क्या तेरे दिल में कलेजे की जगह पत्थर का टुकड़ा रक्खा हुआ है ?"

डुमरे ने हंस के कहा, "नही, उससे भी कड़ी कोई चीज ! लो वताओ फिर ?" कांगा ने उस लड़की की तरफ करुणा भरी दृष्टि से देखा और कहा, "प्यारी गामी ! मेरे सवव से तुझे इतना कष्ट !"

अव पहिले पहिल उस लड़की ने अपनी जुवान खोली। उसने कहा, "प्यारे कागा, डरो नही, अगर तुम तकलीफें सह सकते हो तो तुम्हारी गामी भी सह सकती है !" कांगा विलख के वोला, "मगर क्या तेरी जुवान चुप रह सकेगी ! यह शैतान क्या तुझसे ... ..!"

लड़की कडक कर वोली, "मेरी जुवान ! मेरी जुवान ! वह तो ऐसा चुप रहेगी कि जैसा चाहिये ! मगर शायद तुम डरते हो ?" कांगा ने कुछ न कह कर गरदन झुका ली।

क्रूर डुमरे इन दोनो की वातो को वड़ी प्रसन्नता के साथ सुन रहा था। अव वह उस लडकी से वोला, "मेरी प्यारी गामी, तुम अपनी तकलीफ शायद सह भी लो पर अपने प्यारे का कष्ट क्या सह सकोगी ? देखो मैं उसकी क्या गत करता हूं ! देखो और अपनी जुवान खोलो !" पेट्रोल का टिन उस पिशाच ने कागा के सिर के ऊपर किया और देखते देखते उसको तेल से एक दम तरवतर कर दिया। कांगा विलख के वोला, "प्यारी गामी, मेरी यंत्रणा देख अपनी जुवान खोल मत देना !"

गामी कड़क के वोली, "तुम क्या वार वार जुवान जुवान कह रहे हो ! क्या मेरी जुवान पर मेरा वस नही है ! अच्छा तो लो। (डुमरे की तरफ देख कर) सुफेद शैतान ! ले, मेरी भेंट ले !"

गामी का मुंह जरा सा खुला और फिर कच से वैठ गया। दूसरे क्षण मे एक गीली गीली लाल लाल कोई चीज गामी के मुंह से निकल कर डुमरे के मुंह पर जा गिरी। डुमरे को ऐसा जान पडा मानो कोई मांस का

लोथड़ा आकर उसके गाल पर गिरा हो, और था भी मांस का एक टुकड़ा ही ! वह गामी की जीभ थी जो उसने अपने दांतो से काट कर डुमरे के ऊपर थूक दी थी।

गामी ने लाल आंखे करके कहा, "क्या अब भी मेरी जुबान किसी से कोई भेद कह देगी ?" पर उसके मुंह से अटपट शब्दो के सिवाय और कुछ निकल न सका। खून की एक पिचकारी उसके मुंह से निकल कर डुमरे के ऊपर पड़ी और तव गामी के होठों के अगल वगल से निकल कर ठुड्डी को तर करती हुई उसके कपड़े भिगाने लगी।

[४]

पृथ्वी से पाच हजार फिट की ऊंचाई पर 'टाइगर' सन्नाटे भरता हुआ उड़ा जा रहा है।

सुवह के सात वज चुके है और सूर्य की पहिली किरणे उस यान के पंखो पर पड कर उन्हें सुनहरा रंग रही है। 'फ्रेंच इन्डो चायना' की राजधानी 'सैगन' अव थोड़े ही फासले पर रह गई है और दूर क्षितिज पर हरा समुद्र लहरें मारता नजर आने लगा है।

वायुयान पर आने के कुछ ही देर वाद गोपालशंकर गहरी नींद में डूवी गए थे जिसमे से जगाना मुनासिव न समझ मार्शल फाक ने फिर कुछ भी वातचीत उनसे न की थी, पर अव सूर्य-किरणों ने उनके उपर पड उन्हें भ जगा दिया था और वे अपने कोच पर अधलेटे से पड़े हुए अपना हाल सुना रहे थे—

"......जिस समय नगेन्द्रनरसिंह ने मुझे खिडकी के वाहर फेंका, मैं समझ गया कि अव मेरा अन्त समय आ गया। पहाड की उतनी ऊंचाई से नीचे गिर के भी मेरी हड्डी पसली सलामत न रहती और अगर मेरा वह भयानक वम फूटता तव भी मेरे जर्रे जर्रे का पता न लगता, पर उस समय खुशकिस्मती ने मेरी जान वचाई। यकायक मैने अपनी गिरान को रुकते हुए पाया। मेरे कपड़े पहाड के ऊपर चढी हुई किसी कांटेदार लता की

डालियों में उलझ गये थे और उन्होंने मुझे पकड़ रक्खा था। पहाड़ी लताएं किस कदर मजबूत होती हैं आप जानते ही हैं अस्तु मैं अधर में चिमगादड़ की तरह लटकता हुआ पल पल में यही सोच रहा था कि अब गिरा अब गिरा, पर मैं गिरा नहीं, हां उस वक्त की घबड़ाहट में मेरे हाथ का बम जरूर छूट गया और नीचे की किसी चट्टान से टकरा कर ऐसी भयानक आवाज से फूटा कि वह समूचा पहाड़ कांप उठा। उसकी भयंकर लपट ऊपर तक आ के मुझे लगी और मेरा तमाम बदन झुलस गया, मगर मेरी जो यह हालत आप देख रहे हैं यह केवल उस बम की आंच के कारण नहीं हुई बल्कि उस कटीली लता के खूंखार कांटों की बरकत है।

"कुशल इतनी ही रही कि ऐसी खतरनाक और नाजुक हालत में पहुंच कर भी मेरे होश हवास ने मेरा साथ नहीं छोड़ा था। मैंने समझ लिया कि अब थोड़ी ही देर बाद त्रिकंटक के आदमी मेरी तलाश में बाहर निकलेंगे और मुझे जीते या मुर्दे, उठा कर अपने कब्जे में करना चाहेंगे। उनसे बचने के लिए न नीचे जाने से कुशल थी न पहाड़ के ऊपर ही चढ़ जाने से, क्योंकि इन दोनों ही जगहों में उनके आदमी पहुंच सकते थे, पर जिस जगह मैं था, अर्थात् पहाड़ की खड़ी दीवार के बीचोबीच अधर में, न नीचे न ऊपर, वहां जरूर कुछ कुशल रह सकती थी क्योंकि वहां किसी का यकायक पहुंच जाना सम्भव न था। अस्तु मैंने यही किया कि जहां पर मैं था, उस कटीली लता के झुरमुट मे, वहीं छिप कर बैठ रहा। अपने को, कांटों से बदन छिदने की परवाह न करके—मैंने उन कटीली झाड़ियों के और भी अन्दर छिपा लिया और तब एक मोटी डाली को पकड़े हुए किसी लंगूर या बन्दर की तरह पहाड़ की छाती से चिपका हुआ धड़कते कलेजे के साथ बैठा राह देखने लगा कि अब क्या होता है।

"देखते देखते नीचे का मैदान आदमियों और मशालों से भर गया। लोग मुझे खोजने और उस भयानक बम ने कहां तक नुकसान पहुंचाया है इसकी तदारुक करने चारो तरफ [illegible] और कुछ पहाड़ के ऊपर की

तरफ भी आ पहुंचे, पर मैं जिस जगह पर था वहां किसी की नजर न पहुची और पहुंच सकती भी कैसे थी ? यह कोई क्योकर जान सकता था कि उस गुफा से गिर कर भी मै त्रिशंकु की तरह, न नीचे न ऊपर, अधर में लटक रहा होऊंगा ? अस्तु कुछ कौतूहल के साथ अपने ऊपर और नीचे निगाहें डालता हुआ मैं अपनी जगह पर दवका वैठा रहा ।

"धीरे धीरे शोरगुल और आदमियों की भीड़भाड़ कम होने लगी । मेरे खोजने वाले निराश होकर और शायद यह समझ कर कि उस वम ने मेरे टुकडे टुकड़े उडा दिए, अथवा यह सोच के कि दिन के समय मेरी तलाश करेंगे, नीचे और ऊपर से हट के अपने अपने ठिकाने चले गए और वहा सन्नाटा हो गया । इस वात का पता तो मुझे वाद में लगा कि मेरी जान वचाने का जरिया एक दूसरा वेचारा अभागा पुजारी हुआ जो उस रात के समय किसी जरूरी काम से वाहर निकला था और जिसके उस वम ने धुर्रे धुर्रे उड़ा दिये थे । खोजने वाले उसी की लाश के टुकडो को मेरी लाश समझ निश्चिन्त हो गये थे और असल में इसी घटना ने उस समय मेरी जान वचाई थी पर इसका हाल, जैसा मैंने कहा, मुझे वाद में मालूम हुआ ।

"जव आदमियों की आवाजाही कम हुई और उस जगह सन्नाटा हुआ तो मै अपने छुटकारे की तरकीव सोचने लगा । यह मैं जानता ही था कि सुवह की रोशनी फैलते ही मेरा वहा छिपा रहना असम्भव हो जायगा और रात की काली चादर की आड़ मे ही किसी निरापद स्थान में पहुच जाना मेरे लिए आवश्यक था, अस्तु वहुत सम्हल सम्हल कर मै उसी लता के सहारे धीरे धीरे नीचे को उतरने लगा । मगर यह वडा ही दुर्घट काम था और इसमें जितनी तकलीफ मुझे हुई उतनी जीवन भर में कभी न हुई थी, क्योकि उस लता के कांटें छुरे और भालो की नोक से ज्यादा कारी थे जिन्होंने दस ही पाच हाथ हटते हटते मेरा वदन लहूलुहान कर दिया, पर करता क्या ? जान वचने और न वचने की वाजी थी । लाचार हो किसी तरह नीचे उतरने लगा, मगर इतना समझ गया कि नीचे तक पहुचने के पहिले

ही मेरा आधा लोहू और चौथाई मांस उन्ही खूनी लताओं की खूराक बनेगा।"

पण्डित गोपालशंकर इतना कह कर हंस पड़े मगर फाक के मुंह से सहानुभूति की एक आवाज निकल पड़ी। जरा रुक कर गोपालशंकर फिर कहने लगे—

"मगर मेरी वह यंत्रणा चिर-स्थायी होने को न थी। मैं मुश्किल से दस या पन्द्रह गज नीचे उतरा होऊंगा कि एक जगह यकायक मुझे कही से गरम हवा और तब किसी के बोलने की आवाज आती सुनाई पडी। मैं चौंक के इधर उधर देखने लगा और मैंने देखा क्या कि मेरे पीछे अर्थात् पहाड की तरफ एक काली गुफा का छोटा मुहाना है जिसके अन्दर से गरम गरम हवा आ रही है। मेरी जान में जान आई। वह जगह चाहे जिसके रहने की भी हो, उस कंटीली लता से लिपट कर मरने से अच्छी ही होगी, यह सोच कोशिश कर मैंने अपने पैर उस मुहाने में डाले और तब बडी मुश्किल से किसी तरह उसके अन्दर उतर गया। मगर आगे बढ़ने की मुझमें ताब न थी। उस बम की भभक और कांटों की ऐंचा-तानी ने मुझे इस कदर जख्मी कर दिया था कि मेरे सिर में चक्कर आ गया और मैं उसी जगह गश खा के गिर पड़ा।

"इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे होश नही, पर आंखें खुलने पर मैंने अपने को उसी स्थान पर पाया जहां से इस समय आप मुझे ला रहे हैं। आपका दोस्त वह पुजारी और उसका वही चेला उस जगह मौजूद था और उसकी जुबानी मुझे मालूम हुआ कि मेरी जान बचाने का पुण्य उन्ही के हाथ बंटा। वह गुफा उन्ही की थी और मेरी आहट पा वे लोग वहां आ और मुझे ऐसी हालत में उस जगह पड़ा पा उठा के दुश्मनो की निगाहों से बचाते हुए किसी तरह निकाल ले गए थे। फिर भी मेरी जान शायद न बचती अगर आप और गोविन्द कल उस जगह न जा पहुचते क्योंकि हो न हो दुश्मनो को शक हो गया था और मेरी खोज तन्देही के साथ जारी थी।

"बस इतना ही तो सारा किस्सा है, अब आप अपनी बताइए कि

आपकी तरफ क्या हो रहा है ?"

मार्शल फाक एक लम्वी सांस फेंक कर वोले, "हम लोगों की तरफ का हाल तो अच्छा नही है पंडितजी ! यद्यपि आपकी खोज में मैं कई दिनो का निकला हुआ हू और इधर का ताजा हाल मुझे मालूम नही है फिर भी मुझे इतनी खबर है कि काउन्ट शैवर को पाजी शैतान कही उठा ले गए है और हमारे कई जगी जहाज भी उन कम्वख्तो ने गारत कर दिए हैं ।

गोपाल० । (चौक कर) जंगी जहाज गारत कर दिए हैं ! सो कैसे ?

फाक० । सो हम लोग किसी तरह भी जान न सके ! वस कभी किसी समय अचानक किसी जहाज पर विस्फोट होता है और वह, अथवा उसका कोई वहुमूल्य अंश, उड जाता है । हमारा करोडों रुपे का नुकसान इन कई दिनो के भीतर हो गया है !

गोपाल० । (यकायक चमक कर) ओह, मैं समझ गया, अव मुझे याद आया ! इन शैतानो ने एक तरह के वम ऐसे वनाये है जो वायरलेस से फोड़े जाते हैं । जव, जहा चाहें, और जितनी दूर चाहें, ये वम ले जाके छिपा दिये जाते है और वेतार की तार द्वारा जव एक खास नाप की रेडियो-किरणे उधर फेंकी जाती है तो वे वम फूट पडते है । जरूर उन्ही से दुश्मन काम ले रहा है ।

फाक० । (अफसोस के साथ) अव क्या जाने क्या वात है पण्डितजी, मुमकिन है ऐसा ही हो, लेकिन अगर वास्तव मे ऐसे वेतार की तार के जरिए फूटने वाले वम उन लोगो ने वना लिए है तो फिर वडा ही गजव होगा, हम लोग किस तरह उनसे वच सकेंगे ?

गोपाल० । वहुत मुश्किल है और खास कर इसलिए कि ये वम वहुत छोटे होते और सहज ही में छिपाए जा सकते है, और हर एक को फोड़ने की क्रिया अलग अलग की जा सकती है अर्थात् अगर कही ऐसे कई वम रक्खे गये है तो वे चाहे जिस वम को फोड़ सकते और वाकी को चुपचाप पड़े रहने दे सकते है ।

फाक० । ऐसा होना असम्भव नही, वेव-लेन्थ' का कुछ अन्तर रखने से ही ऐसा हो सकता है, लेकिन इसके माने तो फिर यह है कि मेरी खाट के पावे के नीचे भी ऐसा वम छिपा रह सकता है और किसी भी मनहूस रात को सो के फिर मै जिन्दा न उठ सकता हू !

गोपाल० । जरूर ऐसा ही है । मैने सुना है कि उन लोगों की एक टुकड़ी के सुपुर्द सिर्फ यही काम है कि वे जगह जगह इस तरह के वम छिपाते चलें ।

फाक यह सुन अफसोस के साथ कुछ सोचने लगे मगर यकायक चौक के बोल उठे, "हां एक बात तो मैने कही ही नही ! हमारे ऊपर एक तीसरी आफत भी आई है, शायद आप उसके बारे में भी कुछ जानते हों ।"

गोपाल० । वह क्या ?

फाक० । एक तरह की अग्नि वर्षा हमारे किलो वारूदखानों फौजी कैम्पों और वारिको पर आजकल हो रही है । दूर, वहुत दूर क्षितिज के पास, कही एक वड़ी तेज रोशनी आस्मान में उठती दिखाई पड़ती है, और तव थोडी ही देर वाद आग के लुक आ के हमारे ऊपर गिरने लगते हैं । इससे भी हमें वहुत ज्यादा नुकसान पहुंचा है और खास कर हमारी फौज और रियाया का दिल इनके कारण वहुत कमजोर हो पडा है क्योंकि ये लुक देखने में वडे डरावने होते हैं ।

गोपाल० । हां इस वारे में तो मैं आप से पूरी तरह से कह सकता हूं । यह काम असल मे 'राकेट्स' का है । आपने शायद पढ़ा होगा कि जर्मनी के प्रोफेसर 'गिल्डर' राकेट के द्वारा चन्द्रमा तक जाने की वात सोच रहे है और एक दूसरे वैज्ञानिक 'काउन्ट गेडरवर्न' ने एक मोटर ईजाद की है जो इसी तरह के राकेट की सहायता से चलती है, पर वे लोग तो अभी प्रयोग के ही क्षेत्र में है, इन कम्वख्तो ने उस तर्कीव से काम भी ले डाला है । जिस तरह के 'वाण' हमारे यहा व्याह शादी में छोड़े जाते हैं न, उसी तरह के मगर उससे वहुत वड़े और शक्तिशाली 'वाण' इन लोगों ने वनाये

है जो पचासो मील तक जा सकते हैं और जिनकी नोक मे ऐसा 'फ्यूज़' लगा है कि जब चाहें वे फूट सकते और उनमे से अग्नि वर्षा हो सकती है। मैने इसका जिक्र वार वार सुना था पर मै नही समझता था कि ये किसी तरह का वास्तविक नुकसान पहुंचाने का कारण बन सकते होगे अस्तु इनके बारे मे मैने कभी भी गम्भीरता से विचार नही किया।

फाक०। इन्होंने तो बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचाया है पण्डितजी, और सो भी खास कर इसलिए कि इसका कुछ पता नही लगता कि कौन कहा से इन्हे छोडता है! खैर मुझे यही खुशी है कि आप हम लोगों को वापस मिल गए है। आपके रहते इन चीजो का कोई न कोई इलाज हम लोगो को मिल ही जायगा।

बातचीत का सिलसिला कुछ देर के लिए बन्द हुआ और गोपालशंकर ने गोविन्द को आवाज देकर पूछा, "बडी देर लग रही है गोविन्द, हमलोग अब सैगन से कितनी दूर है?" जवाब मे गोविन्द बोला, "ठीक उसके ऊपर हैं गुरूजी, और अब नीचे उतर रहा हू।" सचमुच यही बात थी और गोविन्द के इस कहने पर जब गोपालशंकर ने कोच की पीठ से उचक के पीछे वाली खिडकी की राह नीचे की तरफ झांका तो 'टाइगर' को सैगन के ऊपर और चक्कर खाते हुए नीचे की तरफ उतरते हुए पाया। दोनो आदमी, मार्शल फाक और पंडित गोपालशंकर, कौतूहल के साथ नीचे को झुक कर देखने लगे।

यकायक चौंक कर गोपालशकर बोले, "वह क्या है, वह क्या है? अरे, यह क्या हो रहा है! गोविन्द, जरा दूरबीन तो मुझे दो!" मार्शल फाक ने गोविन्द की बढ़ाई हुई दूरबीन ले के पडितजी को दे दी और पूछने लगे, "कहां क्या हो रहा है पण्डितजी?" गोपालशकर बोले, "वह, अपने ठीक नीचे, उस कनात के घेरे के अन्दर देखिए!" और तब गौर से दूरबीन लगा के देखने लगे। एक ही सायत बाद उनके घबडाए हुए कंठ से निकला, "ओह! गजब है! कोई शैतान किसी जीते जागते आदमी

पर तेल छिड़क कर उसको भून रहा है ! ओफ, गोविन्द, आगे मत बढ़ो, यहीं उतरो, उस कनाती दीवार के वगल मे जहां वह देखो एक वायुयान खड़ा है ।" गोविन्द ने जरा सा सिर हिलाया और उसी समय एक हलके झटके के साथ टाइगर ने अपना रुख घुमा दिया ।

मार्शल फाक वोले, "कहां पण्डितजी कहां ? मै तो कुछ नही देख रहा हू ? किस चीज को आप कह रहे है ? वहां आग जो सुलग रही है उसके पास कही ?" गोपालशंकर भर्राये गले से वोले, "उसके पास कहीं नही उसी के अन्दर ! लीजिए यह दूरवीन ले के देखिये । जीता जागता आदमी जलाया जा रहा है ! ओफ, हत्यारा, शैतान !"

गोपालशंकर ने अपनी दूरवीन फाक के हाथ में दे दी और दोनो हाथों से अपनी आंखें वन्द कर अपने कोच पर उठंग गए ।

× × ×

धूल के वादल उड़ाता हुआ 'टाइगर' एक सर्राटे के साथ उस मैदान मे उतरा और उतावले गोपालशकर फाक के वहुत मना करने पर भी गोविन्द के कंधे का सहारा ले के उस खेमे की तरफ वढ़े जिसके वगल से फैली हुई कनात के अन्दर से आग की लपटें तेजी के साथ उठ रही थी ।

दर्वाजे पर छः वन्दूकधारी फ्रांसीसी संतरी पहरा दे रहे थे जिन्होंने इन्हें देखते ही रुकने का हुक्म दिया और इनके न मानने पर अपनी वन्दूकें इनकी तरफ सीधी की, मगर उसी समय इनके पीछे पीछेआते हुए मार्शल फाक को देख वे कुछ सहम कर रुक गये । फाक ने कोई इशारा किया और संतरी अदव से अगल वगल हट गए । ये लोग कनात के भीतर वढे, लेकिन उसी समय रुकसम ने आकर इनका रास्ता रोकते हुए कहा, "कौन आता है ? भीतर आने की इजाजत नही है !" पर इतना कहते कहते उसकी भी निगाह मार्शल पर पड़ी और वह अदव से सैल्यूट कर खड़ा हो गया । मार्शल फाक ने रूखे स्वर मे पूछा, "यह क्या हो रहा है यहां ?"

रुकमस हिचकिचा कर चुप हो रहा । उसके मुंह से कोई साफ आवाज

न निकली, पर पण्डित गोपालशकर को इतनी ताव कहा कि उसी जगह रुके रहते ! वे दर्वाजे पर का पर्दा हटाते हुए भीतर के मैदान मे जा पहुंचे जहां होता हुआ वह क्रूर दृश्य उन्होने ऊपर से देखा था।

वह वही जगह और वही समय था जिसका हाल हम पहिले लिख आए है। मेजर डुमरे अपने वेवस शिकार के सामने खडे हुए थे जिसकी कोई कडी वात सुन उसके पेट्रोल से तर वदन में उन्होने आग लगा दी थी और इस समय गुस्से मे भरे हुए उसके वदन को किसी चीज से कोचते हुए कह रहे थे—"वता अव भी वतायेगा कि नही !" उसके वगल मे खून से नहाई हुई 'गामी' खम्भे से वधी खडी थी और अपनी वेवस आखे वन्द किए परमात्मा से अपने प्रेमी को कष्ट से शीघ्र ही मुक्ति दे देने की प्रर्थना कर रही थी, दूसरे वगल के दो खम्भो से दो मुर्दे झूल रहे थे।

यह एक ऐसा वीभत्स दृश्य था जिसने दुनिया की क्रूरता से वहुत कुछ परिचित गोपालशंकर का भी सिर घुमा दिया। क्रोध घृणा और आवेग ने उनके मुह से कोई आवाज निकलने न दी, मगर इन लोगो की आहट पा उसी समय डुमरे ने घूम कर—'यह क्या गुस्ताखी !' कहते हुए इनकी तरफ देखा, पर जिन लोगो पर उसकी निगाह पड़ी उन्हे देख एक वार वह भी सहम कर चुप खडा हो गया।

× × ×

क्रोध से वफरते गोपालशंकर कह रहे थे—

"वस वस, अपनी चलती फिरती जुवान वंद कीजिए मेजर डुमरे और अपनी उस काली करतूत की आवश्यकता वताने की कोशिश न कीजिए जिसे करते हुए किसी पिशाच का कलेजा भी काप जाता !! ओफ मै सुना करता था कि फ्रास और जर्मनी की सी. आई. डी. भेदो को जानने के लिए वड़े कठोर उपायो का अवलम्वन करती है, पर मुझे यह गुमान न था कि उसकी हद यहा तक हो सकती है ! ओफ, एक जीते जागते मनुष्य पर तेल छिडक कर भूनते हुए आपका कलेजा काप न गया ? एक सीधी

साथी कम-उम्र लड़की की वह वहादुरी, जिसने दुश्मन की दी यंत्रणा उसकी जुवान खोल देगी यह सोच अपने दांतों से अपनी जुवान काट के फेंक दी—देख के भी आपका दिल नर्म न हो गया ! सचमुच मेजर डुमरे, आप आदमी की शकल मे एक सुफेद शैतान है !!"

मेजर डुमरे का चेहरा जो गोपालशंकर की वातें सुन कुछ उतर सा गया था अव पुनः क्रोध की आभा दिखाने लगा क्योंकि यह वही जुमला था जिसे आखिरी वार उन्होंने गामी के मुंह से सुना था और नजदीक ही था कि वे कोई कड़ा जवाव गोपालशंकर को देते, पर मार्शल फाक के एक इशारे ने उन्हें रोक दिया। गोपालशंकर उसी झोंक में कहते चले गए—

"क्या इसी दिल को ले के आप प्रजा के ऊपर हुकूमत करना चाहते है ! उसके मां वाप वनना चाहते है! चाहते है कि वह आपसे प्रेम करे और आपकी हुकूमत के तावे रहे ! जरूर यह कोई अकेला उदाहरण नही होगा। ऐसी कार्रवाई आप लोग वरावर करते रहते होंगे, मगर उसकी खवर एहतियाती के साथ छिपाई जाती होगी। आपकी प्रजा जो आज विद्रोह कर रही है, जरूर इस वात की जड़ में आपकी ऐसी ही काली, नही नही सुफेद कारतूतें होंगी !!

"क्या ऐसे ही दिल को ले के आप चाहते है कि आपका राज्य फैले और उन्नत हो ! ऐसी तरकीवों से राज्य कायम होते और वढते नही, इनसे राज्य गारत होते है !!

"कालोनियल गवर्नमेंट किस तरह से की जाती है इसे देखने की इच्छा हो तो अपने पड़ोसी पर निगाह उठाइए ! अंगरेज भारत का शासन किस तरह कर रहे है इस पर गौर कीजिए ! वहां के उनके शासन मे उचित कड़ाई है तो उचित दया भी है, उचित दृढ़ता है तो उचित भविष्य-दृष्टि भी है ! हाल ही में उन्होने उस देश को जो स्वतंत्रता दी है उस पर जरा निगाह कीजिए, और तव आप लोग जिस तौर पर हुकूमत कर रहे हैं इसका उससे मुकावला कीजिए ! आज दो सौ वरसो के वाद भी क्या कभी आपने यहां की प्रजा के साथ सहानुभूति दिखाने की चेष्टा की है ? कभी

उसकी निगाह के साथ निगाह मिला कर देखने की कोशिश की है ? उसके कदम के साथ कदम मिला कर चलने की इच्छा की है ? नही, कभी नही ! कैसे की होगी, और कैसे कर ही सकते है ? आपके दिल में तो अपनी उच्च जातीयता, अपने शुद्ध रक्त, अपने सुफेद चमडे, का घमण्ड चक्कर खा रहा है, उस मोटे कवच को भेद के सहानुभूति और दया की कोई किरण आपके कलेजे तक भला फटक ही कैसे सकती है !!"

क्रोध और आवेग मे गोपालशकर इस समय पागल हो रहे थे। मार्शल फाक ने उनको शान्त करने के इरादे से उनके कंधे पर हाथ रक्खा, पर उसे झटक के वे डुमरे की तरफ लाल लाल आखें उठाए कहते चले गए—

"अभी तक मै सोचता था कि काली भूरी और पीली जातियो पर सुफेद जाति का प्रभुत्व होना प्रकृति की दया है, इससे वे उन्नत होगी और अपनी दशा सुधारेंगी, पर आज मै समझ गया कि यह परमात्मा का शाप उन पर पडा है। 'पूर्व-गौरव-संघ' के इतने दिनो के साथ ने और 'त्रिकंटक' की केवल थोड़ी सी वातो ने, मेरी आखे खोल दी। मै जान गया कि क्रूरता और वर्बरता मे आप लोग नादिरशाह और चंगेज खां से कही वढ कर है। वे लोग तो केवल शरीर के आभूषण और पीठ के कपडे उतार लिया करते थे, पर आप लोग तो शरीरों का रक्त तक खीच लेते है ! शक और हूणो की कथा तो प्राचीन इतिहास के पन्नो में छिप गई है पर आजकल के शक और हूणो की सजीव प्रतिमा मेजर डुमरे के रूप मे मेरे सामने खड़ी है !!"

डुमरे को कुछ कहने की कोशिश करते देख तड़प कर गोपालशकर वोले, "वस वस, अपनी जुवान मेरे सामने मत चलाइए ! मै आपकी और भी कितनी ही काली, नही नही, सुफेद करतूतो से, वाकिफ हो चुका हू। 'पूर्व-गौरव-संघ' ने मेरी आंखे खोल दी हैं। आपने और आपके 'एजेन्ट्स प्रोवोकेत्योर' ने जहा जहा जो जो किया है वह मुझ पर जाहिर हो चुका है ! क्या मै आपको उस सुफेद वायुयान की याद दिलाऊं जिसने 'काई-माऊ' पर पहिला वम गिराया था और जिसके यह कहने पर कि नीचे से

उस पर गोलियां चलाई गई हैं, वाकी के वायुयानों ने अपने अपने वम गिरा कर उस शताब्दियों की गोद मे पले हुए नगर को मिनटों में धूल में मिला दिया था ! या क्या मैं उस...!"

गोपालशंकर का गुस्सा पल पल में बढ़ता जाता था और उनका शरीर आवेग से कांपने लगा था। मार्शल फाक ने यह देख उन्हें शांत करने के इरादे से उनके कन्धे पर हाथ रक्खा और कहा, "शांत होइए पंडितजी, शांत होइए !" पर गोपालशंकर पर इस समय न जाने कौन सा भूत सवार हो गया था कि यद्यपि उन्होंने वहुत ही कोशिश कर अपने को काबू में किया मगर फिर तुरत ही गोविन्द की तरफ देख के कहा, "उस पापी स्थान में मैं एक पल भी रहना नही चाहता जहां ऐसा नारकीय कांड किया गया है। मुझे अपना सहारा दो और खेमे के वाहर ले चलो।" गोविन्द ने उनकी वगल में हाथ दे के उन्हें सम्भाला और सचमुच इसकी जरूरत थी क्योंकि उनके पैर लड़खड़ा रहे थे और मालूम होता था वे गिर जायेंगे। गोविन्द के कन्धे पर अपना वोझ डाल उन्होंने खेमे के वाहर जाने को कदम उठाया मगर उसी समय फाक को अपने पीछे आने के लिए घूमता देख कहा, "ठहर जाइए, आप लोग सब कोई इसी जगह ठहर जाइए, और मुझे अपने वायुयान पर वैठ अपने विचारों को एकत्र करने दीजिए। इस पैशाचिक दृश्य ने मेरा माथा घुमा दिया है। मैं जरा देर एकान्त मे वैठना चाहता हूं।"

गोपालशंकर के कहने का ढंग कुछ ऐसा था कि फाक को लाचार होकर रुक जाना पड़ा और गोविन्द का सहारा लेते हुए पण्डितजी वाहर चले आये जहां उनका वायुयान अभी तक ज्यों का त्यों खड़ा था। गोपालशंकर उसके अन्दर जा के वैठ गए और गोविन्द से वोले, "वस तुम इंजिन चलाओ और उड़ चलो। ऐसे पापियो की संगत में मै एक पल भी रहना नही चाहता। सीधे आगरे चलो—रास्ते में जहां मौका देखना पेट्रोल ले लेना।"

सौगन्ध

[१]

एक बहुत बडे और चारो तरफ से ऊंची दीवारों से घिरे हुए मैदान मे बहुत से फौजी और मुल्की अफसर इकट्ठे हैं।

ऊंचा और जिम्मेदार शायद ही कोई फ्रांसीसी अफसर ऐसा होगा जो यहा मौजूद न हो, मगर 'नेटिव' एक भी यहा पर दिखाई नही पडता जिससे सहज में ही समझा जा सकता है कि कोई बडी गूढ बात इन लोगो मे तय की जा रही है। बड़े कम्पौंड के हरेक दरवाजो और चारदीवारी के बाहर भी जिस तरह का कडा पहरा पड़ रहा है वह भी बता रहा है कि चाय-पानी की आड मे कोई गुप्त मन्त्रणा चल रही है।

ज्यादातर लोग तो चुप है मगर दो तीन आदमी उन सभों के बीच में बातें कर रहे है और इनमें से मुख्य मेजर डुमरे है जिनकी कर्कश आवाज इस समय कह रही है—

" .... मैं फिर से जोर देकर कहता हू कि अगर इस मौके पर हम लोग, फ्रासीसी लोग, दब गए तो फिर सदा के लिए इस देश से हमारे पैर उखड़ जायंगे। जिन काली जातियो पर आज दो सौ बरसो से हम हुकूमत

करते आ रहे हैं वे एक वार जव यह समझ लेंगी कि फ्रासीसियों के पैर उखड़ रहे हैं तो वड़ी ही उद्दण्ड और कड़ुई हो जायंगी, और इसे तो कहने की जरूरत ही नहीं कि हमलोगों का जो कुछ प्रभुत्व यहां पर है वह फकत 'रोव' के सवव से है। हमारा 'रोव' जिस घडी हटा वस फिर कुछ करते-घरते न वनेगा ! गिनतीमें ये नेटिव हमसे वहुत ज्यादे है, और दिमाग चाहे हमारा इस देश में काम कर रहा हो पर हमारे हाथ पैर वे ही है। वे ही हमारी पुलिस में हैं, हमारी फौज में है, हमारा मुल्की इन्तजाम उन्ही के हाथ में है और हमारी आमदनी का जरिया भी वे ही है, मै तो कहूंगा कि हमारा खून भी वे ही हैं। जिस घडी हमारा खून हमारे खिलाफ हो जायगा, जैसे ही हमारे खूनमें विप फैलने लगेगा, उसी घड़ी हमारा यह समूचा शरीरनष्ट हो जायगा !"

कह कर मेजर डुमरे जरा रुके और मौका पा उनसे कुछ हट कर वैठे हुए मार्शल फाक वोल उठे, "यह तो ठीक वात है मेजर पर आखिर हम लोग करें तो क्या करें ? कोई तर्कीव भी तो आप हमारे सामने रखिए ! क्या आप चाहते हैं कि इस देश मे कत्लेआम मचा दिया जाय ?"

डुमरे तडप कर वोले, "जी हां, करीव करीव वही मै चाहता हूं ! जव हमें पता लग गया है कि हमारी सेना और हमारे किलो पर जो 'लुक्क' आ आ कर गिर रहे हैं वे उन्ही मठों और मन्दिरों से चलाए जा रहे है जो 'वासन के मौके पर एक दम वन्द हो जाते है, तो हमारा एक मात्र कर्तव्य यह हो जाता है कि हम उन मठो और मन्दिरों को एक दम नेस्तनावूद कर दें ! हमे यह पता लग चुका है कि वे 'लुक्क' जो हमारे ऊपर फेंके जाते हैं, पचास साठ मील से ज्यादा दूर नही जा सकते, अस्तु आज तक जहां कही भी ये लुक्क गिरे हैं उनसे पचास मील के अन्दर जितने मठ और मंदिर हों उन सभों पर हमे जवर्दस्ती कब्जा कर लेना चाहिए और उनमें से जितने मे भी इस तरह के सामान वारूद आदि मिलें उन सभों को तो जमीदोज हो कर देना चाहिये। वस देखिएगा कि तुरत ही यह कार्रवाई वन्द हो जाती है, वन्द ही नही हो जाती वल्कि मै तो कहूंगा कि इन्ही मों से किसी मन्दिर या

ठम मेकै द हमारे काउन्ट शैवर भी हमें मिल जाय तो ताज्जुव नही।"

सामने वैठे लोगो मे से एक नौजवान अफसर ने धीरे से अपने वगल में वैठे एक दूसरे नौजवान से पूछा, "रुकमस, क्या यह निश्चय हो गया है कि जो लुक्क हमारे स्थानो पर आ कर गिरते है वे मन्दिरों और मठो से ही फेंके जाते है ?" रुकमस ने, क्योकि यह नौजवान रुकमस ही था, जवाव दिया "हां।" पूछने वाले ने फिर पूछा, "किस तरह मालूम हुआ ?" अपने इधर उधर जरा देख रुकमस ने धीरे से झुक के जवाव दिया, "उसी मार्शल फाक के दोस्त पुजारी 'किंग-ही' की जुवानी, मगर चुप रहो, देखो गामते कुछ कह रहा है।" सचमुच एक अधेड व्यक्ति उठ कर खडा हुआ और कुछ कहना चाहता था। नौजवान ने पूछा, "यह कौन है ?" रुकमस वोला, "यह मोशू गामते है, काई-माऊ के मजिस्ट्रेट थे जव वहां वलवा हुआ था, आज कल गवर्नमेंट के सेक्रेटरी है।"

गामते उठ कर वोला, "यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर कुछ कहने का अधिकार मेरा अनुभव मुझे देता है, कारण 'काई-माऊ' मे जव तक मैं तरह देता गया, वलवाई सिर पर ही चढ़ते गए पर जव फौजी शासन जारी किया गया, कडाई की जाने लगी, पचीस पचास मुखिया गोली का निशाना वनाए गए, वस तैसे ही सव जोश काफूर हो गया, वलवा दव गया, रिआया भीगी विल्ली वन गई ! इन पूर्वी जातियो का स्वभाव है कि जोश आता है तो शेर वन वैठती है पर कोई चपत रसीद कर देता है तो म्याऊं-म्याऊं करने लगती है। अगर हमें इस मुल्क पर अपनी हुकूमत जारी रखनी है तो हमें मौके वेमौके कडाई करने को तैयार रहना पड़ेगा। मेजर डुमरे जो कुछ कह रहे हैं वह वहुत ठीक है ! अगर हम सरहद पर के सव मन्दिर और मठ अपने कव्जे में कर लें और जिस जिस जगह दंगा फरेव का निशान पाया जाय उस उसको जमींदोज कर वहा के रहने वालों को फांसी चढा दें तो कमसे कम दुश्मन की एक कार्रवाई वे लुक्क आने तो जरूर वन्द हो जायगे, नही तो आप देखियेगा कि आफत दिन पर दिन वढ़ती ही चली जायगी।"

गामते इतना कह बैठ गया, मगर उसी समय एक दूसरा वृद्ध व्यक्ति जो अपनी पौशाक से कोई फौजी सेनापति जान पडता था उठा और सिर हिला कर बोला, "नही, कभी नही, मै मोशू गामते की राय से बिल्कुल इत्तफाक नही करता।"

रुकमस की बगल में बैठे नौजवान ने पुनः उसका हाथ दबाया और धीरे से पूछा, "यह कौन है ?" रुकमस बोला, "यह जेनरल फ्रांसिस है। 'काई-माऊ' का बलवा शान्त करने के लिए भेजे गये थे मगर असफल रहे थे। जब मार्शल फाक खुद वहां गए तभी सब उत्पात ठण्डा हुआ।"

मार्शल फाक ने पूछा, "आपकी क्या राय है जनरल फ्रांसिस ?" जनरल ने कहा, "कड़ाई और क्रूरता तभी काम में लानी चाहिये जब यह समझ लिया जाय कि और कोई उपाय नही रह गया है। वह एक तरह पर गवर्नमेंट का आखिरी शस्त्र होना चाहिए। जो गवर्नमेंट चाहती है कि देश पर हमारी हुकूमत बनी रहे उसे इन हथियारों का प्रयोग बहुत किफा-यत के साथ करना चाहिए। आप यह निश्चय समझ लीजिए कि जैसे ही आपने उन पवित्र मठों और मन्दिरों पर हमला किया जो विदेशी क छाया पडने मात्र से अपवित्र हो जाते है, वैसे ही बाकी रिआया पागल हो उठेगी—धर्मान्ध होकर बलवा कर बैठेगी। अभी तक कम से कम यहा की साधारण जनता शान्त बैठी हुई है। उस समय यह भी हमारी दुश्मन हो जायगी और उसका दमन भी आपको करना पडेगा। बस वह घड़ी फ्रांस के इस देश से अपना पैर बाहर उठाने की घडी साबित होगी यह आप लोग अच्छी तरह मन में समझ ले।"

गामते के होठों पर तुच्छता-सूचक मुस्कुराहट नजर पडी, और भी कई नौजवान अफसरो के होठों पर घृणा की हंसी खेल गई, कुछ अस्पष्ट कण्ठ धीरे से 'काई-माऊ' कह उठे—पर वृद्ध जनरल यह सब देख सुन तडप कर बोला, "मै जानता हू कि मेरीराय आप गर्म खून वालों की राय से नहीं मिलेगी, और मुझे यह याद है कि 'काई-माऊ' में मै असफलहुआ

था, पर इससे मेरी वात कट नही सकती। स्वयम् मेजर डुमरे कह चुके हैं और हम सब लोग अच्छी तरह जानते भी है कि फ्रांसीसी इस विशाल देश मे केवल मुट्ठी भर है, और हमारे हाथ पैर आंख नाक और कान यहा के नेटिव लोग ही हैं। अगर सचमुच सच्चे दिल से वे लोग हमसे नाराज हो जायं तो हम लोग एक दिन क्या एक घडी भी यहा टिक नही सकते। आप लोग हसिए नही वल्कि गम्भीरता के साथ अपने कलेजो पर हाथ रख के पूछिए कि जो कुछ मै कह रहा हू वह ठीक है या नही ?"

और लोग तो चुप रहे मगर मेजर डुमरे ने जवाव दिया, "आप जो कुछ कह रहे है वह वहुत ठीक है जनरल, मगर आप जरा यह भी तो सोचने का कष्ट कीजिए कि ये नेटिव लोग हमारे हाथ पांव नाक कान और आंख का काम क्यों कर रहे है ? इसका कारण है—डर, केवल डर ! हमसे वे डरते हैं, इसीलिए हमारी गुलामी कर रहे है। जिस रोज वह डर, हमारा डर, उनके दिल से निकल जायगा उसी रोज वे हमारे गुलाम भी न रह जाएंगे। उस समय हमें स्वयम् ही अपना पानी भरना और अपनी लकड़ी काटनी पडेगी !"

गामते चिल्ला के वोला,—"वेशक यही वात है, वेशक यही वात है ! और हमारा डर इसलिये इन नेटिवो के दिल में है कि हम उन पर कडाई करने की ताकत रखते है, उनका केवल माल ही नही वल्कि जान भी ले लेने की कुदरत रखते है !"

फ्रांसिस वोले, "ठीक है, मगर कड़ाई और जुल्म में फर्क है ! यहां के मन्दिर और मठ उजाड देना नेटिवो के ऊपर, उनके दिलो के ऊपर, जुल्म करना होगा।" मेजर डुमरे ने कडक कर जवाव दिया, "वह जुल्म नही नीति होगी !" फ्रान्सिस चीख के वोले, "वेशक, उसी तरह की नीति जिस तरह की नीति ने हमारे एक सच्चे सहायक और कुछ वास्तविक मदद पहुचा सकने की कुदरत रखने वाले दोस्त गोपालशंकर को हमसे जुदा कर दिया !"

वहस गरम हो गई थी और चेहरे लाल हो उठे थे मगर गोपालशंकर

के नाम ने सब का जोश ठंढा कर दिया। कितने ही सिर नीचे झुक गए, कितने ही चेहरे सुफेद हो गए। मण्डली में सन्नाटा छा गया।

रुकमस के साथी ने उससे पूछा, "यह गोपालशकर कौन था?" रुकमस कुछ चिढ़ कर बोला, "एक मूर्ख हिन्दू वैज्ञानिक, जिसे हम लोग जरूरत से ज्यादा अक्लमन्द समझते थे पर जो पूरा डरपोक निकला! मगर तुम क्या.........?" लेकिन उसकी बात खतम न हो सकी। गामते बोल उठा, "किसी एक आदमी के ऊपर फ्रान्सीसी शासन मुनहसिर नही है जेनरल फ्रांसिस, जिस दिन वह घड़ी आ जायगी कि एक आदमी की मदद हमें बना और एक आदमी की दुश्मनी हमें बिगाड सकेगी, उसी दिन हमें समझ लेना पड़ेगा कि हम अब शासन करने योग्य नही रहे।"

कई कण्ठ बोल उठे, "बेशक, बेशक!" पर फ्रासिस गुस्से से बोले, "बहुत से 'जीवो' के बीच में केवल एक ही 'मनुष्य' होता है। नेपोलियन एक था, वाशिंगटन भी एक ही था, फ्रास का प्रधान मन्त्री इस समय एक ही है, और अमेरिका का प्रेसीडेन्ट भी एक ही है! बाकी सब केवल उसके सहायक उसे राय देने वाले, उसकी रोशनी मे अपना चेहरा चमकाने वाले है! और तो और हमारे मेजर डुमरे भी एक ही है!" गामते चीख के बोला, "और जेनरल फ्रासिस भी अकेले है!"

बहस को व्यक्तिगत रूप धारण करते और वक्ताओं का मिजाज गर्म होते हुए देख मार्शल फाक सभों को शान्त करते हुए बोले, "गरम न होइये, हम लोग अपने शत्रुओं पर फतह पाने की तर्कीब सोचने यहां इकट्ठे हुए हैं, आपस में झगडनेके लिए नही। मै तो यह कहूंगा कि गोपालशंकर वाला मामला एक दुःखप्रद आकस्मिक घटना थी। अगर कुछ सावधानी, कुछ ठढक से काम लिया जाता तो वैसा न हो पाता। पण्डित गोपालशंकर ने हमारी मदद सच्चे दिल ओर मजबूत कलेजे से की थी और उनसे और भी अधिक मदद मिलने का वक्त अब आया था। मगर अफसोस, हमारे एक साथी के असामयिक पर सकारण गुस्से और पण्डितजी के जख्मी बदन के सबब से

कमजोर हुए भए दिमाग के आकस्मिक विस्फोट ने वह दुःखद घटना घटा दी। मगर मैंने अब भी उनकी आशा छोडी नही है और मैं चाहता हूं कि उनका जिक्र इस वहस के वीच में न आवे। मैं तो आप लोगों से.... "

मार्शल फाक की वात समाप्त न हो पाई—

यकायक ऊंचे आकाश में एक सर्राटा सुन पडा और कोई चमकती हुई चीज विजली की तेजी से गिर कर और जमीन में कुछ दूर तक धंस कर सीधी खडी हो गई। यह लोहे का एक चमकता हुआ त्रिशूल था जिसकी निचली नोक तो मट्टी में धंस गई थी पर ऊपर के तीनो फलो के साथ लटकती हुई डिविए की शकल की एक गोल काली काली चीज कुछ तारो से वधी इधर से उधर झूल रही थी। वह तो कहिए कुशल हुई कि यह त्रिशूल वहा वैठे इतने व्यक्तियो में से किसी के ऊपर नही गिरा नही तो उसका ब्रह्माण्ड ही फोड देता फिर भी सव के सव लोग ताज्जुव और डर के साथ ऊपर की ओर देखने लगे और मार्शल फाक के मुंह से घव-ड़ाहट के साथ निकला, "यह क्या वला है !"

आश्चर्य भरी निगाहें ऊपर को उठ गईं पर ऊपर का नीला आस्मान विल्कुल साफ था, कही एक टुकडा वादल का भी दिखाई नही पड़ रहा था। इधर उधर चारो तरफ गरदनें घुमाने से भी कुछ नजर न आया और लोग ताज्जुव के साथ एक दूसरे से पूछने लगे, "यह किसने फेंका ! यह किसने फेका !!"

मार्शल फाक और उनके साथ साथ वहुतो का यह खयाल हुआ कि शायद चारदीवारी के वाहर से किसी ने यह शैतानी की है, और इसकी जाच के लिये फाटक पर खडे सार्जन्टो मे से एक को वुला मार्शल उससे कुछ कहा ही चाहते थे कि यकायक चमक कर रुक गये। केवल वे ही नही वल्कि और लोग भी ताज्जुव और डर के साथ उस त्रिशूल की तरफ देखने लगे क्योकि उस तरफ से यकायक एक हंसी की आवाज निकलती मालूम हुई थी।

मार्शल ने घवडाहट के साथ इधर से उधर देखा और कहा, "यह कौन

हंसा !" त्रिशूल के तरफ से आवाज आई—"मै !!"

क्या उनकी आंखें और उनके कान उन्हें धोखा दे रहे थे ! क्या वह लोहे का त्रिशूल वोल सकता था ? मार्शल को अपनी इन्द्रियों पर विश्वास न हुआ और उन्होंने फिर पूछा, "यह कौन वोला ?" पुनः त्रिशूल की तरफ से आवाज आई, "मैं ! मैं तुम लोगों से कुछ वातें करना चाहता हूँ ।"

मार्शल का कलेजा धड़क उठा पर उसे सम्हाल उन्होंने पूछा, "तुम कौन हो और कहां हो ?"

आवाज आई, "मैं पूर्व-गौरव-संघ का एक अधिकारी हू और अपने अलोपी वायुयान पर तुम लोगों से दो हजार फिट ऊंचे पर उड रहा हूं ।"

घवड़ाई हुई गरदनें पुनः ऊपर की तरफ उठी पर वहां कही कुछ न था । ऊपर का आकाश निर्मल, साफ, नीला । मार्शल ने अपनी घवड़ाहट को दवाते हुए पूछा, "तुम वहां क्या कर रहे हो ?" जवाव आया, "मै तुम लोगों की वातें सुनने के लिए भेजा गया था और अव तुमको एक सन्देशा सुना कर जाना चाहता हूँ ।"

आश्चर्य से मार्शल फाक वोले, "क्या तुम इतने ऊंचे से हम लोगों की वातें सुन सकते हो ?" जवाव आया, "वहुत अच्छी तरह से ।"

मार्शल० । तव यह त्रिशूल तुमने क्यों फेंका है ?

जवाव० । तुम लोगों को अपनी वात सुनाने के लिए ! अपने यंत्रों की मदद से अव तक मै यहां से तुम्हारी वातें सुन तो सकता था पर अपनी तुम तक पहुंचा नही सकता था इसीलिये उसे फेंकना पड़ा है । उसके साथ लटकती डिव्वी मेरी वात तुम लोगों तक पहुंचावेगी ।

कुछ सोच कर मार्शल ने कहा "अच्छा कहो तुम क्या कहना चाहते हो ?" त्रिशूल ने जवाव दिया, "तुम्हारे मेजर डुमरे ने हमारे चार साथियों को वड़ी वुरी तरह से यंत्रणा दे दे के मारा है, अस्तु उसे भी उसी तरह की तकलीफ दे के मारने की हमारे संघ ने आज्ञा दी है । उसे पांच मिनट की मोहलत दी जाती है, इस वीच में वह अपने वचाव का जो भी चाहे

इन्तजाम कर ले। पांच मिनट के बाद मै उसे उठा ले जाऊंगा।"

मीटिंग मे सन्नाटा हो गया। सब लोग एक दूसरे की तरफ देखने लगे।

कुछ देर तक कोई कुछ न बोला, इसके बाद किसी दबे हुए गले की आवाज सुन पडी 'क्या मेजर भीतर चलना पसन्द करेंगे?" मगर मेजर डुमरे ने लाल आखे करके कहा, "कदापि नही!" गामते तड़प के बोला, "किसकी मजाल है कि हमारे रहते मेजर को ले जा सके?" कई नौजवान बोल उठे—"किसी की नही!" और एक नौजवान अफसर ने गुस्से के साथ हाथ बढा कर उस त्रिशूल को उखाड कर फेंक देना चाहा पर अफसोस, उस पर हाथ लगाने के साथ ही वह बडे जोर से चिल्लाया और तब छटक कर जमीन पर धडाम से गिर गया। सहानुभूति-पूर्ण हाथ उसे उठाने को बढे पर उसके प्राण पखेरू उड चुके थे।

त्रिशूल मे मे आवाज आई, "खबरदार, जो हमारे त्रिशूल को छूएगा उसकी यही गति होगी!" और लोग सहम कर डरे हुए उसकी तरफ देखने लगे। सब तरफ सन्नाटा छा गया। किसी को कुछ सूझता न था कि क्या करे। एक अनदेखी आवाज के डर से इतने आदमियो का उस मैदान से भाग जाना कायरता थी, वहा बैठे रहने पर यह भय था कि उनका अदृश्य दुश्मन न जाने कब किस तरह का वार उन पर करे। सब के सब किंकर्तव्यविमूढ की तरह वहा निश्चेष्ट बैठे रह गए।

यकायक आवाज आई—"बस, पाच मिनट हो गया। डुमरे, आगे बढो!"

इसके साथ ही ऊपर आकाश से कोई दूसरी चमकती हुई चीज बड़ी तेजी के साथ नीचे को झपटी। लोगो को तो ऐसा जान पडा कि वह कोई बिजली की लपट थी, मगर नहीं, वह एक बहुत बडा फौलादी पंजा था जो अपनी भीपण फैली हुई उंगलियो से मेजर डुमरे पर आ गिरा था। जिस तरह कोई चील किसी मेढक पर झपटती और उसे अपने पजो मे पकड कर उड जाती है, करीब करीब उसी तेजी झपट और तड़प से इस पंजे ने डुमरे को पकड लिया और तब ऊपर को उठ चला। उस ससय लोगो ने देखा कि

उसके साथ एक वारीक तार भी वंधी हुई है जिसके सहारे वह ऊपर से गिरा था और अब पुन: ऊपर ही को उठा जा रहा है। एकमस ने सब से पहिले इस बात को देखा और देखने के साथ ही उसने कमर से तलवार निकाल कर उस तार पर चलाई, पर अफसोस, वह जरा सा पिछड़ गया और उसका हाथ जरा सा पीछे रह गया। दूसरे क्षण मे तो डुमरे जमीन से कई गज ऊंचे उठ चुका था और ठीक मेढक की ही तरह लटकता और चारो हाथ पाव झुलाता ऊपर को उठता जा रहा था।

सड़ासड़ कई पिस्तौलें निकल पड़ी और ऊपर आस्मान की तरफ ताक ताक कर चलाई जाने लगी। एक दो आदमियों ने अपनी राइफिलें भी ऊपर को दागनी शुरू की, मगर किसी का कोई नतीजा न हुआ और देखते देखते डुमरे इतना ऊंचा उठ गया कि नीचे से किसी छोटी चिड़िया की तरह दीख पड़ने लगा।

अफसोस की सर्द आहें लोगों के कलेजो को फोड कर निकल पडी। कितने ही कण्ठ वोल उठे, "हम इतने आदमियों के बीच में से दुश्मन अपने शिकार को ले गया और हम लोग कुछ न कर सके!" लोग अपनी असफलता पर दात पीसने लगे।

त्रिशूल मे से आवाज आई, "धन्यवाद, मेरा काम पूरा हो गया अब मै जाता हू।"

मार्शल फाक ने पूछा, "क्या डुमरे तुम्हारे यान पर पहुंच गए?" जवाव मिला, "हा।" वास्तव मे ऊपर देखने से अब डुमरे कही दिखाई न पड़ रहा था।

मार्शल वोले, "तुम्हारे इसपंजे की ताकत विचित्र है, दुश्मन।" त्रिशूल मे से आवाज आई, "कुछ भी नही, हमारे अलोपी वायुयान केवल अलोप ही नही हो जाते वल्कि एक जगह पर खडे भी रह सकते है और इसी से हम लोग ठीक निशाने पर जिस तरह वम गिरा सकते है उस तरह तुम्हारे यान नही गिरा सकते। इसका भी नमूना तुम लोगों को जल्द मिलेगा, घवराओ नही!" एक अट्टहास की ध्वनि सुनाई पड़ी, आकाश मे एक सर्राटे

की आवाज आई, जरा सा धूआ एक जगह दिखाई पड़ा और तव तेजी से जाते हुए एक वायुयान की हलकी आभा वहुत ऊंचे आकाश मे नजर आई।

इसी समय नीचे भी एक तीक्ष्ण शब्द सुनाई पडा। लोगो ने देखा कि उस त्रिशूल के साथ जो डिविया लटक रही थी उसके अन्दर से आग की एक ज्वाला निकली जिससे वह समूची डिव्वी जल उठी। कुछ ही क्षण वाद वह राख होकर गिर पड़ी। केवल वह त्रिशूल उस जगह मानो त्रिकण्टक की याद दिलाता खडा रह गया।

[२]

सुवह के वादलो की ओट से किसी नव-वधू की भांति झाकती हुई सुफेदो को पीठ दिए दो सवार अपने घोडे दौडाते चले जा रहे है।

ये कहा से आ रहे या किस तरफ को जा रहे है यह तो हम नही जानते पर ये हैं कौन यह जरूर जानते है और आपको वता भी सकते है। ये दोनो सवार मार्शल फाक और गामते है और इनकी हालत यह भी वता रही है कि यह वहुत दूर से सफर करते चले आ रहे है। इस समय जिस तरफ इनके घोड़ो का मुंह है उधर कुछ पहाडिया झलक दिखाने लगी है और अन्दाज से जान पडता है कि वहा ही उन दोनो को जाना भी है।

पीछे के आस्मान की तरफ एक निगाह घुमा फाक वोले, "इतनी जल्दी करने पर भी आखिर देर हो ही गई।" जिसके जवाव मे गामते वोला, "यह पथरीला जंगली रास्ता हमारे घोडो को उतना तेज नही चलने देता जितना कि हम चाहते हैं।" फाक ने कहा, "अव मैदान कुछ साफ मिला है, रोशनी भी वढ रही है, घोडा तेज करो।" "वहुत खूव।" कह गामते ने अपने घोडे को एड लगाई और दोनो सरपट जाने जगे।

जिस समय सूर्य की पहिली किरणें निकल कर उस पहाड़ की चोटी पर पडी उसी समय हमारेये सवार भी उसकी तली मे जा पहुचे और पत्थरों के एक ढेर के पास अपने घोडे को रोक कर मार्शल अपने माथे का पसीना पोछते हुए वोले, "अव देखा चाहिए उस पुजारी से भेंट भी होती है कि

नही ।" गामते ने पूछा,"क्या मैं सीटी वजाऊं ?" फाक ने कहा,"नही, अगर अभी तक यहां होगा तो उसने हम लोगों को जरूर ही देख भी लिया होगा और आपसे आप आ पहुंचेगा ।"

वास्तव मे ऐसा ही था और मार्शल फाक की वात समाप्त नही हुई थी कि पत्थर की एक वहुत वड़ी चट्टान की आड़ से निकल कर आते हुए पुजारी किंग-ही पर दोनों की निगाहें पड़ी । उसको देखते ही फाक और उनकी देखा देखी गामते भी अपने घोड़े से उतर पड़ा और जव वह पास आ गया तो फाक ने वड़ी खातिरदारी के साथ उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "गुड-मार्निंग पुजारी साहव, कहिए क्या हुक्म है ?"

गामते की तरफ सन्देह की दृष्टि से देख के पुजारी वोला, "क्या यह व्यक्ति.......?" फाक ने जवाव दिया, "इन्हे आप नही जानते ? ये काई-माऊ के मजिस्ट्रेट थे, आज कल गवर्नमेंट के सेक्रेटरी की जगह पर काम कर रहे हैं । इनके सामने कुछ भी कहने मे परहेज मत करो पुजारी और जल्दी वताओ कि क्या कोई जरूरी खवर है ?"

इधर उधर देख पुजारी किंग-ही वोला, "हां एक नही कई कई खवरें हैं । पहिले तो यह कि श्याम-नरेश महावज्रायुध को श्याम के राजसिंहासन से हटा 'पूर्व-गौरव-संघ' किसी दूसरे को उस पर वैठाना चाहता है ।"

फाक यह सुनते ही चमक पडे और उनकी तथा गामते की एक वार चार आंखे हुई, फिर उन्होंने कहा, ' मगर यह क्यों ?"

पुजारी० । क्योंकि इन नौजवानो की राय मे श्याम देश के मामले मे वे आप विदेशियो के साथ उस कडाई से पेश नही आ रहे हैं जिससे कि आना चाहिए ।

फाक० । उनको हटा कर ये लोग किसको सिंहासन पर वैठावेंगे ? राजकुमार प्रजादीपक को ?

पुजारी० । नही, वे राजा वनना नही चाहते । वर्तमान महाराज किसी महल मे कैद कर दिये जायंगे और उनकी जगह उनके भाई वड़े महाराज

के देश-वहिष्कृत लडके 'मंगर-सिं' तख्त पर वैठाए जायंगे।

फाक०। (घवडा कर) 'मंगर-सिं' श्याम के राज्य-सिहासन पर वैठाया जायगा !!

पुजारी०। हा, उस पर श्याम की सेना और यहां के सरदारो का कितना प्रेम है यह तो आप जानते ही होगे, और इसकी भी आपको खवर होगी ही कि आप लोगों को वह किस निगाह से देखता है ?

फाक०। हां खूव अच्छी तरह से। कम्वोडिया की लडाई जीतने पर उसका नाम रोव और दवदवा वढते देख के ही तो फ्रान्स सरकार ने श्याम नरेश पर दवाव डाल उसे देश-निकाला दिलवाया था। हम लोगो को वह फूटी आखो से भी देखना पसन्द नही करता। मगर क्या आप सही कहते हैं ? क्या सचमुच उसे तख्त पर वैठाने की कोशिश हो रही है ?

पुजारी०। कोशिश नही पूरी तैयारी हो गई है, और सच तो यह है कि महाराज महावज्रायुध स्वयम् ही उसके लिये सिहासन से हट जाया चाहते है। उन्हे आज कल दोनो तरफ से कष्ट उठाना पड रहा है। एक तरफ तो आप फ्रांसीसी लोग तरह तरह का दवाव उन पर डालते और धमकिया देते रहते है, और दूसरी तरफ से उनके सरदार लोग। वे एकदम परेशान हो गये है और इस समय सिहासन से हट के उन्हें प्रसन्नता ही होगी।

फाक०। मगर प्रजा ? श्याम की प्रजा ...?

पुजारी०। श्याम की प्रजा जिस समय 'मंगर-सिं' के सिहासन पर वैठने का हाल सुनेगी हर्ष से पागल हो उठेगी !

फाक इस वात को सुन चिन्तित भाव से सिर नीचा कर कुछ देर सोचते रहे इसके वाद वोले, "अच्छा और क्या खवर है ?"

पुजारी०। 'मंगर-सिं' तो सिहासन पर वैठते ही आप लोगो के विरुद्ध युद्ध करने की तैयारी शुरू कर देगा और इधर तव से 'पूर्व-गौरव-संघ' आप लोगो को सन्त्रस्त और भयभीत करता रहेगा। 'त्रिकंटक' से मिले हुए भयानक अस्त्रो की सहायता से वह आप लोगों को ऐसा परेशान करेगा कि

या तो आपको श्याम नरेश की बातें ही माननी पडेंगी और या फिर दो तरफी मार मे पिस जाना पड़ेगा।

फाक०। (दांत पीस कर) खैर देखा जायगा कि कौन किसको पीसता है! और कुछ?

पुजारी०। तीन दिन के भीतर आपकी फौज पर उनका कोई नया हमला होगा और शायद जंगी जहाजो, किलों, बारूद और रसद के खजानों तथा वायुयानों को भी अपाहिज बना देने की कोई चेष्टा होगी। सुनने मे तो यह आया है कि राजधानी सैगन बमो की मार से जमींदोज कर दी जायगी।

फाक०। (मूंछें चबाते हुए) हू! अच्छा और?

पुजारी०। सब से आखिरी खबर यह कि अब मैं आप लोगो के किसी काम का नहीं रह गया। यों तो मुझ पर उन लोगो को शुरू से ही शक है, मगर कल मुझे पूर्व-गौरव-संघ का एक परवाना मिला है जिसमे लिखा है कि अगर अड़तालीस घण्टे के भीतर 'आहो की गुफा' छोड़ कर इस देश की सीमा के बाहर न चले जाओगे तो तुम्हारी दोनो आखे फोड़ दी जायंगी, कान बहरे कर दिये जायंगे, और हाथ काट डाले जायंगे जिसमे अब आगे तुम हम लोगों का कोई भेद दुश्मन को बता न सको।

फाक०। (घबड़ा कर) ऐसा!

पुजारी०। बिल्कुल ऐसा ही।

फाक०। तब? आपने क्या निश्चय किया?

पुजारी०। मैंने भगवान सीह फुंग का पूजन करके उनकी आज्ञा मांगी और उन्होने आदेश दिया कि तुरत बाहर चले जाओ, अस्तु मैंने सीमा के बाहर चले जाने का निश्चय किया है। अब इस समय कठिनता कुछ है तो बस मेरी लड़की के बारे मे।

फाक०। वह क्या?

पुजारी०। मेरी लड़की तारा मेरे साथ जाने को तैयार नहीं है। वह कहती है कि भगवान सीह-फुंग को छोड़ के न जायगी। अब उस अबोध

लडकी को इन जगली विदेशियो के बीच मे अकेला निःसहाय छोड के कैसे जांऊं बस इसी पशोपेश मे पड़ा हुआ हू ।

फाक० । मगर मुझे तो याद आता है कि आप एक दफे अपनी लडकी की शिकायत मे कह रहे थे कि वह यहां आये हुए परदेसियो से वहुत मेल जोल रखती है, वल्कि किसी एक परदेशी नौज......।

पुजारी० । (क्रोध की मुद्रा से) हां एक अजीतसिंह से वहुत मेल जोल वढा चुकी थी, मगर मैंने उसका इलाज कर दिया । अव वह मेरे क्रोध के डर से उससे बोलती चालती नही मगर फिर भी उस गुफा और भगवान की मूर्ति को छोड के मेरे साथ देश के वाहर निकल चलने को तैयार नही ।

पुजारी शायद और कुछ कहता मगर फाक इस समय उसकी मुसीवतों का वोझ उठाने को तैयार न थे । उन्होने अफसोस की मुद्रा से कहा, "यह तो आपने सव से बुरी खवर सुनाई पुजारीजी, आपके न रहने से तो हम लोगों का एक अंग ही मारा जायगा । आपको कुछ राय देने की तो मैं जुर्रत नही कर सकता क्योंकि आप स्वयम् वुद्धिमान और मौका देख के काम करने वाले आदमी हैं लेकिन इतना कह सकता हू कि यदि आप हमारे यहा आना चाहें तो हम लोग आपकी हिफाजत का पूरा प्रवन्ध......"

यकायक एक तरफ से आवाज आई—"आप लोग पुजारीजी की हिफाजत क्या कीजियेगा, पहिले अपने को तो वचा लीजिये !" और तव किसी के खिलखिला के हंसने की आवाज सुन पड़ी । पुजारी किंग-ही तो यह आवाज सुनते ही पीला पड गया मगर फाक और गामते गौर से इधर उधर देखने लगे । यकायक कुछ दूर पर भागते हुए किसी आदमी की एक झलक नजर आई मगर वह जो कोई भी हो इस जल्दी से निकल गया कि फाक अपनी पिस्तौल पेटी से निकालते ही रह गये और वह मार के वाहर हो कर चट्टानो की आड़ मे कही गायव हो गया । गामते के मुंह से निकला, "हम लोग देख लिए गए, मुमकिन है लौटती वक्त हम पर हमला हो !" उधर पुजारी के कापते हुए होठो से निकला, "मुझे आप लोगो से वातें

करते इन्होंने देख लिया ! अभी तक जिस बात का केवल शक ही शक था उसका निश्चय हो जाने से न जाने मेरी क्या गत वे दुष्ट करें !"

जल्दी जल्दी कुछ सोच फाक ने कहा, इस वक्त सब से बेहतर यही होगा कि आप भी हमारे साथ ही चले चलिए। यहा से सिर्फ पांच मील पर एक दस्ता पचास सिपाहियो का मेरी राह देख रहा है, वहां तक पहुच जाने पर हमारा या आपका कोई कुछ......"

पुजारी०। (सिर हिला कर) नही, मुझे अभी बहुत से काम करने है और मैं अपनी हिफाजत भी कर सकता हू, पर आप लोग अब यहां एक पल भी न रुकिए और तुरत वापस लौट जाइए। अगर मुमकिन हुआ तो मैं परसों किसी समय आपसे मिलूंगा।

जल्दी जल्दी फाक और किंग-ही मे कुछ बातें और हुईं और तब दोनो दो तरफ को हो गये। पुजारी तो पीछे हटा और चट्टानो के बीच मे घूमता फिरता किसी गुप्त गुफा के अन्दर घुस कर गायब हो गया, उधर फाक तथा गामते अपने अपने घोडों पर सवार होकर पीछे को लौटे। इनके थके हुए घोडे उस तेजी से चल नही सकते थे जैसा कि यह चाहते थे फिर भी इन्होंने बीच का फासला बहुत जल्दी ही तय किया और उस फौजी दस्ते से जा मिले जिसे अपने पीछे एक घने जंगल मे छिपा हुआ छोड़ गये थे। रास्ते में यद्यपि दोनों ही को डर लगा हुआ था फिर भी दुश्मन ने किसी तरह का कोई हमला इन पर न किया और कुछ देर सुस्ता अपने घोड़े बदलने के बाद फाक और गामते ने फिर सफर शुरू किया।

[३]

मार्शल फाक का घोड़ा यकायक चमक पडा जिससे चौक कर उन्होने सिर उठाया और सामने की तरफ देखा। सडक के बगल की किसी खाई से निकल कर एक अजीब सूरत यकायक इनकी तरफ बढ़ रही थी जिसकी वहशियाना शकल देख के ही उनका घोड़ा बिचका था और जिसकी तरफ देख मार्शल भी चमक उठे। कुछ देर तक वे बडे गौर से उसकी तरफ देखते

रहे और तव यकायक एक चीख मार कर—"काउन्ट शैवर, आप की यह दशा !" कहते हुए उसकी तरफ झपटे ।

सचमुच वे काउन्ट शैवर ही थे, मगर इस समय क्या हालत उनकी हो रही थी ! कमर के ऊपर का हिस्सा तो एक दम नंगा, मगर कमर मे एक हाफ पैंट पडा हुआ, सो भी फटा चिथा और वहुत ही पुराना । पैर नंगे, दाढी वढी हुई, सिर के वालो मे सेरो मट्टी पड़ी हुई, और हाथ पाव आदि पर इतनी गर्द कि उनकी आड से वे वहुत से घाव नजर नही आते थे जो उनके समूचे वदन पर पडे हुए थे और जिनमे से कई मे से खून निकल निकल कर जम चुका था । मार्शल फाक तो उनकी यह दशा देखते ही घवडा उठे और घोडे से कूद दौडते हुए उनके पास जा उन्हें अपने वदन से चिमटाते हुए वडी व्यग्रता से वोले,"काउन्ट, आप यहां कहा ? और यह आपकी कैसी दशा ? क्या दुश्मनो ने आपकी यह गत की है ?"

काउन्ट शैवर वोले, "नही, एक जंगली हाथी ने मुझे दौडाया जिससे वचने की कोई तरकीव न देख मैंने एक नागफनी के जंगल मे घुस के अपने प्राण वचाए । उसी से मेरी यह हालत हो गई ।"

मार्शल ने जल्दी जल्दी अपने वदन से कोट उतारते हुए कहा, "और आपके कपडे ?" काउन्ट ने जवाव दिया, "वे तो दुश्मन ने उतार लिये थे ।"

यह कहते कहते काउन्ट का वदन काप गया और उनका चेहरा इस तरह पीला हो गया मानो किसी त्रासदायक घटना की याद उन्हें आ गई हो । उन्होने जरा देर के लिए अपनी आखें वन्द कर ली । मार्शल फाक उनकी यह हालत देख अपने साथियो की तरफ घूम कर वोले, "हम लोगों का डेरा इस समय यही पडेगा । जल्दी कोई आड की जगह तैयार करो और (हाथ से वता कर) वह जो गाव दिखाई पड़ रहा है कुछ लोग वहां जा कर चारपाई और खाने पीने का सामान ले आओ । काउन्ट जव नहा धो और खा पीकर अच्छी तरह सुस्ता लेंगे तव आगे का सफर शुरू होगा ।"

वात के साथ ही कुछ सवार तो उस गाव की तरफ दौड़ गए और वाकी

उसी जगह जंग ा से सामान काट काट कर एक झोपड़ी तैयार करने की फिक्र में लग गए। वड़े वड़े पत्तों वाले पेडो की उस जगह कोई कमी न थी जिनकी मदद से देखते देखते वहां एक झोपड़ी वन कर तैयार हो गई। पास ही में एक जंगली नाला वह रहा था। मार्शल फाक ने वहां ले जाकर काउन्ट को स्नान कराया और अपने कपड़े पहिनने को उन्हें दिये, तब तक एक चारपाई और कुछ विछावन का सामान आ गया जिस पर झोपड़े के अन्दर काउन्ट लिटा दिये गए और उनको आराम करने के लिए कह मार्शल फाक वाहर निकल आए। इस वीच मे उन्होंने एक भी सवाल काउन्ट से न किया जिनकी हालत से ही समझ ग े थे कि कोई वहुत ही त्रासदायी घटना उन पर से गुजरी है और विना कुछ आराम पाये उनसे कोई हाल पूछना उन्हें कष्ट पहुचांना होगा।

× × ×

खाट पर गिरते ही काउन्ट गहरी नीद मे डूव गए जिससे वे चार घंटे के वाद जागे। मार्शल ने उन्हें भोजन कराया और जव सव तरह से निश्चिन्त होकर वे वैठे तो एक सिगार देते हुए कहा, "अव तो आपकी तवीयत कुछ सम्हल गई होगी?"

इस समय इन दोनों के सिवाय झोपडे में और कोई न था। काउन्ट ने इधर उधर देख मार्शल को अपने वगल में खाट पर वैठने का इशारा किया और वोले, "हा और मै चाहता हूं कि सवसे पहिले अपना किस्सा आपसे कह सुनाऊं।'

फाक काउन्ट के वगल में वैठ गये जिनके आंख वन्द करके एक वार पुनः सिहर जाने ने उन्हें वता दिया कि पिछली घटनाओं की याद अव तक उन्हें सता रही है। कह देने से उनके दिमाग का वोझ कुछ कम हो जायगा इस खयाल से इस वक्त काउन्ट के मन की करना ही उन्हें मुनासिव जान पड़ा और वे वोले, 'हां हां कहिये, मै भी इस वात को जानने के लिए वहुत उत्सुक हूँ कि मछलियो का शिकार खेलते खेलते आप कहां और कैसे

गायब हो गए कि आपके साथ वाले किसी व्यक्ति तक का पता लगना तो दूर आपकी वोट तक ढूंढे न मिली !"

काउन्ट शैवर वोले—

काउन्ट० । आपको याद ही होगा कि मेरी मोटरवोट पर तीन माझी एक वोट-ड्राइवर और चार अंग-रक्षको के सिवाय मेरे तीन जर्मन दोस्त भी थे।

मार्शल० । हा मुझे अच्छी तरह याद है और मै पूछने ही वाला था कि उनकी क्या दशा हुई और वे लोग अव कहा है ?

काउन्ट० । मुझे उनकी कुछ भी खवर नही और न अपनी गिरफ्तारी के वाद से मैने एक दफे भी उनमे से किसी की शकल देखी, पर इसमे कोई शक नही कि वे सव के सव अभी तक हमारे उसी दुश्मन के कब्जे मे होगे जिसने मुझे गिरफ्तार किया था।

मार्शल० । यानी ?

काउन्ट० । पूर्व-गौरव-संघ ।

मार्शल ने दात पीस कर कहा, "अच्छा कहे चलिए ।" काउन्ट वोले—

"शिकार की नियत से मै अपनी वोट को सरकंडो के वीच मे धंसा ले गया और वहा उसका इजिन रोक हम लोग शिकार खेलने लगे जिस मे थोडी ही देर वाद हम सव लोग इस कदर डूव गये कि किसी को यह होश ही नही रही कि वोट किधर जा रही है। वास्तव मे उसके कहीं वह जाने का डर भी नही था क्योकि वह चारो तरफ से सरकंडो से घिरी हुई थी और उस जगह वहाव भी अधिक नही था फिर भी जव मेरा ड्राइवर यकायक वोल उठा, "हैं, नाव यह कहा आ गई !" तव हम लोगो का भी ध्यान उधर गया और मैने देखा कि नाव उस जगह नही है जहां छोडी गई थी वल्कि किसी दूसरे ही स्थान मे है, सिर्फ यही नही, धीरे धीरे मन्द मगर वेमालूम चाल से ऊपर की ओर वढ़ी जा रही है। चूंकि चाल वडी ही वंधी हुई और स्थिर तथा एक सी थी इसलिए अव तक इस वात का पता न लगा था

पर अब गौर करने से जान पड़ा कि नाव ऊपर को बढ़ रही है। एक माझी इधर उधर देख के बोला, "हम लोग जहां रुके थे वहां से मील भर ऊपर आ गये है।" मैं बोट के पिछले हिस्से मे बनी केबिन मे बैठा था, वहां से नाव की दीवार से सट कर बहने वाला पानी नदी के बहाव के कारण बराबर पीछे को जा रहा था इसलिए अब तक मैंने इस बात पर ख्याल न किया था पर अब सरकण्डो को पीछे जाते हुए देख मैं भी चौका और इधर उधर देख के सोचने लगा कि नाव ऊपर को क्यो बढ रही है, पर कुछ समझ मे न आया। लाचार मैंने इञ्जिन स्टार्ट करने का हुक्म दिया पर ताज्जुब की बात थी कि इञ्जिन के लाख जोर मारने पर भी नाव का ऊपर चढ़ना न रुका, उल्टे वह चाल और तेज हुई और बोट अब काफी तेजी से ऊपर को दौड़ने लगी मगर इस खींचातानी मे यह पता लग गया कि वह ऊपर किस तरह से जा रही थी। बोट के अगले सिरे पर पानी की सतह के पास लगे हुए एक कुण्डे में बहुत लम्बी रस्सी बंधी हुई थी जो उसे आगे को खींच रही थी। बोट का इन्जिन चलाने का खिचाव पडने से यह रस्सी जो पहिले पानी के नीचे थी अब ऊपर निकल आई थी मगर उसकी सीध पर देखने से आगे की तरफ यह कुछ नजर न आता था कि उसका अगला सिरा किस चीज मे बंधा है और कौन शक्ति उस रस्सी के जरिये हमारी बोट को आगे को खींच रही है। हम लोगों के बहुत गौर करने पर भी जब कुछ समझ मे न आया और हमारी बोट का इन्जिन बहुत जोर करने पर भी जब बोट को पीछे ले जा न सका तब मैंने हुक्म दिया कि वह रस्सी काट दी जावे। दो माझी कुल्हाड़ियां लेके बोट के सिरे पर चले गए और उस पर कुल्हाड़ी चलाने लगे मगर तब मालूम हुआ कि वह सन मूंज पाट या नारियल की बनी रस्सी नही है बल्कि लोहे की पतली तारों को बट कर बनी हुई है जो कुल्हाड़ी से किसी तरह कट नही सकती थी। कैसे कब और कहां से ला कर वह रस्सी बोट के साथ बाध दी गई यह हम लोगो को कुछ मालूम न हो पाया था।

"मै अभी अपने दोस्तों के साथ इस बात पर सलाह ही कर रहा था

कि यह किसकी कारंवाई है और अव क्या करना चाहिए कि यकायक मेरी निगाह किसी चीज पर पड़ी जो वहती हुई मेरी वोट की तरफ आ रही थी। दूर से तो वह किसी मोटे पेड का तना मालूम हुआ पर पास आने पर मैने ताज्जुव से देखा कि वह लोहे की वनी हुई एक लम्वी पतली नाव है— विचित्र शकल को, चारो तरफ से वन्द, वहुत मोटे सिगार की सी सूरत वाली। यह नाव न जाने किस अदृश्य शक्ति के वल से चल रही थी कि देखते देखते आ कर हमारी वोट से लग गई, लग क्या गई जोक की तरह चिपक गई, क्योकि फिर उसने हमारी वोट का साथ न छोडा।

"कुछ ही सायत वाद यकायक उस लोहे की नाव के ऊपर एक छोटी सी खिडकी खुली और उसके अन्दर से एक पतला नल वाहर निकला जिसका सांप की तरह का मुंह घूमता घामता हम लोगो की वोट के अन्दर आ गया। अभी हम सोच ही रहे थे कि क्या करे कि इस नल के अन्दर से किसी किस्म का वहुत ही ठडा तरल पदार्थ वडे झोक से वाहर निकला जिसने हम लोगो को तरवतर कर दिया। यह तरल पदार्थ न जाने क्या था कि हवा मे मिलते ही गैस हो कर चारो तरफ फैल गया और औरो की तो मैं नहीं जानता पर दो एक दफे सांस के साथ वह गैस नाक मे जाते ही मैं तो जहा का तहा वेहोश होकर गिर गया। वाकी के लोगो की पीछे क्या गति हुई मुझे कुछ मालूम नही और न मैने फिर कभी उस वोट या उस पर के किसी आदमी को देखा ही।"

इतना कह काउन्ट शैवर कुछ देर के लिए रुक गये। मार्शल फाक ने देखा कि एक दफे पुन उनकी आखें वन्द हुईं और अंग सिहर उठे, पर वे कुछ वोले नही और अपनी जगह चुपचाप वैठे रहे। कुछ देर वाद काउन्ट पुन. कहने लगे .—

"जव मुझे होश आया, मैने अपने को एक अजीव जगह मे पाया। ऊपर नीचे और अगल वगल चारो तरफ मोटे काले कपडे की चादरें पड़ी हुई यह पता न लगने देती थी कि यह कैसा स्थान है, कोई मकान है कमरा

है या पहाड़ खोह या गुफा है, या तम्बू डेरा या रावटी। जो कुछ रोशनी थी वह एक लम्बी मशाल की जिसकी कोई गज भर ऊंची नोक मे से बिजली की तेज रोशनी निकल रही थी पर उस पर भी लाल गिलाफ चढ़ा रहने के कारण रोशनी मद्धिम हो रही थी। चारो तरफ एक दम सन्नाटा था और वहां कोई आदमी भी न था, मगर कुछ ही देर बाद मैं यह अनुभव करने लगा कि इस जगह कही पास ही में कोई बहुत भारी मशीन चल रही है क्योकि यद्यपि आवाज तो नही पर उसकी धमक बराबर मालूम हो रही थी।

"मैं अभी गौर कर ही रहा था कि मैं कहां पर हूं और वह धमक किस चीज की है कि यकायक एक ताली बजने की आवाज मेरे कान में गई और इसके साथ ही मेरे सामने की तरफ वाला काला परदा एक तरफ को हट गया जिससे मै चौक गया क्योकि उस पर्दे के पीछे की तरफ, अपने से पांच छ. गज के फासले पर, मैंने तीन आदमियो को बैठे हुए देखा जो सब के सब काली पौशाक पहिने और मुंह पर काली नकाब डाले हुए थे। मैं उनकी तरफ ताज्जुब से देखने लगा क्योकि मेरे मन मे यह खयाल उठ खड़ा हुआ कि क्या ये ही लोग तो वे मशहूर त्रिकंटक नही है, कि उसी समय उनमें से एक बोल उठा—उसकी आवाज कुछ भारी सी थी जिसका सबब शायद वह नकाब होगी जो उसके चेहरे पर पड़ी हुई थी। वह बोला—

काली शकल०। काउन्ट शैबर, हम लोग कौन है और क्यो हमने तुम्हें गिरफ्तार कराया है यह शायद तुम सोच रहे होगे अस्तु मैं पहिले वही बता देना चाहता हूँ। हम लोग उस 'पूर्व-गौरव-संघ' के प्रतिनिधि हैं जिसने इस देश को फ्रांसीसी पंजो से छुड़ा देने का बीड़ा उठाया है। हम लोगों ने जेन-रल फाक की जुबानी और उसके बाद अन्य जरियों से भी कई बार तुम्हें सूचनायें दी पर तुमने कोई खयाल न किया अस्तु इस समय तुम इसलिये बुलाए गये हो कि तुमसे रू-बरू बात करके अपना इरादा साफ साफ जाहिर कर दें, क्योकि हमे यह खयाल हुआ कि शायद तुम या तुम्हारी सरकार हम लोगों को मामूली 'क्रान्तिकारियो' की कोई साधारण संस्था समझ कर

हमारी सूचनाओ पर ध्यान न दे रही हो, अस्तु अपनी ताकत और अपना इरादा दोनों को ही तुम पर जाहिर कर देने के लिए यह काम किया गया है।

बोलने वाला कुछ देर के लिए चुप हुआ। शायद उसने सोचा होगा कि मै उससे कुछ कहू या पूछू, मगर मै एक दम चुप रहा जिससे जरा ठहर वह फिर कहने लगा—

काली शकल०। जिस तरह पर हमने तुमको पकडवा मंगवाया है उसी से तुम्हें यह पता लग गया होगा कि हमारी ताकत क्या है और हमारे जासूस कहा तक फैले हुए है, अस्तु तुम्हें इस बात का भी विश्वास हो जायगा कि तुम लोगो के गुप्त से गुप्त इरादे और बांधनू हम लोगो पर प्रगट है। यही और भी अच्छी तरह जाहिर करने के लिए मै कहता हू कि तुम्हारी उस गुप्त कुमेटी का हाल जिसमे तुम्हारे सिवाय सिर्फ तीन आदमी और थे, हम पर जाहिर हो गया है—वह कुमेटी, जिसमे फ्रांस के प्रेसीडेण्ट की तुमको लिखी वह निजी चीठी पढी गई थी जिसमे लिखा था कि 'श्यामनरेश अगर ज्यादा झगडा खडा करें और तुम्हारी रेलवे लाइन बनने न दें तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाय और श्याम मे फ्रान्सीसी हुकूमत जारी कर दी जाय जिसके लिए तुम लोग इतने दिनो से तैयारी करते आ रहे हो।'

उस आदमी की यह बात सुनते ही मै चौक उठा, क्योकि मार्शल, आप जानते ही है कि हम लोगो की यह चीठी कितनी गुप्त थी और यह राय कहा तय की गई थी। अगर हमारी ऐसी गुप्त कमेटी की बातें तक उन दुष्टो को मालूम हो गई हैं तो और भी न जाने कौन कौन से भेद इन्हें मालूम हो गये होंगे, यही सोच मै चौका था मगर उसी समय वह आदमी फिर कहने लगा—

काली शकल०। मगर तुम्हे यहा मंगवाने से हमारा एक उद्देश्य और भी है और वह यह है कि हम तुम्हे वन्दी की तरह अपने पास उस समय तक रखना चाहते है जब तक कि हमारे कई आदमी जो तुम्हारे गुप्त स्थानो मे घुस हुए तुम्हारे भेदो का पता लगा रहे है, सही सलामत हमारे पास

वापस न लौट आवें। न जाने कब उनमें से कौन तुम लोगो के फन्दे मे पड़ जाय, उस समय हम तुम्हारे वदले में उसे छुडा ले सकेंगे और अगर तुम्हारे आदमियों ने उस पर कोई अत्याचार किया तो तुम्हारे साथ वही कार्रवाई करके उस अत्याचार का वदला भी चुका सकेंगे। बस, इस विपय मे इतना ही—अब सुनो और गौर से सुनो कि हम क्या कहते हैं।

जरा रुक के वह काली शकल फिर कहने लगी—

काली शकल०। इसके पहिले कि तुम लोग हमारे इस श्याम देश पर हमला करो और हमारी भूमि की वह हालत करो जो तुमने फ्रेंच इन्डो चायना, कंबोज और अनाम आदि की करी है, हमी लोग तुम पर आक्रमण करके तुम्हारा वल नष्ट कर देना उचित समझते हैं और इसलिये तुम्हें गिरफ्तार करके मंगवा लेने के साथ ही साथ हमने कई कार्रवाइयें और भी की हैं। हमने तुम्हारे कई जंगी जहाजों को गारत कर दिया है, कई किलों वारूद-खानों और वारिकों को उडा दिया है, और कई हवाई जहाजो के अड्डों को भी मटियामेट कर दिया है। अब कम से कम कुछ समय तक तुम या तुम्हारी सरकार श्याम देश पर आक्रमण करने का इरादा न करेगी।

मगर केवल इतना ही करके हम रह जाना नही चाहते। हम तुम्हारे ऊपर एक और चढ़ाई भी करना चाहते है और हमारी वह चढाई वहुत जल्दी ही शुरू हो जायगी जिसका पहिला अंश यह होगा कि जो रेलवे लाइन तुम लोग श्याम की सीमा पर वनवा रहे हो उस पर कब्जा कर लिया जाय।

बोलने वाला कुछ देर के लिए रुका। शायद वह सोचता होगा कि मैं कुछ कहूँ या रोकूंगा, पर भीतर ही भीतर वहुत गुस्सा चढ़ जाने पर भी मैंने अपनी जुवान न खोली जिससे थोड़ी देर वाद वह फिर कहने लगा—

काली शकल०। मैं समझता हूँ कि अव तक तुम्हें उन अस्त्रों का पता लग गया होगा जिनसे मदद लेकर हम लोग अपना मतलव हासिल करना चाहते हैं और तुम या तुम्हारी सरकार इस भ्रम मे न रह गई होगी कि हम लोग केवल कोरी धमकियां देने और कभी कभी एक आध गुप्त हत्याएं कर

डालने वाले कुछ उपद्रवी क्रान्तिकारी मात्र होंगे जिन्होने आज तक कभी कही किसी देश मे और किसी समय में भी सफलता न पाई। नही, हम लोग कुछ वास्तविक शक्ति रखने वाले ऐसे शत्रु है जिनसे मोर्चा लेना तुम्हारी सरकार की ताकत के बाहर होगा क्योकि हमारे अलोपी वायुयान, आटोमैटिक पाइलट, और ऐटोमिक गनें तुम्हारी शक्तियो को क्षण भर में छिन्न भिन्न कर सकती है। फिर भी तुम्हें यहा बुलाने से हमारा तीसरा अभिप्राय यही है कि हमारे और तुम्हारे बीच युद्ध न हो और बीच में से ही सुलह का कोई मार्ग निकल आवे जिससे वे अनगिनती हत्याएं न होने पावें जो यद्ध की हालत में अनिवार्य होगी। तुम फ्रेंच इन्डोचाइना के शासन के प्रतिनिधि हो और इसलिए हम लोग तुमसे दू-बदू बातें करके देख लेना चाहते है कि हम लोगो के बीच सुलह होने की कोई राह भी निकल सकती है या नही।

वह काली शकल इतना कह कर चुप हो रही और मैंने गुस्से से कहा, "नहो, कोई भी नही, फ्रासीसी सरकार खूनियो और डाकुओ से सन्धि नही कर सकती!" मगर जवाब मे वह कुछ हस कर बोला, "वही बात हम लोग भी तुमसे कह सकते है, क्योकि हमारी निगाह में तुम हमसे बडे खूनी और हमसे वडे डाकू हो, फिर भी तुम एक बुद्धिमान और जिम्मेदार व्यक्ति हो और साधारण फ्रासीसी सिपाहियो से ज्यादा इतिहास जानते हो अस्तु मुझे आशा है कि तुम व्यर्थ के घमण्ड में पड़ कर अगर लाखो नेटिव जानो की परवाह तुम्हें नही हो तौ भी वे हजारो फ्रासीसी जानें बरबाद न करोगे जिनका हमारा तुम्हारा युद्ध छिड जाने की हालत में मिट जाना अनिवार्य होगा।"

मैंने कुछ ठण्डे पड कर कहा, "खैर कम से कम मै यह तो जान लूं कि आप लोग चाहते क्या है?" वह आदमी बोला, "हम लोगो का पहिला उद्देश्य तो यह था कि हम लोग वह सब मुल्क जो पिछले सौ वर्षों में फ्रास ने श्याम से छीना है और जो तुम लोगो का वर्तमान 'अनाम कबोडिया और फ्रेंच इन्डो चाइना' है वापस ले लेते, पर हम देखते हैं कि पहिले तो हमारी शक्ति अभी उतनी नही हुई है, दूसरे हम इतने वडे भूभाग पर

शासन करने योग्य भी अभी हुए नही है, और तीसरे हमारा आन्तरिक शासन-प्रवन्ध वैसा सुसंगठित भी नही है जैसा कि होना चाहिए, इसलिए वहुत सोच विचार के वाद हमने अपनी लगाम वहुत कस दी है और फिलहाल हम सिर्फ दो वातें चाहते है, एक तो यह कि हमारे इस श्याम देश के आन्तरिक शासन में तुम फ्रांसीसी लोग अड़ंगा लगाना छोड दो और उसे अपना उद्धार या अपना नाश करने की पूरी स्वतन्त्रता दे दो, और दूसरे वह रेलवे लाइन हमें दे दो जो तुम मोग हमारी श्याम सीमा के अन्दर समुद्र से लेकर पहाड़ों तक बना रहे हो। फिलहाल वस सिर्फ इतना ही तुमसे पाकर हम सन्तुष्ट हो जायंगे और हम नही समझते कि यह कोई बहुत बड़ी या ऐसी चीज है कि जिसके लिए तुम हजारो फ्रान्सीसी जानें और करोड़ों रुपये की युद्ध-सामग्री नष्ट करने पर आमादा हो जाओ।"

मैने कहा, "क्या आप लोगों में अपनी वात मनवा लेने की कोई शक्ति भी है?" जिसे सुन कुछ उत्तेजित हो के वह काली शकल बोली—"शक्ति तो हममे वह है कि हम इसी जगह, इसी समय, यही वैठे बैठे, तुम्हारी राजधानी सैगन को न'ट भ्रष्ट कर दें और उस समूची रेल लाइन का जो तुम लोगों ने करोड़ो के खर्च से तैयार कराई है जर्रा जर्रा उडा दे, मगर हम उस शक्ति का परिचय आपसे आप स्वयं आगे वढ़ कर देना नही चाहते, यद्यपि जरूरत पडेगी तो पीछे भी न हटेंगे। हम चाहते है कि बिना अधिक खून खरावे और झगड़े झमेले के हम लोगो का ध्येय पूरा हो जाय और इस लिए तुमसे यह प्रस्ताव कर रहे है। अव यह तुम्हारे हाथ है कि तुम हमारी वात मानो या अपनी जिद् पर अड़े रहो। अगर हम यह जानते न होते कि तुम एक शान्तिप्रिय और विचारशील व्यक्ति हो और इसकी भी हमे खवर न होती कि तुम्हारी वातें पैरिस की सरकार अवश्य मानेंगी तो इतना तुमसे कहते भी नही, यह भी खयाल रक्खो।"

मार्शल फाक, मुख्तसर यह कि मेरी और उस आदमी की देर तक इसी तरह की वातें होती रही। जो कुछ उसने कहा उसका सार यही था कि

अगर हमलोग वह रेल लाइन छोड़ दे (न जाने वे कम्वख्त इस लाइन से इतना क्यों डर रहे है) और श्याम के अन्तर्शासन मे टांग अडाने से वाज आवें तो वे केवल मुझे और मेरे मित्रो को ही छोड न देगे वल्कि हमारे खिलाफ आगे और कोई कार्रवाई करने से भी वाज आयेंगे और उसका वातें करने का ढंग ऐसा था कि जो कुछ क्रोध मुझे उसके या उन लोगो के उपर था भी वह आखिर धीरे धीरे जाता रहा और मै वास्तव में सोचने लगा कि क्या इन लोगों की वात मान कर इस वक्त तरह दे जाना ही वुद्धिमानी न होगी ?

परन्तु यकायक इसी समय हमारी वातचीत मे एक विघ्न पड़ गया। उन तीनो के सामने एक छोटा सा काठ का वकस पड़ा हुआ था जिस पर अव तक मैने ध्यान न दिया था। अचानक इस वकस के अन्दर से एक तरह की आवाज आने लगी जिसे सुनते ही उनमे से एक ने उसका ढकना खोला और उसके अन्दर से एक छोटी सी डिविया निकाल कर अपने कान से लगाई। शायद वह किसी तरह का वेतार की तार का टेलीफोन था क्योकि उसको कान में लगा कर कुछ देर सुनने के साथ ही वह घवड़ा गया और उसने वह डिविया अपने वगल वाले के कान से लगा दी। पारी पारी से वह तीनो ही के कानों से घूम गई और तव उनमें से एक मुझसे वोला, "हमे एक वड़ी ही भयानक वात का पता लगा है जो अगर सही निकली तो क्या होगा हम कह नही सकते। हमारी तुम्हारी वात चीत अव वन्द होती है फिर मौका मिलने पर होगी। इस समय हम जाते है, जव तक लौट के न आवें तुम इसी जगह को अपना घर या कैदखाना समझो और यहां पडे रहो। तुम्हारी सव जरूरतें इसी जगह पूरी कर दी जायगी मगर खवरदार, इस जगह से हिलने का नाम न लेना और न काले परदो को छूना जो तुम्हारे चारो तरफ पडे है क्योंकि इनमें विजली का असर है और इन्हें छूते ही तुम मर जा सकते या पंगु हो सकते हो !"

इतना कह उसने ताली वजाई जिसके साथ ही वह काला परदा फिर

हम लोगों के बीच में तन गया और वे तीनों मेरी आंखों की ओट हो गये। मैं नही कह सकता कि फिर वे सब कहां गये या क्या हुए और मैं अपनी जगह पर बैठा तरह तरह की बातें सोचने लगा।

काउन्ट शैवर इतना कह फिर कुछ देर के लिए चुप हो गये। मार्शल फाक बेचैनी के साथ उनका मुंह देखते रहे पर अपनी जुबान उन्होंने न खोली और न उनसे कुछ पूछा या कहा ही। कुछ देर रुक कर काउन्ट फिर कहने लगे—

काउन्ट०। उस कम्बख्त काली कोठरी मे मुझे कितने दिन या कितने समय तक रहना पड़ा मैं कह नही सकता क्योकि वहा न सूरज की धूप आती थी न दिन की रोशनी। समय समय पर कोई आदमी काली नकाब से चेहरा ढंके आता और जिस चीज की मुझे जरूरत होती वह मुहय्या कर जाता। बस, इसके सिवाय न मुझसे वह कोई बात करता और न मेरे किसी सवाल का जवाब देता। उसी जगह ही एक तरफ मेरे नहाने धोने आदि का इन्त-जाम कर दिया गया था।

मै नही कह सकता कि कब तक मै उस स्थान में बन्द रहा क्योकि समय जानने का कोई जरिया घड़ी आदि तो क्या मेरे कपड़े तक मेरे पास न थे सब छीन लिए गये थे। जब नीद आती वही पड जाता और जब तक जागता रहता तरह तरह की बातें सोचता रहता। बीच में एक दफे बहुत घबड़ा कर मैंने एक तरफ के पर्दे को हटाना भी चाहा पर बिजली का ऐसा कड़ा धक्का मुझे लगा कि फिर ऐसा करने की हिम्मत न पड़ी, अस्तु।

एक दफे जब कि बहुत ही घबड़ा कर मैं अपने कैदखाने के चारो तरफ घूम रहा था और बार बार सोच रहा था कि किसी एक पर्दे को अपने बदन से लपेट लूं ताकि उसकी बिजली मेरी इस यातना का अन्त कर दे तो यका-यक मेरे कानों मे एक घन्टी की आवाज आई जिससे मैं चौंका और उसी समय मुझे अपने पीछे की तरफ कुछ आदमियो की बातचीत की आहट लगी। इसके कुछ ही देर बाद पुनः उसी तरह पर्दा हटा तथा वे ही तीन आदमी मुझे दिखाई पडे पर इस समय उनका भाव बदला हुआ था। मैं

घूम कर उनकी तरफ देख रहा था कि उनमें से एक ने कुछ कडी आवाज में मुझसे कहा, "काउन्ट, तुम जानते हो कि तुम्हारी तरफ से कैसी नीच कार्रवाई हमारे आदमियो पर की गई है ?" मै वोला, "यह वक्त दिन का है कि रात का यह भी जानने का मौका जव मुझे नही दिया गया है तो मै ओर कुछ कैसे जान सकता हूँ ?" वह इस पर कहने लगा, "तुम्हारे मेजर डुमरे ने हमारे तीन आदमियो को पकड लिया जिनमें एक औरत भी थी। उनमें से एक की हड्डी हड्डी पिस्तौल मार कर तोड दी, दूसरे को जीते जला दिया, और तीसरो उस औरत की जुवान काट ली ! और क्यों ? इसलिए कि उन्होने हम लोगो का भेद वताने से इन्कार किया।" मैने गुस्से से सिर हिला कर कहा, "ऐसा कभी नही हो सकता !" जवाव मे उन्होने कई फोटोग्राफ मेरे सामने फेंक दिए। फाक, मै नही कह सकता कि उन तस्वीरो को देख के मेरे मन में क्या क्या भाव उठे !!

फाक ने दवी जुवान से पूछा, "वे किस चीज के फोटो थे ?" काउन्ट वोले, "वे ऊपर आकाश से लिए गए नीचे के एक दृश्य के फोटो थे। उनमें कनात से घिरे एक छोटे मैदान का चित्र था जिसमें चार खम्भे गड़े थे। हरेक खम्भे के साथ एक एक आदमी वधा था, आखिरी एक औरत थी। तीसरा आदमी एक दम जला भुना और इस कदर वीभत्स हो रहा था कि देख के तवीयत दहल जाती थी। मालूम होता था मानो उस पर मट्टी का तेल छिडक के आग लगा दी गई हो।"

काउन्ट ने अपनी आखें वन्द कर ली और उनका सारा वदन काप गया मगर फाक एक दम चुप रह गए। कुछ देर वाद काउन्ट फिर कहने लगे—

काउन्ट०। वह आदमी कहने लगा—मुझे अफसोस है कि मेरे आदमी कुछ समय के वाद उस जगह पहुचे जहा यह पैशाचिक कृत्य किया गया था, फिर भी हमें यह कहते खुशी होती है कि हमने इसका वदला पूरा नही तो कुछ थोडा वहुत जरूर चुका लिया। हमने इस दुष्कर्म के करने वाले मेजर डुमरे को गिरफ्तार किया और उसी जगह पर ले जा के जहा कि

उसने हमारे साथियों की यह दुर्दशा की थी उसकी ठीक वही गति की। पहिले तो हमने वेंतें मार मार कर उसकी खाल उधेड़ ली, फिर गोलियें मार मार के उसकी हड्डियां तोडी, फिर उसकी जुवान काट ली और तब उसके ऊपर मट्टी का तेल छिडक के उसे जीता ही फूंक दिया। आशा है कि इस समय उसकी आत्मा नर्क के फाटक का कुन्डा खटखटाती हुई उन लोगों की आत्माओं को खोज रही होगी जिन्हें उसने अपने पहिले वहीसे भेजा था।

वोलने वाले की जुवान इतना कहती हुई इस कदर कड़ुई और कठोर हो गई कि उसके दिल के अन्दर की आग उसके जरिये वाहर निकलती सी मुझे मालूम हुई, पर इसके पहिले कि मैं कुछ कह सकूं, एक दूसरा आदमी वोल उठा, "मगर हम उतना ही करके चुप न रह जायेंगे। उसने हमारे चार आदमियों को मारा है इसलिये हम भी तुम्हारे चार आदमियों की वही गति करेंगे। लेकिन फिलहाल हम अपनी वह इच्छा रोके रहते हैं और तुमसे पुनः अपना वही प्रस्ताव दोहराते है, क्या तुम हमारी बात मान कर हमने संधि करने को तैयार हो ?"

मैंने कुछ सोच कर जवाव दिया "मैं अकेला आपकी वात का कोई जवाव कैसे दे सकता हू ? विना अपनी सरकार और पैरिस की सरकार से सलाह किये मैं कोई जवाब अगर दे भी दूं तो क्या उसका कोई महत्व होगा।" मेरी वात सुन कर वह वोला, "हम इस बात को समझते है और इसीलिए तुम्हें इस वार एक हफ्ते के लिए छोड़ देने को तैयार हैं। तुम सैगन जाओ, अपने अफसरों ओर पैरिस गवर्नमेण्ट से सलाह करो, और जैसा कुछ निश्चय हो वह हमसे वताओ। अगर तुमने हमसे सन्धि करना स्वीकार किया तो ठीक ही है हम लोग तुम्हें छोड देंगे, लेकिन अगर युद्ध जारी रक्खा और हमारी शर्तें न मानीं तो तुम्हें पुनः इसी कालकोठरी में आ जाना पडेगा—चाहे वह तुम्हारी इच्छा से हो या अनिच्छा से !"

इतना कह उस आदमी ने पुनः अपनी वे ही शर्तें दोहराईं और तव मुझसे कहा, "तुम्हें अव हम फिर तुम्हारे ठिकाने वापस कर देते है। एक

हफ्ते वाद तुम अपने वेतार के तार के यंत्र से अपना जवाव हमे भेजना। 'सी सी थ्री' का संकेत करके जो कुछ कहोगे उसे हम लोग सुन लेंगे। अगर तुम्हारा जवाव 'हा' मे हुआ तो ठीक ही है वरना 'ना' होने से हम तुम्हें पकड लावेंगे वल्कि तुम्हें उचित है कि तुम खुद हमारे पास आ जाओ, क्योकि एक तरह पर पैरोल पर छोडे जा रहे हो !"

इतना कह उसने ताली वजाई। हमारे वीच मे वही काला पर्दा पुनः पड गया और साथ ही किसी जगह से दो आदमी वहा आ पहुचे जिन्होने मुझे दो तरफ से पकड़ लिया। मेरी आंखो पर पट्टी वाध दी गई और न जाने कितने रास्ते से घुमाता फिराता मै उस जगह के वाहर लाया गया। मैदान की ताजी ताजी हवा मेरे वदन में लगी, मगर इसी वीच मे न जाने कैसे और कव मेरे होश हवास पुन. जाते रहे और मै वदहवास हो गया जिससे आगे के सफर का कोई हाल मुझे याद नही है। शायद इसी वीच में किसी समय किसी ने मेरे वे कपडे भी चुरा लिए जो मेरी पोशाक के वदले उन लोगो ने दिये थे क्योकि होश आने पर मैने अपने को करीव करीव नगा पाया।

जव मेरी आख खुली तो मैने अपने को उसी हालत में जैसा कि तुमने देखा था एक कनात के वाहर की तरफ पडा पाया। उस समय सुवह होना ही चाहती थी। मै उठा और तव ताज्जुव से सोचने लगा कि यह कनात यहां क्यो खडी है और इसके भीतर क्या है। घूम कर उसका चक्कर लगाने लगा। एक जगह दर्वाजा मिला। भीतर गया, मगर ओफ, भीतर जो दृश्य मुझे दिखाई पडा उसीने मेरा माथा घुमा दिया। वहा एक खम्भे के साथ डुमरे वधा था और उसकी ठीक वही दुर्दशा की गई थी जो उन दुष्टो ने वयान की थी। समूचा वदन जल जाने पर भी उसका चेहरा ठीक था !

काउन्ट शैवर ने इतना कह दोनो हाथों मे अपनी आखें वन्द कर ली और पुन उनका वदन काप गया। कुछ देर वाद वडी मुश्किल मे अपने को सम्हाल उन्होंने कहा, "मै उस भयंकर दृश्य को देख के ऐसा घवड़ाया

कि मेरे सिर मे चक्कर आ गया और मुझमे एक पल भी वहां ठहरा न गया। मैं वहां से भागा और तव तक भागता ही चला गया जव तक कि उस जगह को मैंने वहुत पीछे छोड़ न दिया। जव दौड़ता दौड़ता एकदम थक गया तो एक जगह खड़ा होके सुस्ताने लगा, मगर उसी समय एक जंगली हाथी ने मुझे दौड़ाया और उससे अपने प्राण वचाने की फिक्र में मेरी वह हालत हो गई जो आपने देखी। वह तो कहिए एक गड़हे के अन्दर छिप जाने से मेरी जान वच गई नही तो मेरी कुचली कुचलाई लाश शायद कही आप लोगों की नजर में आती या वह भी न आती!"

इतना कह काउन्ट शैवर चुप हो गये। मार्शल फाक ने चाहा कि उनसे पूछें कि डुमरे को जहां उन्होने देखा था वह स्थान कहां है मगर उनकी हिम्मत न पड़ी कि पुनः उस दुःखदाई घटना की तरफ काउन्ट का ध्यान ले जावें। वे इसी उधेड़वुन में पड़े हुए थे कि यकायक वाहर से किसी हवाई जहाज के इन्जिन की आवाज आती सुन चौक पडे। काउन्ट का ध्यान भी उस तरफ चला गया और वे भी उधर ही को कान लगा कर सुनने लगे जिसे देख मार्शल वोले, "मै जाकर पता लगाता हूं कि यह कौन है।" और तव उठ कर झोपड़े के वाहर चले गए।

मार्शल फाक के जाने वाद काउन्ट शैवर थकावट की मुद्रा से उसी खाट पर पड़ गए। वास्तव मे इस समय उनका मन वड़ा ही उद्विग्न हो रहा था और इधर कुछ ही दिनो के अन्दर उनके ऊपर से जो जो घटनायें घट गई थीं उन्होने उनके शान्त जीवन को एकदम अशान्त वना दिया था। इस समय उनके हृदय में इतना भी वल नही रह गया था कि झोपड़े के दर्वाजे तक आते और इसका पता लगाते कि वह किसका हवाई जहाज है या किसलिए यहां आया है जिसके इन्जिन की आवाज वता रही थी कि वह इस झोपड़े की तरफ ही नही आ रहा है वल्कि यहीं उतरना भी चाहता है। उन्होने आंखें वन्द कर ली और तरह तरह की वातें सोचने लगे।

मगर वे ज्यादा देर तक इस तरह पड़े रह न सके। कुछ ही समय वाद

मार्शल फाक झोपड़े के अन्दर आते दिखाई पड़े । इस समय उनके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थी जिसे देख काउन्ट शैवर समझ गए कि जरूर कोई बुरी खबर इन्हें लगी है, और वास्तव में थी भी ऐसी ही वात । झोपड़े मे घुसते ही मार्शल ने एक लम्बी सांस खीची और कहा, "काउन्ट, बड़ी बुरी खबर है ।"

काउन्ट ने प्रश्न की दृष्टि उन पर डाली । मार्शल बोले, "मगर मै उसे कहते हुए डरता हू, आप वडे सदमे से गुजरे है ।" काउन्ट सूखी हंसी हंस कर बोले, "मगर तुम डरो मत मार्शल और कह जाओ क्या वात है ?" मार्शल फाक बोले, "दुश्मनो ने अपनी धमकी पूरी की । हमारे जितने भी वायुयान थे, सिर्फ एक छोड़ के सब नष्ट हो गए । कल रात को बारह बजे एक साथ ही फ्रेन्च-इन्डो-चाइना भर मे जितने हैंगर (वायुयान रखने की जगह) और उनके अन्दर जितने वायुयान थे सभो मे भयानक विस्फोट हुए और इनमें रक्खे खड़े या पड़े अथवा इनके आस पास के सभी वायुयानों का जर्रा जर्रा उड गया । केवल एक ही वायुयान बचा जो हमारा एक गुप्त पत्र ले के श्याम की राजधानी बंकाक स्थित हमारे राजदूत कैप्टेन मान्टमारेन्सी के पास गया था और आज सुबह को लौटा ।"

कांपती आवाज मे काउन्ट शैवर ने पूछा, "क्या इस एक के सिवाय हमारे सत्तर अस्सी हवाई जहाजों में से एक भी नही बचा !" मार्शल फाक ने जवाब दिया, "एक भी नही ! वे तक भी नष्ट हो गए जो उड़ने योग्य नही थे, जिनकी मरम्मत हो रही थी, अथवा जो उडने के लिए तैयार मैदानो मे खडे थे ।"

कुछ देर तक काउन्ट के मुंह से आवाज न निकली, इसके बाद बड़ी कठिनता से उन्होने पूछा, "यह वायुयान यहां कैसे आ गया ?" मार्शल बोले, "कैप्टेन मान्टमारेन्सी का जवाब ले के यह आज सुबह सैगन पहुचा था । वहा वाले हमारे अफसरो को किसी ने बेतार के टेलीफोन से खबर दी कि आप (काउन्ट शैवर) इस तरफ आए हुए है और आपकी जान खतरे में

है, अस्तु उन लोगों ने इसे आपका पता लगाने और अगर आप मिल जायं तो जल्दी सैगन ले आने को भेजा है जहां आपकी सख्त जरूरत है।"

मार्शल फाक से भी नही कहा गया कि सिर्फ इतना ही नहीं हुआ था, कुछ और भी हो गया था जिसके लिए काउन्ट शैवर का जल्दी से जल्दी सैगन पहुंचना वहुत जरूरी हो गया था।

[४]

फतेहावाद जेल के अन्दर पण्डित रघुनाथ पाण्डे के पंजे में पडे हुए वावू द्वारिकानाथ को तो हम इस तरह भूल गए जिस तरह अमीर लोग किसी से कुछ वादा करके भूल जाते है, पर अव उनका हाल लिखे विना काम नही चल सकता।

वावू साहव के रिहाई के दिन अव पास आ रहे थे क्योंकि उनकी सजा का करीव करीव तीन चौथाई कट गया था और सव तातीलें रिआयतें और 'दिन' काट कूट के अव केवल कुछ महीने रह जाते थे। पर ये महीने कटने वहुत ही कठिन हो रहे थे और रोज नया सूरज देख वावू साहव अपनी उंगलियों की पोरें गिना करते थे। वास्तव में सजा का अन्तिम अंश काटना कैदी के लिए वड़ा ही दुश्वार हो जाता है, खास कर लम्बी सजा वाले का। अकसर देखा जाता है कि लम्बी सजा वाले कैदी के जव कुछ महीने या कुछ दिन छूटने को रह जाते हैं तो वह जेल से भागने की कोशिश करता है। जेलों से भागने की जितनी घटनाएं होती हैं उनकी अगर जांच की जाय तो देखा जायगा कि उनमें से ज्यादा उन लोगों की कार्रवाई होती है जो अपनी रिहाई के पास आ गए होते है।

यही कारण था कि हमारे वावू साहव भी वडी कठिनता से अपने दिन गुजार रहे थे और दिन रात यों फटफटाते फिरते थे जिस तरह कोई पिंजड़े में वन्द चिड़िया अपने चारो तरफ आग देख छटपटाती है। इसीलिए उन्होने आजकल हमारे पाण्डेजी की खुशामद भी वहुत वढ़ा दी थी और उनकी जव जो आज्ञा निकलती थी उससे कभी मुंह न फेरते थे, पर इसका असर

उलटा हो रहा था। पाण्डेजी अपनी सोने की मुरगी के चले जाने का खयाल कर एकदम से उसका पेट ही फाड के सब अण्डे निकाल लेना चाहते थे।

वावू साहव की आजकल तरक्की हुई थी। उन्हे गल्ले के गुदाम की सहायक अफसरी मिल गई थी। नित्य जितना रसद पानी कैदियो के लिये खर्च होता था उसका तौलना नपवाना और उसका हिसाव रखना इनके सुपुर्द हो गया था। यो तो इस काम पर एक अफसर अलग ही मुकर्रर रहता है, पर इस समय, पाडेजी की कृपा से, वावू साहव ही अफसर हो रहे थे। असली अफसर छुट्टी पर चले गये थे और उनका चार्ज पाडेजी को लेना पडा था जिन्होने वावू साहव के सुपुर्द वह सब काम कर दिया था और आप खाली दस्तखत भर कर दिया करते थे।

जेल का गल्ले का गुदाम जिसके हाथ मे हो, सुपरिन्टेन्डेन्ट और जेलर के वाद उसी की हुकूमत जेल मे रहती है। प्रत्येक कैदी के लिए जेल के नियमानुसार जितनी रसद दी जानी चाहिए, उतनी अगर दी जाय तो कोई साधारण मनुष्य वशर्ते कि वह राक्षस न हो, अथवा चक्की या कोल्हू इत्यादि वहुत कठिन शारीरिक परिश्रम के काम पर न हो, उतना खा नही सकता। आदमी की ज्यादा से ज्यादा खुराक के हिसाव पर वह वाधी जाती है, पर उतनी कैदियो को दी नही जाती, कैदियो को उतना ही मिलता है जितना खा के वे जीते रहें मरें नही अथवा शिकायत न करें। वाकी फाजिल जिन्स जेल के अफसरों की वपौती होती है, और वह भिन्न भिन्न सुरंगो से – कुछ तो सीधे रसद देने वाले ठीकेदार के ही जरिए, कुछ तौलाई के वक्त, कुछ नपाई जुखाई के समय, और वाकी नित्य के खर्च के वाद अलग कर दी या वचा ली जाती है और उसकी मौके से बंटाई होती है। यह काम विना गल्ला गुदाम के अफसर को मिलाये नही किया जा सकता और इसलिये अकसर जेल के वड़े अफसर भी 'गुदामी' को नाराज नही करते।

मगर 'गुदामी' की ताकत का एक यही सवव नही है। उसके हाथ में छोटे छोटे आराम, मसलन जरा सा गुड दे देना, जरा सा तेल दे देना, एक

नीवू दे देना, थोड़ी मिर्चा या नमक दे देना, आदि रहता है इसलिए कैदो लोग वरावर उसकी खुशामद मे लगे रहते है और वह कैदियों से चाहे जैसा काम ले सकता है। जेल में जाकर जीभ वडी चटोरी हो जाती है। घर में, स्वतंत्रता की अवस्था में, जिस चीज को मनुष्य शायद देखना भी पसन्द न करेगा, उसी के लिए जेल में तसले चल जाते है,। अस्तु यह वहुत वड़ी ताकत 'गुदामी' के हाथ में रहती है और इस समय हमारे वावू साहव इसका पूरा लुत्फ उठा रहे थे। समूचे नही तो कम से कम आधे जेल पर इनकी हुकूमत छा रही थी। अगर वीच वीच में पाडेजी इनके कलेजे को सूल से वेधते न रहते तो इस समय ये सातवें आस्मान पर होते !

एक वीमार कैदी के लिये सावूदाना निकालने वावू साहव गुदाम के अन्दर घुसे हुए थे और इधर उधर वक्सों पेटियो और हंडियों में हाथ डाल रहे थे क्योंकि इनका सहायक गज्जू नामक कैदी इस समय यहां था नही और इन्हे खवर न थी कि सावूदाना किस पेटी मे है कि इसी समय एक कैदी इनके गुदाम के दरवाजे पर आ के खड़ा हुआ। इस कैदी का नाम रामजी था और यह पांडेजी का वहुत मुंहलगा होने के कारण इसकी और वावू साहव की कुछ अधिक पटा न करती थी पर चूंकि यह अकसर जेल के खेतों की तरकारी लेके पांडेजी के क्वार्टर में जाया करता था और पंडा इनकी इससे पानी वानी भरा लिया करती थी जिससे इसे वाहरी दुनिया की हवा कभी कभी लग जाया करती थी इसलिए चतुर वावू साहव इससे विगाड़ भी नही करते थे। इस समय वावू साहव को व्यग्रता के साथ कुछ खोजते पा इस रामजी ने स्वयम् ही उनसे पूछा, "क्या खोज रहे है वावू साहव ?" जिस पर वे वोले, "साले द्वारिका के लिए डाक्टर ने सावूदाना मांगा है और वह कहो मिल नही रहा है।" रामजी वोला, "सावूदाना उधर है, उस कोने वाली हंडी मे !" वल्कि खुद भीतर जा के उसने सावूदाने का पात्र वावू साहव को दिखा भी दिया जो दरवाजे के एक वगल कुछ आड़ मे पडता था। वावू साहव ने उसमे से सावूदाना निकालने के लिए वरतन मे हाथ डाला

और इधर उनके वगल मे खडे रामजो ने एक लपेटा हुआ कागज अपने जूते के अन्दर से निकाल कर धीरे से उनके सामने खसका दिया और तव गुदाम के बाहर निकल गया।

धडकते कलेजे के साथ अपने खाली हाथ से उस कागज को फैला वावू साहब ने उस पर नजर डाली मगर साथ ही साथ सावूदाने की हंड़िया मे भी इस तरह हाथ फेरते रहे मानो वह कोई सूई हो जिसे उसके अन्दर वे खोज रहे थे। कागज पर सिर्फ एक लाइन लिखी थी—"क्या तुरत छुटकारा चाहते है ?—रतनसिंह।"

वावू साहब का कलेजा एक दफे जोर से फडफडा उठा। वह एक पंक्ति और अन्त का नाम उनके दिल पर कुछ ऐसा असर कर गया कि सावूदाने की हडी उनके हाथ से छूट कर गिर गई और सावूदाना सव तरफ फैल गया। "क्या हुआ ? क्या हुआ ?" कहता हुआ रामजी पुनः भीतर आ गया और सावूदाने को वटोरता हुआ धीरे से बोला, "जो जवाव देना हो अभी दीजिए, मुझे वाहर जा के अभी वताना पडेगा।" वावू साहव ने ताज्जुव से पूछा, "क्या रतनसिंह आए है ?" वह वोला, "नही, मगर उनका भेजा कोई आदमी आया है।" दोनो में बहुत धीरे धीरे वातें होने लगी मगर दोनो ही के हाथ सावूदाना वटोरने में लगे हुए थे।

वावू०। कौन है ? क्या कहता है ? तुम्हें कहा मिला ?

रामजी०। दो तीन दिन से आया और पाडेजी के ही यहा टिका भी हुआ है, मुझसे जव देखादेखी होती है और निराला देखता है तो आप ही के वारे मे वातें करता है। आज यह पुर्जा दिया और जुवानी कहा है कि कल एतवार को आपसे मुलाकात भी करेगा मगर इसका जवाव आज ही चाहता है।

वावू०। तुमने पढा है इस पुर्जे में क्या लिखा है ?

रामजी०। हा मेरे सामने ही तो लिखा था, और यह भी कहा था कि जो जवाव दें जुवानी सुन लेना।

वाबू० । भला कौन बेवकूफ जेलखाने से छूटना न चाहेगा ! पर अभी मेरी रिहाई में साढ़े चार महीना बाकी है और पांडेजी कुछ इतना मुझसे खुश नही है कि वखत से पहिले मुझे छोड़ दें ।

रामजी० । पाडेजी से उसकी वहुत दोस्ती जान पडती है । शायद उसका जोर पहुंच सके !

वाबू० । खैर मेरी तरफ से 'हां' तो कह ही देना, मगर यह भी कह देना कि उनकी तरह भाग के या खून करके रिहाई नही चाहता और न अपनी जान जोखिम मे डाला चाहता हूं ।

रामजी० । यही वे जानना चाहते थे, अच्छा मैं कह दूंगा ।

रामजी ने सावूदाना वटोर एक दूसरी हंडी मे रख दिया और तव पाडेजी के घोडे के लिए चना ले के फाटक की तरफ चल दिया । वावू साहव धड़कते कलेजे से रसद का रजिस्टर भरने लगे मगर रह रह कर उनके मन में यह खयाल उठता था—"क्या रतनसिंह खुद आया है ! लेकिन अगर पुलिस को पता लग गया तव ?"

वह दिन या उसके वाद वाली रात वावू साहव ने किस तरह काटी इसे उन्ही का दिल जानता होगा, मगर दूसरे दिन जव सुवह ही गुदाम की तरफ जाने की वे तैयारी कर रहे थे उसी समय एक जमादार ने आ के जब उनसे कहा, "चलिये फाटक पर, आपकी मुलाकात आई है ।" तो वावू साहव का कलेजा जोर से उछल पडा । वे फौरन तैयार हो गये और लपकते हुए फाटक पर पहुंचे जव इन्हें जेलर साहव के दफ्तर में पहुंचाया गया । खुद पांडेजी महाराज यहां मौजूद थे और उनके वगल ही मे कुरसी पर एक दूसरा आदमी वैठा था जिसे वावू साहव ने आज तक कभी देखा न था । द्वारिकानाथ को देखते ही पाडेजी वोले, "देखिए वावू साहव, आपके ये वड़े भारी दोस्त आए है जो आपसे मुलाकात कर इसी समय चले भी जाना चाहते हैं अस्तु आप इनसे वातें कर लीजिए मगर जल्दी खाली हो जाइए क्योंकि गुदाम का काम रुका रहेगा ।" इतना कह पांडेजी

ने कुछ रजिस्टर अपने सामने खीच लिए और कोई काम शुरू कर दिया मगर वह आदमी कुरसी खीच कर बाबू साहब के पास आ गया और पाडेजी की तरफ पीठ कर बहुत धीरे धीरे इनसे बातें करने लगा।

आगंतुक०। मुझे उन्ही ने भेजा है।

बाबू०। वे कहा है ?

आगं०। आजकल बरमा मे है।

बाबू०। कही छिपे हुए होगे ?

आगं०। नही छिपे नही है, उन्हें एक बहुत बडी रियासत मिल गई है और राजा की तरह रहते है, मगर उन्हें एक बहुत ही भारी काम के लिए आपकी जरूरत पड गई है और वे चाहते है कि किसी तरह आप जल्दी से जल्दी उनके पास पहुंचे।

बाबू०। चलने को तो मै बडी खुशी से चलता क्योंकि उनके बहुत बडे बडे अहसान मेरी गरदन पर है पर मेरी रिहाई में अभी साढे चार महीने बाकी है !

आगं०। उनका खयाल था कि आप छूट गए होंगे और इसीलिए उन्होंने मुझे आपके घर भेजा था लेकिन अगर आप चलने को राजी हो जाय तो मै अभी ही आपको अपने साथ ले जा सकता हूं।

बाबू०। (जिनका कलेजा यह बात सुन कर फडफडा उठा) मगर आखिर कैसे ?

आगं०। चाहे जैसे भी हो! आप इतना कहिए कि क्या चलने को तैयार हैं ?

बाबू०। अगर कायदे के साथ रिहाई पा के छूट सकूं तो जरूर तैयार हू बल्कि एहसान मानूंगा, लेकिन और किसी तरह से.....

आगं०। वह बात मुझे कल ही रामजी ने बता दी थी। मैं आपको कायदे ही से छुडा सकूंगा ?

बाबू०। तब कौन भकुआ छूटना न चाहेगा ! मगर यह तो बताइये यह कैसे संभव होगा ?

आगं० । वताना मुनासिव तो नही है लेकिन अगर आप इस बात को गुप्त रख सके तो कुछ इशारा दे सकता हूं ।

वावू० । हा हां कहिए, मेरी जुवान से वह वात कभी वाहर न होगी !

आगं० । (धीरे से) मैंने पहिले तो आपको जेल में से भगा ले जाने की सोची थी और आपके दोस्त का भी यही हुक्म था, पर जव आप उसके लिए तैयार नही है तो मैंने दूसरा उपाय किया है । जेल के डाक्टर जेलर और सुपरिन्टेन्डेन्ट को मैंने मिला लिया है और सख्त वीमारी के वहाने पर आप समय से पहिले जा सकते हैं ।

वावू साहव का कलेजा जोर से धड़क उठा । भला समय से महीनो पहिले छूटने की खुशी किसे न होगी ! मगर अपने को वहुत सम्भाल उन्होने कहा, "क्या अफसर लोग राजी हो गए ! मगर सो कैसे ?"

जवाव में प्रथमा को अंगुष्ठ से टकराता हुआ वह आदमी बोला, "इससे सव हो जाता है ! जेल वाले सव राजी है, वस आपकी रजामन्दी चाहिए क्योंकि रिहाई के लिए कुछ आपको भी करना और तकलीफ उठानी पड़ेगी ।

वावू साहव० । (भरे गले से) मैं सव कुछ करने को तैयार हूं ! क्या करना होगा सो वोलिए ?

आगं० । आपको मालूम है या नही मै कह नही सकता, पर इस जेल के अस्पताल मे एक आदमी क्षयी से वीमार हो के पड़ा है, और उसका नाम भी द्वारिका ही है ।

वावू० । हा मुझे मालूम है, वहुत दिन से वीमार है शायद कुछ ही दिनो का मेहमान भी है । मुझे अकसर उसके लिए सावूदाना देना पडता है और उसका नाम भी द्वारिका ही है यह भी मै जानता हू ।

आगं० । वस तो उसकी जगह पर आप रख दिए जायंगे, डाक्टर से रिपोर्ट करवा दी जायगी कि अव आपके वचने की कोई उम्मीद नही है, सुपरिन्टेन्डेन्ट और जेलर की सिफारिश हो जायगी और आप चार पांच महीना पहिले छोड दिए जायंगे ।

वावू० । मगर इसके लिए जनरैल साहव से इजाजत लेनी होगी और वड़ा खर्च भी करना पडेगा !

आगं० । आपसे कहा न मैंने कि आपके दोस्त को अव रुपये की कमी नही रह गई है, मगर एक शर्त इसके साथ है ।

वावू० । वह क्या ?

आगं० । आपके रिश्तेदारो को इसकी खवर नही होनी होगी, आपको जो कुछ मैं कहूँ वह करना होगा, और यहा से निकल मेरे साथ साथ अपने दोस्त के पास सीधे वर्मा चले चलना पडेगा, वह जव आपको छुट्टी दें तभी आप वहा से लौट के अपने रिश्तेदारो और दोस्तो से मिल सकेंगे !

वावू० । हा हा, इसके लिए क्या हर्ज है, मैं खुशी से तैयार हूँ, मगर यह तो कहिए क्या वर्मा में मुझे ज्यादे दिनो तक रहना पडेगा ?

आगं० । नही नही, ज्यादे से ज्यादे पन्द्रह वीस रोज ! आपको खुद मै अपने साथ लाकर जहा आप कहे पहुंचा जाऊंगा !

वावू० । तो वस ठीक है, मैं सव तरह से तैयार हूं, आप अपनी तैयारी कीजिये ।

आगं० । अच्छी वात है, तो मै जरा पाडेजी से वातें कर लूं ।

इतना कह आगतुक कुरसी हटा पीछे हो गया और पाडेजी की तरफ झुका जो कुछ इस तरह कागजो मे गर्क थे मानों इन दोनो आदमियो का अस्तित्व ही भूल गये हो ।

[५]

वाहर के दालान की घण्टी वहुत जोर से वजी और मकान भर मे उसका कर्कश स्वर गूंज उठा ।

पंडित गोपालशंकर का आलीशान वंगला आजकल एकदम खाली था । सिवाय कुछ नौकर चाकरो और पहरेदारो के वहा और कोई भी न था कारण पंडित गोपालशंकर अपनी स्त्री और नवजात शिशु को लेकर कश्मीर गए हुए थे जहा से अभी महीने डेढ महीने तक उनके लौटने की कोई उम्मीद न थी ।

पहिली ही आवाज मे मुरली सगवगाया मगर तुरत ही जव घन्टी फिर जोर से वजी तो वह आखें मलता हुआ उठ वैठा । एक निगाह उसकी घड़ी की तरफ गई । उसने देखा वारह वज के दस मिनट हुए है । इस आधी रात के समय कौन आया ? ताज्जुव करता हुआ वह वाहर दालान मे निकला और तव सदर दरवाजे पर पहुंच कर उनींदे स्वर में वोला, "कौन है ?"

वाहर से किसी ने कहा, "दरवाजा खोलो, पण्डितजी की जरूरी चीठी है ।" मुरली ने दरवाजा खोल दिया और एक नौजवान भीतर आया जिसके चेहरे मोहरे और पौशाक से ही मुरली समझ गया कि कोई फौजी अफसर है । इसने भीतर आते ही कहा, "मुरली कहा है ? उसे वुलाओ ।" मुरली ने अदव से कहा, "मेरा ही नाम मुरली है, हुक्म ?" उस आदमी ने जेव में हाथ डाला और एक वन्द लिफाफा उसकी तरफ वढाते हुए कहा, "पंडितजी की वहुत जरूरी चीठी है, इसके मुताविक कार्रवाई फौरन होनी चाहिए ।"

लिफाफे पर पंडित गोपालशंकर के हाथ का "वहुत जरूरी" और "मुरलीसिंह" देखते ही चौंक कर अदव के साथ मुरली ने वह चीठी ले ली और एक कोच की तरफ इशारा करके आगंतुक से वोला, "सरकार इस पर वैठ जायं, मैं देखूं पंडितजी का क्या हुक्म है ।" मगर वह आदमी वोला, "मुझे एक क्षण की फुरसत नही है, तुम मेरी फिक्र छोड़ो और चीठी पढ़ के उसके मुताविक कार्रवाई करो ।" "जो हुक्म" कह मुरली चीठी लिए हुए रोशनी के पास चला गया और लिफाफा खोल चीठी निकाल पढ़ने लगा । खास पंडित गोपालशंकर के हाथ का लिखा मजमून था—

"मुरली—

मेरी पहली चीठी तुम्हें मिल चुकी होगी जिसमे मैंने लिखा था कि 'टाइगर' को तैयार रखना शायद मुझे उसकी जरूरत पड जाय । वह जरूरत आ ही गई । कैप्टेन जीवनराम यह खत लेकर तुम्हारे पास जाते है । उनके हवाले फौरन 'टाइगर' कर दो । आशा है उसे तुमने विल्कुल ठीक हालत में रक्खा होगा ।

—गोपालशंकर ।"

मुरली ने गौर से उस चीठी को पढ़ा । इस बात का शक करने की कोई जगह न थी कि यह चीठी पंडितजी की ही है क्योकि उनकी लिखावट कोई शक रहने न देती थी, दूसरे वह दो ही दिन पहिले उस पहिली चीठी को पा चुका था जिसका इसमे हवाला दिया हुआ था, अस्तु वह आगन्तुक की तरफ घूमा और बोला, "हवाई जहाज तैयार है, आपको कब चाहिए ?" आगन्तुक बोला, "अभी इसी समय ।" मुरली ने आश्चर्य से पूछा, "इस आधी रात को !" आगन्तुक बेचैनी से बोला, "क्या वह तैयार नही है ?" मुरली ने कहा, "नही नही, वह इसी वक्त उड़ने के लिए एकदम तैयार है, मगर मैने इसलिए पूछा कि अगर सुबह आप ले जाय तो मै एक बार और भी उसकी देखभाल कर डालूं ।" आगन्तुक बोला, "नही मुझे अभी ही चाहिये, तुम इतना बता दो कि उसके कीमती कल पुर्जे और वह तोप तो ठीक हालत मे है न ?" मुरली बोला, "जहा तक मै समझ सकता हू बिल्कुल ठीक हालत मे हैं मगर पेट्रोल शायद ज्यादा न हो ।" "कोई हर्ज नही, मै रास्ते मे भरवा लूंगा ।" कहता हुआ आगन्तुक बाहर की तरफ घूमा । मुरली बोला, "सरकार जरा सा रुके रहें, मैं हैंगर की ताली ले आऊं ।" आगन्तुक बोला, "जल्दी करो ।" और तब बड़ी बेचैनी के साथ घडी की तरफ देखने लगा ।

कुछ ही मिनटो बाद मुरली एक बडी सी ताली लिए आ पहुंचा और बोला, "हुजूर चलें ।" दोनो आदमी मकान के बाहर आये । बडे कम्पाउन्ड के दक्खिन तरफ वाले मैदान के एक सिरे पर लोहे का मजबूत शेड था जिसमे 'टाइगर' रक्खा रहता था । इस समय उस मैदान के कई बिजली के लम्प बल रहे थे और कई नौकर चाकर भी नीद मे अलसाए और आंखें मलते हुए उस तरफ बढ रहे थे । अवश्य ही मुरली ने यह सब इन्तजाम अपनी गैरहाजिरी मे किया होगा ।

शेड का मजबूत ताला खोला गया और कई आदमियो ने मिल कर टाइगर को बाहर निकाला । यों तो इसके बाडी पर मोटे कैनवस की खोली बराबर चढी रहा करती थी पर पंडितजी की पहली चीठी पा सफाई के

खयाल से मुरली ने उसे उतार लिया था और चमकते हुए इन्जिन के कल पुर्जे तथा नोक के पास जडी 'रेडियम-गन' साफ दिख रही थी ।

कैप्टेन जीवनराम संचालक की सीट पर बैठ गए । उनका इशारा मिलते ही पंखी को दस पाच चक्कर दिए गए और घनघोर शब्द के साथ इन्जिन चल पडे । वायुयान धीरे धीरे आगे की तरफ बढ़ा ।

बिजली के लम्पों ने मैदान को दिन की तरह रौशन कर रक्खा था । वायुयान ने इसका एक चक्कर लगाया, उसकी चाल तेज हुई और तब धीरे धीरे वह ऊंचा होने लगा। पांच ही मिनट मे वह पेडो की चोटियो के ऊपर जा पहुंचा और दूसरे पाच मिनट बीतते न बीतते लोगो की आखों से ओझल हो गया । केवल उसके इंजिनो की भारी आवाज नीचे वालो को कुछ देर तक सुनाई पडती रही तब उसका सुनना भी बन्द हो गया ।

मुरली ने शेड का दरवाजा बन्द करके ताला लगाया । मैदान की रोशनिया बुझा दी और तब सभो को अपने अपने ठिकाने जाने की आज्ञा देमुरली भी बंगले के अन्दर जा अपने बिछावन पर पड़ गया । भारी मकान कुछ ही मिनटों बाद पुनः वैसा ही सन्नाटा और अंधेरा हो गया जैसा पहले था ।

× × ×

मगर मुरली के भाग्य मे आज सोना बदा न था । उसकी समझ मे अभी शायद कुछ ही देर उसे लेटे हुई होगी और मुश्किल से दस पाच घुर्राटे उसकी नाक के बाहर निकले होगे कि फिर घंटी बज उठी । कच्ची नीद होने के कारण पहिली ही आवाज मे मुरली जाग गया । और यह कहता हुआ कि—"राम राम, अब कौन आया ?" दरवाजे के पास पहुचा, पर वहा पहुंचते ही उसकी सब नीद और सब आलस्य भाग गया कारण उसने पंडित गोपालशंकर की आवाज सुनी जो किसी से कह रहे थे, "नही, वह रोशनी इधर की नही थी, यहाँ तो सब मुर्दों से बाजी लगाए पडे है !"

मुरली ने चटपट दरवाजा खोला और बाहर वाली रोशनी बाली ।

पडित गोपालशंकर को किसी के साथ खडे देख उसने ताज्जुब से पूछा, "सरकार आप ! लौट आए ?" गोपालशंकर बोले, "हा मुरली, मुझे एक बहुत ही जरूरी काम से आना पडा, मगर मै यहा रहने नही आया हूँ बल्कि वह काम करके अभी ही चला भी जाऊंगा। लेकिन तुम यह तो कहो कि इस तरफ कही आग वाग लगी थी क्या ? दूर से इधर कही हम लोगो ने बहुत तेज रोशनी देखी थी जो जल्द ही बुझ भी गई पर हम लोग कुछ ठीक ठीक समझ न सके कि किस चीज की और किस जगह थी ?"

मुरली बोला, "कुछ ही देर पहिले मैंने पीछे मैदान वाले लम्प वाले थे, उनकी रोशनी से तो आपका मतलब नही ?" गोपालशंकर ने जल्दी से पूछा, "मैदान के लम्प ! उन्हें भला क्यो बाला था तुमने ?" मुरली ने जवाब दिया, "टाइगर देने के लिए, आपकी चीठी ले के कप्तान जीवन-राम अभी अभी आए और वायुयान ले गए।"

गोपालशकर के पैर के नीचे से मानो धरती खसक गई। घबडा के उन्होने कहा, "तुम क्या कह रहे हो ! टाइगर को कौन ले गया ? कैप्टेन जीवनराम तो यह मेरे साथ है !!"

अब मुरली के घबडाने की पारी थी। उसने कहा, "क्या आपने किसी को चीठी दे कर नही भेजा था कि 'टाइगर' इसी वक्त इनके हवाले कर दिया जाय ?" गोपालशकर ने सिर हिला कर कहा, "कभी नही, किसी को नही ! तुम पागल तो नही हो गए ? क्या तुम्हारा मतलब यह है कि तुमने टाइगर किसी को दे दिया ?" मुरली ने जेब से वह चीठी निकाली और पंडितजी के हाथ में देते हुए कहा, "यह चीठी ले के कोई घण्टा भर हुआ कप्तान जीवनराम मेरे पास आए और टाइगर लेके चले गये।"

गोपालशंकर के माथे पर पसीना चुचुआ आया। उन्होने घबड़ाहट भरे अस्पष्ट स्वरो मे कहा, "मुरली, तुम और ऐसा धोखा खा जाओ ! कैप्टेन जीवनराम तो यह मेरे साथ साथ आ रहे है।" मगर मुरली बोला, "सरकार इस चीठी को पहले पढ़ लें.......!" गोपालशंकर ने अपने को

सम्हाला और चीठी खोल कर पढ़ी। स्वयं अपनी ही लिखावट देख चमक गए और गौर से पढ़ने लगे।

समूची चीठी पढ़ गोपालशंकर के ताज्जव का कोई हद्द न रहा। बड़ी कठिनता से उनके कण्ठ से निकला, "यह लिखावट तो जरूर मेरी ही है मुरली, मगर मैं सच कहता हूं कि मैंने अपने होशहवास में इस चीठी को नही लिखा ! यह जरूर कोई वड़ा भारी धोखा है—वड़ा भारी धोखा !! ओफ, अव मैं क्या करूं !!!"

मुरली वोला, "आपकी वह चीठी परसों मुझे मिल चुकी थी जिसमें आपने टाइगर तैयार रखने का मुझको हुक्म दिया था, इससे मुझे यह दूसरी चीठी पा कुछ शक भी नहीं हुआ।" गोपालशंकर वोले, "मैंने वैसी भी कोई चीठी नही लिखी, यह सव धोखा ही धोखा है !"

मुरली ने वह पहिली चीठी भी एक दराज से निकाल कर दिखालाई। यह भी खास पंडित गोपालशकर के हाथ की ही लिखी हुई थी जिसकी लिखावट पर किसी तरह का शक नही किया जा सकता था और इसका मजमून वही था जैसा मुरली ने कहा था। इसको देख के भी पंडितजी वोले, "वेशक यह भी मेरे हाथ की ही लिखी जान पड़ती है, पर मै ठीक कहता हूं कि इसे मैंने कभी नही लिखा।"

मुरली वोला, "अव सरकार ही वतावें कि इन चीठियों के मुकावले मे मै किस तरह शक कर सकता था ! वल्कि आपकी पहिली चीठी पा मैंने गुलमर्ग मे आपको फोन भी किया, और किसी लिये नही सिर्फ एहतियातन कि 'क्या आपने टाइगर को तैयार करने के लिए लिखा है ?' और वहां से किसी ने मुझे जवाव दिया 'हां' तव फिर वताइये मुझे क्या और कैसे शक हो सकता था !"

अव तो गोपालशंकर और भी घवडा कर वोले, "मगर मै गुलमर्ग में था कहां जो तुम्हें जवाव देता ! मै तो कव का वहां से अनन्तनाग आया हुआ हूं और रोज को वही छोड़ के सीधा यहां चला आ रहा हूं ! तुम्हें

इसके बारे में लिख भी चुका था कि अब गुलमर्ग नही अनन्तनाग के पते से मुझे चीठी भेजा करना !"

मुरली बोला, "वैसी कोई चीठी तो मुझे नही मिली !" गोपालशंकर ने पूछा, "क्या टेलीफोन में तुम्हें जो आवाज सुन पड़ी थी वह भी मेरी ही थी ?" मुरली इसका कोई जवाब देना ही चाहता था कि यकायक दीवार से लगे टेलीफोन की घन्टी बजती सुन रुक गया। गोपालशंकर बोले, "देखो तो क्या है ?" उसने चोगा कान से लगा कर सुना और तब कहा, "कोई आपसे बात करना चाहता है।" जिसे सुन गोपालशंकर आगे बढे और चोगा कान से लगाके बोले, "कौन है !" जवाब मे बहुत पतली एक आवाज आई, "कौन ? पंडित गोपालशकर है क्या ?" इन्होने कहा, "हा।" जिस पर इन्हे सुनाई पडा, "पंडितजी परनाम, अब टाइगर का गम छोडिये और अपने कप्तान जीवनराम से कह दीजिये कि कोई दूसरा वायुयान ले के हमारा पीछा करें, हम यहा उनका स्वागत करने को तैयार है।"

गोपालशकर ने गुस्से से कापते हुए पूछा, "तुम कौन हो ?" जवाब सिर्फ यह सुन पड़ा—"त्रिकंटक !" और तब टेलीफोन का चोंगा रख देने का खडका सुन पडा।

[६]

दूर आकाश मे किसी तरह की गूंजने वाली आवाज सुनाई पडी और कमरे में मौजूद सब लोगो के कान उसी तरफ को लग गये। कई नौजवान अफसर खिडकियो की तरफ बढे और इधर उधर निगाहें दौडाने लगे।

फ्रेंच-इन्डो-चाइना की राजधानी सैगन मे गवर्नर के प्रसाद बेलवेडियर पैलेस के अन्दर के एक बहुत बडे कमरे में इस समय कई चुने चुने फ्रान्सीसी अफसर बैठे आपस मे कुछ जरूरी सलाह कर रहे है। सभो के चेहरो से घबराहट प्रगट हो रही है बल्कि कई चेहरो पर तो हवाई उड़ रही है जिससे जान पडता है कि जरूर कोई न कोई खौफनाक बात हुई है जिससे इतने लोग यहा सलाह मशविरा करने इकट्ठे हुए भये है। और वास्तव में बात

भी ऐसी ही थी जैसा कि पाठको को अभी ही मालूम हुआ जाता है ।

एक नौजवान ने उंगली से वता कर कहा, "वह है, वह है ।" कई गरदनें उधर ही को घूम गईं और एक अफसर लम्बी जहाजी दूरवीन ले उधर की निशिस्त लगाने लगा । कुछ ही देर वाद वह वोला, "ठीक है, हमारा ही वायुयान है, मालूम होता है काउन्ट को ले के आ रहा है ।" सव लोग खिड़कियों में आ जुटे और कुछ देर के लिए सलाह मशविरा वन्द हो गया ।

हवाई जहाज अपनी पूरी तेजी से आ रहा था और देखते ही देखते पास आ गया । एक चक्कर उसने महल के ऊपर का काटा और तव उस मैदान की तरफ झुका जो महल से सटा हुआ पड़ता था और जिसकी लम्वी चौडी सतह पर वायुयान सहज ही उतर सकते थे । कई अफसर मैदान की तरफ उतर गये और वाकी के आपस में वातें करते हुए राह देखने लगे कि देखे कौन आता है ।

कुछ ही देर वाद मार्शल फाक के साथ काउन्ट शैवर को आते देख सव लोग खुशी के नारे लगाने लगे । कितने ही दिलों की वेचैनी दूर हो गई और कितनो ही की दूर नही तो वहुत कुछ कम जरूर हो गई । जिम्मेदारी काटो का ताज है, हर एक सिर उसका वोझा वर्दाश्त नही कर सकता ।

खुशी खुशी काउन्ट सव उपस्थित अफसरो से मिले और कइयो को गले लगाया मगर यह खुशिया मनाने का मौका न था, मुसीवत की घड़ी थी । वहुत जल्दी ही उन्होने अपने को इस भीड़ से अलग किया और तव एक तरफ खड़े होकर वोले—

"दोस्तो और साथी अफसरो—

"मैं दुश्मन और वहुत जवर्दस्त दुश्मन के पंजे से वच कर आ गया और इसके लिए मुझे और आपको खुश होना मुनासिव ही है, पर यह खुशी का मौका नही है । हम लोगों पर एक ऐसे दुश्मन का धावा हुआ है जैसा फ्रांसीसी अमलदारी के इन दो सौ वरसो में आज तक कभी नही पैदा हुआ था इसलिए इस वक्त काम की वात शुरू होनी चाहिये । वेशक आप लोग

जानना चाहते होगे कि मै किस तरह गायव हो गया, कैसे फंस गया, कहां गया, और अंत मे कैसे छूटा, पर वह एक लम्वा किस्सा है और उसको व्योरेवार सुनाने का इस वक्त न तो मौका ही है और न जरूरत, मुख्तसर मे वस इतना ही सुन लीजिए कि दुश्मनो ही ने मुझे पकड़ा था और उन्होने ही मुझे छोड दिया, जिसका पूरा हाल फिर कभी मै आप लोगो को सुनाऊंगा। इस वक्त काम की वात होनी चाहिए। मैने सुना है कि आप लोग दुश्मन की किसी नई कार्रवाई पर गौर करने के लिए यहा पर इकट्ठे हुए है। वह काम अव जारी होना चाहिये, पर पहिले मै मुख्तसर मे यह सुन लेना चाहता हूं कि मामला क्या है ? जेनरल फ्रासिस, क्या आप मेहरवानी करके मुझे वतावेगे कि क्या वात है ? सज्जनो, कृपा कर वैठ जाइए।"

सव लोग वैठ गये। कुछ देर सन्नाटा रहा, इसके वाद जेनरल फ्रासिस कहने लगे—

"काउन्ट, आपको कितना हाल मालूम है और कितना नही यह मै नही जानता इसलिए वहुत थोडे मे शुरू से सव वातें कह जाना वेहतर समझता हू।

"आपके शिकार खेलते खेलते मय मोटरवोट दोस्तो सिपाहियो और मलाहो के गायव हो जाने के साथ साथ दुश्मन का हम पर हमले पर हमला शुरू होता है। आपका गायव होना मानो दुश्मन की युद्ध-घोषणा थी। उसके वाद के काम कुछ ऐसी तेजी से हुए कि हम लोगो को ठीक तरह से वैठ कर सोचने की मोहलत न मिली कि क्या करे और कैसे करें।

"आपके गायव होने के तीसरे दिन दुश्मन का दूसरा वार हम पर हुआ। आस्मान पर से हमारी फौज पर, हमारे किलों पर, हमारे रसदघरो पर, और हमारे वारूदखानो पर, लुक्क गिरने शुरू हुए। साफ सादे आस्मान पर कही दूर एक तारा सा चमकता नजर आता, और तव तीर की तेजी से एक जलता अग्निपुंज आकर हम पर गिरता जिसकी आच कुछ ऐसी कातिल होती कि किसी तरह वुझाए न वुझती। हमारी कितनी ही छावनिया नष्ट हो गईं, कितने ही रसदो के ढेर और कनात छोलदारियां और

वारूदखाने आग के ढेर हो गये, शहरों और गांवों मे सैकड़ो जगह आग लग लग कर कितना नुकसान हुआ इसका तो अन्दाजा भी नही किया जा सकता, और न इस बात का ही अन्दाजा किया जा सकता है कि हमारी फौज तथा रिआया के दिल इन लुक्को को देख देख और इनके भयानक कर्तव को सुन सुन कितने डर गये ।

"इसके वाद दुश्मन का तीसरा वार हम पर हुआ । हमारे जंगी जहाजो, वन्दरगाहों के आस पास के स्थानों तथा गुदामों मे वहुत ही खतरनाक तरह के वम फूटने शुरू हुए । पहिले पहिल तो हमारे ड्रेडनाट, क्रूजर और सवमेरीन तथा डिस्ट्रायर वोटों पर ये विस्फोट हुए जिन्होने हमारे कम से कम सत्तर प्रतिशत युद्ध-पोतो को नष्ट भ्रष्ट कर दिया, और इसके वाद वन्दरगाहो, गुदामों तथा कस्टम हाउसो की पारी आई । इस वक्त फ्रांसीसी इंडोचाइना के दक्षिणी समुद्र-तट पर का शायद ही कोई ऐसा वन्दरगाह वचा होगा जिसमे जहाज वेखटके जा और लग सकते हों और शायद ही कोई गुदाम ऐसा वचा होगा जिसको जरर न पहुंचा हो । हम लोगों का खयाल तो इससे अधिक है पर जानकारो की समझ में कम से कम एक अरव रुपये का नुकसान इस तरह पर पहुंचा है ।

"सवसे वड़ी खौफ की बात तो यह है कि आज तक पता न लग सका कि ये लुक कहाँ से आते हैं और ये विस्फोट किस तरह होते है । वहुतों का खयाल हुआ कि शायद उन मठो और मन्दिरो मे से ये लुक चलाए जाते हो जो शासन के अवसर पर एक दम वन्द हो जाते है और इसी खयाल से कितनी ही ऐसी जगहों पर हमारी फौजो ने हमला भी किया पर सिवाय इसके कि वूढ़े धर्ममत्त पुजारियों के श्राप हमें सुनने पडे हो या पागल प्रजा के धार्मिक कहाने वाले अधिकारो में हस्तक्षेप करने के कारण होने वाले दंगों को कड़ाई के साथ दवाना पड़ा हो, और कुछ भी फायदा न हुआ । कही से भी कुछ पता न लगा, न कोई ऐसा सवूत ही हाथ लग सका कि ये लुक कैसे किधर से या किस प्रकार चलाए जाते हैं । वही वात विस्फोटों के विषय मे

भी हुई। रोज, प्रायः नित्य ही, दो चार पाच जगह ये विस्फोट होते, और नि सन्देह ये वमो के फूटने से होते, और हर एक विस्फोट के साथ साथ हमारी कुछ न कुछ कीमती चीज, कोई जंगी जहाज, कोई कीमती वन्दरगाह, कोई सवमेरीन, कोई कस्टम हाउस, उड जाता और हमे खाक पता न लगता कि कैसे क्या हुआ। नित्य दस वीस पचास जगह तलाशियां होती, एक एक जगह मानो झाड़ू सी दे दी जाती, पर कोई सन्देहजनक चीज कभी नही निकलती, और अकसर तो एसा होता कि जहां से अभी अभी हमारे आदमी तलाशी ले के निकले है वही थोडी देर वाद विस्फोट हुआ और सव कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो गया। अस्तु—

"मगर इसके वाद दुश्मन के और जो दो हमले हम पर हुए उन्होने तो गजव ढा दिया और हमारे कलेजो पर लकीर खीच दी। आपका पता लगाने के लिए और इन विस्फोटो और लुको का वास्तविक भेद समझने के लिए हमारे जासूस विभाग को कुछ कडाई से काम लेने की जरूरत पड़ी थी जिससे दुश्मन क्षुव्ध हो उठा और उसने अपना खार हमारे मेजर डुमरे पर निकाला। यों तो हम इसका कोई विशेष खयाल न करते क्योकि जो राष्ट्र दूसरी जातियो पर हुकूमत करे उसके नागरिको को अपनी जान हथेली पर रखनी ही होगी पर जिस ढंग से वे हमसे जुदा कर दिए गए वह तरीका हमारे स्वाभिमान को धक्का मारने वाला था। हम लोग वहुत से आदमी पीछे वाले वाग के रमने मे चाय के लिए इकट्ठे हुए थे और आपस में सलाह वात कर रहे थे जव यकायक हमारे वीच मे से दुश्मन मेजर डुमरे को उठा ले गया और हम लोग मुंह ताकते रह गए।"

जनरल फ्रासिस उस समय की वात याद कर जरा रुक गए क्योकि उनका गला भर आया था। कितने ही कलेजो ने सर्द आहें खीची और कितने हो चेहरे गुस्से की लाली दिखाने लगे। वडी कोशिश से अपने को सम्हाल जनरल फ्रांसिस फिर कहने लगे—

"मेजर डुमरे के चले जाने से हम लोग अधीर हो गये और हमने तेजी

के साथ अपना दमन जारी किया। कितने ही आदमी जिन पर दुश्मनों के जासूस होने का शक हुआ गिरफ्तार करके गोली का निशाना बना दिये गये, कितने ही मठ और मन्दिर तोड दिये गये, कितने ही गांव उजाड़ कर दिये गये और अपने पड़ोसी श्याम को, जरूर जिसके इशारे और जिसकी मदद से ही हमारे ऊपर दुश्मन की ये कार्रवाइयां हो रही थीं हमने खुलेआम सूचना दे दी कि अगर यह काम वन्द न होगा तो हम राजा को गद्दी से उतार हुकूमत अपने हाथ में ले लेंगे, मगर इन सब बातों का नतीजा हमारे लिये उलटा ही होता चला गया। दुश्मन का एक और कड़ा वार हम पर हुआ। न जाने किस तरह उसने एक ही रात और दिन के चौवीस घन्टों के भीतर हमारे कुल हवाई जहाजो को, जितने कि इस मुल्क भर मे थे—गारत कर दिया, एक भी कसम खाने के लिये न छोड़ा, और उनके साथ साथ हमारी कितनी ही फौजी लारियों को भी नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। कहना चाहिये कि हम लोगों की फौजी ताकत अगर हमेशा के लिये नही तो कम से कम वरसों के लिये नष्ट-भ्रष्ट हो गई क्योंकि जिस रियासत के पास वारूदखाने नही, किले नहीं, जंगी जहाज नही, हवाई जहाज नही, और फौजो के भेजने ले आने के लिये लारियां भी नहो, वह भला दूसरे राज्य से लड़ाई करने की तो वात ही क्या अपनी हिफाजत भी क्योंकर कर सकती है! दूसरी वात जो इससे भी खराव हुई वह यह कि श्याम के राजा वज्रायुध के खिलाफ वहां के सामन्तों सेनापतियों और पुजारियों ने वलवा कर दिया, वे सिंहासन से उतार दिये गए और उनकी जगह वड़े महाराज का पुत्र और श्याम देश का भूतपूर्व सेनापति मंगर-सिं जिसने कम्बोज का प्रसिद्ध युद्ध जीता था और जो हमारी आज्ञा से श्याम से निकाल दिया गया था न जाने कहा से आकर सिंहासन पर वैठ गया। यह परिवर्तन बिजली की सी तेजी से हुआ, और चौबीस घंटे के भीतर श्याम का कायापलट हो गया। नरेश महावज्रायुध देश से निकाल कर अपने एक जंगी जहाज पर सवार करा न जाने कहां भेज दिए गये और आज ही वहां वंकक में नये नरेश मंगर-सिं 'नरेश दूसरे' के नाम से गद्दी पर वैठने वाले

है। वंकक स्थित हमारे राजदूत कैप्टेन माटमारेंसी के पास हमारा पत्र लेकर एक वायुयान गया था, वही जिस पर काउन्ट आप अभी यहा आये है—उसे 'नरेत दूसरे' के आदमियो ने पकड लिया पर फिर न जाने क्या समझ कर छोड दिया। उसी के द्वारा नरेश नरेत दूसरे ने हमारे पास एक पत्र भेजा है जिस पर विचार करने के लिए हम लोग इस समय यहां इकट्ठे हुए है। वस मुख्तसर मे यही तो सव हाल है।"

जनरल फ्रासिस वैठ गये। सभा मे कुछ देर तक सन्नाटा रहा। इसके वाद काउन्ट शैवर वोले, "इसके पहिले कि मैं कुछ कहू यह चाहता हू कि वह पत्र भी सुन लू जो नरेश 'नरेत दूसरे' की ओर से हमारे पास भेजा गया है।"

जनरल फ्रासिस ने एक वृद्ध अफसर की ओर देखा जिसने अपने वगल के एक वक्स से निकाल दो लिफाफे उनकी तरफ वढ़ा दिये। फ्रासिस ने एक के अन्दर से एक चीठी निकाली जिसमे एक राजा की ओर से दूसरे राजा को सम्वोधन किये जाने वाली मामूली शिष्टाचार की बातो के वाद यह लिखा हुआ था :—

"वृद्ध नरेश महामहा-महिमा-महिम महावज्रायुध महोदय की इच्छा पृथ्वी के पुनीत स्थानो प्राचीन देवमूर्तियो और पवित्र तीर्थो के दर्शन की हुई जिसके लिये उनका हृदय अत्यन्त आकुल हो उठा था पर राज्यभार जिसका उन्हें अवसर न देता था। इस पर उन्होने अपने दास और विनीत प्रजा मंगर-सिं को आदेश दिया कि वह उनके स्थान पर श्याम का राज्य-भार ग्रहण करे। पिता से भी पूजनीय अपने नरेश की आज्ञा अस्वीकार करने मे असमर्थ मंगर-सिं वार वार प्रार्थना करके भी जव नरेश को डिगा न सका तो उसे यह आज्ञा माननी पडी। वह मंगर-सिं नरेश महावज्रायुध की ओर से, उनके रेजीडेन्ट की हैसियत से, तव तक के लिये श्याम का राज्य-भार ग्रहण करता है जव तक कि नरेश महावज्रायुध की वैसी प्रसन्नता रहती है अथवा वे तीर्थ-यात्रा से लौट कर पुन: अपना राज्य-भार ग्रहण नही कर लेते।

"आज के दिन से श्याम देश मे महा महिमावान नरेश मंगर-सिं का राज्य शासन आरम्भ होता है जो नरेश 'नरेत दूसरे' के नाम से आज की पवित्र घड़ी में श्याम के सिंहासन पर बैठते है।

"नरेश 'नरेत दूसरे' की इच्छा है कि श्याम के पड़ोसी राज्यों के साथ श्याम का मित्रता का सम्वन्ध स्थापित हो, मगर वह सम्वन्ध वरावरी को भित्ति पर कायम होना चाहिये। अपने पश्चिमी पड़ोसी के साथ उसकी मित्रता पूर्ण रूप से है, और पूर्वी पड़ोसी फ्रासीसी इन्डोचाइना से भी हुई है, पर उस सरकार के एक कार्य से इसमे कुछ वाधा पड़ने की आशंका है। वह कार्य है श्याम की सीमा के अन्दर फ्रान्स का समुद्र-तट से पर्वतों तक एक रेल लाइन वनाने का उद्योग करना जिससे श्याम के व्यापार को धक्का लगने की सम्भावना है। इससे श्याम नरेश 'नरेत दूसरे' फ्रांसीसी गवर्नर काउन्ट शैवर से प्राथना करते हैं कि इस लाइन को वनाने का काम तुरंत वन्द करके वना हुआ अंश तोड़ दिया जाय जिसमें दोनों राज्यो का प्रीति-सम्वन्ध वना रहे, अन्यथा परस्पर के प्रेम में वाधा पहुचने की आशंका है।"

इस पत्र के अन्त में वड़ी सी लाल रग की मोहर और ऊपर सिरे की तरफ नरेश नरेत दूसरे की मोहर थी जिसे दिखा कर जनरल फ्रासिस वोले—

"यह पत्र तो नरेश नरेत दूसरे का है जो हमारे वायुयान संचालक को दिया गया, पर उसके साथ एक पत्र हमारे राजदूत कैप्टेन मांटमारेसी का भी है जिनसे यद्यपि हमारा दूत भेंट न कर पाया पर तो भी जिसे उन्होंने अपने किसी गुप्त सहयोगी के द्वारा उसके पास पहुचवा दिया था। उसको पढ़ने से वहां की पूरी स्थिति स्पष्ट हो जाती है और वह इस प्रकार है—"

एक दूसरी चीठी खोल कर जनरल फ्रांसिस पढ़ने लगे—

"काउन्ट शैवर की सेवा मे—

"श्याम मे रक्तहीन वैद्युतिक राज्यक्राति हो गई है। महाराज वज्रा-युध को हटा मंगर-सिं सिंहासन पर वैठ गया है और महाराज नजरवंद कर दिए गए हैं। प्रजा, सेना, सामंत, सेनापति और पुजारी तथा साधु-वर्ग

विल्कुल मंगर-सि के पक्ष में हो गया है। पुराने महाराज से इसलिए सभी सख्त नाराज थे कि वे फ्रांस का पक्ष करते थे, इसलिये उनको हटाने के मौक़े पर एक भी खून की बूंद न गिरी, एक भी वन्दूक न छूटी।

"पर इस नये राजा मंगर-सिं का आना फ्रास के लिए इष्ट नही। वह फ्रास का चिर-शत्रु है और सदा से हम लोगो को कडुई निगाह से देखता आया है। मुझे तो यह भी सन्देह है कि अगर पूरे अनाम और कंवोज देश की प्रजा नही तो कम से कम 'प्रातःवंग' (वट्टम-वंग) की प्रजा—जो जिला सन् १८०६ से हमारे पास है—वलवा न कर वैठे, अस्तु जैसे भी हो इस राजा को तख्त से हटाए विना फ्रांस का कल्याण नहीं। आप पैरिस सरकार से इस मसले पर सलाह लीजिए। अफसोस यह है कि मैं एक तरह पर नजरबन्द कर लिया गया हू और मेरी घूमने फिरने और लोगों से मिलने जुलने की स्वतंत्रता छीन ली गई है। यह वहाना करके कि उत्तेजित प्रजा कही फ्रांसीसी रेजीडेन्सी लूट या जला न दे, हमारे चारो तरफ गहरा पहरा वैठा दिया गया है जिसको भेद के मेरा यह पत्र भी आपके हाथ तक पहुच सकेगा कि नही इसमें मुझे सन्देह है।

"अन्त में मै यह कह देना आवश्यक समझता हू कि नरेश नरेत दूसरे को हटाने का काम सहज न समझना चाहिये और न कोई कच्ची कार्रवाई इस सम्बन्ध मे होनी चाहिये। एक तो वह स्वयम् वडा वीर और साहसी है, दूसरे सेना विल्कुल उसके कब्जे मे है, तीसरे त्रिकंटक उसकी पीठ पर है जिसके भयानक अविष्कारों ने चारो ओर तहलका मचा रक्खा है। मगर इन सभो से वढ कर एक वात यह है जो अव मैं लिखता हूं और जिसका पता मुझे महावज्रायुध के एक मंत्री और राजमहल मे सदा जाते आते रहने वाले अपने एक श्यामी मित्र से लगा है। वह यह कि न जाने किस तरह का धोखा दे ये लोग पंडित गोपालशंकर से उनका करा-माती वायुयान 'टाइगर' और उनकी 'रेडियम-गन' उड़ा लाये है। वहन वायुयान इस समय मंगर-सिं के पास है और उसको मदद से वह जो

कर डाले थोड़ा है। आप अपने वायुयानों को रेडियम-गन की नाशकारी किरणो के प्रभाव से बचाइए नही गजब हो जायगा। इसके......"

जेनरल फ्रांसिस बोले, "इसके आगे का खत अधूरा है, मालूम होता है जल्दी मे कैप्टेन मांटमारेंसी इसे समाप्त नहीं कर पाए, पर यह समझने मे हम लोगो को भ्रम नहीं हो सकता कि हमारे वायुयानों का जो इधर एक सिरे से नाश हो गया है उसका मुख्य कारण यह 'टाइगर' वायुयान या उसकी 'रेडियम-गन' ही है। दुश्मनो के हाथ मे इन दोनों चीजों का लग जाना हमारे हक मे कितना बुरा हुआ है और होगा इसे सोचने के लिए ज्यादा परिश्रम करने की जरूरत न पड़ेगी क्योकि हमारे वायुयानों के साथ साथ कितनी ही मोटर लारियो का भी उड़ जाना 'रेडियम-गन' का ही नाशकारी प्रभाव बता रहा है। उस एक वायुयान टाइगर को रखते हुए दुश्मन हमारे सैकड़ों वायुयानों का अकेला ही मुकाबला कर सकता था पर अब जब कि हमारे पास एक भी वायुयान और कोई भी युद्ध-सामग्री रह न गई, शत्रु हमे बहुत जल्दी नष्ट कर सकता है, इसीलिए अब हमे विचार करके यह निश्चय कर लेना चाहिये कि श्याम देश में जो राजपरिवर्तन हो गया उस सम्बन्ध मे हमें कौन सा रुख अख्तियार करना उचित है और श्याम देश के नये नरेश के पत्र का क्या उत्तर देना चाहिए। साथ ही मैं यह भी कहूंगा कि हमारे राजदूत कैप्टेन मांटमारेंसी की जान भी इस समय खतरे में है और उनकी रक्षा का उचित उपाय होना बहुत जरूरी है।"

इतना कह जेनरल फ्रासिस अपने स्थान पर बैठ गये।

कुछ देर तक सभा में एकदम सन्नाटा छाया रहा जिसके बीच सभी लोग तरह तरह की बातें सोचते रहे, इसके बाद काउन्ट शैवर खडे हुए और कहने लगे—

"मेरे सम्मानित मित्र जनरल फ्रांसिस ने जिन बातो पर विचार करने के लिए हम लोगों से कहा है वह बहुत ही गम्भीर सलाह मांगती हैं परन्तु उन पर विचार आरम्भ करने के पहिले उन कई बातों का भी निगाह में

आ जाना जरूरी है जिनका पता मुझे अपनी कैद की हालत में तथा उसके पहिले और वाद भिन्न भिन्न सूत्रो से लगा है।

"इस वात में तो कोई सन्देह ही नही है कि हम लोगों का मुख्य शत्रु त्रिक टक है जो समूची एशियाई जातियो का पक्षपाती और मित्र वन कर खडा हुआ है और जो चाहता है कि केवल श्याम ही हमारे दवाव से निकल न जाय वल्कि यह देश फ्रेंच-इन्डो-चाइना भी जिसे हम लोगों ने हजारों कीमती जानें गंवा के और वडे परिश्रम से जीता है तथा जिसकी अरवो रुपये लगा कर हमने उन्नति की है, स्वतंत्र हो जाय।

"इस काम के लिए वह सव प्रकार के गुप्त और प्रगट तथा उचित और अनुचित उपायो का अवलम्वन करने को केवल तैयार ही नही है वल्कि उनसे काम भी ले रहा है और उसने कई अस्त्र-शस्त्र भी ऐसे वनाए है जिनका मुकावला करना हम लोगो के लिए कठिन हो रहा है। उसके अलोपी वायुयान, अटोमेटिक पाइलट, और ऐटोमिक-गन का हाल तो करीव करीव आप सभी को मालूम है मगर इनके सिवाय दो एक चीजें और भी उसने वनाई है जिनमें से एक वायरलेस वाम्व है। ये वम ऐसे है कि हर शकल और हर चीज के वन सकते है और वेतार की किरणें फेंक कर फोडे जाते है। हमारे जगी जहाजो और वन्दरगाहो के विस्फोट इन्ही वमो की वदौलत हो रहे या हुए है। और दूसरी चीज है 'गन-काटन राकेट्स।' रूई को तेजाव मे डाल कर उससे जो वारूद वनती है उसे तावे के चोगे में भर कर और उसके अगले सिरे मे कई आग लगाने वाले मसाले भर कर ये राकेट्स वनाए जाते है और ये उस वारूद के विस्फोट से चलते है। ये नई चीजे नही है और जर्मनी में इसी तरह के कुछ राकेट्स वन भी चुके है, पर इसे युद्धोपयोगी वनाने का श्रेय त्रिकटक को ही हे।

"इतने अस्त्र-शस्त्रो को वनाने और उनसे इच्छानुकूल काम लेने वाला त्रिक टक कितना शक्तिशाली शत्रु है इसका पता उस छोटे से काम से लग सकता है जो उसने आप लोगो के सामने किया। मेरा मतलव मेजर डुमरे

वाली घटना से है। (इस जगह काउन्ट का गला कुछ भर आया पर अपने को सम्हाल वे कहते चले गये) किस तरह से वे आप लोगों के बीच में से उठा लिये गये आप सभी जानते है, पर यह केवल मुझे ही मालूम है कि उनकी क्या दुर्दशा की गई ! पापी शत्रुओं ने उन्हें बडी यातना दे के मारा ! (कितने ही गलों से एक दर्द भरी आह निकली और काउन्ट की आंखो मे आंसू आ गये) उनका सत्यानाश-हो।

"पर इन सभों से बढ़ कर नई बात जो हुई वह है श्याम का रक्तहीन विप्लव, उस देश में एक नये राजा की स्थापना और वह राजा भी कौन ? वही जो हमारा सदा से शत्रु रहता आया है। यह हमारे लिये अच्छा लक्षण नही है, और ऊपर से अगर उसे दैवी सहायता मिल गई है अर्थात् गोपाल-शंकर का अद्‌भुत वायुयान टाइगर मय उनकी रेडियम-गन के मिल गया है तो वह हमारे ऊपर एक कहर का काम करेगा।

"इतने सम्मिलित शत्रुओ से एक साथ क्या हम लड़ सकेंगे ? और क्या ऐसा करना उचित होगा ? क्या हमारी इस वर्तमान शक्तिहीन अवस्था में यह सम्भव होगा ?"

काउन्ट शैवर चुप हो गए। सभा मे कुछ देर सन्नाटा रहा। इसके वाद धीरे धीरे लोगो में आपस मे कानाफूसी शुरू हुई जो वढ़ते हुए वहस और झगडे का रूप धारण करने लगी। स्पष्टत. वहां उपस्थित लोगो के दो दल हो गये थे। एक नौजवानो का, जो दुश्मन से पूरी तरह वदला लेने के पक्ष मे था, दूसरा वृद्धो का जो मौका देख तरह दे जाने और रुख वचा कर फिर किसी समय अपना वार करने के पक्ष मे था। ऐसा होना स्वाभाविक ही था और काउन्ट शैवर की यही इच्छा भी थी कि दोनों तरह की रायें रखने वालो की वातें सुन के तव कुछ फैसला करें, अस्तु वे कुछ देर तक तो चुप वैठे रहे और तव वोले—

"दोस्तो, हर एक वात के एकाधिक पहलू और हर एक सवाल के एक से अधिक जवाव हो सकते हैं। इस समय जिस वात या जिन वातों पर हमे

विचार करना है उनका भी एक से अधिक उत्तर हो सकता है और अव हमें क्या करना चाहिए उस पर भी एक से अधिक रायें हो सकती है, अस्तु उन सभी पहलुओ और सभी रायो को सुन कर और सभी प्रश्नो को सभी दृष्टियो से देख भाल कर ही कुछ करना ठीक होगा। मै थोडे मे सभी की राय जान लेना चाहता हू। यहा उपस्थित नौजवान मडली की राय मैं पहिले सुनना चाहता हू। लेफ्टिनेन्ट कामट, आपकी इस सम्वन्ध मे क्या राय है?"

लेफ्टिनेन्ट कामट, जिसकी तरफ लक्ष्य कर काउन्ट ने वह प्रश्न किया था, एक नौजवान मगर वहादुर और वुद्धिमान सिपाही था जो केवल काउन्ट का एड-डी-कैम्प और विश्वासी अफसरो मे मे ही नही था वल्कि जिसके पिता चाचा तथा अन्य रिश्तेदार फ्रास मे वहुत ऊंचे रुतवो पर थे। काउन्ट की वात सुन इसने खडे हो के कहा—

"काउन्ट, मैं एक सिपाही हू और मेरा काम अपने अफसरो की आज्ञा पालन करना है, लेकिन अगर इस मौके पर मेरी राय पूछी जाती है तो मैं उसे दो शब्दो में कह सकता हू। मेरी समझ मे इस वक्त पीछे हट जाना कायरता होगी और दुश्मन को पीठ दिखाने को वनिस्वत मैं अपनी छाती में अपनी ही किरिच भोक लेना अच्छा समझूंगा। अभी तक सिवाय इसके कि दुश्मन ने हमारे कुछ हवाई जहाज, कुछ जंगी जहाज, और कुछ किले नष्ट कर दिये हो, और कोई अधिक नुकसान हमें नही पहुंचाया है, और अगर यहा नही तो पैरिस और फ्रास में हमारे पास हवाई जहाज भी है और जंगी जहाज भी। फ्रांसीसी रगो में अभी गर्म खून दौड़ रहा है और फ्रांसीसी हाथो में अभी वन्दूक पकडने की ताकत है, तथा इन दोनो के रहते हमसे हार मनवा लेने वाला कोई विरला ही हिम्मती हो सकता है, मै तो कहूगा कोई भी नही हो सकता!"

"वेशक वेशक!" "यही वात है!" "ठीक यही मेरा भी कहना है!" इत्यादि के शोर मे कामट की आवाज डूव गई। इसमें कोई शक न था कि इसी तरह की राय रखने वाले उस जगह ज्यादा थे। काउन्ट शैवर

कुछ देर तक सिर नीचा कर कुछ सोचते रहे। इसके बाद जेनरल फ्रांसिस की तरफ झुक के उन्होंने कहा—

"जेनरल फ्रासिस, क्या आप अपनी राय भी अब मुझे बतावेंगे?"

जेनरल फ्रांसिस खड़े हुए। कुछ देर तक वे अपनी निगाहें अपने चारो तरफ के उत्तेजित चेहरो पर फेरते रहे, तब शांत स्वर में बोले—

"राय मेरी भी वही है जो मेरे जिगरी दोस्त के लडके लेफ्टिनेन्ट कामट की है। मैं भी दुश्मन को पीठ दिखाने की बनिस्बत अपनी जगह पर लड़ते लडते गिर कर मर जाना पसन्द करूंगा, पर फिर भी ईश्वर की दी हुई बुद्धि का उपयोग करते हुए, उसका तिरस्कार करते हुए नही। हमारे नौजवान दोस्त एक बात पर गौर नही कर रहे है. हमारा दुश्मन हमारे सामने है कहां जो हम उससे बदला लें? वह तो पर्दे की आड़ में छिप छिप के हम पर वार कर रहा है, धूर्तता और दगाबाजी का पल्ला पकड़ के हम पर चोट कर रहा है। जिस तरह से हमारे सत्तर वायुयानो को उसने उड़ा दिया उसी तरह हमारे सात सौ वायुयानो को भी वह उडा सकता है! ऐसी अवस्था में पैरिस से और वायुयानो को बुलवा लेना क्या कोई अधिक लाभदायक होगा या बुद्धिमानी ही होगी!"

नौजवान और उत्तेजित चेहरे जेनरल फ्रांसिस की बात सुन कुछ देर के लिए नीचे को झुक गए। यह बात बेशक विचारणीय थी। जेनरल फ्रांसिस जरा देर चुप रह कर फिर बोले—

"चोट पहुंचाने वाले को चोट पहुंचाना यह सिपाही का कर्तव्य है, पर छिप कर आड़ से वार करने वाले का मुकाबला करना सिपाही का नही, जासूसो और गोइन्दों का काम है। मै आपसे कहूगा और जोर देकर कहूंगा कि पहिले अपने दुश्मनो का पता लगाइए, वह कहां छिप कर काम कर रहा है इसकी खोज लगाइए, किस तरह वह अपने वार करता है इसकी खबर लीजिए, और तब इन बातो से आगाह होकर, उसके ऊपर चढ़ दौडिए, उसे ऐसी चोट पहुंचाइए कि उसके मर्मस्थान छिन्न भिन्न हो जायं

और फिर वह सिर उठाने लायक न रहे। यों, बिना कुछ जाने समझे, बिना दुश्मन को एक निगाह भी देखे, बिना शत्रु के किसी अड्डे पर निगाह डाले, यों ही अंधो की माफिक चट दौड़ना, भाइयो हिम्मत हो सकती है, बहादुरी हो सकती है, पर बुद्धिमानी नही, बस मै सिर्फ इतना ही कहूँगा।"

जनरल फ्रांसिस बैठ गए। काउन्ट शैवर एक दूसरे अफसर की तरफ घूमे और बोले, "कर्नल डागे, आपकी राय क्या पड़ती है?"

यह कर्नल डागे एक बहुत ही वृद्ध और अनुभवी सिपाही था। इसने कुछ विचार कर कहा, "मेरी समझ में तो इस तरह राय मशविरा करने मे बहुत देर लगेगी और कुछ हासिल न होगा। इससे बेहतर यह होगा कि कुछ आदमियो की एक कमेटी बना दी जाय और वह सब मसले और सब पहलुओं पर गौर करके अपनी पुख्ता राय दे कि अब क्या करना मुनासिब होगा। उस कमेटी की राय मान लेना सबसे अच्छा होगा।"

कई आदमी बोल उठे—"ठीक है" "कर्नल ठीक कहते हैं" आदि और काउन्ट को भी यह बात ठीक मालूम हुई। उन्होने कहा, "भाइयो यही बात ठीक है, आप लोग सात आदमियो की एक कमेटी बना दीजिए और उसके ऊपर यह काम छोड़ दीजिए।"

[७]

श्याम का रक्तहीन राज्यविप्लव सचमुच एक आश्चर्यप्रद घटना थी। एक बूंद खून न गिरा, एक बन्दूक न चली, एक तलवार म्यान से बाहर न हुई, और राज्यक्रांति हो गई। पर इसका कारण!

कारण खोजने कही दूर जाने की जरूरत नही। श्याम की राजा प्रजा, सेना सामन्त, अमीर गरीब, सभी फ्रांस की करतूतों से तंग आ गए थे। तरह तरह के नए नए और बे सिर पांव के बहाने निकाल फ्रांस धीरे धीरे श्याम देश में अपने पैर फैला रहा था। श्याम मे फ्रांसीसियों की बड़ी बड़ी कोठियां और बड़े बड़े कारखाने थे तथा उनसे भी बड़े बड़े मनसूबे। उन्हें पूरा करने के लिए बड़े रोबदाब और दबदबे भी थे। कुछ यह भी नही कि

श्यामी लोग इस वात को समझते न हों, पर अब तक वे सैगन स्थित अफसर लोग कुछ ऐसी चालाकी से अपना काम करते आ रहे थे कि अपने रक्त-शोषण को समझते देखते और जानते हुए भी किसी श्यामी को कुछ वोलने का अवसर न मिलता था। पर अब इधर कुछ समय से जो लोग फ्रेन्च-इन्डो-चाइना और सैगन पर शासन कर रहे थे वे कुछ ऐसे उजड्ड और उद्धत से थे और उनके काम ऐसे भोंडे ढंग से किए जा रहे थे कि लोगों के कलेजो की आग धधक कर वाहर निकलने लगी थी। श्याम के राज्य परिवर्तन के मूल में यही वात थी और उसको किसी ने तरक्की दी थी तो त्रिकंटक ने जिसने मौका पा वहां का टाट ही एकदम उलट दिया था।

कैसे कैसे क्या हुआ, जिस प्रकार राजा वज्रायुध प्रगट में अपने सामन्तों के दवाव से पर वास्तव में अपने प्रिय पुत्र राजकुमार प्रजादीपक के आग्रह से, राज्य छोड़ अलग हो गए थे, और कैसे अपने वाहुवल से कम्वोज में श्याम की विजय-पताका फहराने वाले मंगर-सिं को उत्साह से मत्त सेना और प्रजा ने श्याम के राजसिंहासन पर वैठा दिया था, वह सब इतिहास प्रसिद्ध घटना है, अस्तु हम इन वातो के वारे में यहां कुछ भी न लिख कर आगे चलते हैं और राजमहल की एक घटना का वर्णन कर इस वृत्तांत को समाप्त करते हैं।

वंकक राजमहल के एक आलीशान कमरे में नए महाराज मंगर-सिं अथवा यों कहना चाहिए कि 'नरेत दूसरे' एक ऊंची गद्दी पर वैठे हुए हैं और उनके सामने राज्य के कई मुख्य राजमंत्री सेनापति और सरदार वैठे हुए किसी गम्भीर प्रश्न पर विचार कर रहे है, कि इसी समय एक चोवदार ने आकर अर्ज किया—"महाराजाधिराज, राजकुमार प्रजादीपक अपने एक मित्र के साथ सेवा मे उपस्थित होने की आज्ञा चाहते हैं।" महाराज नरेत ने इशारा किया—"आने दो" और उनके दूसरे इशारे पर उनके वगल ही में एक दूसरी मोटी गद्दी राजकुमार के लिए विछा दी गई।

कुछ ही क्षणों के वाद राजकुमार प्रजादीपक और उनके पीछे पीछे एक व्यक्ति जिसके चेहरे पर नकाव पड़ी हुई थी आते दिखाई पड़े। दोनों

ने महाराज का अभिवादन किया और तब उनका इशारा पा राजकुमार प्रजादीपक उस गद्दी पर और वह नकाबपोश उनके बगल में बैठ गया जिसकी तरफ इशारा कर महाराज ने पूछा, "क्या ये ही सज्जन... ....?" राजकुमार ने हाथ जोड़ कर कहा, "जी हा, पूर्व-गौरव-सघ के ये ही वे प्रतिनिधि है जो हमारे यहा रह कर हमें उचित सलाह मशविरा दिया करेंगे और जिन्हें महाराज के आज्ञानुसार मै लेने गया था।"

महाराज नरेत बोले, "ठीक है, मैं इनका स्वागत करता हूं और इस बात का विश्वास दिलाता हू कि श्याम के प्राचीन गौरव की रक्षा करते हुए जहा तक सम्भव होगा मै पूर्व-गौरव संघ की आज्ञानुसार चलना अपना कर्तव्य समझूंगा। इस समय मैंने अपने कुछ बहुत ही विश्वासी सरदारो को यहा इसीलिए बुलाया हुआ है जिसमें आपसे परिचय करा सकूं पर इनमें से किसी के विरुद्ध यदि आपको कोई बात मालूम हो तो मै उसको यहा से हटा देने को तैयार हू क्योकि मुझे खूब मालूम है कि 'पूर्व-गौरव-संघ' के जासूस घर घर मे घुसे हुए है और लोगो के मुखों की ही नही बल्कि दिलों की बात भी जानते है।"

राजकुमार ने नकाबपोश की तरफ देखा और इशारे ही इशारे मे कुछ बात की, इसके बाद वे बोले, "यहा उपस्थित इन सभी व्यक्तियो को मेरे ये मित्र पहिचानते है और इनमे से किसी के भी बारे मे इन्हें कोई सन्देह या दूसरा विचार नही है।"

महाराज ने यह सुन कहा, "ऐसी अवस्था मे मै आशा करता हूं कि ये मुझसे और इन लोगो से कोई परहेज न करेंगे और हमलोगो को ऐसा अवसर देंगे जिसमें हम इन्हें पहिचान सकें।"

"बेशक, बेशक!" कहते हुए राजकुमार ने उस नकाबपोश की तरफ देखा। उस व्यक्ति ने फौरन ही अपने चेहरे पर से नकाब हटा दी और अब हमने भी पहिचान कि यह नौजवान अजीतसिंह है। अजीत ने श्याम देश के शिष्टाचारानुसार भूमि पर मस्तक रख कर महाराज नरेत का अभि-

वादन किया और तब वहां बैठे सरदारों से भी दण्ड-प्रणाम कर पुनः अपने स्थान पर बैठ गया। इसी समय राजकुमार पुनः बोले, "इनका नाम अजीतसिंह है और इनकी बहादुरी और हिम्मत की बातें जब मैं महाराज को सुनाऊंगा तो महाराज आश्चर्य करेंगे, पर इस समय वह सब कहने का अवसर नहीं है क्योंकि बहुत सी बातें कहनी और भविष्य के लिए बहुत सी बातों पर विचार करना है।"

महाराज०। और मुझे भी इनसे बहुत सी बातें जाननी है, अस्तु शुभस्य शीघ्रम्!

राजकुमार०। मगर महाराज इनकी बात शुरू होने के पहिले मुझे कुछ निवेदन करना था।

महाराज०। हां हां, खुशी से कहो।

राजकुमार०। मैंने आज बंकक आते ही सुना कि महाराज ने गद्दी के उत्तराधिकार के बारे में कुछ घोषणा निकाली है और मुझे युवराजत्व तथा अपने बाद राजगद्दी का हक प्रदान किया है।

महाराज०। (मुस्कुरा कर) हां ऐसा किया तो है, तो क्या तुम्हारे मित्र 'पूर्व-गौरव-संघ' को इसमें कुछ आपत्ति है?

राजकुमार०। उनको हो या न हो पर मुझे जरूर है।

महाराज०। तुम्हें! मगर सो क्यो?

राजकुमार०। अगर कसूर माफ हो तो कहूं।

महाराज। हां हां, जरूर कहो।

राज०। मेरी राज्य करने की बिल्कुल इच्छा नहीं है आपकी घोषणा के फल-स्वरूप भविष्य में कलह होने की भी सम्भावना दिखाई पड़ती है।

महा०। राजनीति में बहुत सी बाते अनिच्छापूर्वक भी करनी पड़ती है। तुमको भी उसी तरह राज्य-ग्रहण करने को तैयार रहना चाहिए। रही कलह की बात, सो एक तो उसकी सम्भावना नहीं दूसरे यदि हो भी तो एक युवा वीर की तरह तुम कलहकारियों पर विजयी होने की चेष्टा करना!

राज० । महाराज......

महा० । मै तुम्हारा मतलव समझ गया, तुम शायद सोच रहे होगे कि यदि मै विवाह करूं और उस विवाह से सन्तान हो तो मेरे वाद वह गद्दी के लिए तुमसे झगडा करेगी ?

राज० । जी... .. जी...... !

महा० । मगर मैं वह अवसर ही न आने दूंगा, मैने स्थिर कर लिया है कि जव तक श्याम की राजगद्दी पर रहूगा विवाह न करूंगा !

राज० । मगर यह तो अन्याय होगा !

महा० । (मुस्कुरा कर) किसके साथ !

राज० । महाराज, स्वयं आपके साथ ।

राजकुमार के साथसाथऔरभी कई व्यक्ति वोले, "अवश्य, अवश्य !" पर महाराज ने हंस के कहा, "देश की भलाई के लिए तुम्हारे पिता का हक मैंने छीन लिया, पर तुम्हारा छीन नही सकता ! केवल यही नही, तुम लोग भी जव शान्त-चित्त से विचार करोगे तो इस वात का सुफल समझ सकोगे । इससे कलह होगा नही वल्कि वहुत सा कलह वच जायगा । मैंने वहुत सोच विचार कर यह निश्चय किया है और उसको वदलूंगा नही । तुम इस विषय को छोड और जो कुछ कहना हो कहो ।"

राजकुमार ने लाख कही पर महाराज नरेत ने उनकी एक न सुनी और कठिन आज्ञा देकर उन्हें चुप कर दिया । इसके वाद वात वदलने के खयाल से वे अजीतसिंह की तरफ देख के वोले, "मुझे आपका नाम सुन के एक कौतूहल हो रहा है । यदि आपको आपत्ति न हो तो मै उसका निवारण कर लूं ।"

अजीत० । हां हा पूछे, प्रसन्नता से पूछे ।

महा० । क्या आप वही अजीतसिंह हैं जो फांसी के तख्ते पर से छूट के जेल के वाहर हो गए थे ?

अजीत० । जी हां, मै वही अजीत हू, और मुझे यह भी मालूम है कि महाराज भी उन दिनो वही जेलखाना आवाद कर रहे थे ।

महा० । (मुस्कुरा कर) तब तो हम आप पुराने साथी हैं और हम लोगों की अच्छी तरह निपट सकेगी !

अजीत० । (हंस कर) बेशक, खास कर इसलिए कि हम लोगों के एक तीसरे सह-यात्री भी यहां मौजूद है जो जेल मे हम दोनों ही का मनो-रंजन किया करते थे ।

महा० । वह कौन ?

अजीत० । मेरा मतलब बाबू द्वारिकानाथ से है जिन्हें मैं नीचे बाग में टहलता देख चुका हूं ।

महा० । ओ हो, हां ठीक है, उनकी बात तो मैं भूल ही गया था ? वह भी एक अजीब आदमी है, उससे जो काम हम लोगों का बना वह तो आपको भी मालूम ही हो चुका होगा ।

अजीत० । हा अच्छी तरह । राजकुमार प्रजादीपक से मैंने सुना कि आपने उसकी मदद से पण्डित गोपालशंकर के हाथ की जाली चोठिया तैयार करवाई और मुरली को धोखा दे 'टाइगर' उड़वा मंगवाया ।

महा० । (हंस कर) क्योकि राजनीति मे जाल और फरेब पहिले अस्त्र होने चाहिए इसीलिए मैंने अपने शासन का श्रीगणेश इसी तरह पर किया ।

अजीत० । मगर महाराज ने यह बहुत ही अच्छा किया । 'टाइगर' ने आते ही बहुत बड़ा काम किया और अभी उसकी मदद से हम लोग और भी भारी भारी काम कर सकेंगे । फिर भी मैं यह जरूर कहूंगा कि उसकी हिफाजत का पूरा बन्दोबस्त होना चाहिये ।

महा० । जितना सम्भव है उतना किया जा रहा है और जो कुछ आप आगे सलाह दें वह करने को मैं तैयार हू । फिलहाल तो मैंने उसे जनाने नजरबाग में रखवाया है जहा किसी भी गैर तो क्या मर्द मात्र के जाने की सख्त मनाही है ओर फिर राजकुमार स्वयं उस पर निगरानी रखते है ।

अजीत० । तो फिर ठीक ही है ।

महाराज० । अच्छा अब आप कुछ सैगन की बातें मुझे बताइए ।

आपके दूतो की सबसे ताजी खबर क्या है ?

अजीत०। काउन्ट शैवर ने एक कमेटी बना दी थी और उस पर अन्य बातो के अलावे आपके भेजे खलीते और भविष्य मे श्याम के साथ फ्रांस का क्या सम्बन्ध रहेगा इस पर विचार करके उचित निर्णय करने का भार भी सौपा था। उस कमेटी ने बहुत बहस मुबाहसे के बाद जो राय कायम की सौभाग्यवश उसका पता हमारे आदमियो को लग गया।

महा०। वह राय क्या थी ?

अजीत०। वह यह कि रेल बनाने का काम जारी रक्खा जाय और यदि आप उनको रोकने का आग्रह करें तो आपके साथ युद्ध ठान के यदि संभव हो तो आपको सिंहासन से उतार कर श्याम को अपने नियंत्रण में कर लिया जाय जिसके लिये आवश्यक सैनिक बल बढाने और हमारे आक्रमणो से हो गई हुई कमी को दूर करने की चेष्टा प्रारम्भ कर दी गई है।

महा०। (क्रोध से) श्याम को अपने नियंत्रण मे कर लिया जाय ?

अजीत०। जी हां महाराज।

महा०। (अपने मंत्रियो और सामन्तो की ओर देख कर) सुना आप लोगों ने, मेरे जासूसो ने झूठ खबर नही दी !

अजीत०। (आश्चर्य से) सो क्या महाराज ! क्या आपके जासूसों ने भी इस बारे में आपको कोई खबर दी है !

महा०। हा, मेरे भी कुछ जासूस इस समय सैगन के बेलवेडियर पैलेस मे छिपे हुए अपना काम कर रहे हैं और उन्होने भी यही बात मुझे बताई है बल्कि उन्होने इतना और कहा है कि यह सब कार्रवाई करते हुए भी मेरे साथ मित्रता का ढोंग जारी रखने और जब पूरी तैयारी हो जाय तो यकायक बैंकक पर आक्रमण कर देने का उनका विचार है।

अजीत०। जी हां, मैं यह बात भी आपसे आगे कहने ही वाला था। ऐसी ही बात मेरे आदमियों को भी मालूम हुई है और अगर आपके जासूसों ने यह बात आपसे कही है तो मैं केवल उनकी तारीफ ही नही करूंगा

वल्कि ऐसे जासूस आपके पास होने पर आपको वधाई भी दूंगा !

महाराज०। (चिंता के साथ) सो तो ठीक है, मगर उस हालत में हम लोगों को क्या करना चाहिए यह विचारणीय है ! इतना तो आप भी समझते होगे कि लाख भी हो, श्याम में वह शक्ति नही है कि वह फ्रांस से मोरचा ले सके। (अपने सरदारो की तरफ देख के) क्यों साहवो ?

अजीत०। महाराज के मुंह से ऐसे शब्द सुन के मुझे दुख होता है। कदाचित् महाराज ने अपने मित्र और सहकारी 'पूर्व-गौरव-संघ' के वल पर विचार किए विना ही यह वात कह दी है। यदि महाराज आज्ञा दें तो मैं एक वात कहूं।

महा०। हा हां, खुशी से।

अजीत०। उस कमेटी के इस निर्णय की वात जानते ही पूर्व-गौरव-संघ ने यह निर्णय कर लिया है कि वह समूची रेलवे लाइन—समुद्र से पर्वतों तक—एक साथ और एक ही समय मे उड़ा दी जाय। उनका इतने दिनों का सव परिश्रम और धन-व्यय ही नही वल्कि सामान और सव कार्य-कर्त्ता तक धूल में मिल जायंगे !

महा०। (आश्चर्य से) मगर क्या यह सम्भव है ?

अजीत०। सम्भव ? निश्चय सम्भव है ! सम्भव ही नही उसका इन्तजाम किया भी जा चुका है ? उस समूची लाइन भर में दो दो सौ गज पर वेतार की तार से फूटने वाले वम जमीन के अन्दर गाड़े जा चुके है और हम लोग जिस क्षण चाहें एक हलकी 'आकाश-किरण' फेंक कर उन सव वमों को उड़ा दे सकते हैं।

महा०। ऐसा !!

अजीत०। जी हां, और हम लोग सिर्फ महाराज से सलाह और आज्ञा लेने के लिए ही रुके हुए हैं क्योंकि श्याम के सिंहासन पर महाराज के ऐसा वीर और वुद्धिमान जव आ गया है तो उनसे सलाह और सहयोग लिए विना हम लोग कोई काम करना नही चाहते।

महा०। अगर आप लोग ऐसा कर सकते हों कि सैकड़ों मील की लम्बी वह रेल लाइन पल भर में विनष्ट कर दी जाय तो फिर पूछना ही क्या है?

अजीत०। इसमें कई बातें विचारणीय है पर एक बात मुख्य रूप से समझ लेने की है। वह कार्रवाई जो की जाय तो वह महाराज की ओर से की जाय या पूर्व-गौरव-संघ की ओर से?

महाराज०। इस प्रश्न का तात्पर्य मैं नही समझा।

अजीत०। बात यह है कि उस रेलवे लाइन के विषय में हम लोग भी काउन्ट शैवर को अपना विचार बता चुके है और महाराज ने भी अपने पत्र में लिखा है। अब अगर हम लोगो की तरफ से कार्रवाई की जाय तो फल वही होते हुए भी फ्रास को प्रत्यक्ष रूप से श्याम के विरुद्ध कोई अभियोग लगाने का कारण न मिलेगा, मगर महाराज के नाम पर यदि वह कार्य किया जाय तो फ्रांस को श्याम से युद्ध छेड देने का एक बहाना मिल जायगा।

महाराज०। हां यह बात तो अवश्य विचारणीय है। यद्यपि फ्रास से युद्ध करना ही पड़ा तो मैं पीछे नही हटूंगा फिर भी बहुत सी बातो को देखते हुए मेरी यह इच्छा अवश्य थी कि अभी कुछ समय तक मुझे अपना पैर मजबूत कर लेने का मौका मिल जाता तो उत्तम होता।

अजीत०। ठीक यही बात हम लोग भी सोचते है, मगर इसके सिवाय भी एक बात और है।

महा०। वह क्या?

अजीत०। (इधर उधर देख कर) वह बात मैं महाराज से एकान्त में कहना चाहता था।

महाराज ने यह सुनते ही वहा बैठे आदमियो की तरफ देखा जिससे वे सब उठ कर उस कमरे के बाहर हो गए। अजीत महाराज के और पास खसक आया और धीरे धीरे उनसे कुछ कहने लगा।

[८]

काउन्ट शैवर बोले—

"सज्जनो, मुझे बडी जल्दी में और ऐसे समय आप लोगो को बुलाना

पड़ा है पर क्या करूं, जो समाचार अभी मैं आपको सुनाऊंगा उसे सुन कर आप लोगों को भी वही आशंका दवा लेगी जिसके नीचे मैं दव रहा हूं।"

उनींदे और अलसाए हुए चेहरे काउन्ट की तरफ उठ गए। हमें कहना नहीं होगा कि स्थान सैगन का राजप्रासाद था और जिन लोगों से काउन्ट यह बात कह रहे थे वे उनके बहुत ही विश्वासी और फ्रेन्च-इन्डोचाइना के सामान्य अधिकारी थे जिनमें हमारे परिचित करीब करीब सभी व्यक्ति नजर आ रहे थे। काउन्ट कहते गए—

"आज रात को करीब दो घन्टे भए होंगे, मैं गाढ़ी नींद में सोया हुआ था कि यकायक किसी तरह की आहट पाकर मेरी नींद खुल गई। इधर उधर सिर घुमा कर यह देखने की कोशिश करते ही कि नींद उखड़ने का कारण क्या है, मैं चमक गया क्योंकि मैंने देखा कि एक नकाबपोश मेरे पैताने की तरफ खड़ा मेरी तरफ देख रहा है। मैंने उससे डपट के पूछा, "तुम कौन हो और क्या चाहते हो ?" उसने जवाव में यह चोठी मेरी तरफ फेंक दी और तव मेरे सिहानें की तरफ ऊंगली से वता कमरे के वाहर की तरफ चला। मैंने तकिए के नीचे से अपना पिस्तौल निकाल लिया और डांट के कहा, "जहां हो वहीं खड़े रहो, वरना मैं तुम्हारा वदन छेद दूंगा।" इस पर एक घृणा को हंसी हंस कर उसने पुनः मेरे सिहानें की तरफ उंगली उठाई। मैंने आश्चर्य से सोचा कि मेरे सिहानें क्या है जो यह वार वार उधर ही वता रहा है अस्तु सिर घुमा कर उधर देखा, जो कुछ मुझे दिखाई पड़ा उसने घवड़ा दिया।

"मैंने देखा कि मेरे सिहानें की तरफ एक त्रिशूल खड़ा है और उसके साथ तारों से वंधी लटकती हुई एक डिविया झूल रही है। मैं उसकी तरफ देख ही रहा था कि उस डिविया में से आवाज आई—"काउन्ट शैवर, क्या तुम भूल गये कि सिर्फ एक हफ्ते के लिए तुम्हें इस शर्त पर छोड़ा गया था कि तुम सैगन जाकर हमारा प्रस्ताव अपने सहकारियों के सामने रक्खो और उनका जो कुछ उत्तर हो वह आकर हमें वताओ ?"

"मै वडे आश्चर्य मे पड़ा कि यह आवाज कहां से और कैसे आ रही है पर तभी मुझे आप लोगो से सुनी वह वात याद आ गई जव मेजर डुमरे वाली दु.खद घटना हुई थी और दुश्मन ने आकाश से इसी तरह का एक त्रिशूल और एक डिविया गिरा कर आप लोगों से वातचीत की थी, अस्तु मै उस डिविया की तरफ मुंह करके वोला, "तुम कौन हो और कहा से वातें कर रहे हो ?" डिविया में से आवाज आई, "मैं पूर्व-गौरव-संघ के कार्यालय से वोल रहा हू और उन्ही तीन आदमियो में से एक हूँ जिनसे तुम्हारी वातें उस समय हुआ करती थी जव तुम हमारी कैद मे थे ।" सचमुच वह आवाज मेरी पहिचानी हुई थी और इस तरह पर इतने दिन के वाद इस आधी रात के समय उस डिविया मे से वह आवाज निकलती हुई सुन मुझे इतना आश्चर्य हुआ कि मै कुछ कह नही सकता । मैने उस नकावपोश से कुछ पूछने के लिये उसकी तरफ घूम कर देखा पर इसी वीच मे वह जाने कहां गायव हो गया था और आश्चर्य तो यह कि कमरे के वाहर वाले दालान में पहरा पड रहा था और तिस पर भी किसी ने उसे न आते ही देखा और न जाते । मैं शायद उठ कर कमरे के वाहर निकलता और उसके वारे में कुछ दरियाफ्त भी करता पर इसका मौका न लगा और उसी समय डिविया में से पुन: आवाज आई—"खैर अव तुम वताओ कि तुमने क्या निश्चय किया ? हमारी वात मानना है या हमसे युद्ध करना है ?" मैंने जवाव दिया, "हम लोग जान वूझ कर और स्वयं छेड़ कर किसी से झगड़ा मोल लेना नही चाहते, पर अगर कोई हमें धमकी दे कर हमसे जवर्दस्ती कोई काम लेना चाहे तो वह भी वर्दाश्त नही कर सकते । फिलहाल हमने यह तय किया है कि अगर श्याम हम लोगों का इस काम में खर्च हुआ भया समूचा रुपया मय सूद के तुरत अदा कर दे तो हमलोग उस रेलवे लाइन का वनाना वन्द कर देगे ।"

जरा रुक काउन्ट शेवर वोले, "क्यों साहवों, यही वात तो आप लोगो ने निश्चय की थी, और फिलहाल वक्त टालने के लिए यही वहाना न सोचा

गया था ?" उपस्थित आदमियों में से एक ने कहा, "जी हां यही वात, क्योंकि हम अच्छी तरह जानते हैं कि श्याम उतना रुपया तुरत हमें किसी तरह नहीं दे सकता।" काउन्ट शैवर वोले—"अस्तु यही मैंने कहा पर जवाव सुन कर स्तम्भित हो गया। उस डिबिया में से आवाज आई— "हम लोग खूव जानते है कि यह वात तुमलोगों ने किसलिए तय की है। एक तो तुम यह सोचते होगे कि इतना रुपया श्याम के पास कहां से आवेगा जो वह तुम्हें दे, और दूसरे इसी वहानेवाजी में देर लगाते हुए तुम लोग फ्रांस से कुमक मंगाने और हम लोगों पर आक्रमण करने की तैयारी करोगे। पर तुम्हारे ये दोनो ही खयाल गलत है। एक तो हमारे पास इतना रुपया है कि हम तुम्हारी मांग इसी क्षण पूरी कर सकें, दूसरे जो अस्त्र शस्त्र तुम्हारी वर्तमान सैन्यसामग्री का नाश कर चुके हैं वे इतनी शक्ति रखते है कि भविष्य में आने वाली वैसी ही चीजों को भी नष्ट कर सकें। पर हम इन सव पचड़ों में पड़ना नहीं चाहते और न हम उस रेल लाइन के लिए जिसकी न हमें जरूरत है, न जो हमारी मरजी से वनी, और न कि जिसे हमारी ही भूमि पर वनाते हुए भी जिसके लिये तुम लोगों ने कभी हमसे कोई इजाजत ही ली, एक काफी रकम देकर तुम लोगों को मालदार ही वनाना चाहते हैं। अस्तु तुम्हारी यह सब वहानेवाजी हमें धोखा नहीं दे सकती। लो सुन लो कि आज सुवह ठीक छः वजे वह समूची रेल लाइन उड़ा दी जायगी, इस तरह पर कि उसका नाम निशान तक भी वाकी न रह जाय। इसके साथ ही तुम लोगों की धोखेवाजी के लिए कुछ शिक्षा देने को तुम्हें कुछ और भी सजा दी जायगी। ठीक सवा छः वजे तुम जिस महल में हो वह वेलवेडियर पैलेस और साढे छः वजे सैंगन की प्रत्येक वड़ी सरकारी इमारत उड़ा दी जायगी। तुम्हें चार घण्टा पहिले से सूचना दे रहे हैं, तुमसे जो वचाव करते वन पड़े कर लो।"

"सज्जनों, वस वही यह संदेशा है जिसे सुनाने के लिए आप लोगों को मैंने इस असमय तकलीफ दी है। इस समय चार वज गए है। दो ही

घण्टे वाद, अगर वह धमकी सही है तो, दुश्मनो की कार्रवाई शुरू हो जायगी। आप लोग अव क्या कहते है ?"

मंडली में एक दम सन्नाटा छा गया। काउन्ट शैवर का सवाल ऐसा न था कि यकायक उसका कोई उत्तर निकल सके या प्रतिकार ही किया जा सके। भला जो शत्रु दिखाई देना तो दूर जिसके अस्त्र शस्त्र भी नजर न आवें और जो सैकडो कोस दूर से मार पहुचा सकता हो उससे कोई मोरचा ही किस तरह पर ले सकता था ?

कुछ देर वाद एक आदमी ने पूछा, "क्या वह डिविया अभी तक वहां है ? क्या उसके जरिये कुछ वात की जा सकती है ?" काउन्ट ने उदासी से पूछा, "क्या कुछ वात करने को वाकी हो सकती है अभी ?" वह वोला, "पूर्व-गौरव-संघ से पूछा जाता कि किसी शर्त पर वह अपनी इस धमकी को काम में लाने से वाज भी आ सकता है या नही ?" काउन्ट ने निराशा से सिर हिला कर कहा,"नही, वात समाप्त होते ही डिविया में से आग की एक चमक निकली और वह जलभुन कर नीचे जमीन पर गिर पडी।"

यह जवाव सुन फिर कुछ देर के लिए सन्नाटा हो गया। इसके वाद धीरे धीरे कुछ कानाफूसी शुरू हुई। लोग तरह तरह की वातें कहने लगे। जितने मुंह उतनी रायें निकलने लगी, मगर कोई आशा का वाक्य किसी के मुंह से न निकला। यद्यपि 'पूर्व-गौरव-संघ' को गालियां देने में सभी जोर लगा रहे थे पर किस तरह इस आने वाली विपत्ति से वचा जा सकता है इसकी तर्कीव वताने वाला कोई नजर न आता था।

× × ×

व्यर्थ को वहसों में दो कीमती घण्टे वीत गये और घडी ने टन टन करके छः का घण्टा वजाया।

जो लोग इस समय वहां रह गये थे, उनमें से कितनों ही के कलेजे कांप गये, कितनो ही में धडकन शुरू हो गई, और कितनो ही का तो चलना वन्द सा हो गया जव छः की आखिरी आवाज के साथ ही नगर के उत्तर

की ओर से आग की एक भारी लपट उठने की आभा उस कमरे में पहुंची। लोग दौड़ दौड़ कर खिड़कियों की तरफ बढ़े। दूर उत्तरी आकाश लाल हो गया था और जिस समय कुछ ही सायत बाद धूंए के बड़े बड़े बादलों को फोड़ कर उधर से एक के बाद दूसरी भयानक दन्नाटों की आवाजें आती सुनाई दी तो यकायक काउन्ट के मुंह से निकला, "शायद उस रेलवे लाइन का पहिला स्टेशन 'कोकनोल' उड़ गया! कदाचित् अब कुछ ही देर बाद अन्य स्थानों से भी समाचार आने शुरू होंगे।"

वेशक यही बात थी और कोई पांच ही मिनट बाद जगह जगह से टेलीफोन आने शुरू हुए जिनमें यही बात दोहराई जा रही थी। पर अब उन सन्देसों को सुनने का वक्त न था। पूर्व-गौरव-संघ की दूसरी धमकी भी जरूर पूरी होगी यह विश्वास सबको हो गया और उसका बचाव किया जाने लगा। महल से कीमती सामान और लड़के बाले तथा औरतें बाहर किये गए और तब ये लोग भी बाहर निकले। सब लोग सामने वाले रमने में जाकर इकट्टे हुए जहां डरे हुए नौकर चाकर और बहुत से राज-कर्मचारी पहिले ही से जमा हो गए थे।

जो कुछ उस डिबिया से सुना गया था वह अक्षर अक्षर पूरा हुआ। सवा छः बजे वह सुन्दर बेलवेडियर महल उड़ गया और ठीक साढे छः बजे सैगन भर की सरकारी इमारतें एक साथ ही उड गईं। सुन्दर राजधानी एक महास्मशान में परिणत हो गई जिसमें चारो ओर चीख चिल्लाहट की दुःखप्रद आवाजें उठ रही थी।

'पूर्व-गौरव-संघ' की यह मार बड़ी ही कठोर और निर्मम थी। न जाने कितने हजार आदमी उसकी इस करनी से पल भर में परलोक को चले गए होंगे और कितने कुटुम्ब इस समय मट्टी में मिल रहे होंगे!

किंग-ही

[१]

आहो की गुफा के भीतर हमारे जो पाठक जा चुके हैं उन्हे यह याद ही होगा कि युद्ध-देवता के मन्दिर के पास ही उनके अवतार 'सीह-फुंग' का मन्दिर है जिसके पुजारी किंग-ही से व लोग अच्छी तरह परिचित हो चुके है।

मगर आजकल भगवान सीह-फुंग की पूजा किंग-ही के हाथ मे नही है क्योकि वह 'पूर्व-गौरव-संघ' की धमकी के डर से उस मन्दिर को छोड न जाने कब कहा चला गया है और इसीलिए भगवान की पूजा अर्चना का भार उसकी वेटी 'तारा' पर आ पडा है जिसे हमारे पाठक वखूवी जानते हैं।

आधी रात में कुछ ही कसर वाकी होगी। तारा ने अभी अभी भगवान सीह-फुंग की नैश-पूजा समाप्त की है और उनके मन्दिर के सामने का चमडे का पर्दा खीच कर रात भर के लिए उधर से छुट्टी पाई है। अव उसे सुवह तक की फुरसत है, मगर इस फुरसत के समय को सोने में न काट कर आश्चर्य की वात है कि वह अभी भी उसी जगह अपने पूजा के ही आसन पर वैठी हुई और हथेली पर ठुढ्ढी रक्खे सामने के अग्निकुण्ड मे से निक-

लते हुए हवन के धूएं को देख रही है मगर इसमे सन्देह नही कि आंखें उधर होते हुए भी उसका मन कही और है। क्या यह सुन्दरी इस समय अपने प्रेमी अजित का ध्यान कर रही है जो इस समय न जाने कहां है और क्या कर रहा है? अगर कर रही हो तो आश्चर्य ही क्या ?

मगर यकायक उसके विचारो को धक्का लगा और वह चौक कर सिर घुमा इधर उधर देखने लगी। उसके कानो मे किसी तरह की आहट आई थी। उसे ऐसा जान पड़ा मानो कही कुछ आदमी बातें कर रहे हों। उसने समझा शायद गुफा के बाहर पुजारी लोग आ जा रहे होगे, मगर उसका विचार गलत निकला. भगवान के मन्दिर के पीछे से किसी पत्थर के खसकने की सी आवाज हुई और दूसरे ही क्षण एक डरावनी सूरत उसके सामने आकर खड़ी हो गई। सिर से पैर तक अपने को काले कपड़े से ढांके हुआ एक आदमी हाथ मे नंगी तलवार लिए उसके सामने खड़ा था जिसमे से टपकता हुआ खून कह रहा था कि यह अभी अभी किसी की जान लेता हुआ चला आ रहा है।

यकायक इस आदमी को देख तारा इस कदर डर गई कि उसके मुंह से आवाज तक न निकल सकी। वह सकते की सी हालत मे होकर कांपती हुई उसको देखती रह गई, मगर उस आदमी ने झपट कर दूसरे हाथ से उसका गला पकड़ लिया और डपट कर कहा, "चुप रह, नही तो मेरी यह खूनी तलवार जो अभी अभी एक आदमी का खून पीती हुई आ रही है तेरे भी गले के पार हो जायगी !"

डर और घबराहट ने तारा की बुरी हालत कर दी थी फिर भी बड़ी कोशिश से उसने अपने पर कुछ काबू किया और कांपती आवाज मे पूछा, "तुम कौन हो और क्या चाहते हो ?"

"वह अभी अभी मालूम हुआ जाता है" कहते हुए उस आदमी ने अपने हाथ की तलवार रख दी और कपड़ों के अन्दर से एक रूमाल निकाल उसे जबर्दस्ती तारा के मुंह मे ठूंस दिया। इसके बाद दूसरे कपड़े से उसका

मुंह इस तरह बांध दिया कि वह सांस तो ले सके पर कुछ भी बोल चाल न सके। अब उसे खींचता हुआ वह मूर्ति के पीछे की तरफ ले चला और कुछ ही देर बाद तारा ने अपने को उस सुरंग मे पाया जो सीह-फुंग के पीछे की तरफ बनी हुई थी और जिसकी राह कभी पंडित गोपालशंकर और उनके साथियो ने भाग कर अपनी जानें बचाई थी।

इस सुरंग के अन्दर एक दम अंधेरा था पर जान पड़ता है कि वहा कोई आदमी और भी था क्योकि इस नकावपोश ने तारा को आगे की तरफ ढकेल दिया और तब कहा, "यह तो मिल गई, इसे काबू मे करो, मैं जरा देखना चाहता हूं कि वह दूसरी चीज भी मिल सकती है या नही।" किसी मजबूत हाथ ने तारा को पकड लिया और तारा ने किसी का कठोर स्वर सुना, "खबरदार, चुपचाप रह और चिल्लाने या किसी को होशियार करने का इरादा न कर।" शायद बोलने वाले को खबर न थी कि तारा का मुंह पहिले ही बन्द किया जा चुका है।

तारा को छोड वह काली शकल पुन. उस मन्दिर वाली गुफा के मुहाने पर पहुची जहा मामूली ढग का दरवाजा लगा हुआ था जो इस समय भीतर से बन्द था। काली शकल ने हाथ की तलवार कपड़ों के अन्दर छिपाई, काली चादर जिससे अपना बदन ढाका हुआ था और अच्छी तरह लपेटी, और तब बहुत आहिस्ते से दरवाजा खोल बाहर की तरफ झांका। अंधकार और गहरा सन्नाटा सब तरफ छाया हुआ था जिसमें किसी भी तरह की आहट नही लग रही थी अस्तु उसने अपना पैर बाहर निकाला और अन्दाज से टटोलता हुआ दबे पांव एक तरफ को जाने लगा।

इसमें कोई शक नही कि इस आदमी को इस गुफा की राह घाट का अच्छी तरह पता था क्योंकि इस अंधेरे में भी उन पेचीली और तंग गुफाओ ने उसके रास्ते में कोई अण्डस पैदा न की और वह धीरे धीरे बढता हुआ कुछ ही देर बाद एक दूसरी गुफा के मुहाने पर जा खड़ा हुआ। यह मुहाना भी एक साधारण दरवाजे द्वारा बन्द था पर काली शकल ने

दरवाजे पर का ताला किसी तर्कीव से खोल लिया और तव गुफा के अन्दर घुस गया। अन्दर उसे दस मिनट से ज्यादा न लगा, हम यह तो नही कह सकते कि अन्दर जा के उसने क्या किया पर यह जरूर वता सकते है कि जव वह वाहर निकला तो उसके हाथ में एक गठरो थी। गुफा का दरवाजा पुनः ज्यों का त्यों वन्द कर दिया गया और काली शकल उस गठड़ी को भी अपनी काली चादर की आड मे किए पीछे को लौटी। वीच का फासला जल्दी ही तय हो गया और कुछ ही देर वाद उसने पुन: अपने को 'सीह-फूंग' की गुफा में पाया। यहां भी वह ज्यादा देर न ठहरा। दरवाजा वन्द करने और गुफा में वलता हुआ दिया वुझाने वाद वह मंदिर के पीछे वाले रास्ते के पास पहुंचा और धीरे से उसमें उतर गया। एक पत्थर की पटिया खसकने की आवाज आई और जव उस सुरंग का मुहाना वन्द हो गया तभी इस काल शकल ने मुंह खोल कर पूछा, "सा-लिन, सव ठीक है न ?"

मगर उसे ताज्जुव हुआ जव उसकी वात का कोई जवाव न मिला। उसने पुनः पुकारा, "सा-लिन तुम कहां हो ?" अंधेरी गुफा में उसकी आवाज गूंज गई पर उसे कोई जवाव न मिला। आश्चर्य के साथ उसने पुन: अपनी वात दोहराई और जव फिर भी कोई जवाव न पाया तो मन ही मन कहा, "सा-लिन कहां है, आगे वढ़ गया क्या ?"

अव इस जगह शायद किसी तरह का भय न था क्योंकि उस काली शकल ने अपने कपड़ो में से एक विजली की वत्ती निकाली और उसकी रोशनी में चारो तरफ देखा, मगर जो कुछ उसे दिखाई पड़ा उसने उसे चौंका दिया। उस जगह की जमीन खून से तर वतर हो रही थी और किसी आदमी का वहां नाम निशान भी न था।

ताज्जुव के साथ काली शकल के मुंह से निकला, "कोई दुश्मन पहुच गया क्या !!" और उसने गौर तथा डर की निगाह से सव तरफ देखा, पर लम्वी सुरंग एक दम निस्तव्ध थी। उसके कुछ समझ में न आया कि थोड़ी ही देर की गैरहाजिरी में यह क्या हो गया, पर वहां रुके रहना भी खतर-

नाक था, अस्तु उसने हाथ की गठरी कमर से बांधी, वाए हाथ में विजली की वत्ती ली और दाहिने हाथ में तलवार मजबूती से पकड़ आगे को वढ़ा।

[२]

एक वहुत वडे खेमे के अन्दर जिसके चारो ओर फ्रासीसी सिपाही किरच लिये पहरा दे रहे है कुछ फौजी और मुल्की अफसर वैठे आपस में वात कर रहे है।

इनमें से दो काउन्ट शैवर और मार्शल फाक को तो पाठक तुरत पहिचान लेंगे मगर उन दो व्यक्तियो को पहिचानने मे उन्हें कठिनता होगी जिनक पीले चेहरे नुकीली आखें और नाटे कद उनका जापानी होना बता रहे है, अस्तु उनका परिचय दे देना जरूरी है। इनमें से एक तो प्रसिव्द जापानी जनरल 'कोमुरा' है और दूसरे संसारप्रसिद्ध वैज्ञानिक 'साऊ-चूकू'।* ये चार आदमी तो वीच के वडे टेवुल के चारो तरफ वैठे है जिस पर एक नक्शा फैला हुआ है मगर इनसे कुछ हट कर खेमे के अन्दर ही कई जापानी और फ्रासीसी एड-डी-कैम्प तथा अन्य नौजवान अफसर और भी खडे है जिनमे से कोई न कोई पारी पारी से वाहर जाता और खेमे के चारो ओर का एक चक्कर लगा तथा पहरे का इन्तजाम देख कर लौट आता है जिससे-मालूम होता है कि इन लोगो को शायद इस वात का वहुत डर है कि यहा की वातें कही किसी गैर कानो तक न पहुच जाय।

जेनरल कोमुरा कुछ आगे को झुके हुए काउन्ट शैवर से वातें कर रहे है—

जेनरल कोमुरा०। आपका कहना वहुत ठीक है। त्रिकंटक एक भयानक व्याधि की तरह हम लोगो के पीछे लग जायंगे अगर इनका कुछ प्रवन्ध न किया गया तो। आपको याद ही होगा कि जव 'चिग-पो' में वलवा हुआ था तो इन लोगो ने वहां की प्रजा को वेतरह भडकाया था यहां तक कि हमारे प्रसिद्ध जनरल मित्सुकी वहां मार डाले गये थे, वल्कि पीछे जो वातें

---

* ये नाम इस उपन्यास के दूसरे भाग मे आ चुके है।

मालूम हुई उनसे तो पता लगा कि यह काम यानी जनरल का खून खुद त्रिकंटक के ही एक दूत द्वारा किया गया था।

मार्शल फाक०। मुझे वखूवी याद है वल्कि इस सम्वन्ध में मैं एक वात ऐसी आपको वता सकता हूं जो शायद आपको अव तक मालूम न हुई होगी। आपके कोरियन वन्दरगाह 'फू-सान' पर इन लोगों की शानि दृष्टि पड़ गई है और ये लोग उसे नष्ट भ्रष्ट कर देना चाहते है।

जेनरल कोमुरा०। (घवरा कर) क्या आप सही कह रहे है! फू-सान को ये लोग नष्ट कर देना चाहते है! मगर वहां तो......

मार्शल०। ठीक है, वहां के आपके नये प्रवन्ध को नष्ट करने के लिये ही यह कार्रवाई की जाने को है। खैर इस सम्वन्ध में जो कुछ हमें मालूम है वह तो हम लोग आप को वता ही देंगे पर इस समय जिस वात पर वहस हो रही है वह तय हो जानी चाहिये।

जेनरल कोमुरा०। वेशक, तो आप अव असल वात पर आ ही जांय। (काउन्ट शैवर की तरफ देख कर) काउन्ट, अव स्पष्ट वातों का वक्त आ गया है। आप कहिये कि क्या आप 'हैनान' के टापू पर हम लोगो को किलेवन्दी कर लेने की इजाजत देने को तैयार है?

काउन्ट ने फाक से आखें मिलाई, तव कहा—

काउन्ट०। हमें मंजूर है, पर दो शर्तो पर!

कोमुरा०। क्या क्या?

काउन्ट०। एक तो यही कि त्रिकंटक के मामले मे हम आप मिल कर काम करें और आप चीन पर दवाव डालें कि वह मित-को नदी का वह टापू जिस पर त्रिकंटक ने अपना अड्डा जमाया है हमे, फ्रांस को दे दे अथवा जो एक ही वात है, फ्रास के उस पर कब्जा कर लेने में आपत्ति न करे।

कोमुरा०। ठीक है, मुझे मंजूर है। दूसरी वात?

काउन्ट०। दूसरी वात यह है कि हैनान मे जो कुछ किलेवन्दी की जाय और वन्दरगाह वगैरह वनाए जांय वह उसके पूर्वी भाग में वनाए

जाय, पश्चिमी भाग अछूता और यदि सम्भव हो तो चीनियो के अधिकार में छोड दिया जाय।

कोमुरा०। आपका मतलब मैं समझ गया, खैर यह भी मुझे मंजूर है, वस आपकी शर्तें ये ही दो तो है ?

काउन्ट०। जी हा, ये ही।

कोमुरा०। अच्छा तो अब एक शर्त मेरी भी है।

काउन्ट०। कह डालिये।

कोमुरा०। अमेरिका से हमारा युद्ध होने की हालत मे आपको हमारी सहायता करनी होगी इस आशय की एक संधि हो जानी चाहिये। यदि युद्ध में नही तो कम से कम अन्य वातों में आपको जापान की सहायता करनी होगी।

काउन्ट०। ठीक है, जहां तक फ्रेंच-इन्डो-चाइना का सम्वन्ध है हम लोग आपकी यह वात मानने को तैयार हैं पर अवश्य ही आपको पैरिस से इस वारे में बातें करनी होगी क्योकि अन्तिम अधिकार उन्ही लोगों को है।

कोमुरा०। हा हा, वह तो ठीक ही है, अच्छा तो ये वातें तय हो गई ?

काउन्ट०। जी हा तय हो गई।

कोमुरा०। (काउन्ट की तरफ हाथ वढा कर) लिखा पढ़ी पीछे होती रहेगी, इस वक्त बात ही वहुत है !

काउन्ट०। (हाथ मिलाते हुए) वहुत काफी !

काउन्ट कोमुरा और फाक ने आपस में हाथ मिलाये और तव पुनः इस तरह वातें करने लगे —

कोमुरा०। अच्छा अब मतलव पर आइए, त्रिकंटक वाला टापू आपको कब्जे में करने की चीन इजाजत दे देगा यह मान कर अव आप मुझे बताइए कि ग्रेट ब्रिटेन से क्या प्रवन्ध आप करेंगे, क्योकि वह स्थान फ्रांस चीन और वर्मा तीनो ही की सीमा पर है।

काउन्ट०। उससे भी हम लोगों ने तय कर लिया है। आज ही मेरे पास भारत सरकार का एक खलीता आया है जिसमें वहां के वायसराय

लिखते हैं कि फ्रांस के तरद्दुदो को देखते हुए अगर वह उस टापू को कब्जे में कर अपने दुश्मनों को वहां से निकाल सके तो हम लोग इसमें आपत्ति न करेंगे और यदि चीन अपना हक उस पर से छोड़ दे तो हमलोग भी छोड देंगे।

कोमुरा०। तव तो वहुत ठीक है क्योकि मुझे इसी वात का अंदेशा हो रहा था।

काउन्ट०। नही वह वात तो तय हो गई है और तभी तो आपसे चीन पर दवाव डालने को हम लोग कह रहे हैं।

कोमुरा०। दवाव की इसमें कोई वात ही नही है, वह काम तो आप हुआ ही समझिए, क्योंकि दक्षिणी चीन पर हुकूमत करने वाला जनरल किंग-माई-सन इस समय हम लोगों के हाथ में है और जो कुछ हम कहें उससे वह इनकार नहीं कर सकता।

काउन्ट०। (मुस्कुरा कर) जी हां, मैंने सुना है कि आप लोग उसे रुपया कर्ज दे रहे हैं।

कोमुरा०। कर्ज दे रहे हैं कि दान दे रहे है यह तो भविष्य ही वता-वेगा, पर फिलहाल वह हम लोगों के कहे में है इसमें सन्देह नही। आपकी वह इच्छा पूरी हो जायगी, पर उस टापू पर आप कब्जा कैसे करेंगे यह मेरी समझ में अवश्य ही नही आ रहा है। जैसे जैसे अस्त्र शस्त्र त्रिकंटक ने वनाए है और उनका जिक्र जैसा जैसा मैंने सुना या आपने कहा है उसको देखते हुए इस काम में आपको सफलता मिलेगी इसमें मुझे सन्देह ही जान पड़ता है।

काउन्ट०। वेशक उसमे वहुत वड़ी कठिनता होगी और इसी लिए तो हम लोग आपकी फौजी सहायता इस मामले मे चाहते है।

कोमुरा०। किस तरह से क्या किया जायगा कुछ आप लोगों ने निश्चय भी किया है?

काउन्ट०। (मार्शल फाक की तरफ देख के) मार्शल, अव आप अपनी स्कीम वताइये।

मार्शल० । वहुत अच्छा । (आगे वढ़ कर और टेवुल पर फैले नकशे पर एक जगह उंगली रख के) देखिए, यह तो वह टापू है ।

कोमुरा० । जी हा, और यहां मित-को नदी दो टुकडे हो जाती है जो आगे जाकर फिर एक होते हुए मेकंग मे मिल जाती है ।

मार्शल० । जी हा, मगर इस जगह एक वात और है । मेकंग नदी जहा वह मित-को से मिलती है उससे थोड़ा ही आगे बढ कर एक दूसरा जल-प्रपात पड़ता है जहां मेकंग पहाड छोड मैदानो के पास पहुंचती है और इस जगह एक सीधी खडी पांच सौ फिट की ढाल उसे टपनी पड़ती है । इस मित-को के टापू से इस प्रपात की जगह तक भीतर ही भीतर जरूर कोई गुप्त सुरग है जिसका मुहाना मेकंग की गिरान के पीछे दबा रहता है । जिसे वहा जाना होता है वह नावो मे चढ कर किसी तरह वहा पहुचते है जिसका ठीक ठीक पता हम लोगों को अभी तक नही लगा है ।

कोमुरा० । खैर, आगे कहिए ।

मार्शल० । मेरी स्कीम यह है कि मित-को का वहाव इस टापू के ऊपर, देखिए इस जगह से, बाध बना के रोक दिया जाय और इस जगह जहां मेकंग का जलप्रपात है, वहां भी हम लोग बिजली की मशीनें खडा करने का वहाना कर एक वांध बाध पानी को यहा इधर से वहा दें । इस प्रकार नदी का जल प्रपात वन्द हो जायगा और केवल वह टापू ही हमारे वश मे नही हो जायगा वल्कि वह छिपा मुहाना भी जहां कही भी होगा सामने नजर आ जायगा जिसकी राह त्रिकंटक के गुप्त अड्डे मे आना जाना होता है ।

कोमुरा० । मगर आपकी यह स्कीम मुझे कुछ ठीक जंचती नही । सरसरी निगाह देखने से ही इसमे दो वडे ऐब नजर आ रहे हैं ।

फाक० । सो क्या ?

कोमुरा० । एक तो वह त्रिकंटक जो आपके घर मे आकर आपको संत्रस्त कर सकता है आपको उस जगह तक पहुचने और वहा अपनी जडें जमाने ही क्यो देगा, और दूसरे अगर किसी तरह यह सव हो भी सके तो

यह एक दो महीने नही वल्कि वरसों का काम है ही, तव तक न जाने क्या का-क्या हो जायगा, और कुछ नही तो श्याम के नए राजा नरेत दूसरे ही आपके वगल मे वैठे न जाने क्या उपद्रव खड़ा कर देंगे जिससे शायद आपका उधर देखना भी मुश्किल हो जा सकता है।

फाक०। इन दोनों वातों का इन्तजाम हो चुका है। नरेत दूसरे से हम लोगों की परस्पर अनाक्रमण की दस वरस वाली सन्धि पर दो तीन रोज में हस्ताक्षर हो जांयगे, और नदियो का वहाव रोकने का काम भी वरसों या महीनों में नहीं वल्कि दिनों मे हो जायगा। आप पूछेंगे कैसे ? सो मैं वताता हूं सुनिये।

मार्शल फाक कुछ और आगे को झुक गये और धीरे धीरे अपना विचार प्रगट करने लगे।

[३]

वहुत वड़े और पूर्वी ढंग से वने वाग के भीतर एक छोटी मगर सुन्दर कोठी है।

इस आधी रात के समय इस कोठी मे एक दम सन्नाटा है और किसी के चलने फिरने या वोलने की कोई आहट नहीं मिल रही है जिससे यह जानना कठिन है कि कोठी मे किसका डेरा है या किस तरह के लोग इसमें रहते है, मगर हम खूव जानते है कि यह कोठी आज कल अजित-सिह के कब्जे में है और वह गुप्त रीति से 'पूर्व-गौरव-संघ' का दूत पर प्रगट में महाराज नरेत दूसरे का मित्र और अतिथि होकर इसमे रहता है। मगर अजित अकेला इस जगह नही रहता। यद्यपि नए श्याम-नरेश ने इसकी सेवा परिचर्या के लिए कितने ही नौकर चाकर दिए हुए है जो इसका हर एक तरह का काम वजा लाने को तैयार हैं फिर भी इसके साथ अपने निज के भी कई आदमी है जिनसे यह अपने सव गुप्त और आवश्यक काम लिया करता है, वल्कि वे ही इसके अंगरक्षक का भी काम करते है।

चारो तरफ फैले हुए सन्नाटे और अंधेरे मे इस मकान के रास्तो का पता लगाना कठिन है, फिर भी हम अपने पाठको को लेकर ऊपर की मंजिल मे बने उस खूबसूरत बंगले के पास पहुचते है जिसके अन्दर एक पलंगड़ी पर अजितसिंह सोया हुआ है। दीवार के साथ लगी एक दीवारगीर मे बहुत हलकी रोशनी हो रही है जिसकी आभा मुश्किल से बाहर तक जाती और उन दो नौकरो की शकल दिखाती है जो बाहर के बरामदे मे पडे हुए है और जालदार मसहरी के अन्दर से गहरी नीद मे सोए अजित के खुर्राटो की हलकी आवाज बता रही है कि वह भी एकदम बेखबर है, मगर यही रोशनी हमे उस नकाबपोश की भी काली आभा दिखाती है जो न जाने किस तरह यहा तक आ पहुचा है और अब एक खिडकी की राह इस कमरे के अन्दर झांकता हुआ इस बात की टोह ले रहा है कि कोई जाग तो नही रहा है।

नकाबपोश का सन्देह दूर हो गया और वह कमरे के अन्दर आ गया। हलके हाथों से उसने वे दर्वाजे बन्द कर दिये जो कमरे के बाहर की तरफ पडते थे और तब पलंग के पास गया। मसहरी हटा दी और अजित का पैर धीरे से हिलाया। हाथ लगते ही अजित सगबगाया और दूसरी दफे हिलाते ही उसने एक करवट लेकर आंखें खोल दी। अपने पैताने एक नकाबपोश को देखते ही उसका हाथ तकिये के नीचे गया और उसने डपट के पूछा, "तुम कौन हो ?'

नकाबपोश ने होठो पर उंगली रख चुप रहने का इशारा किया और तब अपने कपड़ों के अन्दर से कोई चीज निकाल कर दिखाई। इस चीज पर निगाह पडते ही अजित चौंक गया। उसने एक बार गरदन आगे कर पुन गौर से देखा और तब हाथ की पिस्तौल खाट पर छोड़ उठ बैठा,, अपने हाथ नकाबपोश की तरफ बढ़ाए और ताज्जुब की आवाज में पूछा "आप ! आप यहा कहा ? सब कुशल तो है ?" बहुत धीमी आवाज में नकाबपोश ने कहा, "कुशल नही है, मगर इस जगह बात करने का मौका भी नही है। मै नही चाहता कि तुम्हारे किसी आदमी को मेरे यहां होने

की खवर लगे। क्या ऐसा हो सकता है कि विना किसी को कुछ पता लगे हम लोग फौरन इस मकान के वाहर हो जायं ?"

अजित वोला, "हां हा, यह कोई मुश्किल नही है, मगर क्या आप मकान के वाहर जाना चाहते है या किसी निराली जगह की खोज में है ?" नकावपोश ने कहा, "नहीं मकान के वाहर ही निकल जाना चाहता हूं और वेमालूम तौर पर।" अजित वोला, "तव इधर आइये" और एक वन्द दर्वाजे की तरफ वढ़ा। इसे खोलने पर एक छोटी कोठड़ी नजर आई जिसमें नहाने धोने आदि का इन्तजाम था और जिसके एक कोने में नीचे उतर जाने के लिए सीढ़िया भी नजर आ रही थी। इस जगह भी हलकी रोशनी हो रही थी जिसकी मदद से अजित उस नकावपोश को सीढ़ो के पास ले गया और वोला, "जरा पतली सीढ़ियां हैं और नीचे अंधकार है, सम्हाल के आइएगा।" दोनो आदमी नीचे उतरने लगे पर दो चार डंडा उतरने वाद ही अजित रुक कर वोला, "वेहतर होगा कि हम लोग रोशनी ले लें।" मगर नकावपोश रोक कर वोला, "नही, अगर तुमको रास्ता मालूम है तो वढ़े चलो, मै तुम्हारे पीछे टटोलता हुआ चला चलूंगा" जिससे वह लाचार चुप रह गया और दोनो आदमी धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे।

अंधेरे ही अंधेरे में इधर से उधर घूमते और कई वार सीढ़ियां उतरते हुए ये दोनो आदमी मकान की सवसे निचली मजिल में आ पहुंचे और यहां का एक दर्वाजा खोलने पर दोनो ने अपने को वाग में पाया। नकावपोश वोला, "दर्वाजा भिड़का दो और वहां उस पेड़ो के झुरमुट में चले चलो, वही चल कर जो कुछ मुझे कहना है कहूंगा।" अजित ने ऐसा ही किया और नकावपोश के पीछे पीछे कुछ दूर जा एक झाड़ी मे घुस गया जहां इन दोनों मे वातचीत होने लगी।

अजित०। अव कहिये क्या मामला है, आपके रंग ढंग मेरा डर वढ़ा रहे है और मुझे कुछ अंदेशा मालूम होता है।

नकाव०। कुछ नही पूरा अंदेशा समझो और यह भी समझ रक्खो

कि मैं तुम्हें यहां वेमतलव नही ले आया हूं। अगर हम लोगो का आना किसी न देखा नही है तो समझ लो कि वहुत जल्द तुम्हारी जान पर हमला किया जाएगा।

अजित०। मेरी जान पर हमला ! सो किस लिये और किस तरफ से ?

नकाव०। सो सव भी वहुत जल्द मालूम हो जायगा। तुम पहिले यह सुन लो कि वह वुरी खवर क्या है जो मैं तुम्हें सुनाया चाहता हूं। तुम्हें तारा का कुछ पता है ?

अजित०। (चौंक कर) तारा का ! वस इतना ही कि वह आहो की गुफा मे है मगर अव ज्यादा दिन वहा न रहेगी, मेरे दूत उसे लेने गये हुए है और वह वहुत जल्द राजधानी के लिये रवाना हो जायगी।

नकाव०। तो तुम भ्रम मे हो। तारा दुश्मनो के कब्जे में पड़ गई और उसके साथ साथ तुम्हारे वे नक्शे और कागजात भी जो मृत्यु-किरण की मशीन के वारे मे तुमने वनाए थे, दुश्मन के हाथ मे पहुच गये।

अजित०। (घवड़ा कर) हैं ! यह आप क्या कह रहेहैं ! मैं तो उन्हें वहुत हिफाजत की जगह मे छोड आया था !

नकाव०। वेशक, मगर दुश्मन ने उनका पता लगा ही लिया और ताज्जुव नही कि अव उनसे काम लेने की तर्कीव भी सोच रहा हो।

अजित०। (वेचैनी से) कृपा कर खुलासा कहिए कि क्या हुआ ? आपकी वात सुन कर तो मुझे हौल हो उठा है। यह किसकी कार्रवाई है ?

नकाव०। जापानियों की।

अजित०। जापानियो की ! मगर उन्हें इस मामले से क्या मतलव ?

नकाव०। तुम्हें इधर की खवरें मालूम नही क्योकि तुम्हारेजासूस धोखे मे डाल दिये गये हैं। जापानियो और फ्रांसीसियोमेएक गुप्त संधि हो गई है जिसमे एक ने दूसरे की मदद करने का वादा किया है। दोनों मिल कर तुम लोगो के केन्द्र पर वहुत शीघ्र हमला करने वाले हैं और वह हमला वहुत ही घातक होगा जिसका पहिला सवूत दुश्मनों को यह कार्रवाई है।

अजित० । मगर इसके लिये तो उन्हें 'आहों की गुफा' तक पहुंचना और वहां.......

यकायक अजित को रोक कर उस नकाबपोश ने कहा, "उधर देखो।" अजित घूमा और उस तरफ जिधर नकाबपोश ने बताया था देखने लगा। पहिले तो अंधेरे के सबब कुछ मालूम न हुआ पर फिर निगाह जमने पर दिखाई पड़ा कि दो आदमी उसी मकान की दीवार के पास खड़े हैं जहा से ये लोग अभी अभी निकले आ रहे थे। अजित उनकी तरफ ताज्जुब और गौर से देख ही रहा था कि नकाबपोश बोला, "तुम्हारे दुश्मनो की कार्रवाई शुरू हो गई, पर कुशल यही है कि इससे यह भी पता लगता है कि उन्ह मेरा आना और तुम्हें सावधान करके इस जगह ले आना मालूम नही हुआ है। होशियार हो जाओ और अपने को अच्छी तरह आड़ में कर लो। मुझ यह मालूम नही है कि वे लोग अब किस ढंग पर आगे की कार्रवाई करेंगे।"

अजित और नकाबपोश दोनों ने अपने को अच्छी तरह झाड़ी के अन्दर छिपा लिया और फिर उसी तरफ देखने लगे। यद्यपि अन्धेरा बहुत था फिर भी अन्दाज से मालूम हुआ कि ये दोनों कोई रस्सी या कमन्द ऊपर लगाने की कोशिश कर रहे हैं और इनका लक्ष्य वही खिडकी है जिसके अन्दर अजित सोया हुआ था या जहां से अभी अभी उठ कर यहां आ छिपा है। उस खिड़की के अन्दर मद्धिम रोशनी अब तक हो रही थी जिसकी मदद से अजित ने देखा कि एक रस्सी किसी तर्कीब से ऊपर तक पहुंचाई गई है और उसकी मदद से एक आदमी ऊपर चढ़ रहा है। देखते देखते बन्दर की सी फुर्ती से वह ऊपर पहुंच गया और तब उसी खिड़की की राह जिसके सामने अजित का पलंग पड़ा हुआ था उसने कोई चीज कमरे के अन्दर फेंक दी। बस इतना ही करने शायद वह ऊपर गया था क्योंकि इसके बाद ही वह पुनः जल्दी जल्दी नीचे उतर आया और अपने साथी के बगल में खड़ा हो उससे कुछ बातें करने लगा।

अजित ताज्जुब करता हुआ सोच ही रहा था कि यह कौन आदमी है, किस

लिए ऊपर चढा, और क्या करके लौट आया, कि यकायक नकावपोश ने उसका हाथ पकड़ कर दवाया और ऊपर देखने का इशारा किया। ऊपर निगाह उठाते ही अजित ने ताज्जुब के साथ देखा कि खिडकी के अन्दर से कुछ चमक इस तरह की आने लगी मानो कोई छोटा अनार या फुलझरी वहा छूट रही हो। अजित ने कुछ पूछने के लिए नकावपोश की तरफ गरदन घुमाई ही थी कि यकायक ऊपर से एक भयानक दन्नाटे की आवाज आई और आग का वडा शोला खिडकी से वाहर को निकला।

अजित के अनुभव ने उसे वता दिया कि वम का गोला रख कर उसकी जान लेने की कोशिश की गई थी। नकावपोश का इरादा अव क्या है यह जानने के लिए उसने पुनः आपनी गरदन घुमाई मगर उसी समय उसके वगल से दांय दांय दो दफे पिस्तौल छूटने का शब्द हुआ और वे दोनो दुष्ट जो अपनी कारंवाई का असर देखने के लिए रुके हुए थे मगर अव वम फूटने की आवाज के साथ ही एक तरफ को भाग पडे थे, चीखें मार मार कर जमीन पर लेट गये। नकावपोश की गोली ने उन्हें अपना निशाना वना लिया था जिसने अव अजित की तरफ देख के कहा, "वम की आवाज ने तुम्हारे आदमियों को जगा दिया है। अव वे सव फिक्र कर लेंगे। तुम उधर का ख्याल छोडो और जो कुछ मैं कहता हू उसे सुन कर उधर ही को जाओ क्योंकि मुमकिन है कि अव मेरी तुम्हारी मुलाकात शीघ्र न हो सके।"

वाग के चारो तरफ आदमियो की दौड़ धूप शुरू हो गई थी। कोठी के कई दरवाजे और खिड़किया खुल गई थी और उनमे से झाक झांक कर लोग "क्या है? क्या हुआ?" आदि पूछ रहे थे। जगह जगह रोशनिया दिखाई पड़ रही थी, पर इन सव वातो का कुछ ख्याल न कर अजित वडे ध्यान से उन वातो को सुनने लगा जो नकावपोश कह रहा था।

[४]

यह कौन सा स्थान है वताना कठिन है, कौन सा समय यह वताना उससे भी कठिन।

वीच में वनी यज्ञ-वेदी से उठता हुआ धूआं इस छोटे स्थान में इस कदर भरा हुआ है कि यहां की सभी वस्तुएं उस पर्दे की आड़ में हो रही हैं, साथ ही अग्नि को समर्पित किया हुआ तरह तरह का धूनी का सामान उस धूएं को इस घनी तौर पर वासित किए हुए है कि सास लेने में तकलीफ हो रही है।

रह रह कर अग्निकुन्ड के वीच में से आग की ज्वाला उठती है। उस समय क्षण भर के लिए कुछ प्रकाश हो जाता है और यहां का सामान जो विचित्र औरसाथ ही डरावना भी है कुछ कुछ दिखाई पड़ जाता है, नही तो उस दिए की रोशनी जो एक वगल मे जल रहा है इस लायक नहीं है कि यहा के अंधकार और धूएं के आवरण को भेद कर कुछ दिखला सके।

घटना-क्रम अव हमें इसी जगह आने को मजवूर करता है इसलिऐ आइए पाठक हम लोग चुपके से इस जगह पहुंच कर एक तरफ खडे ह जायं। यद्यपि यहा का अंधकार, धूआं, और धूंए के साथ मिली गंध दिमाग को परेशान कर डालेंगी पर क्या किया जायगा, कम से कम थोडी देर तक तो हमें इस जगह रुकना ही पड़ेगा।

लीजिए, अव निगाहें कुछ जमने लगी और इस जगह का सामान कुछ न कुछ नजर आने लगा। वीचोवीच के अग्निकुण्ड के सामने जो छोटी फिर भी हाथ भर से कुछ ज्यादा ही ऊंची मूर्ति वैठाई हुई है उसे तो आप सहज ही में पहिचान लेंगे क्योंकि यह विकराल युद्ध-देवता सीह-फुग की मूर्ति है, मगर उसकी वाईं ओर काठ की ऊंची चौकी पर लाल रेशमी वस्त्र से ढका हुआ जो व्यक्ति वैठा है उसको आप इस समय पहिचान न सकेंगे यद्यपि कुछ ही पहिले इसे देख चुके हैं, इस लिए हमें वताना पड़ रहा है कि ये सुप्रसिद्ध जापानी वैज्ञानिक 'साऊ चूकू' हैं। पर आह कितना परिवर्तन इनकी इस समय की आकृति और वह उस समय की आकृति में है जव हमने आज से कुछ ही पहिले इन्हें मार्शल फाक काउन्ट शौवर तथा जनरल कोमुरा के साथ फौजी तम्वू में देखा था। उस समय

की इनकी सौम्य आकृति और सभ्य पोशाक इन्हें कोई पूर्वी वैज्ञानिक और दार्शनिक बता रही थी, पर इस समय की इनकी विकराल आकृति, फैले हुए बाल, लाल नेत्र, चढी हुई भृकुटी, और कठोर मुद्रा इन्हें कोई भयानक तांत्रिक बता रही है। इस समय इनका भावावेश देख कर इस बात का गुमान भी नही हो सकता कि यह आदमी कभी एक शान्त निरीह दार्शनिक और सूक्ष्मदर्शी भी हो सकता है।

साऊ-चूकू के बांई ओर अर्थात् सीह-फुंग की मूर्ति के ठीक सामने वाले अग्निकुण्ड के दूसरी ओर जो व्यक्ति वीर आसन से दुजानू बैठा हुआ है उसे हमारे पाठक सहज मे पहिचान लेंगे क्योंकि यह अर्धविक्षित पुजारी यद्यपि इस समय पूरा विक्षिप्त हो रहा है फिर भी इसे पहिचानने मे धोखा नही हो सकता, क्योकि यह 'किंग-ही' है। इस समय यह तांत्रिक-राज साऊ-चूकू के आदेशानुसार भगवान सीह-फुंग की पूजा समाप्त कर हवन कर रहा है और इसी के प्रदान किए हुए अर्घ्य से आच की वह ऊंची लपट उठी है जिसने कुछ देर के लिए उस स्थान के अंधकार को कुछ दूर कर दिया है क्योकि उसमे घी का अंश बहुत ज्यादा था।

इस पुजारी के बाई ओर अर्थात् साऊ-चूकू के सामने जो व्यक्ति तरह तरह के सामान अपने आस पास लिए बैठा है इसे भी पाठक पहिले देख चुके हैं यद्यपि इस समय पहिचान शायद न सकें। यह सांग-लो है जो इस समय पूजा मे सहायक के तौर पर यहा बैठा है। जिस जिस सामान की जरूरत पडती है उसे उठा उठा कर यह किंग ही या साऊ-चूकू को दे रहा है, मगर इस स्थान समय और पूजा के कारण उत्पन्न हुआ भावावेश इसे भी अपने पंजो मे जकडे हुआ है और इसकी आखें चढी हुई हैं। साऊ-चूकू कभी कभी चीनी भाषा मे जो मन्त्र पाठ करता है, वह यदि इसे मालूम हुआ तो यह भी जोर जोर से उसका उच्चारण करने लगता है पर साधारणतः इस समय की पूजा प्रणाली इसकी पहुच से बाहर की और घोर तांत्रिक रूप मे हो रही है जिसने इसके कुछ कुछ अनुर्वर मास्तिष्क को चकरा दिया है।

अग्नि मे अन्तिम अर्घ्य-प्रदान की क्रिया समाप्त हो गई। अग्नि की लपट जो वहुत ऊंची उठ गई थी धीरे धीरे कमती हो कर पुनः कुण्ड की आंच में मिल गई और एक काला धूआं उसमे से उठ कर सव तरफ फैलने लगा। किंग-ही ने हाथ जोड भूमि पर सिर रख पहिले भगवान सीह-फुंग और तव इस समय के आचार्य साऊ-चूकू को नमस्कार किया और तव प्रश्न की दृष्टि से उसे देखा। साऊ-चूकू ने अपने हाथ के एक ग्रन्थ को जो किसी वृक्ष की लम्वी पत्तियों पर लिखा हुआ है वगल के दिये के पास ले जाकर उसमे कुछ देखा और तव चीनी भापा में कहा, "पूजक, तुम्हारी पूजा समाप्त हो गई! भगवान सीह-फुंग प्रसन्न और सन्तुष्ट हुए है। अव तुम आगे की क्रिया कर सकते हो। कहो, वह वस्तु मंगवाऊं? डरोगे तो नही?"

पुजारी हाथ जोड कर विनीत भाव से वोला, "आचार्यदेव के सामने और डर!" साऊ-चूकू यह सुन मुस्कुराया और तव गम्भीर स्वर में अपने पीछे की तरफ देख उसने आवाज दी—"लाओ!"

आवाज के साथ ही दो आदमी कोई भारी चीज उठा कर लाते हुए दिखाई पडे। मगर हैं, यह क्या चीज है? यह तो किसी आदमी की लाश मालूम पड़ती है! वेशक कोई मुर्दा ही तो है। मगर देवता के पूजन के समय यह लोग यहां अपवित्र मुर्दा लाकर क्या करना चाहते है? देखिए जो कुछ है अभी मालूम हुआ जाता है, जरा कलेजा मजवूत किए अपने ठिकाने खड़े रहिए।

साऊ-चूकू ने कुछ इशारा किया, सांग-ली ने अपना सामान कुछ पीछे हटा कर जगह कर दी, और लाश अग्नि-कुण्ड के वगल में सुला दी गई, इसको लाने वाले दोनों आदमी वाहर चले गये, दीए की वत्ती कुछ तेज कर दी गई, और तव साऊ-चूकू के आदेशानुसार और उसके द्वारा कुछ पढे जाते हुए चीनी भाषा के मन्त्रों की सहायता से उस शव का पूजन आरम्भ हुआ। सम्पूर्ण विश्वास और कठोर हृदय वाले किंग-ही ने जैसे जैसे साऊ-चूकू ने वताया क्रिया करनी शुरू की। लाश के वदन में तेल लगाया, उवटन लगाया,

और तव उसी जगह पर उसका स्नान करा के उसके शरीर में चन्दन और अन्य सुगंधित द्रव्य लगाये गये, साफ कोरा वस्त्र पहिराया और एक तरह का जनेऊ का सा कोई धागा उसके कन्धे में डाला गया, उसे पुष्प-माला आदि पहिनाई गई और तव किसी विशेष मन्त्र से उसकी आरती की गई, इसके वाद साऊ-चूकू की आज्ञानुसार उस लाश के कटिप्रदेश पर एक आसन जो किसी पशु की खाल थी विछाया गया और इस आसन की भी पूजा करने वाद किंग-ही उस पर जा वैठा। अव फिर कोई पूजा आरम्भ हुई जो देर तक चलती रही।

ज्यो ज्यो शव-पूजन का कृत्य आगे वढता था, इस स्थान का वायु-मंडल भी न जाने कैसा कुछ डरावना और अंधकारमय सा होता जाता था। ऐसा जान पडता था मानों चारो तरफ तरह तरह के अस्पष्ट शब्द उठ रहे हो और अदृश्य मूर्तियो ने वहां के अंधकार में चलना फिरना आरम्भ कर दिया हो। पर पुजारी और साऊ-चूकू का ध्यान उधर न था। वे अपने कार्य मे मग्न थे। भावावेश ने साग-ली को भी मत्त वना रक्खा था।

यकायक साऊ-चूकू ने पीछे देखा और चीनी भाषा मे कहा, "शववलि तैयार रक्खो, मेरे हाथ वढ़ाते ही मुझे वलि-पशु का कलेजा तैयार मिले!" पीछे से कुछ अस्पप्ट स्वर उठा, और साऊ-चूकू ने काले तिलो से भरा एक पात्र उठा लिया। कुछ मंत्र पढ़ पढ़ कर उसने उस मुर्दे के चेहरे के ऊपर तिल फेंकना आरम्भ किया। उसके साथ साथ उन्ही मंत्रो को दोह-राता हुआ किंग-ही भी तिल फेंकता जाता था।

है, यह क्या हमारी आखो का भ्रम है या सचमुच वह मुर्दा लाश हिली थी! नही नही, यह धोखा नही हो सकता, जव जव साऊ चूकू तिल फेंकता है, उस लाश के वदन मे एक तरह की कपकंपी उठती है जिससे उसके ऊपर वैठे हुए किंग-ही का आसन भी हिल जाता है।

अचानक जोर से एक मंत्र पढ़ साऊ-चूकू ने वहुत जोर से एक चुटकी तिल लाश के मुंह पर फेंका। आश्चर्य की वात कि लाश ने अपना मुंह

खोल दिया, साथ ही साऊ चूकू ने अपने हाथ पीछे किए और कुछ कहा। लाल लाल कोई एक चीज जो वास्तव मे किसी सद्य: मारे गये पशु का कलेजा था जिसमे से खून की बूंदें टपक रही थी, अस्पष्ट हाथों ने साऊ-चूकू की हथेली पर रख दिया। साऊ-चूकू ने उस पर कोई मंत्र पढ़ा, कुछ तिल उसे भी मारे, और तव उसे किंग-ही के हाथ मे दे के कहा, "शव-देवता के मुंह में दो!" शव के खुले हुए मुंह मे वह मांस-पिण्ड दे दिया गया और तव पुन: मन्त्र पढ़ कर तिलों से मारना जारी हुआ।

यकायक साग-ली कांप गया और उसने आंखें मल कर उस शव की ओर देखा। उस मुर्दा लाश ने अपनी आंखें खोल दी थी और वड़ी डरावनी तौर पर गर्दन घुमा घुमा इधर उधर देखना शुरू किया था। साऊ-चूकू ने और भी जोर जोर से मन्त्र पढ़ पढ़ कर तिल फेंकना आरम्भ किया।

शव का वदन अव वार वार कांपने लगा। कुछ कुछ इस तरह की कपकपी उसमें उठने लगी जैसे नदी में लहरें आती है। साथ ही साथ वे अधखुली आंखें भयानक रूप से इधर उधर घूम घूम कर इस तरह ताकने लगीं कि उन्होंने सांग-ली को घवड़ा दिया और किंग-ही ने भी डरी हुई निगाह साऊ-चूकू पर डाली, पर वह एकदम शान्त और स्थिर था। उस पर भय का कोई भी चिन्ह न था। उसने एक हाथ से किंग-ही को शान्त रहने का इशारा किया और तव दूसरे हाथ से जोर के साथ कुछ अधिक तिल लाश पर मार के कहा, "शव-देव, तुम तृप्त हुए?"

लाश की आखें साऊ-चूकू की तरफ घूमी। उसका मुर्दा हाथ उठा और होठो तक गया। साऊ-चूकू ने हंस के कहा, "प्यास लगी है?" सिर जरा सा हिला। साऊ-चूकू ने अपने हाथ पीछे किए। उन पर एक वोतल रख दी गई जिसे किंग-ही की तरफ वढ़ा कर उसने कहा, "यह मद्य इनके मुंह में डालो।" किंग-ही ने ऐसा ही किया और मुर्दे के खुले मुंह में उस वोतल की शराव उलटी जाने लगी।

आश्चर्य, उस मुर्दे मे कौन सी शक्ति आ गई थी! एक के वाद एक

धीरे धीरे ग्यारह बोतल शराब वह लाश पी गई और बारहवी बोतल किंग-ही के हाथ में देते हुए तान्त्रिक-राज साऊ-चूकू के माथे पर चिन्ता की रेखाएं उभर आयी, क्योंकि वह जानता था कि केवल एक दर्जन बोतलें ही मंगाई गई थी और अगर इनसे शव की प्यास न बुझी तो वह बहुत उपद्रव कर सकता है। पर उसका डर निमूल निकला, बारहवी बोतल आधी पी कर शव ने अपना सिर हिलाया और तब मद्य उसके मुंह से बाहर गिरने लगा। साऊ-चूकू ने इशारे से किंग-ही को बोतल हटा लेने को कहा और तब पुनः कुछ तिल माग कर पूछा, "शव-देव, तुम प्रसन्न हो ?" लाश भयानक हंसी हंस उठी। साऊ-चूकू ने पूछा, "तुम सब तरह से तृप्त हो ?" लाश पुनः हंसी। तीसरी बार साऊ चूकू ने पूछा, "क्या तुम अपने पूजक का कुछ कार्य करने मे समर्थ हो ?" लाश तीसरी बार हंसी। डरावनी हंसी की प्रतिध्वनि मे मानो उस स्थान मे इकट्ठे पचासो दैत्यों की पंक्तिया भी हंस उठी।

साऊ-चूकू ने पुनः कहा, "तुम्हारा पूजक तुमसे कुछ काम लेना चाहता है। यदि तुम कर सको तो वह तुम्हें सब तरह पूर्ण तृप्त कर देने को तैयार है।" लाश के होंठ हिले, पहिले तो कुछ अस्पष्ट स्वर उसके मुंह से निकला, फिर भारी आवाज मे सुन पड़ा, "क्या चाहता है ?" साऊ चूकू ने किंग-ही की तरफ इशारा किया जिसने कांपते स्वर मे हा,क "देवता, मैं अपने शत्रु का नाश चाहता हूं !!"

लाश ने पूछा, "कौन शत्रु ?" पुजारी बोला, "कुछ पापी गेहुंए जिन्होने दूसरे देश से आकर हमारे पवित्र मन्दिरों को भ्रष्ट किया, पवित्र देवताओ की पूजा बन्द की, पवित्र मंग-सोत को नष्ट किया, और भगवान् युद्ध देवता माह जोंग के पुनीत स्थान को अपवित्र करके उनकी मूर्ति को अपने कलुषित हाथो से छुआ ! उन्ही पापी अन्यायी दुराचारी गेहुंओ का मैं नाश चाहता हूं ! शवराज, क्या तुम यह काम कर सकते हो ?"

शव अपनी भीषण हंसी हंसा और तब भारी स्वर मे बोला, "क्या कोई काम ऐसा भी इस लोक मे है जो मेरे लिए असम्भव हो ?" किंग-ही

प्रसन्न होकर वोला, "तो वस, उन पापियों के दल का नाश कर दो जो पश्चिम से आकर हमारे इस पवित्र पूर्वी देश को तहस नहस कर रहे है, उनका नाश कर दो !" आवेश से भरा किंग-ही चीख उठा। कुछ देर वाद वह फिर वोला, "तुम उनका नाश कर दो, मैं तुम्हें तृप्त कर दूंगा।"

लाश चुप हो गई, कुछ न वोली। किंग-ही ने उदासी से साऊ-चूकू की ओर देखा। उसने मन्त्र पढ़ पुनः कुछ तिल लाश पर मारे। लाश कांप उठी, मानों पुनः एक नया जीवन उसे मिला हो। उसके मुंह से आवाज निकली, "नाश से तुम्हारा क्या मतलब है ?" किंग-ही बोला, "मैं उनके गुप्त भेद जान लेना चाहता हूं, गुप्त अड्डे देख लेना चाहता हूं, गुप्त कार्यकर्ताओं को पहिचान लेना चाहता हूं, गुप्त मन्त्रणाओं को जान लेना चाहता हूं, ताकि सव कुछ जान और समझ कर मै उन दुष्टों को गारत कर सकूं ! पापी हत्यारे, जिन्होंने मुझे अपने प्राणों से प्यारे भगवान् सीह-फुंग की पूजा से वंचित किया है, उनको मै पीस डालना चाहता हू। वोलो, शवराज वोलो, क्या यह तुमसे सम्भव है ?"

शव के मुंह से आवाज निकली, "मैं जहां तुम कहो वहा तुम्हें पहुंचा सकता हूं, जिस मनुष्य के पास कहो ले चल सकता हूं, जिसे कहो उसे तुम्हारे पास ले आ सकता हू, आगे का काम तुम जानो !"

किंग-ही आवेश से वोला, "तुम मुझे उनके गुप्त अड्डे पर ले चलो, उस केन्द्र के भी केन्द्र, अत्यन्त गुप्त स्थान पर, जहां वैठ कर इन गेहुंओ का सञ्चालन करने वाले दुराचारी 'त्रिकंटक' अपनी सलाह करते है वह स्थान कहा है, उसका मार्ग कहां है, यह तुम मुझे दिखा दो, उनके मन्त्रणा-स्थल पर मुझे पहुंचा दो। वोलो, क्या यह सम्भव है ?"

लाश कुछ देर चुप रही। साऊ-चूकू ने पुनः मन्त्र-पूरित कुछ तिल उसको मारे। उसने कहा, "हां तुम्हें मैं उस जगह तक पहुंचा सकता हू। तुम अगर मुझ पर वैठे रह सको तो मेरे साथ जहां कहीं भी वे हों, वहा पहुंच सकते हो, पर अवश्य ही तुम्हें इसकी कीमत देनी पड़ेगी !" किंग-ही

छाती पर हाथ रख के बोला, "जो कहोगे सो ! मैं तुम्हें सब तरह से तृप्त कर दूंगा !" शव भीषण हंसी हंस कर बोला, "अच्छा तो फिर अपनी बात याद रखना, मैं तैयार हूं।"

किंग-ही ने साऊ-चूकू की ओर देखा। साऊ-चूकू बोला, "कोई हर्ज नही जाओ, पर अभी केवल स्थान देख के चले आओ, विशेष कुछ करने की मैं सलाह न दूंगा, उसमे खतरा भी है। फिर कभी दूसरी बार जो करना चाहो करना, अभी केवल उनका गुप्त स्थान देख कर आ जाओ। (शव पर कुछ तिल फेंक कर) शव-राज, जाओ, जो स्थान तुम्हारा पूजक देखना चाहता है उसे दिखा लाओ, परन्तु स बधान, धोखा मत खाना !"

लाश यकायक जोर से हिली। एक तरह का भयानक गूंजने वाला शब्द उस जगह हुआ और ऐसा जान पड़ा मानो कोई आंधी उस छोटी जगह में घूम गई हो जो अपने साथ उस शव और उस पर सवार किंग-ही को भी साथ लेती गई, क्योकि ये दोनो ही अब नजर न आ रहे थे जिसका कारण शायद वह बहुत सा गर्द गुब्बार था जो न जाने कहां से आकर उस जगह फैल गया था। तरह तरह की चीख चिल्लाहट की आवाजें उठी जो तुरत ही दब गईं। दीपक काप कर बुझ गया। चारो तरफ घोर अंधकार छा गया, जिसके बीच केवल कभी कभी साऊ-चूकू के द्वारा जपे जाते हुए किसी मन्त्र का शब्द गूंज उठता था

[५]

एक बहुत बडे खेमे के अन्दर जिसके चारो तरफ सख्त पहरा पड़ रहा है, तीन आदमी बैठे कुछ बातें कर रहे है। ये तीनो काउन्ट शैवर, मार्शल फाक, और जापानी जनरल कोमुरा है। संध्या का अंधकार तेजी से घिरा आ रहा है, और इसीलिये इस खेमे के चारो तरफ कुछ जगह छोड़ कर फैले हुए लश्कर में जगह जगह रोशनी दिखाई पड़ने लगी है पर इस जगह जहां ये तीनों बैठे है कोई रोशनी नही हो रहीहै, हां सटेहुए उस दूसरे खेमे में जिसका एक दर्वाजा इस खेमे के अन्दर भी पड़ता है और जिसके सामने

पड़े हुए मोटे पर्दे को भेद कर कभी कभी धूप या लोबान की सी खुशबू यहां तक आ पहुंचती है मालूम होता है कि रोशनी हो रही है क्योंकि एक मद्धिम सी आभा उस पर्दे के नीचे और अगल बगल से कभी कभी दिखाई पड़ जाती है।

इन तोनों आदमियों में यद्यपि बहुत धीरे धीरे बातचीत हो रही है फिर भी हम उसे बखूबी सुन सकते हैं। जनरल कोमुरा कह रहे है—

जनरल कोमुरा०। स्वयम् त्रिकंटक तो मेकंग नदी के भीषण जलप्रपात की आड़ वाले अपने उस गुप्त स्थान में रहते है, पर श्याम तथा आस पास के इन अन्य पूर्वी देशों को सहायता के लिये उन्होने ग्यारह आदमियों की एक कमेटी बना दी है जिसमें पांच आदमी उनके चुने हुए और पांच आदमी उन देशों के चुने हुए हैं और एक इन सभों का मुखिया या सरदार है। ये ग्यारह ही 'पूर्व-गौरव-संघ' के नाम से वह सब कार्रवाई कर रहे हैं जिसके शिकार आप लोग हुए या हो रहे हैं और मुझे यह भी पता लगा है कि यह ग्यारहवां आदमी या सरदार स्वयम् त्रिकंटक में से कोई एक है पर वह ऐसे गुप्त ढंग से रहता है कि आज तक किसी ने कभी उसकी शकल नहीं देखी है।

इन ग्यारह आदमियों की कमेटी को, जो आपस में एक दूसरे को 'एकादश-रुद्र' भी कहते हैं, त्रिकंटक ने बहुत अधिक द्रव्य के साथ साथ अपने कुछ भयंकर शस्त्रास्त्र दे दिये है मगर साथ ही यह भी कह दिया है कि बस इतनों को लेकर जो कुछ तुमसे करते बने करो और आगे अभी हमसे किसी मदद की उम्मीद न करो, क्योंकि असल में त्रिकंटक का इरादा समूची दुनिया भर में अपना आतंक फैलाने का हो रहा है जिसके चिन्ह कम से कम एशिया में तो दिखाई ही पड़ने लग गए है। अस्तु अगर आप इस 'ग्यारह की कुमेटी' अथवा इस 'पूर्व-गौरव-संघ' को नष्ट कर दें या उनके शस्त्रास्त्र छीन लें तो फिलहाल आपको कोई डर रह न जायगा क्योंकि जल्दी त्रिकंटक इन्हें और सामान न देंगे यह बात सुनिश्चित है। मुझे यह भी पता लगा है कि इन ग्यारहों ने अपना मुख्य अड्डा उसी आहों की गुफा

को वनाया हुआ है जिसमें प्रसिद्ध युद्ध-देवता 'माह-जोग' का मन्दिर है। अगर उस गुफा को हम कावू में कर ले और वहां रहने वाले ये आदमी गिरफ्तार हो जायं तो 'पूर्व गौरव-संघ' का सब काम बन्द हो जा सकता है, परन्तु फिलहाल ऐसा होना कठिन है क्योकि श्याम देश के नए राजा नरेत दूसरे से उन लोगों ने न केवल वह आहो की गुफा और उसके आस पास की समस्त पहाड़िया ही पट्टे पर लिखा ली है, वल्कि उनका एक दूत सदैव के लिए श्याम के राज-दरवार में जाकर रहने भी लगा है। उसका नाम अजितसिंह है और वह वड़ा ही धूर्त चालाक और साथ ही साथ वहादुर तथा हिम्मती आदमी है। नरेत दूसरे विना उसकी सलाह के कोई काम नही करते और चूंकि नरेत दूसरे के साथ आप लोगो ने परस्पर अनाक्रमण और मैत्री की सन्धि कर ली है इस लिए आप लोग उनके राज्य के अन्दर अर्थात् इस आहो की गुफा मे जा कर कोई कार्रवाई भी नही कर सकते। दूसरे शव्दो मे इसका मतलव यह है कि आप 'पूर्व-गौरव-संघ' के दफ्तर पर कव्जा नही कर सकते क्योकि प्रत्यक्ष रूप से न तो आप किसी तरह यही सावित कर सकते हैं कि वहा पर आप लोगो के विरुद्ध कोई षडयन्त्र हो रहा है और न आप इस समय श्यामियो से लड़ने की ताकत ही रखते हैं। इसीलिये किसी तरह की प्रत्यक्ष कार्रवाई करके आप अपने दुश्मन इस पूर्व-गौरव-संघ को कभी परास्त न कर सकेंगे। क्यो मैं ठीक कहता हू कि नही?

काउन्ट शैवर०। वेशक आपकी वात सही है।

मार्शल फाक०। इसमे कोई शक नही!

जनरल कोमुरा०। लेकिन दो वातें अगर हो सकें, यानी अगर हमलोग उस स्थान का पता लगा सकें जहा त्रिकंटक से पाए हुए सामान, अलोपी वायुयान, वेतार की तार से फूटने वाले वम, या ऐसी ही अन्य चीजें 'पूर्व-गौरव-सघ' रखता है, और उस जगह जाकर या तो उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर डालें या जो उससे भी अच्छा है, उन चीजो को अपने कव्जे में कर लें, तव हम 'पूर्व-गौरव-सँघ' को ऐसी चोट पहुचा सकते है जो वह जल्दी वर्दाश्त

न कर सकेगा और जिसके वाद शायद हम पर या आप पर कोई भारी चोट पहुंचा न सकेगा, क्योंकि कम से कम इतना तो सुनिश्चित है कि त्रिकंटक को जो कुछ देना था सो उसने दे दिया और अव वह इन लोगों की ओर कोई मदद न करेगा क्योंकि उसे समूचे एशिया में विप्लव करवाना है। अस्तु एक वार जहां 'पूर्व-गौरव-संघ' के शस्त्रास्त्र नष्ट हुए तहां कुछ दिन के लिये उसकी कमर टूटी और आपके मुख्य दुश्मन का डर खतम हुआ।

काउण्ट शैवर०। हां यह आप ठीक कहते हैं, पर ऐसा होगा ही क्यों और हम लोगों को उस स्थान का पता लगेगा ही कैसे जहां अपने अलोपी वायुयान और अन्य भयंकर शस्त्रों को 'पूर्व-गौरव-संघ' रखता है। जरूर उन सभों ने इन्हें रखने के लिए कोई वड़ी ही हिफाजत की जमीन भी चुनी होगी और उसके भेद को एक गुप्त मन्त्र की तरह छिपाया होगा।

मार्शल फाक०। और उन चीजों को सव का सव किसी एक ही जगह रक्खा हो यह भी मुझे विश्वास नही होता। जरूर एक एक चीज अलग अलग जगह पर छिपा के रक्खी गई होगी और उन जगहो का पता लगाने की आशा करना विल्कुल दुराशा मात्र है।

जनरल कोमुरा०। (मुस्कुरा कर) मगर आपका खयाल गलत है। मुझे उन स्थानों का पता लग जाने की पूरी आशा ही नही है वल्कि उनमें से कुछ जगहो का पता हम लोगों को लग चुका है।

दोनों०। (चौंक कर) है, सो कैसे ?

जनरल कोमुरा०। वही वताने और आगे के लिये सलाह करने के लिये ही तो मैंने आप लोगों को तकलीफ दी है।

दोनों०। जल्दी वताइये कि आपको क्या पता लगा और कैसे पता लगा ?

जनरल कोमुरा०। (हंस कर) घवडाइये नही, मैं सव वातें विल्कुल साफ साफ आप लोगों से कहूंगा, कुछ भी छिपाऊंगा नही। इन सव वातों का पता मेरे मित्र और सहायक प्रोफेसर 'साऊ-चूकू' ने लगाया है।

काउण्ट० । प्रोफेसर साऊ-चूकू ने ! सो कैसे ? क्या प्रोफेसर केवल वैज्ञानिक और गणितज्ञ ही नही बल्कि डिटेक्टिव भी है ?

जनरल कोमुरा० । (हंस कर) नही डिटेक्टिव तो नही है पर साधारण डिटेक्टिवो के वाप जरूर है ! आपको शायद न मालूम होगा कि प्रोफेसर साऊ-चूकू मेस्मेरिजम और हिपनाटिजम के एक वहुत वडे जानकार और प्रेत-विद्या के भी वडे सुदक्ष जानकार है ।

काउण्ट० । नही नही, क्या सचमुच वे यह सव जानते है ?

जनरल कोमुरा० । जी हा । उनका जन्म एक वहुत प्राचीन तान्त्रिक वंश में हुआ है । उनके पिता एक वड़े ही प्रसिद्ध तांत्रिक थे, और उनके दादा के वारे में तो यह मशहूर वात थी कि उनके घर में झाडू भी भूत लगाया करते थे और जब वे कही जाते थे तो उनके आगे पीछे भूत प्रेत और पिशाचो की सेना चलती थी ।

मार्शल फाक० । (हंस कर) जनरल, आप वीसवी शताब्दि से उड कर कही तेरहवी शताब्दि मे तो नही लौट जाना चाहते ?

जेनरल कोमुरा० । अवश्य ही आप लोग जिन्होने ये क्रियाएं कभी देखी नही है, इन वातों पर विश्वास न करेंगे और न आपके दिमाग में ये वातें वैठ ही सकेंगी, पर इनकी सचाई में उसी तरह विल्कुल सन्देह नही किया जा सकता जिस तरह हमारे और आपके मनुष्य होने मे ! आप जव स्वयम् अपनी आखो से प्रोफेसर साऊ-चूकू का अद्भुत काम देखियेगा तो दांतो तले उंगली दवाइयेगा, वल्कि मै तो यह कहूगा कि विना इन गुप्त विद्याओं की मदद के और किसी तरह पर उन भयानक पडयन्त्रकारियो के भेदो का पता लगाया ही नही जा सकता जिनके जाल इतने वारीक और इतने दूर दूर तक फैले हुए है कि शायद विश्वास पूर्वक मै यह भी नही कह सकता कि इस जगह इस मेरे लश्कर से घिरे और इतने पहरे चौकी के अन्दर वाले इस खेमे मे भी उसका कोई जासूस छिपा हुआ हमारी वातें सुन न रहा हो ।

जेनरल की बातें सुन काउन्ट और मार्शल ने डर की निगाहें चारो तरफ डाली क्योंकि खेमे में अब अंधेरा हो गया था, मगर कोमुरा इसे देख हंस के बोले, "घबड़ाइए नही, यह तो मैने एक बात कह दी। इसका यह मतलब नही कि यहां कोई छिपा हुआ ही होगा!"

काउन्ट०। खैर आप बताइये कि प्रोफेसर ने किस तरह पर क्या पता लगाया?

जनरल०। बहुत अच्छा, मै एक दम शुरू से सब हाल कहता हू। मार्शल, आपने जिस पुजारी किंग-ही को मेरे पास भेजा था उसकी एक लड़की तारा नामक भी थी, जिसे शायद आपने देखा हो।

मार्शल०। हां हां, मैं उसे जानता हूं।

जनरल०। इस किंग-ही को जब 'पूर्व-गौरव-संघ' वालों ने आहो की गुफा से निकाल दिया तो इसकी वह लड़की तारा इसके साथ न आई बल्कि तरह तरह के बहाने करके वहीं रह गई। यह पुजारी पहिले तो ताव के मारे उसे छोड़ आया पर फिर पीछे से अफसोस करने लगा। इसने मुझसे उसका जिक्र किया और बात ही बात में यह भी कहा कि यह लड़की उन 'पूर्व-गौरव-संघ' वालों से बड़ी गहरी घुली मिली है। नतीजा आखिर यह हुआ कि मैने अपने आदमियो की मदद और किंग-ही के दो शागिर्दों की सहायता से केवल उस लड़की ही को वहा से नही उडवा मंगवाया बल्कि उस मृत्यु-किरण के सम्बन्ध के जो कुछ कागजात वहां थे उन्हें भी मंगवा लिया। यद्यपि इस कोशिश मे हमारा एक आदमी मारा भी गया पर वे कागजात बड़े मतलब के जान पड़ते हैं।

मार्शल०। मृत्यु-किरण के सम्बन्ध के कागजात! यह क्या बात है और इनका पता आपको क्यों कर लगा?

जेनरल०। क्या आप भूल गये कि हमारे पड़ौसी देश हिन्दुस्तान में किसी समय क्रान्तिकारियों का एक दल कायम हुआ था जिसने 'मृत्यु-किरण' नामक एक तरह की किरणें पैदा करके वहां की सरकार को बहुत तंग

किया था ! क्या आपको भी यह बात नही मालूम है काउन्ट ?

काउन्ट० । हा हा, मुझे यह बात बखूबी मालूम है !

मार्शल० । और मुझे भी यह बात याद है, मगर मेरा मतलब यह था कि जब वे किरणे और उसको बनाने की मशीनें सब गारत हो गईं और उसका नुसखा भी जाता रहा तब वे यहाँ कैसे आ पहुंची ?

जनरल० । पूर्व-गौरव-संघ का प्रमुख सदस्य अजितसिंह इन किरणों का हाल जानता था और उसी ने केवल उनके बनाने के फारमूला को ही पुनः नही खोज निकाला बल्कि उसको पैदा करने वाली मशीनो का भी नकशा तैयार कर लिया ।

मार्शल० । अच्छा !

काउन्ट० । मगर आपको इस बात का पता कैसे लगा ?

जनरल० । पुजारी किंग-ही और उसके शागिर्दों सा-लिन और सांग-ली की जुबानी । ये लोग बहुत दिनो से अजित की ताक मे थे, इसलिये कि इन्हें यह सन्देह हो गया था कि लडकी तारा और इस अजित में कुछ प्रेम सम्बन्ध स्थापित हो गया है जो इन पुजारियों की निगाह मे बड़ी ही अपमान-जनक बात है । अजित की ताक झाक मे लगे रहने ही से उन्हें यह बात मालूम हुई कि वह कोई अद्भुत मशीन बनाने की भी कोशिश कर रहा है, अस्तु उनकी मदद से मैंने न केवल तारा बल्कि उन कागजो और नकशो को भी मंगवा लिया जैसा कि अभी अभी आपसे कहा ।

काउन्ट० । अच्छा तब ?

मार्शल० । जरा—एक—बात—वे नकशे अब कहां है ?

जनरल० । उन्हें मैने अपनी सरकार के पास भेज दिया है कि वैज्ञानिको से जाच करावे और देखे कि उनमे कुछ तथ्य भी है या कोरी कल्पना के घोड़े दौडाए गए है ।

मार्शल० । अगर कही सचमुच उन कागजों या नकशो की मदद से मृत्यु-किरण पुनः आविष्कृत ही सकी तो फिर क्या बात है !

काउन्ट० । तव तो जापान संसार पर अपना साम्राज्य फैला डालेगा ! (हंस कर)देखा चाहिये उस वक्तगरीव फ्रांस पर उसकी कैसी निगाह रहती है।

जेनरल० । (हंस कर) गरीव फ्रांस ? मृत्यु-किरण से जो भी फायदा होगा उसे जापान और फ्रांस साथ मिल कर उठावेंगे ! वह अगर संसार पर हमारा प्रभुत्व फैला सकी तो वह जापान और फ्रांस दोनों का प्रभुत्व होगा, दुनिया उस समय दो अर्ध-गोलको में वांट दी जायगी ।

मार्शल० । (उछल कर) और पूर्वी गोलार्ध जापान का और पश्चिमी फ्रांस का हो जायगा ?

जेनरल० । वेशक !! मगर अभी से ख्याली पुलाव पकाना व्यर्थ है, पहिले उन कागजों में कोई तथ्य भी तो निकले !

काउन्ट० । खैर जो होगा देखा जायगा, आप आगे कहिये, तारा के हाथ में आ जाने पर आपने क्या किया ?

जेनरल० । मैंने उसे प्रोफेसर साऊ-चूकू के हवाले कर दिया । चूंकि मैं जान चुका था कि यह लड़की अजित की प्रेमिका है अस्तु मुझे सहज ही यह खयाल हुआ कि यह 'पूर्व-गौरव-संघ' का भी कुछ न कुछ भेद जरूर जानती होगी । मैंने प्रोफेसर से कहा कि अपनी विद्या की आजमाइश इस पर करें और इसके पेट से कुछ भेद निकालने की कोशिश करें ।

काउन्ट० । (उत्कण्ठा से) अच्छा तव ? प्रोफेसर ने क्या किया ?

जेनरल० । प्रोफेसर ने उस लड़की पर अपनी हिपनाटिज्म और मेस-मेरिज्म की क्रियाएं की और जो कुछ वह जानती थी उतना जान लिया । अभी थोड़ी देर पहिले जो कुछ बातें मैंने कही वह उसी की जुवानी मालूम हुई थी ।

काउन्ट० । अच्छा ! यह तो आपने बडी प्रसन्नता की वात कही ! तव तो और भी कई वडे वड़े भेद आपको मालूम हो गये होंगे ?

जेनरल० । मैंने अर्ज किया न कि जो कुछ वह लड़की जानती थी उतना हम लोगों ने जान लिया, मुश्किल यही कि वह कुछ विशेष जानती

ही न थी ! पूर्व-गौरव-संघ वाले, या लडकी का प्रेमी अजित ही, उसे कुछ ज्यादा वताते न थे। तो भी जो कुछ जाना गया उससे भी वड़ा काम निकल सकता है और उसकी वुनियाद पर वहुत कुछ किया जा सकता है।

मार्शल०। वेशक वेशक, इसमे क्या शक है, मगर प्रोफेसर किस तरह यह सव काम करते हैं सो जानने का मुझे कौतूहल हो रहा है, अगर कभी...

जेनरल०। इस समय प्रोफेसर उस लडकी ही पर कुछ प्रयोग कर रहे है। अगर आपकी ऐसी ही इच्छा हो तो मै उनसे पूछूं कि वे आप लोगों को अपनी कुछ क्रिया दिखा सकते है या नहीं ?

काउन्ट और मार्शल०। हा हा जरूर, हम लोग जरूर देखना चाहते है।

जेनरल कोमुरा यह सुन मुस्कुराते हुए उठे और उस पर्दे की तरफ वढ़े जो खेमे मे एक तरफ के दर्वाजे पर पड़ा हुआ था पर इस समय के वढ़ते हुए अंधकार के कारण अव स्पष्ट दिखाई न पड रहा था। मगर दो चार कदम ही वढे होगे कि खेमे के वाहर की तरफ से कछ आहट सुनाई पडी और तुरत ही दो जापानी फौजी अफसर दरवाजे पर दिखाई पड़े। जेनरल ने उनकी तरफ घूम कर पूछा, "क्या है ?" उनमे से एक ने सैल्यूट करके कहा, "वंकक से दो जासूस आये है।" जेनरल यह सुन रुक गये और तव फिर अपने स्थान पर लौट जाकर वोले, "उन्हें भेजो और किसी से कहो यहा रोशनी कर दे मगर रोशनी तेज न हो, कोई मद्धिम रोशनी का लम्प भेजवाना।' इसके वाद काउन्ट शैवर और मार्शल फाक की तरफ देख के उन्होंने कहा, "तेज रोशनी होने से प्रोफेसर के काम में हर्ज पडता है, यही सवव है कि मैं आप लोगों को भी यहा अंधेरे मे ही वैठाए हुआ हू।

वात की वात मे एक छोटा लम्प वहा लाया गया और तव दोनो जासूस हाजिर किये गये। ये दोनो ही जापानी थे मगर इस समय अपनी पोशाक और चाल ढाल ऐसी वनाए हुए थे मानो किसी उच्च श्यामी वंश के हो। दोनों जेनरल कोमुरा को सलाम कर खडे हो गये। जेनरल ने देखते ही उनसे पूछा, "कहो क्या खवर लाए ? जिस काम से गये थे वह हुआ !"

जासूसों ने सिर हिलाया और तव उदासी के स्वर में कहा, "जी नहीं, वे लोग वहुत ज्यादा होशियार है, अजितसिंह को गिरफ्तार करने की हमारी सव कोशिशें वेकार हुई और वह किसी तरह भी हाथ न आया।"

जेनरल०। सो क्यों ?

जासूस०। उसके साथी सव वड़े ही तेज है और वह खुद भी वड़ा ही फुर्तीला और चालाक आदमी है। शिकार खेलती समय दो दफे हमारे आदमिमों ने उसे घेरा मगर हर दफे वह निकल ही गया।

जेनरल०। (गुस्से से) और तुम लोग उसे अपनी गोली का निशाना तक भी वना न सके ! मैंने कहा न था कि उसे अगर जीता नही तो मुर्दा मेरे सामने लाना ?

जासूस०। (डरे हुए कंठ से) हुजूर हम लोगो ने उसकी भी कोशिश की पर कुछ न हुआ। हमने अपने दो आदमियों को वम देकर उसके मकान पर भेजा। जहां वह सोता था उस जगह तक वे पहुचे पर न जाने कैसे वहां से भी वह निकल भागा और उलटे उन दोनों आदमियों को जान से हाथ धोना पडा।

जेनरल०। मगर कैसे निकल गया ? क्या वम फूटा नही ?

जासूस०। जी नही हुजूर, वम तो फूटा पर फिर भी न जाने कैसे वह वच गया और उसके नौकरों ने हमारे आदमियो को गोली मार दी।

जेनरल०। तुम लोग वड़े नालायक हो ! अव वह जरूर समझ गया होगा कि उसकी जान पर हमला किया जा रहा है और इसलिए और भी होशियार हो जायगा। शायद कभी घर से वाहर न निकले तो ताज्जुव नही। मैंने वार वार कहा था और ताकीद कर दी थी कि वहुत वचा के काम करना और उसे यह खवर किसी तरह भी न लगने देना कि उस पर घात किया जा रहा है।

जासूस०। मगर हुजूर उस पर इसका कोई असर नही हुआ। वह अव भी ठीक उसी तरह वेफिक्र और निडर है वल्कि न जाने किस फिराक

मे इधर ही को आया हुआ भी है। अभी आज दोपहर को हम लोगों ने उसे केवल एक सवार के साथ यहां से सिर्फ दस कोस के फासले पर देखा है।

जेनरल कोमुरा०। यहा से दस कोस के फासले पर ! वह कहा था और क्या कर रहा था ?

जासूस०। एक पहाड की तरहटी मे आराम कर रहा था, दो घोडे पास बंधे थे, उसका साथी कुछ खाना पकाने का वन्दोबस्त कर रहा था।

जेनरल०। (आप ही आप सोचते हुए) यहां वह क्यो आया ? क्या उसे कुछ पता लग गया ? प्रोफेसर को खबर करनी चाहिए। (दोनो जासूसों से) अच्छा तुम लोग वाहर वैठो, शायद मुझे तुमसे और कुछ पूछना पड़े।

दोनो सासूस यह सुनते ही सलाम कर खेमे के वाहर निकल गये और जेनरल कोमुरा उठ कर फिर उसी पर्दे के पास पहुचे। धीरे से पर्दा हटा इन्होंने भीतर के किसी आदमी से कुछ कहा और तब कुछ देर खडे रहे। थोड़ी देर वाद वे लौटते दिखाई पड़े पर इस समय उनके साथ प्रोफेसर साऊ-चूकू भी थे।

प्रोफेसर को देखते ही काउन्ट शैवर और मार्शल फाक उठ खडे हुए। सभो ने आपुस में हाथ मिलाया और तब जेनरल ने कहा, "प्रोफेसर, हमारे ये दोस्त आपकी अद्‌भुत क्रियाओ का कुछ नमूना देखना चाहते है पर उनका जिक्र पीछे होगा। इस समय आप एक बुरी खवर सुन लें। जिस अजित को गिरफ्तार कराने की आपकी इतनी ज्यादा इच्छा थी वह हमारे फन्दे से निकल गया और उलटे हमारे कई आदमी उस कोशिश में मारे गये !"

इतना कह जेनरल कोमुरा ने जासूसो से जो कुछ सुना था वह प्रोफेसर से कह सुनाया और अन्त मे कहा—"मगर उन जासूसों का यह भी कहना है कि अजितसिंह न जाने किस मतलब से यही आया हुआ है और आज दोपहर को यहा से सिर्फ दस कोस पर देखा गया था।" उनकी यह वात सुनते ही चौंक कर प्रोफेसर ने कहा, "यहां से दस कोस पर !" जेनरल ने कहा "हा" जिस पर प्रोफेसर वोले, "ओह तब तो मै उसे सहज ही में

यहां वैठे वैठे अपने कब्जे में कर सकता हूं।" जेनरल ने ताज्जुव से पूछा, "सो कैसे ?" पर उसका जवाव न दे प्रोफेसर ने काउन्ट तथा मार्शल की तरफ घूम उनसे कहा, "महाशयों, क्या आप मेरी हिपनाटिज्म और मेसमेरिज्म की क्रियाएं देखना चाहते हैं ?" दोनों ने कहा, "जी हां, लेकिन अगर आपको कोई तरद्दुद न हो तभी !" प्रोफेसर वोले, "नहीं कुछ भी नही। इस समय मैं वही करने जा रहा था जव जेनरल ने मुझे वुलाया। मैं तारा को हिपनोटाइज्ड करके उसकी आत्मा को 'आहों की गुफा' में भेजना चाहता था, पर अव इससे भी कहीं अच्छा काम लेने का मौका आ गया है (जेनरल की तरफ घूम कर) क्यों, अगर खुद अजितसिंह को गिरफ्तार करके मैं उसी पर अपना प्रयोग करूं तो कैसा हो ? उसे तो न केवल 'पूर्व-गौरव-संघ' वल्कि 'त्रिकंटक' का भी वहुत कुछ हाल मालूम होगा और उसकी जुवानी हम लोग वहुत अधिक जान सकेंगे ?

जेनरल०। इसमें क्या शक है, मगर अजित हमारे कब्जे में आवेगा ही क्यो ?

प्रोफेसर०। वह भी देख लीजिए ! अच्छा मुझे कुछ देर के लिये इजाजत मिले।

प्रोफेसर उठ के पुनः उस पर्दे के भीतर चले गये और वहां थोड़ी देर के लिए सन्नाटा हो गया। लगभग पन्द्रह वीस मिनट के वाद प्रोफेसर पुनः आते दिखाई पड़े मगर इस समय वह अकेले न थे। उनके पीछे पीछे लड़की तारा भी थी जो चुपचाप गरदन नीची किए इस तरह चली आ रही थी जिस तरह कोई कुत्ता अपने मालिक के पीछे पीछे चलता है।

सुन्दरी तारा को आज हमलोग कई दिनों के वाद देख रहे हैं, पर ओह, इसकी यह क्या हालत हो रही है ! मुंह सूख गया है, चेहरा पीला पड़ गया है, आंखें वैठ गई हैं, मालूम होता है मानो वरसों की वीमार हो ! यह यकायक इसे क्या हो गया ? खैर जो कुछ भी हो।

प्रोफेसर साङ-चूकू ने एक कुरसी खींच कर आगे वढ़ाते हुए तारा

को उस पर बैठ जाने को कहा और वह बिना इधर उधर देखे उस पर इस तरह बैठ गई मानों कोई कल की पुतली हो। प्रोफेसर ने एक तीक्ष्ण दृष्टि उस पर डाली और तब उसकी पीठ हाथ फेरते हुए कहा, "तारा, तुम मजे मे हो ? कोई तकलीफ तुम्हे नही है ?" तारा ने सिर हिलाया। प्रोफेसर ने फिर पूछा, "सिर मे, वदन मे, दर्द नही है ? चक्कर नहीं आता ?" तारा ने फिर सिर हिलाया। प्रोफेसर ने कहा, "मै तुमसे कुछ वाते पूछू, वताओगी ?" तारा ने सिर हिला कर सम्मति प्रकाश की।

ये वातें करते हुए प्रोफेसर अपना हाथ धीरे धीरे तारा के वदन और चेहरे के सामने फेर रहे थे। तारा की आखें धीरे धीरे वन्द होती जा रही थी, शरीर कुछ अवश सा हो रहा था। प्रोफेसर तीक्ष्ण दृष्टि से उसे देखते हुए बोले, "मै तुम्हें एक जगह भेजना चाहता हू, जाओगी ?"

तारा ने पुनः सिर हिला सम्मति प्रकाश की। इस समय उसका अन्त. करण पूरी तरह से प्रोफेसर के वश मे हो रहा था।

यकायक प्रोफेसर रुक गए। उनके पीछे वाला पर्दा हिला और कोइ आदमी वहां से निकल कर प्रोफेसर की तरफ वढ़ा। यह पुजारी किंग-ही था जो इस समय किसी उत्तेजना के वशीभूत हो रहा था। प्रोफेसर ने कुछ झुंझला कर उसकी तरफ देखा मगर वह हाथ जोड वड़ी नम्रता के साथ बोला, "गुरुदेव, जिस चीज को लाने की आपकी आज्ञा हुई थी वड़ी खोज के वाद वह मिल गई। अव आपको वह प्रयोग करना चाहिए!" प्रोफेसर ने चौंक कर पूछा, "क्या चीज मिल गई! कोई शव ?" किंग-ही बोला, "जी हा, जो जो वातें आपने वताई थी सब विल्कुल उसमे मिलती हैं। मैं तो समझता हूं आपके पूरे काम का है।" प्रोफेसर ने पूछा, "उसकी मृत्यु कैसे हुई कुछ मालूम है ?" किंग-ही बोला, "पास के गांव के वाहर रहने वाला डोम था। उसके झोपडे की दीवार उस पर गिर पडी और वह दव के मर गया।" प्रोफेसर ने पूछा, "कोई अंग तो भंग नही हुआ, कही कटा कुटा तो नही है ?" किंग-ही बोला, "जरा नही, मालूम होता है जैसे

सो रहा हो। कहीं एक घाव का भी निशान नहीं है। शायद धसके से ही मर गया।" प्रोफेसर कुछ खुश होकर बोले, "तुम उस प्रयोग के लिए तैयार हो? मैं कह चुका हूं कि इस काम में कभी कभी बड़ा खतरा भी हो जाता है।" किंग-ही अपनी छाती पर हाथ रख के बोला, "मैं सब कुछ खतरा उठाने को तैयार हूं, बस एक बार मेरे मन की बात हो जानी चाहिए!" प्रोफेसर ने कुछ विचार कर कहा, "अच्छा तो तुम पूजा की सामग्री जुटाओ, मैं बहुत जल्द यहां से खाली होकर आया।" किंग-ही "बहुत अच्छा" कह कर पीछे लौट गया। उसने एक नजर उठा के भी अपनी लड़की की तरफ नहीं देखा। न जाने कौन सा सम्मोहन प्रोफेसर ने इन लोगों पर डाल रक्खा था कि ये उसके बिल्कुल गुलाम बन गए थे।

प्रोफेसर पुनः तारा की तरफ घूमे। इतने बीच में उसकी तन्द्रा कुछ कम हो गई थी, आंखें कुछ कुछ खुलने लग गई थी, पर प्रोफेसर के दो ही तीन बार उसके ऊपर 'पास' करने से उसकी फिर वही हालत हो गई। कुछ देर तक प्रोफेसर अपनी हिपनाटिक शक्ति का प्रयोग उस पर करते रहे इसके बाद गम्भीर स्वर में उन्होंने पूछा, "तारा तुम क्या देख रही हो?" तारा जरा देर चुप रही, इसके बाद बोली, "मुझे कुछ दिखाई नहीं देता।" उसकी आवाज इस समय कुछ भारी सी हो रही थी। ऐसा जान पड़ता था मानों यह आवाज तारा के मुंह से नहीं किसी और मुंह से निकल रही हो। प्रोफेसर बोले, "तुम यहां से पूरब तरफ आठ दस कोस पर एक पहाड़ की तरहटी में हो। यद्यपि इस समय अंधेरा हो गया है फिर भी तुम सब कुछ देख सकती हो। उस जगह कहीं दो सवार हैं। उन्हें तुम देख रही हो?"

तारा का बदन जरा सा कांपा, कुछ देर तक वह चुप रही, इसके बाद बोली, "हां, मैंने देख लिया। वे अपने घोड़ों पर सवार इधर ही को आ रहे है।" प्रोफेसर ने फिर पूछा, "क्या तुम उनको पहिचानती हो?" तारा ने सिर हिलाया, प्रोफेसर ने कहा, "एक उनमे से अजितसिंह हैं और दूसरा उनका नौकर।" तारा का बदन फिर कांपा। उसके बदन मे जरा फुरहरी

सी उठी, फिर उसने कहा, "हां"। प्रोफेसर ने कहा, "मै चाहता हूं कि तुम अजित के पास जाओ और उसे फुसलाकर मेरे पास ले आओ। तुम ऐसा कर सकती हो।" तारा ने सिर हिलाया, मानो "ना" कहा। प्रोफेसर ने हाथ के दो तीन 'पास' पुनः उस पर किए और कुछ कठोर स्वर मे कहा, "नही, वह तुम्हारी वात मान यहा चला आवेगा, और जव तक तुम उसे लेकर यहा न आओगी तुम्हारी तन्द्रा न खुलेगी। अच्छा जाओ, जल्दी उसे लेकर मेरे पास आओ। देखो, धोखा मत खाना और जैसे हो तैसे उसे यहा लाना। अच्छा अव उठो, जाओ, मै तुम्हें होश मे लाता हू, मगर तुम्हें और कोई वात या हम लोगो का कोई जिक्र याद नही रहेगा—सिर्फ यह काम याद रहेगा जो मैने वताया है।"

प्रोफेसर ने कुछ उलटे 'पास' करने शुरू किए। धीरे धीरे तारा होश में आने लगी। उसके वदन में कई वार कंपकंपी आई, उसकी पलकें दो चार वार हिली और तव खुल गई, उसने होश मे आकर अपने चारो तरफ देखा। इस समय वह स्वस्थ जान पडती थी। पहिले जैसा अर्ध-मृत सा भाव उस पर न था। उसके चेहरे पर कुछ खून भी आ गया था, वह कुछ चैतन्य हो रही थी। जान पडता है प्रोफेसर अपनी विद्या का कुछ प्रयोग उस पर कर चुकने के वाद उसे यहा इन लोगो के सामने लाए थे क्योकि उस समय वह जैसी सुस्त और मजहूल हो रही थी वैसी इस समय न थी।

एक निगाह आस पास के लोगो पर डाल विना किसी से कुछ कहे तारा उठ खडी हुई। प्रोफेसर भी उठे। तारा का हाथ पकड के उन्होंने पूछा, "कहा जा रही हो तारा?" वह हाथ छुडाने की कोशिश करती हुई वोली, वडे जरूरी काम से जा रही हू।" प्रोफेसर ने कहा, "एक वात तो मेरी सुनती जाओ।" पर वह झटका दे हाथ छुड़ा कर वोली, "आ के सुनूंगी, इस वक्त फुरसत नही है" और तव घूम कर खेमे के वाहर निकल गई। इस समय इसे देख कोई नही कह सकता था कि इस पर हिपनाटिज्म का कोई प्रयोग किया गया है या यह अव भी प्रोफेसर की इच्छाशक्ति के वशीभूत

हुई भई सब काम कर रही है ।

तारा के खेमे के वाहर चले जाने पर प्रोफेसर ने धीरे से जेनरल कोमुरा से कहा, "अपने दो होशियार आदमी इसके साथ कर दीजिए । अब यह सीधी अजित के पास जायगी और जैसे भी बनेगा उसे ले के यहाँ आवेगी । तब मैं अजित को अपने वशीभूत कर 'पूर्व-गौरव-संघ' और 'त्रिकंटक' का समूचा भेद बात की बात में जान लूंगा, मगर जिसमें रास्ते में इस लड़की पर कोई संकट न आवे इसका खयाल रखना जरूरी है । उन आदमियों से कह दीजियेगा कि अपने को प्रगट न होने दें गुप्त रह कर ही इसके पीछे पीछे जायं और इसकी पूरी हिफाजत रक्खें ।"

जेनरल ने कहा, "ठीक है, वैसा ही हो जायगा, पर आप अब क्या करेंगे ?" प्रोफेसर ने कहा, "अब मैं कुछ तांत्रिक प्रयोग करना चाहता हूं । मुझे शव-सिद्धि की क्रिया आती है जिसका कुछ हाल किंग-ही को भी मालूम है । इस समय मैं वही करने जा रहा हूं और लगभग दो तीन घन्टे वल्कि उससे भी अधिक उसी में फंसा रहूंगा । कोई मुझे विचलित न करे इसका प्रवन्ध रखिएगा ।" जेनरल बोले, "ये मेरे मित्र काउन्ट और मार्शल आपकी अद्‌भुत शक्तियों के वारे में आपसे कुछ पूछना चाहते थे पर शायद इस समय......?" प्रोफेसर ने कहा, "आज अब नही, फिर किसी दिन, वल्कि मैं तो कहूंगा कि ये इस समय अपने अपने डेरों को जायं । वाहरी आदमी यहां रहेंगे तो मेरे काम में विघ्न पड़ेगा । आज मुझे अपनी समस्त शक्तियों को एकाग्र करके काम करना है और न जाने क्यों मुझे ऐसा जान पड़ता है मानों आज कुछ हो के रहेगा ।"

इतना कह विना किसी तरफ देखे या किसी से और कुछ कहे, प्रोफेसर साऊ-चूकू पर्दा उठा वगल वाले खेमे में चले गए । वहां जाकर जो कुछ उन्होंने किया वह हम ऊपर लिख आए है अस्तु उस विषय मे यहां कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं ।

प्रोफेसर के जाने वाद जेनरल कोमुरा ने अपने मेहमानों की तरफ देख

कर कहा, "मुझे अफसोस है कि आप लोगो की इच्छा मैं पूरी न कर सका, परन्तु मैं समझता हू कि इस समय प्रोफेसर ने जो कुछ कहा वही करना मुनासिब होगा।" काउन्ट शैवर उनका मतलब समझ कर बोले, "हा और फिर अब देर भी बहुत हो गई है। जैसा कुछ होगा या जो कुछ मालूम होगा वह फिर किसी समय हम लोग जान लेंगे।" जेनरल ने कहा, "हो सका तो कल या परसो मैं स्वयम् ही आपके लश्कर मे पहुचूंगा और सब बातें, अगर कुछ मालूम हुई, आपसे कहूगा।" सभो ने आपस मे हाथ मिलाया और तब काउन्ट शैवर तथा मार्शल फाक खेमे के बाहर हो गए।

उन्हें अपने लश्कर के बाहर तक पहुचा जेनरल कोनुरा पुन लौट आये और अपनी जगह पर बैठ कुछ सोचने लगे। कुछ ही देर बाद बहुत से घोडो के टापो की आवाज ने उन्हें बता दिया कि अपने साथियो सहित काउन्ट शैवर और मार्शल वहा से रवाना होकर अपने लश्कर की तरफ चले गए जो यहा से बहुत दूर न था। तब वे उठे और एक दूसरा पर्दा उठा बगल के एक दूसरे खेमे मे चले गए जो इससे सटा और एक आफिस की तरह पर सजा हुआ था। इस खेमे मे रोशनी हो रही थी और यहा उनके दो विश्वासी सेक्रेटरी बैठे कुछ कर रहे थे। जेनरल भी एक टेबुल के पास जा के बैठ गये जिस पर बहुत से कागज पत्र फैले हुए थे।

[६]

रात का समय और खतरनाक रास्ता होते हुए भी दो सवार आपस मे धीरे धीरे कुछ बाते करते हुए उस भयानक जंगल मे से जा रहे हैं जो पहाड़ियों के एक लम्बे और पेचीले सिलसिले द्वारा तीन तरफ से घिरा हुआ है।

अभी अभी निकलने वाले चन्द्रदेव की किरणें अपनी पूरी तेजी पर नही आई है और इसी सबब से इस जंगल का अंधकार उतना दूर नही हो पाया है जितना कि उनके ऊपर उठ जाने पर होता, फिर भी हम बता सकते है कि ये सवार कौन हैं। इनमे से एक तो अजित है और दूसरी तारा। ये दोनों ही घोड़ों पर सवार आपस में बातें करते हुए जा रहे हैं, बल्कि इतने

दिनों के वाद अपनी प्रेमिका को सही सलामत पाकर अजित एक दम घुल घुल कर उससे वातें कर रहा है परन्तु तारा न जाने क्यों कुछ उखड़ी पुखड़ी सी वातें कर रही है, एक दम दिल खोल कर उसकी वातों का जवाव नही दे रही है, जिससे उसे कुछ ताज्जुव हो रहा और वह अपने घोड़े को तारा के घोड़े से सटाता हुआ वार वार आग्रह के साथ उससे कुछ पूछ रहा है। इन दोनों के कुछ पीछे पीछे एक आदमी और भी चला आ रहा है जो यद्यपि पैदल है मगर वेशक अजित का वही साथी होगा जिसके घोड़े पर इस समय तारा सवार है।

यकायक अजित चौंका। उसके कानोमें किसी घोड़े के टापों की आवाज गई थी। उसने चारो तरफ देखा। यद्यपि अंधकार कुछ देखने की इजाजत नही दे रहा था फिर भी उसने अपनी तेज निगाह चारो तरफ दौड़ाना शुरू किया क्योकि वह एक ऐसी जगह पर था जहा दुश्मनो का डर कदम कदम पर था, और इसलिए वहुत जल्द उस काली छाया को देख भी लिया जो पेड़ो के एक झुरमुट से निकल कर सीधी उसकी तरफ वढ़ रही थी। अजित को किसी दुश्मन का ख्याल हुआ। उसका हाथ उसकी कमरपेटी पर गया जिसमे दो पिस्तौलें खुंसी हुई थी, और वह तारा को पीछे रहने को कह अपना घोड़ा वढ़ा उस सवार की तरफ चला जो उसके पास तक न वढ़ अव अपनी जगह पर ही खड़ा हो गया था।

कुछ कदम आगे वढ़ अजित ने उससे पूछा, "तुम कौन हौ और किस लिए यहां खड़े हौ?" वह सवार वोला, "मेरे पास आओ तो मैं वताऊं।" आवाज सुनते ही अजित चमक गया। उसे वह स्वर कुछ परिचित सा जान पड़ा। उसने पिस्तौल निकाल कर हाथ में ले ली और उस सवार की तरफ वढ़ा। कुछ दूर ही था कि सवार ने कोई चीज निकाल कर उसके सामने की जो यहां के अंधकार में भी विचित्र ढंग से चमक उठी। उसे देखते ही घवड़ा कर अजित वोला, "हैं! आप! यहां कहां?" सवार कुछ रूखे ढंग से वोला, "मैंने तुम्हें इतना समझा कर इधर भेजा फिर भी तुम वेवकूफी

कर ही गए न आखिर !" अजित और पास जाकर सवार के पैर छूता हुआ ताज्जुव से वोला, "क्या गलती मुझसे हुई ?" सवार बोला, "इधर आड़ में आओ और तारा से दूर हटो तो वताऊं ।"

ताज्जुव करता हुआ अजित उस सवार के पीछे पीछे पेड़ो के झुरमुट के अन्दर चला गया जहां सवार ने अपना घोड़ा घुमाया और अजित की तरफ फिर कर कहा, "मैंने तुमसे कह न दिया था कि तारा पूरी तरह से प्रोफेसर साऊ-चूकू के वश मे हो गई है जिसने किंग-ही को भी अपना गुलाम वना लिया है ?"

अजित० । जी हां वेशक आपने कहा था और यह वात मुझे अच्छी तरह याद भी है ।

सवार० । तो उसी याददाश्त का यह तुम नमूना दिखा रहे हो ? इस समय तुम तारा के साथ कहा जा रहे हो ?

अजित० । उसके एक रिश्तेदार के यहा जिसने उसकी जान दुश्मनों से वचाई है और जिसे दुश्मनो के वहुत से भेद भी मालूम हैं ।

सवार० । (गुस्से से) तुम मूर्ख हो ! तारा इस समय भी प्रोफेसर की आज्ञा मे है और उसके कहे मुताविक ही धोखा देकर तुम्हें जापानियों के लश्कर में ले जा रही है जिसके पास पहुंचते ही तुम गिरफ्तार कर लिए जाओगे और तव ताज्जुव नही कि वह कुटिल तान्त्रिक तुम पर भी अपने प्रयोग कर तुम्हें अपना गुलाम वना ले और जवर्दस्ती तुमसे हम लोगों का सव भेद छीन ले ।

अजित० । (घवड़ा कर) यह आप क्या कह रहे हैं ! तारा मुझे धोखा दे और जापानियों के लश्कर में मुझे ले जाए ! नही नही, ऐसा कभी नही हो सकता, तारा मुझे धोखा कभी नही दे सकती, वह अपनी जान दे देगी मगर मुझे किसी खतरे मे........

सवार० । तुम्हें प्रोफेसर की शक्तियों का हाल मालूम नही है इसी से तुम ऐसा कह रहे हो । तारा इस समय वह तारा नही है जिस पर तुम जान

देते हो या जो कभी तुम पर मरती थी। इस समय उसके शरीर में प्रोफेसर की आत्मा राज्य कर रही है और जो कुछ और जितना कुछ वह दुष्ट प्रोफेसर कहे वही और उतना ही वह कर सकती है अधिक कुछ नहीं।

अजित०। क्या वह उस प्रोफेसर के कहे में इस कदर हो जायगी कि मुझ तक को धोखा दे!

सवार०। विल्कुल यही वात है, और अगर तुम उसके साथ जाओगे तो केवल वहुत वुरा धोखा ही नही खाओगे वल्कि ताज्जुब नही कि अपने साथ साथ हम लोगों को भी ले वीतो क्योकि हमारे करीव करीव सभी भेद तुम्हें मालूम हैं जिन्हें वह पापी प्रोफेसर पलक झपकते में तुम्हारे दिल के वाहर खीच लेगा। उस समय क्या होगा इसका अनुमान.......

सूखे पत्तों की चरमराहट ने किसी के आने की सूचना दी और अजित ने घूम कर देखा तो तारा को अपनी तरफ आते पाया जिसने उसे देखते ही कहा, "तुम चलोगे कि नहीं अजित, देर न हो रही है!"

इसके पहिले कि अजित कुछ कहे या जवाव दे वह सवार अपना घोड़ा छोड़ तारा की तरफ बढ़ गया और उसके दोनों हाथ पकड कर बोला, "तुम अजित को कहां ले जा रहो हो तारा, प्रोफेसर साऊ-चूकू के पास न?"

प्रोफेसर का नाम सुनते हो तारा का वदन कांप गया और उसने डरी हुई निगाह से अपने चारो तरफ देखा, फिर अपने को सम्हाल कर बोली, "नहीं नहीं, मैं तो इन्हें उसके पास ले जा रही हू जिसने मेरी जान वचाई है!"

सवार ने तारा के उत्तर पर कोई ध्यान न दे पुन. पूछा, "तुम इन्हें जापानियों के लश्कर में ही ले जा रही हो न? और वे दोनों सवार भी तो जापानी ही हैं न जो वहुत देर से तुम्हारे साथ है और जो वह देखो अव उस पहाड़ी के नीचे उतर रहे है।"

चन्द्रमा अव ऊपर उठ गया था और उसकी पल पल में तेज होती जाने वाली किरणें उस छोटी पहाड़ी पर का सव दृश्य दिखला रही थीं जिस पर से दो सवार उतरते हुए स्पष्ट नजर आ रहे थे। ये सवार वे ही

थे जिन्हें प्रोफेसर की आज्ञा से जेनरल कोमुरा ने तारा के साथ कर दिया था और जो यह समझ कर कि तारा और अजित अब बहुत दूर निकले गए होंगे बेखटके आपस मे बाते करते हुए चले आ रहे थे और जिन्हें इस बात का कुछ भी गुमान नही था कि उनकी चाल ढाल पर नजर रखन वाला कोई गैर भी वहां आ पहुंचा है।

इस विचित्र आदमी की बात सुन और उन दोनो सवारो को देख तारा पुन: घबडा गई और उसने आंखे बन्द कर अपने माथे पर थकावट की मुद्रा से हाथ फेरा मगर फिर तुरत ही कहा, "मै नही जानती कि ये कौन हैं। मगर अजित, बडी देर हो रही है, क्या तुम नही चलोगे !"

अजित ने कुछ कहना चाहा पर उसे रोक तारा के दोनो हाथ अपने दोनो हाथो मे पकड और उसकी आखो से अपनी आखें मिलाता हुआ वह सवार पुन बोला, "तुम प्रोफेसर के वश मे हो कर ऐसी बातें कर रही हो तारा ! अगर तुम स्वस्थ और अपने काबू मे रहती तो खूब समझती कि जहां तुम इन्हे ले जा रही हो वहां पहुचते ही ये बहुत बडी मुसीबत मे पड़ जायगे, इतनी बडी मुसीबत मे कि जिससे शायद इनका जीते बचना भी मुश्किल हो जाय ! क्या तुम अपने अजित की मौत चाहती हो तारा !"

बोलने वाले की निगाह बराबर तारा की निगाहो से मिली हुई थी और वह अपने मनोबल का प्रयोग उस पर करता हुआ सा जान पड़ता था। उसकी बात सुन बेचैनी के साथ तारा ने अजित की तरफ देखा और अपनी आखे बन्द की, तब अपने हाथ छुड़ा उसने दोनो हथेलियो से अपना सिर बहुत जोर से दबाया। उसके मुंह से निकला—"ओफ सिर फटा जाता है।" उसकी बुद्धि इस सवार की बातो का मतलब निकालना चाहती थी पर प्रोफेसर के प्रयोगो का कुछ ऐसा असर उस पर पड गया था कि वह सफल नही हो पाती थी।

इसी समय अजित तारा के पास आ गया और उसका हाथ पकड़ कर बोला, "तारा, क्या अब तुम मुझसे मुहब्बत नही करती ! तुम जान बूझ

कर मुझे किसी आफत में फंसा दो इतना कड़ा कलेजा क्या तुम्हारा हो सकता है? मैं सुन रहा हूं कि प्रोफेसर साऊ-चूकू ने तुम्हारी आत्मा पर कब्जा कर लिया है और उसी ने तुम्हारे पिता को भी अपना गुलाम बना लिया है। तुम्हारी जवानी जो कुछ तुम्हें मालूम था जान लेने बाद अब वह मुझे पकड़वा मगा कर मेरी बुद्धि पर पर्दा डालना और मुझसे त्रिकंटक का भेद जान लेना चाहता है और इसीलिए उसने तुम्हें वशीभूत करके मेरे पास भेजा है। क्या वह सब सही है? क्या तुम मुझे, अपने अजीत को, दुश्मनो के फन्दे मे फंसाने के लिए ही मेरे पास आई हो तारा!"

तारा घबड़ाहट के साथ इधर उधर अपना सिर फेंक रही थी। बदन कांप रहा था, आंखें लाल हो रही थी, और वह बार बार अपना सिर अपने हाथों से दबा रही थी। साफ मालूम हो रहा था कि वह बहुत बड़ी बेचैनी और घबड़ाहट मे है और दो प्रकार की शक्तियों के दबाव में पड़ कर उसका अन्त करण उद्वेलित हो रहा है, मगर उसके मुंह से बार बार यही निकलता था—"मुझे देर हो रही है, मुझे देर हो रही है!"

सवार उसकी हालत कुछ देर तक गौर से देखता रहा, इसके बाद अजित का हाथ पकड़ उसे कुछ दूर ले गया और उससे बोला, "प्रोफेसर साऊ-चूकू की मनःशक्ति ने इसको पूरी तरह से अपने वश में कर रक्खा है। इसे अब तभी छुट्टी मिल सकती है जब प्रोफेसर इसे छोड़े, वह चाहे इच्छा से हो या अनिच्छा से। तुम इसे जिस तरह भी हो अपने पास रोक रक्खो—समझा के, बुझा के, फुसला के, और कुछ भी न हो सके तो बल-प्रयोग द्वारा। अब इसका पुनः उस प्रोफेसर के पास जाना अच्छा न होगा। और मैं उधर जा के देखता हू कि प्रोफेसर से मिल कर किसी तरह इसको छुट्टी दिलवा सकता हूं कि नही। अगर वह इसे शीघ्र अपने प्रभाव से मुक्त न कर देगा तो इसकी जान खतरे मे पड़ जायगी, बहुत बड़े खतरे मे। जो हालत इसकी इन्ही कुछ दिनो में हो गई है वह तो तुम देख ही रहे हो, अगर यह ज्यादा दिनों तक इसी तरह रही तो पागल भी हो जा सकती!"

- अजित घबडा के बोला, "ऐसा ! तब जैसी आपकी आज्ञा, तारा को स्वस्थ करना तो आवश्यक ही है, पर यदि वह प्रोफेसर इतना प्रभावशाली है तो क्या आपका उसके पास जाना... ...!"

सवार हंस के बोला, "मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। तुम्हें यह ख्याल होता है कि शायद वह मुझे भी वश में करके मुझसे ही सब भेद न खींच ले। पर ऐसा न होगा। एक तो मुझे इस प्रकार की क्रियाओं का कुछ परिचय है, दूसरे मेरी मनःशक्ति और एक लड़की की मनःशक्ति में अन्तर है, तीसरे मेरी पिस्तौल प्रोफेसर की जुबान बन्द कर देने की ताकत रखती है।"

अजित चौंक कर बोला, ""तो क्या वह प्रोफेसर मर जाय तो तारा उसके प्रभाव से छूट जायगी ?" सवार बोला, "बेशक, मगर तुम अब इस चिन्ता में न पड़ो इस सम्बन्ध में जो कुछ करना होगा मैं स्वयम् करूंगा। तुम बस तारा की हिफाजत करो। देखो वह कही जाना चाहती है। उसे रोको, और उन दोनो सवारो से भी अपने को बचाए रहो जिनमे से एक वह देखो उस पेड़ की आड़ से हम लोगो को देख रहा है। अब जो कार्रवाई मुनासिब हो सो करना, मै चला।

कह कर सवार अपने घोड पर चढा और तेजी से एक तरफ को रवाना हो गया। अजित कुछ देर तक एकटक उसकी तरफ देखता रहा, तब उधर लौटा जिधर तारा सिर नीचा किये बढी जा रही थी।

※ तीसरा भग समाप्त ※

७ वां संस्करण] १९७१ ई० [११०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।

* श्रीः *

सुफेद शैतान

चौथा भाग

साऊ-चूकू

(१)

उस बड़े खेमे के अन्दर सिर्फ एक छोटा दीया टिमटिमा रहा है जिसकी दीवारों पर पड़े हुए काले पर्दे यह बिल्कुल नहीं जानने देते कि बाहर इस समय दिन है या रात।

बीच में एक यज्ञ-कुण्ड है जिसकी मुरझाई हुई आग में से कभी कभी धूएँ की पतली लकीर उठ पड़ती है। चारो तरफ फूल-पत्ती तथा अन्य पूजा का सामान फैला हुआ दिखाई दे रहा है जिनके बीच एक दुबला पतला नंग-धड़ंग व्यक्ति पालथी मारे बैठा है। इसका सिर कुछ आगे को लटका हुआ है और बदन इस तरह निश्चेष्ट हो रहा है कि सन्देह होता है कि य[illegible] संज्ञा-हीन है।

हुआ है जिसमे से थोड़ा-थोड़ा यह कभी कभी चुटकी मे उठाता और उस संज्ञाहीन व्यक्ति के ऊपर फेंक देता है, तब फिर कुछ देर के लिए शान्त बैठ जाता है। दीए की मद्धिम रोशनी इन दोनों मे से किसी की भी शक्ल सूरत पूरी-पूरी नही दिखाती फिर भी हम जानते हैं कि इनमें से एक वह जो प्रयोग कर रहा है प्रॉफेसर 'साऊ-चूकू' है और दूसरा वह नंग-घड़ंग व्यक्ति उसका एक चेला 'यूगो' है। इसके सिवाय और भी कोई अगर इस जगह है तो उस पर हमारी निगाह नही पड़ रही है। खेमे मे एकदम सन्नाटा है।

'साऊ-चूकू' ने वह काला पदार्थ कुछ जोर से यूगो पर मारा और तब गम्भीर स्वर मे पूछा, "यूगो, तुम कहाँ हो ?" यूगो का बदन जरा काँपा, उसके होठ हिले, कोई अस्पष्ट सा स्वर उसके मुँह से निकला। 'साऊ-चूकू' ने वह पदार्थ कुछ अधिक सा उठा के कुछ अधिक जोर से मारा और फिर पूछा, "तुम इस वक्त कहाँ हो ?"

अबकी यूगो के मुँह से निकला, "मैं एक नदी के किनारे पर हूँ।" 'साऊ-चूकू' ने पूछा, "कौन स्थान है पहिचानते हो ?" यूगो बोला, "मेकग के प्रभात का भीषण नाद सुनाई पड़ रहा है, जरूर उसी के पास कही हूँ।"

साऊ-चूकू०। जहाँ खड़े हो वहाँ कोई दिखाई पड़ता है ?

यूगो०। कोई नही, सिर्फ सामने नदी मे एक नाव बहती चली जा रही है।

साऊ-चूकू०। उसके साथ चलो, कैसी नाव है ? उस पर कौन सवार है ?

यूगो०। कह नही सकता, सब तरह से बंद गोल-मटोल सी है, लकड़ी के कुन्दे की तरह, बड़ी तेजी से प्रपात की तरफ दौड़ी जा रही है।

साऊ-चूकू०। उसके साथ-साथ जाओ, देखो वह आँखो की ओट न होने पावे।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा, इसके बाद यकायक आप ही आप यूगो बोलने लगा' "ओफ, ओफ, गिरो गिरी, वह तो प्रपात में गिर रही है ! आह, नीचे चली गई, डूब गई ! नहीं बच गई, नही डूब गई, खतम हो गई ! मगर नही, वह क्या है, हाँ वही है ! अरे वह तो फिर निकल आई डूबी नही, और अब नदी तट की ओर बढ़ रही है !!"

'साऊ-चूकू' जो कुछ उत्कण्ठा के साथ यूगो की बातों पर ध्यान लगाए हुए था बोल उठा, "देखो, पास जाके देखो, उस पर कोई है भी ?" मगर शायद उसकी बात पर खयाल किये बिना ही यूगो कहता चला गया—"हैं, यह क्या, इसमें से तो आदमी निकल रहे हैं ! एक-दो-तीन-चार, चार आदमी इसके बाहर आए। अभी भीतर और भी दिखाई पड़ते हैं' मगर वे अपनी जगहो पर ही बैठे है। यह क्या, डोंगी तो इन चारों को उतार आगे बढ़ चली। अब......। 'साऊचूकू' बोला, 'डोगी को जाने दो, इन चारों आदमियों के साथ लगो, देखो वे कहा जा रहे है ?' "वे लोग प्रपात की तरफ जा रहे हैं।" कह कर यूगो चुप हो गया। उस जगह सन्नाटा छा गया।

अबकी बार यूगो इतनी देर तक चुप रहा कि 'साऊ-चूकू' ने आखिर अपने हाथ का काला पदार्थ पुनः उस पर मारा और पूछा, "कहां जा रहे हैं वे चारो ? तुम कहां हो ?" यूगो बोला, "मैं उन चारो के पीछे पीछे जा रहा हूँ। बड़ी बीहड़ जगह है। किनारे के पत्थरों ढोकों और करारो पर से होते हुए वे लोग मेकं। के प्रपात के ठीक नीचे पहुंच गये हैं। बड़ा भयानक स्थान है। ऊपर से हरहराता हुआ प्रपात गिर रहा है नीचे पर्वत की एक ऊबड़ खाबड़ दीवार है, उसी के साथ साथ ये चारो चले जा रहे हैं। इन्हें डर भी नहीं लगता, अभी पानी की एक धारा आ जाय तो..............."

यूगो का बदन जरा सा कांपा और वह चुप हो गया। 'साऊ चूकू' कुछ देर तक राह देखता रहा, तब फिर उस काले पदार्थ की एक चुटकी

उस पर मार कर उसने पूछा, "अब कहाँ हो यूगो तुम ?" कुछ देर के बाद यूगो के मुँह से आवाज निकाली, "प्रपात के बीच मध्य मे, उसके ठीक नीचे। पानी ऊपर से निकाला जा रहा है ! उसके घोर गर्जन के मारे आवाज सुनाई नही पड़ती!"

'साऊ- चूकू' ने पूछा, "और वे चारो आदमी क्या कर रहे है।" यूगो बोला, "आपुस मे कुछ बातें कर रहे हैं और बार बार ऊपर की ओर.......... अरे यह क्या ! यह झूला कहाँ से.. ...! है, वे चारो तो उस पर बैठ के ऊपर जाना चाहते हैं ? झूले मे......." उत्कंठा से 'साऊ-चू-कू' बोल उठा,"देखो साथ छूटने न पावे। उनके साथ साथ झूले पर बैठ जाओ और देखो वे कहाँ जाते हैं, फुर्ती करो..........!"

'साऊ-चूकू' की बात खतम न हो सकी। यकायक किसी ने उसके पीछे से चुटकी बजाई। खिजला कर और कुछ क्रोध के साथ उसने गरदन घुमा के देखा और साथ ही चौंक गया। उसके मुँह से अकस्मात निकल गया "है' जेनरल कोमुरा आप !"

यद्यपि उस जगह का घना अन्धकार केवल एक दीया दूर न कर पाता था और इसी कारण आगंतुक की सूरत देखना कठिन था, फिर भी पोशाक आदि से 'साऊ-चूकू' जेनरल कोमुरा को जान गया। मगर उसकी बात का कोई जवाब न दे जेनरल कोमुरा ने इशारे से उसे अपनी तरफ बुलाया और स्वय दो कदम पीछे हट गये। 'साऊ-चूकू' इस पर बोला, "मैं इस समय आसन से उठ नही सकता, इससे प्रयुक्त को बहुत बड़ा नुकसान पहुचेगा और मेरा प्रयोग भी नष्ट हो जायगा। इस समय मैं बडे मार्के की बात का पता लगा रहा हूँ। मैंने यूगो की आत्मा.........."

मगर 'साऊ-चूकू' की बात खतम न हुई, यकायक उनकी नाक पर कोई चीज आकर गिरी और बताशे की तरफ फूट गई। उस चीज के अंदर न जाने क्या भरा हुआ था कि सांस के जरिए प्रॉफेसर की नाक के

अन्दर जाते ही उसका दम घुटने सा लग गया और वह एक दम घबड़ा कर कांपने लगा। नजदीक ही था कि वह कुछ कहता या करता कि यकायक उसके सर मे चक्कर आया और वह बेहोश होकर उसी जगह गिर गया।

(२)

मार्शल फाक घबड़ा के बोले, "है, जेनरल कोमुरा आप, और इस तरह अकेले, वे सरो-सामान, इस आधी रात के समय! मामला क्या है? कुशल तो है?"

जेनरल कोमुरा बोले, "कुशल? कुशल कहाँ! कुशल ही होती तो भला मैं इस समय इस तरह यहाँ दिखाई देता। बहुत बड़ी मुसीबत आ गई है, जिससे आप लोगो का आगाह हो जाना जरूरी था इसी से मुझे यहाँ आना पड़ा, मगर यह समय आधी रात का नही है, सुबह होने में घंटे डेढ घंटे से ज्यादा की देर नही है। उठिये, बिस्तर छोड़िये, और बताइये काउण्ट शैवर कहां हैं?"

मार्शल फाक खाट से उठते हुए बोले, "आपकी बातें तो मेरा कलेजा दहला रही हैं जेनरल, आखिर मामला क्या है? हुआ क्या है?"

इसी समय, शायद इन दोनो के बातचीत की आहट से ही जाग कर, काउण्ट शैवर भी एक पर्दा हटा कर इस खेमे के अन्दर आते दिखाई पड़े। कोने मे बलती मद्धिम रोशनी की मदद से जेनरल कोमुरा को पहिचानते ही उनके भी मुँह से निकला, "हैं जेनरल, आप! सब कुशल तो है?" जेनरल बोले, "आइये और यहाँ कुर्सी पर बैठ के मेरी बात सुन लीजिए। तब सहज ही मे समझ जाइएगा कि क्या हुआ है।"

ताज्जुब करते हुए काउण्ट शैवर मार्शल फाक के पलंग के बगल की कुर्सी पर बैठ गए और उनके सामने पड़ी एक तीसरी कुर्सी की पीठ का ढासना लगाए मगर खड़े ही खड़े जेनरल कोमुरा कहने लगे, "बुरे

से बुरा जो हो सकता था सो हो गया, हमारा शेष अवलम्ब जाता रहा, प्रॉफेसर 'साऊ-चूकू' पागल हो गए !"

दोनो के मुँह से एक साथ निकला—"है, पागल हो गए !" जेनरल कोमुरा बोले, "जी हाँ, एकदम चीखते चिल्लाते, दाँत काटते, मास नोचते हुए पागल !"

काउण्ट०। मगर यह हो कैसे गया !

मार्शल०। अभी ज्यादा से ज्यादा चार घंटे हुए होंगे जब हम लोग उन्हे अच्छी हालत मे और भले चंगे छोड़ के आए है !

जेनरल०। जी हाँ, मगर जिस प्रकार के प्रयोगो मे प्रॉफेसर लगे हुए थे उनमे तो चार मिनट ही बहुत कुछ कर सकते हैं, चार घंटो की तो बात ही क्या ?

काउण्ट०। अब आप कृपा कर साफ साफ बताइये कि क्या हुआ, मेरी तबीयत घबड़ा रही है।

जेनरल०। सुनिए मैं बताता हूँ। आप लोगो के सामने ही प्रॉफेसर 'साऊ-चूकू' ने तारा को हिप्नोटाइज करके अजीत को वरगला लाने के लिए भेजा था और खुद 'किंग ही' के साथ किसी और काम पर चले गए थे। वह काम और कुछ नही 'शव-साधना' थी। 'किंग·ही' और प्रोफेसर दोनो ही को शव-साधना की क्रिया आती है। ठीक ठीक वह क्रिया क्या है यह तो मैं नही जानता पर सुनता हूँ कि उसके द्वारा किसी मुर्दे की लाश को वस मे करके उसके जरिए तरह तरह के काम कराए जाते है। प्रोफेसर ने यह पता तो लगा लिया था कि आप लोगों के वर्तमान शत्रु 'एकादश-रुद्र' तो 'माह-जोग' के मंदिर मे अपना अड्डा बनाकर बैठे है और असली दुश्मन तथा उन एकादश रुद्रों के भी रुद्र 'त्रिकंटक' मेकंग नदी के जल-प्रपात के पीछे किसी जगह छिप कर अपना काम करते हैं जहाँ उन्होने कई तरह की बड़ी भयानक भयानक मशीने बैठाई है और वही से सब तरफ का सूत्र-संचालन कर रहे है।

अस्तु प्राफेसर इस वात को जानने की फिक्र में लगे हुए थे कि त्रिकंटक का वह गुप्त अड्डा कैसा है और वहाँ जाने की कौन-सी तर्कीव हो सकती है। इस वात को जानने के लिए 'किग-ही' की मदद से वे शव-सावन की भयानक क्रिया कर रहे थे। वह क्रिया सम्भव है या असम्भव और मुर्दों की सहायता से जिन्दे अपना कोई काम बना सकते है या नही इसे तो मैं नही जानता, पर इसका फल जो कुछ हुआ सो मैं जरूर वता सकता हूँ।

आप लोगों के जाने के बाद लगभग डेढ घंटे तक मैं अपने दो सेक्रेटरियो की सहायता से कुछ जरूरी काम निपटा रहा था। थकावट वहुत आ जाने पर भी वास्तव में मैं सोना न चाहता था क्योकि स्वयं मुझे भी यह जानने की वड़ी उत्कण्ठा थी कि प्रॉफेसर के इस विचित्र और भीषण प्रयोग का क्या नतीजा निकलता है और तारा क्या करके लौटती है, अस्तु सोने जाने की मेरी इच्छा न थी, फिर भी धीरे-धीरे आलस्य मुझे सताने लगा। मैंने अपने सेक्रेटरियो को विदा कर दिया और अपने कपड़े उतार हल्का हो एक आराम-कुर्सी पर वैठ रहा, यह निश्चय करके कि भरसक नीद को अपने पास आने न दूंगा, मगर मेरा आशय सिद्ध न हुआ और शायद मैं कुर्सी पर पड़ा पड़ा ही सो गया, क्योकि जव यकायक मेरी आँख खुली तो मैने देखा कि प्राफेसर 'साऊ-चूकू' मेरे वगल में खड़े मुझे हाथ से हिला हिला कर कुछ कह रहे हैं। मैने चौंक कर पूछा, "क्यों प्रॉफेसर क्या वात है?" वे वोले, "उठिये उठिये, ऐसे ताज्जुब की वात मालूम हुई है कि मै कहे विना रुक नही सकता। 'मित-को' नदी के वीच मे जो टापू है, जिसके वारे में हम लोग इतने तरद्दुद मे पड़े हुए हैं उस पर हम वड़े सहज मे कब्जा कर सकते हैं और केवल कब्जा ही नही, वहां से त्रिकंटक को भी सहज ही में निकाल वाहर कर उनका सव साज सामाज भी नष्ट-भ्रष्ट कर दे सकते है।" मैने खुशी खुशी पूछा, "सो कैसे?" वह वोले, "मैने शव-क्रिया के द्वारा पता पाया है कि वह टापू कुछ अजीव सा है। उसका भीतरी भाग

खोखला और बाहरी भाग की बनिस्वत सतह मे बहुत नीचा है और उसके अन्दर ही अन्दर एक स्वाभाविक सुरंग है जो बहुत घूमती फिरती आकर मेकग के जल-प्रपात के पीछे निकल आई है। पहिले इस सुरंग की राह होकर मित-को का काफी पानी बहा करता था और भीतर ही भीतर आकर मेकंग के प्रपात मे मिल जाता था और असल मे इस पानी के बहाव के कारण ही वह सुरंग बन गई थी, पर कम्बख्त त्रिकंटक ने उस पानी का बहना बन्द कर दिया और जब भीतर की सुरंग पानी से खाली हो गई तो उसे अपना गुप्त अड्डा बनाया। बर्रे के छत्ते की तरह की उस सुरंग के भीतर छिप कर वे अपना काम करते हैं जिसमें आने जाने के केवल दो रास्ते है, एक उस टापू मे से और दूसरा मेकंग के प्रपात के पीछे वाली गुफा मे से।"

इतना कह प्रॉफेसर के चुप होते ही मै बोल उठा, "वाह वाह, यह तो बड़ी अद्भुत बात मालूम हुई प्रॉफेसर, मगर हम लोग सहज मे उन्हें कैसे नष्ट-भ्रष्ट कर सकते हैं यह भी तो जरा बताइए ?" वे मुस्कुरा के बोले, "वाह, यह कौन मुश्किल काम है, मित-को के टापू मे जिस जगह से पानी घुसता था उस जगह बाघ बना के त्रिकटक ने पानी का रास्ता रोक दिया और नीचे की सुरंगे खाली कर ली। हम लोग हवाई जहाज से बम बरसा कर उस बाँध को तोड़ दें, बस मित-को का पानी पुनः उस सुरंग मे जा भरेगा और वे कम्बख्त शैतान के बच्चे मय अपने सब भयानक अस्त्र-शस्त्रो के अन्दर ही अन्दर चूहो की तरह डूब कर मर जायेगे !"

सुनते ही मै उछल पडा। त्रिकंटक पर फतहयाबी पाने की इससे सहज तर्कीब और क्या हो सकती थी ! मैंने खुशी के मारे प्राफेसर को गले से लगा कर चूम लिया और तरह तरह के सवाल उनसे करने लगा पर वे बोले, "अभी नही, अभी नही, अभी कुछ और भी मैं कर लूँ तो फिर बातचीत करूँगा। ऐसे प्रयोग हर बार सफल नही होते। इस बार हुआ है, फिर दूसरी बार शायद न भी हो। 'किग-ही' भी बहुत

थक गया है, उसका दिमाग विचलित हो गया है, मगर वह जरा सुस्ता ले और मैं एक बार फिर उसकी आत्मा को वहाँ भेज कर और भी कई बातें जान लूँ तभी आज चैन लूँगा। इतना जो मालूम हुआ वह मारे खुशी के आपको बताने दौड़ा चला आया, कुछ इसलिए भी कि जरा मन को विश्राम मिल जाय। ऐसे प्रयोगों में बडा मानसिक परिश्रम पड़ता है। कभी कभी तो भयानक कुफल भी होता है, पर शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए बड़ी से बड़ी जोखिम उठाने के लिए मनुष्य को तैयार रहना चाहिए। अच्छा मैं चला।"

मैं उनके साथ चला पर उन्होंने मुझे रोक दिया और कहा, "इस समय मेरे प्रयोग-गृह मे सिवा मेरे, 'किंग-ही' के, और मेरे चेले 'यूगो' के, और कोई जा नही सकता, आप यही बैठिये।" लाचार मैं बैठा रह गया, बैठा क्या, असल तो यह है कि कुछ देर तक प्रॉफेसर से सुनी खुशखबरी पर विचार करता करता मैं शायद फिर सो गया।

इस बार जो मेरी नीद खुली तो मैं किसी के जगाने से नही उठा बल्कि किसी तरह का शोर सुनके उठा। प्रॉफेसर का खेमा मेरे खेमे के बगल ही में था और उसी के अन्दर से किसी के जोर जोर से चिल्लाने की आवाज आ रही थी। मेरे खेमे का लंप बुझा हुआ था। केवल यही नही, जब मैने अपनी जेब से टार्च निकाल कर उसकी रोशनी की तो देखा क्या कि मैं अपने खेमे में हूँ ही नही, बल्कि किसी एक मामूली सी रावटी मे जमीन पर पड़ा हुआ हूँ। वहाँ से यहाँ मै कैसे आ गया यह सोचने लगा, मगर ज्यादा सोच विचार कर न पाया। बाहर से आने वाली चिल्लाहट बढ़ती जा रही थी और अन्दाज से मुझे ऐसा जान पड़ा मानो आवाज प्रॉफेसर 'साऊ-चूकू' की हो अस्तु मैं उधर ही बढा। वह रावटी जिसमे मैंने अपने को पाया उसके खेमे से कुछ दूर पर थी और मुझे चलते हुए इस बात पर कुछ कुछ ताज्जुब भी हो रहा था कि चारो तरफ ऐसा सूनसान क्यो है और कोई

संतरी तक घूमता फिरता नजर क्यो नही आता, मगर खैर इसकी जाँच के लिए मै रुका नही और सीधा प्रॉफेसर के खेमे मे पहुंचा, मगर वहाँ जो हालत मैंने देखी उसने मुझे डरा दिया। खेमे का सब सामान अस्त व्यस्त उथल पुथल हुआ भया था और सब चीजो पर ऐसा गर्दा पड़ा हुआ था मानो बड़ा भारी अंधड़ वहाँ आया हो। रोशनी वहा एक भी न थी, पूजा का सामान भी कुछ नजर न आया, धूआं सर्वत्र भरा हुआ था, और विजली की बत्ती सिर्फ एक नंग-धड़ंग व्यक्ति को दिखला रही थी जो पागलो की तरह चीखता हुआ इधर से उधर दौड़ रहा था। यह देख के मेरा कलेजा कांप गया कि वे प्रोफेसर 'साऊ-चूकू' थे! मैं ताज्जुब और डर के साथ उनकी तरफ देख ही रहा था कि वे एक मोटी लकड़ी उठाकर मेरी तरफ झपटे और इतनी भयानक रीति से उन्होने मुझ पर आक्रमण किया कि अगर मैं हट न जाता तो मेरा सिर चकनाचूर हो जाता! मै बाहर निकल आया और वे फिर उसी तरह चीखने और इधर से उधर दौड़ने लगे!

लाख सोचा पर मेरी समझ मे खाक न आया कि प्रॉफेसर को यह हो क्या गया। इस बात पर भी ताज्जुब हुआ कि ये इतना चीख चिल्ला रहे है मगर कोई इनकी खोज खबर लेने क्यो नही आ रहा है। लश्कर वाले आखिर क्या सब मर गए हैं! मैं इसकी जांच करने चला और तब मेरी अकचकाहट का ठिकाना न रहा। सारा लश्कर घूम आने पर भी मुझे कही एक भी आदमी नजर न आया। पचासों सिपाही नौकर चपरासी प्यादे खिदमतगार और दो सेक्रेटरी छोड़ के मैं अपने सोने के खेमे मे गया था मगर इस समय समूचा लश्कर भांय भांय कर रहा था, कही एक चिड़िया का पूत भी नजर आ न रहा था। सब तरफ से घूम फिर के परेशान और घवड़ाया हुआ मैं फिर प्रॉफेसर के खेमे के पास लौटा और उनकी उस समय भी वही अवस्था देख व्याकुलता के साथ सोचने लगा कि क्या करूँ। ऐसे समय मे किसी ने

मेरे कन्धे पर हाथ रक्खा।

मैंने चौंक के पीछे देखा। अन्धकार में मुश्किल से पहिचान सका कि वह प्रॉफेसर 'साऊ-चूकू' का एक साथी और चेला 'चिनुस्की' है। मैंने उससे पूछा, "यह क्या मामला है चिनुस्की, और प्रॉफेसर को क्या हो गया है?" वह मेरा हाथ पकड़ प्रॉफेसर के खेमे से कुछ दूर ले गया और तब मैंने देखा कि वह जख्मी है। उसके सिर में चोट लगी हुई थी और यद्यपि उस पर मोटा कपडा उसने बांधा हुआ था फिर भी खून टपक रहा था। मैंने यह देख और भी घबड़ा के उससे पूछा, "अरे यह क्या, तुम जख्मी कैसे हो गये?" वह बोला, "प्रॉफेसर ने लकड़ी का कुन्दा मार के मेरी यह हालत की।" मैंने पुछा, 'और उन्हें हो क्या गया है जो पागलों की तरह चीख चिल्ला रहे हैं?" वह बोला, "क्या मालूम! वे 'किग-ही' और 'यूगो' को ले के भीतर कुछ प्रयोग कर रहे थे और मुझे खेमे के दर्वाजे पर बैठा रक्खा था कि कोई उन्हे छेड़ने न पाये। बीच में जिस किसी सामान की जरूरत पड़ती थी वह भी मैं देता चलता था। बीच मे एक बार प्रॉफेसर निकले और आप के खेमे में गए, वहां से लौटे तो मुझसे बोले, "देखो किसी को भीतर आने न देना।" मगर थोड़ी ही देर बाद भीतर से निकल के बोले, "किग-ही' को जाने क्या हो गया है। मैं 'यूगो'को लेके प्रयोग करता हूँ, तुम 'किग-ही' को सम्हालो और भीतर से अगर मैं पुकारूँ तो तुरत आना।" कह के 'किग-ही' को मेरे हवाले कर लौट गए जो एकदम मुर्दे की तरह बेहोश हुआ भया था। अभी तक (उँगली से बतला कर) वह देखिये पड़ा है और मैं उसे होश में लाने की चेष्टा कर ही रहा था कि आप आ पहुँचे।"

मैंने ताज्जुब से पूछा, "मैं आ पहुँचा!" वह बोला, "हाँ, क्या आप कोई घण्टा भर हुआ आके और खेमे मे जा के मेरे गुरूजी से नही मिले थे?" मैंने कहा, "वाह, पागल भये हो क्या? मैं तो अभी अभी सोया

सोया उठ के चला आ रहा हूँ।" वह सिर हिला के बोला, "कभी नही, आप आये और जरूर आये थे !"

सज्जनो, गरज यह कि चिनुस्की की बातों से सब भंडा फूटा। प्रोफेसर साऊ-चूकू 'यूगो' के ऊपर अपना प्रयोग करके त्रिकंटक के गुप्त अड्डे का भेद लेने की कोशिश कर रहे थे कि कोई आदमी मेरा भेष धर के उनके पास पहुँचा और भीतर जाके उनसे मिला। कुछ देर बाद खेमे से बाहर हुआ तो 'चिनुस्की' से बोला, "देखो भीतर अभी मत जाना, न किसी को जाने देना, प्रोफेसर साहब ने मना किया है।" इसके बाद बिगुल बजवा उसने लश्कर को इकट्ठा किया और जितने आदमी मिल सके सभों को लेके कही चला गया और दिल्लगी यह कि इस बीच में न तो किसी को जरा भी शक हुआ कि वह शख्स कोई धोखेबाज है मैं नही हूँ, और न मेरी ही नीद खुली। मुझे जान पड़ता है कि वह किसी तरह से मेरे खेमे मे घुस आया, मुझे बेहोश किया और मेरी पोशाक पहिन के जो वही पड़ी थी और मेरा भेष धर के इतनी आफत बरपा कर गया क्योंकि प्रॉफेसर की भी यह हालत उसी की किसी कार्रवाई से हुई जान पड़ती है। 'चिनुस्की' का कहना है कि वह आदमी सभो को ले के गया है और भीतर से प्रॉफेसर साहब के चीखने चिल्लाने की आवाज शुरु हुई है। वह उन्हे देखने के लिए जब गया तो प्रॉफेसर पागल हो चुके थे और बमकते हुए इधर से उधर दौड रहे थे। उसे देखते ही एक लकडी उठा कर ऐसी मारी कि उस बेचारे का सिर फट गया।

बहुत देर तक मै सोचता रहा कि अब क्या करना चाहिये। अन्त में यही खयाल हुआ कि सब से पहिले आप लोगो को सब मामले से आगाह करके जितनी बात प्रॉफेसर ने त्रिकंटक के गुप्त-स्थान के विषय मे बताई उतनी तो बतला हो दूँ, क्या जाने मुझे भी कुछ हो जाय तो वह भेद भी गुप्त रह जायगा। यह भी शक हुआ कि मेरी सूरत बना हुआ वह शैतान कही यहाँ आ कर आप लोगो को भी धोखा न दे,

अस्तु अकेला मारा-पीटा चला आ रहा हूँ, अब आप लोग सोचिए कि कैसे क्या किया जाय।

इतना कह जेनरल कोमुरा चुप हो रहे। उनकी बातें सुन काउन्ट शैवर और मार्शल फाक को इतना ताज्जुब हुआ कि कुछ देर तक तो दोनो में से किसी के भी मुँह से एक आवाज तक न निकल सकी, इसके वाद मार्शल फाक वोले, "इस समय सोचने और करने की वातें बहुत सी हैं मगर मेरी राय में सबसे जरूरी वात यह मालूम होती है कि पहिले प्रॉफिसर की सम्हाल की जाय और सम्भव तो तो उन्हें होश मे लाया जाय!"

काउन्ट शैवर ने यह सुन कहा, "मेरी भी यही राय है और मैं समझता हूँ कि हम लोग कैप्टन रिचार्ड को ले के उनके पास चलें तो सब से अच्छा होगा।"

कैप्टेन रिचार्ड काउन्ट शैवर के फैमिली फिजिशियन और एक बहुत ही अच्छे सर्जन भी थे। काउन्ट की राय सब को पसन्द आई और नतीजा यह हुआ कि वहुत जल्द ही ये तीनों आदमी डाक्टर और साथ साथ दस वारह चुनिन्दा सिपाही और अफसर ले के जेनरल कोमुरा के खेमे की तरफ रवाना हो गए जो यहाँ से लगभग दो कोस के फासले पर था।

इनके जाते ही एक आदमी जो जाने कब से काउन्ट शैवर के खेमे में एक पर्दे की आड़ में छिपा खड़ा था वाहर निकला और इधर उधर देख मौका तजवीज तेजी से एक तरफ को भागा। फ्रान्सीसी पहरेदारों में से कुछ की निगाह उसके उपर पड़ी और उन्होने उसे ललकारा भी पर उसने किसी की तरफ घूम के भी नही देखा और सिर पर पाँव रख के ऐसा भागा कि उसकी धूल का भी पता न लगा।

(३)

'त्रिकंटक' के उसी गुप्त अड्डे मे, जिसमें आखिरी दफे काउण्ट

शैवर के साथ हमारे पाठक जा चुके हैं, हम इस समय पुनः अपने पाठकों को ले चलते हैं।

एक त्रिभुजाकार टेबुल के नोक की तरफ तीन कुरसियां गोलाकार रक्खी हुई हैं जिन पर काले कपड़ों से अपना बदन यहां तक कि मुंह भी ढांके तीन आदमी बैठे हुए है। यह कौन सी या किस तरह की जगह है इसका कुछ भी पता वे पर्दे लगने नही देते जो चारो तरफ पड़े हुए है और जिनके सबब से यहाँ वह डरावना सा अन्धेरा छाया हुआ है जिसे दूर करने के लिये टेबुल पर के शमादान मे बलने वाली तीनो मोमबत्तियां काफी नही हैं।

टेबुल के दूसरी तरफ अर्थात चौड़े हिस्से की तरफ, एक नौजवान खड़ा कुछ कह रहा है। पाठक इस नौजवान को पहिचानते हैं क्योंकि यह अजित है। अजित कह रहा है :—

अजित०। मैंने बहुत कोशिश की पर किसी तरह भी तारा को रास्ते पर ला न सका। न जाने उस प्रॉफेसर ने किस तरह का जादू उस पर चला दिया था कि वह बार बार उधर दुश्मन के तम्बू की तरफ ही जाना चाहती थी बल्कि मुझको भी अपने साथ ले चलने की कोशिश करती थी। उसके सीधे सच्चे शान्त स्वभाव मे न जाने कहाँ से शैतानी और फरेब आ कर भर गया था कि अगर सरदार मुझे होशियार न कर दिए होते तो इसमे कोई भी सन्देह नही कि उसकी चलती फिरती बातो मे पड़ कर मे जरूर ही मक्र मे आ जाता, और उनके साथ जा कर न जाने किस मुसीबत मे पड़ जाता, या कौन जाने मेरे दिल और दिमाग की भी वही हालत हो जाती जो तारा की हुई थी। खैर जो कुछ भी हो, कम से कम इतना तो जरूर हुआ कि तारा के बहकावे मे न तो मैं आया और न मैंने तारा ही को फिर अपने कब्जे के बाहर जाने दिया। समझाता फुसलाता दिलासा देता बहकाता और कभी कभी जोर जबरदस्ती तक भी करता हुआ उसे मैं अपने अड्डे तक खींच ही लाया

और वहाँ रुक कर सरदार के लौटने की राह देखने लगा जैसा कि उनसे तय हो चुका था !

एक घण्टा बीता, दो घण्टा बीता, यहाँ तक कि पहर भर दिन चढ़ आया पर सरदार का कहीं पता नहीं। मेरी तबीयत घबड़ाने लगी, कुछ अंदेशा भी पैदा हुआ, क्योंकि वे कह गये थे कि सूरज निकलते तक जरूर लौट आवेंगे। मैं घबड़ा कर सोचने लगा कि कहीं उन पर कोई मुसीबत तो नहीं आई, या कहीं वे खुद तो उस जादूगर के फन्दे में नहीं पड़ गये। उधर तारा की हालत भी बहुत खराब नजर आई। कुछ समय से उसने बेतरह बकझक दौड़ धूप और उछलना कूदना जारी कर रक्खा था जिससे मैं यहाँ तक परेशान हो गया था कि अन्त को मुझे उसका हाथ पाँव बाँध कर रखना पड़ा, मगर साथ ही मेरे दिल में उसकी यह हालत देख देख बहुत परेशानी भी पैदा हो रही थी। आखिर जिस समय वह बड़े जोर की एक चीख मार कर उछली और तब बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी तो मुझसे रहा न गया और मैं घबड़ा कर पुनः उठ खड़ा हुआ। तारा की हालत देखी तो उसे एकदम बेहोश बल्कि मुर्दे की सी अवस्था में पाया। गुफा के बाहर निकला और इस फिक्र में पड़ा कि सरदार का कुछ पता लगाऊँ कि इतने ही में आप लोगों का संदेसा मिला और मैं इधर को रवाना हो गया, मगर सच कहिये तो मेरे होश हवास ठिकाने नहीं हैं और मैं हर घड़ी यही सोच रहा हूँ कि सरदार और तारा पर क्या गुजरी ! अगर आपको सरदार का कुछ हाल मालूम हो तो कहिये, और यदि बता सकें तो यह भी बताइये कि तारा अब कैसी है !

इतना कह अजित चुप हो गया और परेशानी की हालत में सवाल की निगाह उन तीनों आदमियों पर डालने लगा। उसकी यह अवस्था देख उनमें से एक ने दिलासा देने वाले लहजे में कहा, "इन बातों की तरफ से तुम बिलकुल परेशान मत हो अजितसिंह, सरदार बहुत मजे में हैं और तारा भी सब तरह के खतरों से एक दम बाहर बल्कि इस

काबिल हो गई है कि तुम जब उसे देखोगे तो यह भी कह नहीं सकोगे कि कभी उसकी हालत बदल गई थी, और तुम्हे जो हम लोगों ने इतनी दूर यहां बुलाया, इसका भी सबब बहुत मामूली है। जिस समय का हाल तुम यह बयान कर रहे हो उसी मौके पर बेतार के टेलीफोन से हमे सरदार का एक संदेशा मिला जिसमे उन्होने तुम्हारा और तारा का हाल संक्षेप मे बता कर हमे तुम्हारा ठिकाना बताया और यह हुक्म दिया कि एक हवाई जहाज भेज कर तुमको तुरत हम लोग अपने पास बुलवा ले। अन्त में उन्होने यह भी कहा कि शीघ्र ही वे स्वयं यहां आवेगे और सब हाल खुलासा कहेगे। यही सबब है कि हम लोग इस समय यहां इकट्ठे हुए हैं और सरदार के आने की राह देख रहे हैं। जरूर उन्हे कोई बहुत जरूरी खबर जरूरी देनी है इसमे कोई शक नही।

अजित०। जो कुछ थोड़ा बहुत उन्होने मुझे बताया था उससे मुझे कम से कम इतना तो विश्वास हो ही गया है कि दुश्मन को हम लोगों का उससे कही ज्यादा हाल मालूम हो चुका है जितना कि हम गुमान करते है। उन्होने मुझसे कहा था कि 'त्रिकंटक' समझ रहे है कि वे लोग बड़े गुप्त स्थान मे छिपे बैठे हैं पर उनका सोचना गलत है और दुश्मन..........'

यकायक अजित रुक गया। कही से एक नगाडे के सिर्फ एक वार बजने की गूंजती हुई आवाज उठी थी जिसने उन तीनो को भी चौंका दिया जो अजित के सामने बैठे हुए थे। इसी समय एक छोटी घण्टी के बजने की आवाज आई जिसके साथ ही एक तरफ का काला पर्दा हटा और एक व्यक्ति ने वहां प्रवेश किया जिसको देखते ही सब के सब उठ खड़े हुए।

आशा है हमारे पाठकों ने भी इस आने वाले को जरूर पहिचान लिया होगा क्योंकि यह वही राणा नगेन्द्रनरसिंह हैं जिन्होने अब तक कितने ही दफे बड़े गाढ़े समय मे इन लोगों को मदद पहुँचाई है। राणा

नगेन्द्रनरसिंह यहाँ मौजूद चारो आदमियों से बहुत प्रेम के साथ मिले जिन्होने उनको उचित स्थान पर बैठाया, इसके बाद इन सभों में इस तरह बातें होने लगीं :—

नगेन्द्र० । गोपालशंकर वाली घटना के बाद मैं आप लोगों से कह चुका था कि अब किसी तरह भी और रुक न सकूँगा और अपने राज्य को लौट जाऊँगा पर फिर भी मुझे यहाँ देख जरूर आप लोगो को ताज्जुब हुआ होगा ।

त्रिकं० । जी हाँ, ताज्जुब, और खुशी भी !

नगेन्द्र० । (मुस्कुरा कर) हाँ ठीक है, मगर जो बात मैं कहने वाला हूँ उसे सुन लेने बाद आप लोगो की खुशी कहाँ तक कायम रह जायगी मैं नही कह सकता । खैर मुख्तसर में मामला यह है कि जिस समय आपसे विदा हो मैं अपने देश को लौटने की तैयारी कर रहा था उसी समय मुझे यह खबर लगी कि आप लोगो के खिलाफ एक नए तरह की साजिश हो रही है, अर्थात् फ्रांस की दोस्त जापान सरकार ने टोकियो के मशहूर मेस्मेरिज्म और हिपनाटिज्म शास्त्र के ज्ञाता, वैज्ञानिक, तथा तांत्रिक 'साऊ-चूकू' को इसलिए यहाँ भेजा है कि वह अपनी अद्भुत कला की मदद से आप लोगो का भंडा फोड़ने की कोशिश करें। इस खबर ने मेरे दिल मे कौतूहल पैदा किया और जाहिर तौर पर आप लोगो से विदा होने पर भी गुप्त रीति से मैं यही रुका रह गया, यह जानने के लिए कि देखू यह नया ढंग क्या गुल खिलाता है तथा आप लोग इस खतरे का मुकाबिला किस तरह करते हैं । और सच तो यह है कि मेरा रुक जाना बहुत अच्छा ही हुआ ।

प्रॉफेसर 'साऊ-चूकू' के साथ मिल गया आप लोगों का पुराना दुश्मन पुजारी 'किंग-हो' जिसे आप लोगो के कुछ भेद ही नही मालूम थे बल्कि जो आप लोगो से बहुत नफरत भी करता था । इन दोनो ने मिल कर न जाने क्या क्या तरकीबे की और किन किन वैज्ञानिक या अवैज्ञानिक तरीको

से काम लिया कि बहुत ज्यादा भेद आपके इन्हे मालूम हो गये खास कर तब जब कि बेचारी तारा इनके कब्जे मे पड़ गई। आप लोग कहाँ बैठ कर काम करते हैं सिर्फ यही नही बल्कि क्या क्या अस्त्र-शस्त्र आपके पास हैं कहाँ कहाँ आपके अड्डे हैं, कहाँ कहाँ और किस किस भेष मे कौन कौन से आपके जासूस हैं, मुझे सन्देह होता है कि यह सब बातें और अगर सब नही तो इनमे से बहुत सी बातें उन लोगो को मालूम हो चुकी हैं और जो आखिरी बात परसो एक तरह की प्रेत-क्रिया करके प्रॉफेसर ने जान ली है वह तो ऐसी भयानक है कि अगर जल्दी आप लोगो ने उसकी कोई रोक नही की तो आपका सब सोचा विचारा और मेरे भी सब मनसूबे नष्ट ही नही हो जायँगे बल्कि हम आप कही के भी न रहेगे।

त्रिक०। (आश्चर्य से) वह क्या ?

नगेन्द्र०। प्रॉफेसर ने पता लगा लिया है कि मितको और मेकंग के बीच पड़ने वाले दोनों टापू भीतर से खोखले हैं, इन्ही दोनों के भीतर आपके गुप्त अस्त्र-शस्त्र और मशीनें रहती हैं,तथा यही आपका मुख्य अड्डा भी है। वह यह जान गया है कि अगर 'सांता-पू' का बांध जो आप लोगो ने बाँधा है तोड दिया जाय तो इन टापुओ के भीतर वाली पूरी जगह पानी से भर जायगी और आप लोग डूब मरेंगे।

यह एक ऐसी खबर थी जिसने जमाना देखे हुए त्रिकंटक को भी घबड़ा दिया और अजित की तो यह हालत हो गई कि जिसका बयान नही हो सकता। वह बेचैन होकर बोल उठा।—

अजित०। हैं ! क्या यह बात उन लोगो को मालूम हो गई !!

नगेन्द्र०। हाँ, और अगर मैं गलती नही करता तो बहुत जल्दी ही चीन जापान और फ्रांस सरकारों के वायुयान आकर उस बांध को तोड़ डालेंगे और दोनों टापुओ के धुर्रे-धुर्रे उड़ा देंगे।

थोड़ी देर तक वहाँ गहरा सन्नाटा छाया रहा जिसे त्रिकटक मे से एक ने यह कह कर तोड़ा।—

त्रिकं० । राणा, आप अब तक केवल हमारी 'आँखें' ही नही रहे हैं वल्कि हमारे 'हृदय' भी रहे हैं ! आप ही के कहे मुताबिक हम लोग चल रहे हैं, चलते आये हैं, और चलते रहेगे, अस्तु इस समय आप ही वताइये कि अव क्या करना मुनासिव है । आपने जो समाचार दिया है वह गलत तो हो ही नही सकता, अस्तु अव आप ही इसका प्रतिकार भी वताइये यदि कोई हो तो। हमारा केन्द्र गुप्त होता हुआ भी वास्तव में कैसा अरक्षित है यह तो आप जानते ही हैं।

राणा० । हां हां, सो मुझसे कहना नही होगा । मुझे अच्छी तरह मालूम है कि जिसमे दुश्मनों को किसी तरह का शक न हो, इस लिए इन दोनो टापुओं के ऊपरी और दिखाई पड़ने वाले हिस्सों में किसी तरह का भी परिवर्तन नही किया गया और न कोई मजवूती ही पैदा की गई है, और मैं यह भी जानता हूँ कि आपके अन्यान्य अस्त्र-शस्त्र दुश्मनों को संत्रस्त और भीत करने के लिए चाहे जितने भी उपयोगी हों पर यदि कोई कड़े दिल का दुश्मन 'सांता-पू' के वांध को तोड़ देना चाहे तो ऐसा वह सहज ही में कर सकता है और तव मितको का पानी इस स्थान को एक दम पूरा पूरा भर देगा जहाँ इस समय हम लोग वैठे हुए हैं । वह सव कीमती मशीनरियाँ जो यहाँ आप लोगो ने वैठाई हैं और जिनकी मदद से आप अपने अद्भु त-अद्भुत अस्त्र-शस्त्र और बम वनाते हैं एक दम वरवाद हो जायँगी और हम लोगों का सव सोचा विचारा नष्ट हो जायगा

अजित० । और तव एशिया अर्थात् 'जंबू-द्वीप' को स्वतन्त्र और एक करने का हम लोगों का विचार केवल एक स्वप्न मात्र रह जायगा ।

त्रिकं० । वेशक !

राणा नगेन्द्रनरसिंह कुछ देर तक चुप रहे, इसके वाद कुछेक गम्भीर स्वर मे उन्होने कहना शुरू किया :—

नगेन्द्र० । चूँकि एक तरह पर मैं ही ने आप लोगों के पूर्व उद्देश्य को वदल कर यानी अकेले अपने पूर्वी देश से आपका ध्यान हटा कर समूचे

जम्बू द्वीप पर डाला जिससे जापान भी आपका शत्रु हो उठा, इसलिए आप पर आई हुई इस मुसीबत का बहुत कुछ अंशों मे मैं ही कारण कहला सकता हूँ तथा इसीलिए इस मुसीबत मे आपकी पूरे तौर पर मदद करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। बहुत कुछ सोच विचार कर मैंने फिलहाल यह तय किया कि अपने देश लौट जाने का विचार कम से कम कुछ समय के लिये स्थगित कर दूँ और थोड़े दिनो तक यही रुका रह कर देखूँ कि आपके लिए कुछ कर सकता हूँ कि नही ? कुछ बातें मेरे खयालों मे ऐसी दौड रही है जिनको मैं प्रत्यक्ष रूप से कर के देखना चाहता हूँ कि उनका क्या नतीजा होता है, पर उनके बारे मे मैं फिर कहूँगा। इस समय फिलहाल मैंने दो काम किए है। एक तो उस जापानी प्रॉफेसर 'साऊ-चूकू' को एक दवा खिलाकर मैंने पागल के तौर पर कर दिया है। कम से कम महीना पन्द्रह रोज तो वह इस योग्य होगा नही कि अपना कोई नया प्रयोग कर सके या ठीक तौर पर कोई बात भी कर सके। दूसरा काम मैंने यह किया है कि उसके सब साथियो और सिपाहियो समेत जनरल कोमुरा काउन्ट शैवर और मार्शल फाक को एक ऐसी घाटी में फँसा दिया है जहां से वे जल्दी छूट कर बाहर न निकल सकेंगे। चूँकि इन्ही आदमियो तक अभी आपका भेद सीमित है इस लिये आपको पहिला काम तो यह करना चाहिये कि जल्दी से जल्दी 'सांता-पू' के बांध की हिफाजत का पूरा बन्दोबस्त कर डालें। इस अजित के बारे मे मैंने आप से कहा था कि उससे कहियेगा कि 'मृत्यु-किरण' बनाने वाली मशीन को जिसके सब कल पुर्जे तैयार हो चुके है जल्दी से जल्दी खड़ा कर डाले। (अजित की तरफ देख कर) क्या तुमने वह काम कर डाला है ?

अजित०। जी हां, वह मशीन मैंने खड़ी कर ली है और जहां तक मैं समझ सका हूँ वह ठीक तरह से काम करने योग्य है।

नगेन्द्र०। मगर अब भी शायद उसको चलाने के लिए बिजली की

शक्ति की कमी रह ही गई होगी। केशवजी तो पृथ्वी के अन्दर की गर्मी को बिजली के रूप मे परिवर्तित करके अपनी मशीनें चलाते थे, सो तो यहाँ शायद हो न सकेगा या होने में अभी महीनो का समय लगेगा ?

अजित०। जी हाँ, मगर उसका भी एक उपाय मैंने सोच लिया है। हमारे पास इस जगह पानी की असीम शक्ति मौजूद है जिससे हम बहुत कुछ काम ले सकते हैं। मेकंग के जल-प्रपात की शक्ति अगर काम में लाई जा सके तो अगाध बिजली पैदा की जा सकती है पर उतना हमें समय नही है, शायद अवसर भी नहीं, अस्तु मैंने यह सोचा है कि फिलहाल कुछ टरबाइन्स पानी से चलने वाले बनाऊँ और उनसे कुछ बिजली पैदा करके 'मृत्यु-फिरण' की मशीन चलाने का प्रबन्ध करूँ, और यह काम सहज में हो भी सकेगा, कारण इसका इन्तजाम यहाँ मौजूद है।

राणा०। (खुश होकर) अच्छा ! कितने दिन मे तुम मृत्यु-किरण की मशीन को चलाने लायक बिजली यहाँ के पानी से पैदा कर सकते हो ?

अजित०। तीन महीने मे, अगर शान्ति पूर्वक काम करने का मौका मिल सके, मगर शायद उतना अब समय नही हो ?

राणा०। तीन महीना ? ओफ, शायद नही ! फिर भी मैं कोशिश करूँगा कि दुश्मन इतने समय तक कोई नई कार्रवाई न करे, और इसके लिए मैं यह तरकीब सोचता हूँ।

नगेन्द्रनरसिंह धीरे-धीरे कुछ कहने लगे जिसे वहाँ बैठे सब लोग बहुत गौर से सुनने लगे।

(४)

सचमुच यह बात बहुत सही थी कि राणा नगेन्द्रनरसिंह की कारीगरी की बदौलत मार्शल फाक, जनरल कोमुरा और काउण्ट शैवर मय अपने सभी सिपाहियो के एक ऐसी जगह फँस गये थे जहाँ से उनका निकलना बहुत ही दुश्वार दिखाई पड रहा था।

जिस समय अपने विश्वासी डाक्टर कैप्टेन रिचार्ड को साथ लेकर

कितने ही आदमियो के साथ ये तीनो उस जगह पहुँचे जहाँ प्रॉफेसर 'साऊ-चूकू' को जेनरल कोमुरा छोड गये थे, तो वहाँ उन्हें कही न पाया, हाँ उनका शिष्य और साथी चिनुस्की जरूर दिखाई दिया जो बदहवासी की हालत मे पत्थर की एक चट्टान पर दोनो हाथो से अपना सिर पकड़े गमगीन बैठा हुआ था। जेनरल कोमुरा ने उसे देखते ही पूछा, "क्यो चिनुस्की, तुम इस तरह क्यो बैठे हुए हो और प्रॉफेसर कहाँ हैं?" चिनुस्की सुन कर बोला, "मत पूछिये गुरूजी का कोई हाल जेनरल, वे तो मनुष्य से शैतान हो गये है! मेरा सिर फोड़ा सो फोड़ा ही, लश्कर के कितने ही आदमियो को उन्होने जख्मी कर दिया, कई घोड़े और खच्चर मार डाले, और अन्त मे यहाँ से भाग कर एक भयानक नाले मे जा के बहुत ऊँचे एक पेड़ पर बैठ गये हैं और कहते हैं कि कोई उनके पास आवेगा तो ऊपर से कूद के अपनी जान दे देंगे! न जाने उन्हे क्या हो गया है? मैं तो समझता हूँ कि जिस प्रेत को बुला कर वे अपना प्रयोग कर रहे थे वह किसी सबब से उन पर क्रुद्ध हो गया है और उनके ही सिर पर जा चढा है!"

चिनुस्की की यह बात सुन जेनरल कोमुरा ने लाचारी और निराशा की निगाह अपने साथियो पर डाली जो सभी इस समाचार को सुन हताश हो गये थे, मगर कैप्टेन रिचार्ड उसकी यह बात सुन कुछ जोश के स्वर मे बोल पड़े, "ओह, प्रेत-व्रेत कुछ नहीं, जान पड़ता है प्रोफेसर को मेटल हिस्टीरिया हो गया है। मेस्मेरिज्म और हिपनाटिज्म की क्रियाओ में कुछ भी गडबडी पड जाय तो प्रयोगकर्ता को अकसर ऐसा हो जाया करता है और इससे डरने या घबराने की कोई जरूरत नहीं। वे कहाँ है? चलो मुझको उनके पास ले चलो, मै उन्हे बात की बात मे काबू कर लूँगा।"

चिनुस्की ने हाथ से बता कर कहा, "उन दोनो घाटियो के बीच में से वह जो नाला गया है न प्रॉफेसर उसी के किनारे वाले पेड पर बैठे है! आप लोग जाके खोज लीजिए, मैं उनके सामने न जाऊँगा, कही मुझे देख के

सचमुच ही पेड़ से कूद कर अपनी जान दे बैठे तो फिर क्या होगा ? कौन गुरु-हत्या का पाप लेने जाय ? इसीलिए तो मैं यहाँ आकर बैठ गया हूँ।"

इन लोगों ने बहुत कुछ समझाया और कहा पर चिनुस्की किसी तरह भी इन्हें वहाँ तक ले जाने पर राजी नहीं हुआ। आखिर जब जेनरल कोमुरा ने गहरी डाँट डपट की तथा धमकी दी तब वह किसी तरह चलने को तैयार हुआ मगर फिर भी इतना उसने कह ही दिया कि 'जब आप ऐसा ही कहते हैं तो चलिए मैं वहां तक आपको पहुँचाए देता हूँ, पर वह पेड़ दिखा कर लौट आऊँगा, गुरूजी के सामने न जाऊँगा। आपके जैसे जी में आवे उनको पेड़ पर से उतारिए या जो जी मे आवे कीजिए, मगर इतना मैं कहे देता हूँ कि वह जगह बहुत खतरनाक और रास्ता बड़ा भयानक है साथ ही बहुत नजदीक भी नहीं है इसलिए मेरी राय तो यही है कि जरा सा रुक जाइए, अब सवेरा होना ही चाहता है, पौ फट जाय तो चलिएगा।" मगर जेनरल कोमुरा और उनके साथियों ने यह मंजूर न करके कहा, "कोई हर्ज नहीं, हमलोगों के पास टार्चें हैं, तुम कोई अन्देशा न करो और हमें वहाँ ले चलो।" लाचार चिनुस्की को चलना ही पड़ा। वह न जाने क्या क्या भुनभुनाता हुआ उस चट्टान पर से उतरा और इन लोगों के आगे आगे पूरब तरफ को रवाना हुआ जिधर का घना जंगल और उससे कुछ ही दूर पर कम ऊंची पहाड़ियों का एक लम्बा सिलसिला इस वक्त के पल पल मे कम होते जाने वाले अन्धकार में जमीन पर उतरते हुए किसी बादल की तरह दिखाई पड़ रहा था।

सचमुच चिनुस्की का कहना बहुत ही सही था। कुछ ही दूर जाने के बाद रास्ता पथरीला पेचीला और इस कदर खराब मिलने लगा कि इन लोगों में से करीब करीब सभी के हाथों में अगर बिजली की बत्तियां न होती तो शायद दो एक आदमी तो जरूर ही गिर-पड़ कर अपने हाथ पैर तुड़ा डालते। मगर प्रॉफेसर से मिलने और जिस तरह भी हो उनकी जान बचाने की धुन में सब लोग बढ़ते ही चले गए।

लगभग मील भर के जाने बाद उतराई मिली और इन सभो को लिए हुए चिनुस्की दो पहाडियों के बीच की एक घाटी मे उतरने लगा जो शायद दिन के वक्त देखने से जरूर खुशनुमा और सुन्दर मालूम पड़ती मगर इस समय तो खतरनाक और भयावनी ही नजर आ रही थी। बहुत बड़े बड़े ढोको और खडी चट्टानो पर से चढ़ता उतरता हुआ चिनुस्की इन सभो को इस घाटी के एकदम अन्दर उतार ले गया जहाँ तेजी से बहते हुए एक नाले के किनारे पहुँच वह खड़ा हो गया और बोला, "बस, अब और आगे मै न जाऊँगा! वह देखिए, वह जो पेड़ दिखाई दे रहा है न, उसी पर प्रॉफेसर बैठे हैं। मै यहाँ खड़ा हूँ, अब आपलोगो के जो जी मे आवे सो कीजिये, पर आपको देख प्रॉफेसर अगर सचमुच ही पेड़ पर से कूद कर अपनी जान दे बैठे तो आप जानिए!"

जेनरल कोमुरा चिनुस्की को कुछ दूर और आगे ले चलने का आग्रह करना चाहते थे, पर उसी समय सामने और नजदीक ही कही से किसी के चीखने की आवाज आई जिसे सुन वे चमक कर बोले, "प्रोफेसर की ही आवाज तो जान पड़ती है।" और लोगो ने भी उनकी राय की ताईद की और तब सब लोग चिनुस्की का आसरा छोड धीरे धीरे आगे की तरफ बढ़े मगर दबे जुबान आपुस मे यह भी बाते करते जा रहे थे कि कही चिनुस्की का कहना सही न हो और प्रॉफेसर हम लोगो को आता देख सचमुच ही ऊपर से कूद न बैठें।

इन लोगो के जाने के बाद कुछ देर तक चिनुस्की अपनी जगह पर खड़ा रहा, तब पीछे मुड़ा और एक बड़ी चट्टान के ऊपर जाकर वहीं से इनकी गति-विधि देखने लगा। पर यकायक वह चौक पड़ा। किसी ने पीछे से आकर उसके कन्धे पर हाथ रख दिया था। उसने मुड़कर देखा और साथ ही बोल उठा, "सरदार आप आ गये? देखिए मछलियाँ जाल के अन्दर तो आ गई हैं, अब बझाना आपका काम है!"

यह आने वाले सचमुच ही राणा नगेन्द्रनरसिंह थे जिन्होने गौर से

आगे जाने वाली उस मंडली को देखा और तब चिनुस्की की पीठ पर हाथ फेर कर कहा, "शावाश, खूब किया ! अव इनमें से कोई भी वापस जाने न पावेगा। मगर तुम्हें अभी एक काम और करना पड़ेगा।" चिनुस्की हाथ जोड़ कर बोला, "आज्ञा ?" राणा बोले "इस घाटी का यह रास्ता तो मैं बन्द किये देता हूँ, दूसरे किसी तरफ से यहां आने या किसी तरह भी बाहर निकल जाने का रास्ता नही है, फिर भी तुम मेरे उन सिपाहियों को साथ ले लो जो वह देखो वहां खड़े हैं और उनको इस घाटी के चारो तरफ ऐसे मौकों पर खड़ा कर दो कि जहां से समूची घाटी पर उनकी निगाह पड़ती रहे। नीचे वाला कोई अगर ऊपर आने की कोशिश करता दिखाई दे तो उसे वे लोग बेधड़क अपनी गोली का निशाना बनावें। कम से कम चौवीस घण्टों तक इन लोगों को यहीं गिरफ्तार रखना होगा।"

चिनुस्की बोला "जो हुक्म" और तव पीछे हट गया। इधर राणा ने भी पीछे घूम कर अपने सिपाहियों से इशारे ही इशारे में कुछ कहा और तव एक तरफ को जाकर आँखों की ओट हो गये। चिनुस्की उन सिपाहियो की तरफ बढ गया।

इन दोनो के वहाँ से हटने के कुछ ही देर बाद घाटी के ऊपर की तरफ से एक सुरंग के फटने की आवाज आई जिसके साथ साथ बहुत ढेर से मट्टी पत्थर और ढोकों की एक बरसात उस जगह आकर इस तरह पर गिरी कि घाटी का छोटा मुहाना एक दम बन्द हो गया। जिस तरफ से अभी अभी काउन्ट शैवर और उनकी मंडली निकल गई थी वह राह इस प्रकार पल भर में ऐसी बन्द हो गई कि घंटो क्या पहरों तक भी कोशिश की जाती तो उतना मट्टी पत्थर हट न सकता था जितना वहां आ गिरा था। अवश्य ही इसका इन्तजाम पहिले से कर लिया गया होगा।

× × × ×

सुरंग फूटने और मट्टी पत्थर तथा ढोकों के गिरने की आवाज उन आगे जाने वालों के भी कानों में पड़ी जिसने उन्हें चौका दिया और सब

कोई घूम कर देखने लगे कि क्या हुआ ? यद्यपि अब भी पौ फटने मे देरी थी और इन लोगों के काफी आगे बढ आने के कारण अन्धेरे मे पीछे का मामला ठीक ठीक कुछ समझ मे न आता था फिर भी मार्शल फाक बोल उठे, "जरूर कोई सुरंग फूटी है, मगर यह किसका काम हो सकता है ?" उनके साथियो मे से एक बोल उठा, "इस जगह के पहाड़ों में पत्थरो की कितनी हो खदानें हैं। यहाँ का भूरा पत्थर मजबूती के लिए प्रसिद्ध है और इमारती कामों के लिए दूर दूर तक जाता है, शायद उन्हीं मे काम करने वालो ने कोई सुरग लगाई हो !" यह बात सम्भव मालूम पड़ती थी फिर भी काउन्ट शैवर के हुक्म से दो आदमी पता लगाने के लिए पीछे लौट गए और बाकी मंडली फिर आगे बढ़ी, क्योंकि प्रॉफेसर के चिल्लाने की आवाज अब पुनः पुनः आने लगी थी।

कुछ ही आगे बढ़ने पर यह मंडली उस पेड़ के पास पहुँच गई जिसको चिनुस्की ने दूर से दिखाया था या जिसके ऊपर से चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं। अभी कुछ फासले ही पर थे कि पेड़ पर से आवाज आई, "कौन है ? खबरदार इधर कदम मत रखना !" इन लोगो ने आपुस मे कुछ सलाह की और तब सभों की मर्जी से जेनरल कोमुरा अकेले थोड़ा आगे बढ कर ऊँची आवाज मे बोले, "क्या मैं प्रॉफेसर 'साऊ-चूकू' की आवाज सुन रहा हूँ ?" पेड़ पर से आवाज आई, "हाँ वही समझो, मगर तुम कौन हो ?" इन्होने जवाब दिया, "मैं जेनरल कोमुरा हूँ। मगर प्रॉफेसर, आप वहां बैठे क्या कर रहे हैं ? नीचे आइए, हम लोगों को एक बहुत खुशी की बात आपसे कहनी है।"

जवाब में बहुत जोर से खिलखिला कर हँसने की आवाज ऊपर से आयी और तब यह सुनाई पड़ा, "ठीक है, मुझे भी आपको देख कर बहुत खुशी हुई। अच्छा तो होशियार हो जाइए, मैं आता हूँ।"

पत्तियो और डालियो के चरमराने की आवाज ने किसी के उतरने की सूचना दी और इसके साथ ही एक सुफ़ेद चीज नीचे आती नजर पड़ी।

मगर यह कोई आदमी नहीं था बल्कि एक गठड़ी सी थी जो रस्सी के सहारे ऊपर से नीचे लटकाई जा रही थी। जैसे ही वह चीज जमीन पर आकर लगी लोग झपट कर आगे बढ़े। उतावले हाथों ने गठरी को खोला और तब देखा कि उसमें हाथ पांव कसे प्रॉफेसर 'साऊ-चूकू' बंधे हुए हैं। कइयों के मुंह से निकल पड़ा, "हैं, प्रॉफेसर साहब की यह हालत !" मगर काउण्ट शैंवर बोल उठे, "लेकिन ये तो एकदम बेहोश मालूम होते हैं। तब पेड़ पर से कौन बोल रहा था ?" जेनरल कोमुरा बोले, "जरूर हमें किसी तरह का धोखा दिया गया है !"

इसी समय पेड़ पर से आवाज आई, "अब आप लोग व्यर्थ की चिन्ता फिक्र न कीजिए और प्रॉफेसर को होश मे लाने की कोशिश करते हुए कुछ समय के लिए इसी घाटी को अपना जेलखाना समझिए। खाने पीने के किसी सामान की जरूरत हो तो उस गुफा में जाइएगा जो आपके दहिनी ओर दिखाई पड़ती है, मगर खबरदार, इस जगह के बाहर होने की कोशिश न कीजिएगा, नहीं जान के लाले पड़ जायेंगे !"

इसी समय पता लगाने के लिए पीछे को गये हुए दोनों आदमी लौट आकर बोले, "हम लोगों को किसी तरह का बहुत बड़ा धोखा दिया गया है। जिधर से इस जगह आने का रास्ता था उधर बहुत सा पत्थर का ढोंका और मिट्टी वगैरह इस तरह से आकर गिर पड़ी है कि वापस लौटने का रास्ता एकदम ही बन्द हो गया है। अब जब तक अच्छी तरह चांदनी न हो जाय हम इस जगह से बाहर नहीं हो सकते !"

इस समाचार को सुन सभों का रहा सहा शक भी जाता रहा और सभी के चेहरों पर हवाई उड़ने लगी, मगर मार्शल फाक ने सबसे पहिले अपने हवास दुरुस्त किये और ऊपर की तरफ मुंह करके कहा, "क्या हम लोग यह समझ लें कि यहां कैद कर लिए गए हैं और यह हमारे किसी दुश्मन की कारंवाई है ?" ऊपर से जवाब आया, 'हां' और तब आवाज बन्द हो गई। इन लोगों ने कई तरह के सवाल किये पर किसी बात

का कोई जवाब न आया बल्कि कुछ ही देर बाद ऊपर पेड़ की डालियो के बीच मे किसी तरह की चमक सी दिखाई पड़ी और तब एक काली गोल डिबिया जलती हुई नीचे आकर इनके पैरो के पास गिरी जिसे कइयों ने देख कर पहिचाना कि यह वही बेतार की तार वाले टेलीफोन की डिब्बी है जिसके जरिए त्रिकंटक कई बार इन लोगों से बातें कर चुका है।

———

मंगर-सिं

(१)

फ्रेन्च-इन्डो-चायना की राजधानी 'सैगन' के एक ऐसे हिस्से में अब हम अपने पाठको को ले चलते हैं जो वहां के अधिकारी वर्ग के रहने के काम मे आता है और जहां ज्यादातर सरकारी इमारतें दफ्तर कचहरियां तथा सिविल और मिलिटरी क्वार्टर्स आदि ही हैं, या यो कहना चाहिये कि थे, क्योंकि जब से दुष्टों ने यहां का सुप्रसिद्ध वेलवेडियर राजमहल उड़ा दिया है तब से अधिकारियो के मन मे बहुत बड़ी चिन्ता और शायद भय भी समा गया है और तभी से कई मुख्य मुख्य अफसरो ने अपना डेरा अस्थायी तौर पर मैदानो मे पड़े खेमों और तम्बू-कनातों में डाल रक्खा है। तुर्रा यह कि इन तम्बू कनातो आदि का भी स्थान वे लोग अक्सर अदला बदला करते हैं, अवश्य ही इसलिये कि जिसमें दुष्टों को पुनः वैसी ही कोई कार्रवाई करने का मौका न मिले जैसी कि वेलवेडियर पैलेस के बारे में हुई। अधिकारियो की इस कार्रवाई का असर यह हुआ है कि बहुत सी बड़ी-बड़ी इमारते आजकल खाली पड़ी हुई हैं जिनमे भूत लोटा करते हैं, और किले के बाहर वाले इस बड़े मैदान में

तंबू कनातों का एक शहर सा ही बस गया है जिनमें से सबसे बड़ा डेरा काउन्ट शैवर का है जो अन्य खेमो से कुछ अलग एक छोटी ऊँचाई पर लगा हुआ है।

इस समय उसी काउन्ट वाले खेमे के अन्दर हम लोगों को चलना पड़ेगा क्योंकि यहाँ ऊँचे अफसरो की एक बहुत ही गुप्त कमेटी हो रही है बहुत से फौजी और मुल्की अफसर इकट्ठे है और कोई अभी चले भी आ रहे हैं मगर इन सभो ही के चेहरो पर पड़ी हुई चिन्ता की लकीरें बता रही हैं कि किसी नई दुर्घटना ने इन लोगो को परेशान कर रक्खा है।

एक विशाल टेबुल के चारों तरफ बैठे हुए बहुत से लोग यकायक उठ खड़े हुए जब उन्होने दो बड़े अफसरों को एक साथ खेमे के अन्दर घुसते देखा। इन दोनो नये आने वालों मे से एक तो सैगन के वर्तमान मिलिटरी शासक आनरेबिल 'लूई फराडे' थे और दूसरे जनरल 'श्रू' जो मार्शल फाक के अभाव मे यहाँ की फौजो के सबसे बड़े अफसर थे। ये दोनो तेजी के साथ आकर उन दो कुरसियों पर बैठ गए जो टेबुल के सिर की तरफ खाली पड़ी हुई थी और साथ ही और भी कई लोग जो खेमे के बाहर या कुछ दूर पर थे जल्दी जल्दी भीतर आकर कायदे से बैठ गए। बातचीत एकदम बन्द हो गई और सब लोग इन्ही दोनो का मुंह देखने लगे।

जनरल श्रू ने आनरेबिल लूई फराडे की तरफ देखा और उनका इशारा पा खड़े होकर कहने लगे :—

"साहबो, हम लोग यहां किसलिए इकठ्ठा हुए हैं इसका हाल यद्यपि करीब करीब आप सभी लोगो को मालूम हो चुका होगा फिर भी मैं थोड़े मे उसे फिर से कह देना मुनासिब समझता हूँ, ताकि जिन लोगो को पूरा हाल मालूम नही है या जो दूर के प्रान्तो से यहां पहुंचे हैं इन्हे उसे जानने का मौका मिले और हमलोग सब पहलुओ को अच्छो तरह सोच विचार कर मुनासिब नतीजे पर पहुँच सकें।

"आप लोगों को यह बताने की जरूरत नहीं है कि कोई 'पूर्व-गौरव-संघ' नामक क्रान्तिकारियो का एक दल पैदा हुआ है जिसके मुखिया कोई तीन व्यक्ति हैं जो अपने को 'त्रि-कटक' कहते हैं। इन बेईमानों ने हमारी सरकार को हर तरह से परेशान कर रक्खा है और इनकी मनशा यह है कि हमे इस देश से एक दम निकाल बाहर करें। क्या क्या कार्रवाइएं अब तक ये लोग कर चुके हैं वह आप सभी लोग जानते हैं अतएव उसे कहने की जरूरत नही है।

"आपको या आपमें से बहुतों को यह भी मालूम है कि इस त्रिकंटक से मोर्चा लेने में हम लोग अकेले, कम से कम अब तक, बहुत कमजोर साबित हुए। इसलिए हम लोगों ने अपने मित्र और पड़ौसी राज्य जापान से इस बारे मे मदद मांगी जो स्वयम् इन दुष्टों की कार्रवाइयों का शिकार हो चुका था और इसीलिए इनसे बदला लेने बल्कि इन्हें जड़-मूल से नाश कर देने पर उतारू हो गया था। समान विपत्ति में पड़े लोगों के आपुस मे मिल कर काम करने मे बहुत कुछ लाभ हैं अस्तु हम दोनों, फ्रान्स और जापान, बहुत जल्दी ही एक-मत हो गये। हमारे काउन्ट शैवर और मार्शल फाक उनके फील्ड मार्शल जेनरल कोमुरा में मिले और दोनों राज्यों के बीच इस विषय मे एक संधि सी हो गई।

"पर उस संधिपत्र पर अभी दोनों राज्यों के प्रतिनिधियो के हस्ताक्षर भी हो न पाए थे कि शत्रु का अगला वार हम पर हुआ। ये दोनो ही अफसर कुछ अन्य फौजी अधिकारियो के साथ बरगलाए जाकर अपने अपने खेमों से हटा कर न जाने कहां गायब कर दिये गये कि हजार खोज ढूंढ होने पर भी अब तक इन लोगो का कही पता नही लगा है।

"केवल यही नही, शायद उन्हीं दुष्टों के इशारे और भड़काने से या मुमकिन है कि मौका अच्छा समझ कर, हमारे नये पड़ौसी श्याम देश के नये राजा 'मंगर-सि' ने भी हाथ पांव फैलाना शुरू किया है। जहां तक हमारे दूतों को खबर मिली है उसने अपनी फौज को बड़ी तेजी

से तैयार करना प्रारम्भ किया है, जर्मनी से कई जहाज भर भर कर तोप गोले बारूद और युद्ध का सामान मंगाया है, अमेरिका से कई सौ हवाई जहाज खरीदे हैं, और फौज मे नई भरती जारी कर दी है। एक तरह पर तो यह सब इन्तजाम वह सिंहासन पर बैठने के समय से ही कर रहा था पर सब से आखीर की जिस खबर ने हम लोगो को चिन्ता में डाल दिया है वह यह है कि उसने बहुत बड़ी सेना हमारी पूर्वी सरहद पर इकट्ठी करा दी है जिसका सिवाय इसके और कोई भी मतलब हमारी समझ मे नही आता कि वह शायद मौका देख रहा और कोई बहाना ढूंढ़कर शीघ्र हम पर हमला करना चाहता है।

मामूली हालतो मे हम इस बात से जरा भी न घबड़ाते बल्कि इसका स्वागत करते क्योंकि प्रतापी फ्रांसीसी साम्राज्य को इन टुटपूंजिए राज्यो से डरने की जरा भी जरूरत नही है उलटा यह हमारी साम्राज्य-वृद्धि का एक कारण बनता, पर आज की हमारी स्थिति बिल्कुल भिन्न है। हम लोगों को इस कम्बख्त नए दुश्मन, पापी 'पूर्व-गौरव सघ' या जो कि एक ही बात है, कम्बख्त 'त्रि-कंटक' ने, बहुत कमजोर कर दिया है। हमारे बहुसंख्यक वायुयान नष्ट हो चुके हैं, कितने ही किले तथा बहुत सा फौजी सामान बर्बाद हो चुका है, कितने ही जंगी जहाज डूब गये हैं, और कितने ही अफसर मारे जा चुके या गायब कर दिये गये हैं। सच पूछिये तो एक तरह पर हमारी ताकत उसकी चौथाई भी नही रह गई है जो आज से पांच बरस पहिले थी। इसीलिए हमें भय हो आया है और कम से कम मैं 'मंगर-सिं' की इस नई चाल को बहुत घबराहट के साथ देख रहा हूँ, क्योंकि असल पूछिये तो हमारे पास आज इतनी भी शक्ति नही है कि हम इस अपने राज्य फ्रेञ्च-इण्डो-चायना की भी अच्छी तरह हिफाजत कर सकें।

"ऐसे समय मे हमारे इन दोनों उच्च अधिकारियों काउण्ट शैवर तथा मार्शल फाक के गायब हो जाने ने स्थिति को और भी डांवाडोल कर

दिया है । हमारे 'प्रेस्टिज' को बहुत बड़ा धक्का लगा है और हमारी फौज का 'मारल' भी गिरा जा रहा है । अब क्या करना चाहिए इसे ही विचारने हम लोग इस समय इकट्ठे हुए हैं।"

इतना कह जेनरल श्रू जरा देर को रुके, मगर उसी समय आनरेबिल फराडे ने उनकी तरफ झुक कर धीरे से न जाने क्या कह दिया कि वे चौंके और फिर कहने लगे, "ठीक है, यह तो कहना ही मैं भूल गया था ! साहबो, आप लोगों में से बहुतों को जो बात कम मालूम है तथा जो और भी बड़े मजे की है उसका जिक्र करना मैं भूल गया था । कुछ समय हुआ काई-माऊ के पुजारियों ने बलवा किया था जो लड़ाई के साथ दबा दिया गया था । तब से आज तक उस तरफ के लोगों को सिर उठाने की हिम्मत न हुई थी, पर इधर थोड़े दिन पहिले 'बालन' के मौके पर इस देश के मठों मन्दिरों और तीर्थस्थानों की जो तलाशियां ली गईं थीं उसके सबब से सीमा पर के पुजारी लोग खास तौर पर हमसे नाराज हो गये हैं । भीतर भीतर यह नाराजी कितनी गहरी जड़ पकड़ रही है इसका पता थोड़ा बहुत हम लोगों को लग रहा था पर उस दिन जो घटना हुई उसने उसका ठीक ठीक स्वरूप खोल दिया, अर्थात् 'सांग-तिग' के प्रधान मठ 'गुन-ताऊ' के पुजारियों ने अपने मठ की तलाशी देने से साफ इनकार कर दिया, हमारी जो फौजी टुकड़ी तलाशी लेने गई थी उसका मुकाबिला किया, उनमें के कई सिपाहियों और अफसरों को मार डाला, और बाकी को शहर के बाहर खदेड़ कर शहर के फाटक बन्द कर दिए । 'सांग-तिग' के हमारे सब अफसर वहां से निकाल बाहर कर दिए गये हैं और एक तरह पर आज वह हमारे विरोधियों का मुख्य गढ़ और बलवाइयों का प्रधान अड्डा हो रहा है । सुनने मे आया है कि 'कई-माऊ' के हजारों ही पुजारी वहाँ पहुँचे हैं और एक तरह पर 'सांग-तिग' से 'काई-माऊ' तक विरोध की तीव्र लहर फैल गई है जिसका सामना किस तरह किया जाय यह भी विचार का एक मुख्य विषय हो पड़ा है । चूँकि मार्शल फाक

और काउन्ट शैवर इस मामले को स्वयम् अपने हाथ मे रखे हुए थे और बहुत सोच विचार कर के ही कोई काम करना चाहते थे इसलिए हम लोगो को कुछ विशेष पता नही कि वे क्या करना चाहते या कितना कुछ कर चुके थे, अब उन दोनो ही के गायब हो जाने या गायब कर दिये जाने पर, यह भार हम लोगों पर आ पडा है कि इस नई घटना के बारे मे कोई माकूल कदम उठावे, क्योकि यह तो हम आप सभी समझ सकते है कि अगर शीघ्र ही कोई मुनासिब कार्रवाई न की गई और उन बलवाइयो को दबाया न गया, तो बलवे की लहर समूचे फ्रेञ्च-इन्डो-चायना मे फैल जायगी और तब अपनी वर्तमान कमजोर हालत मे, और श्याम-सि जैसे प्रबल शत्रु के कोई नया झगडा पैदा कर देने पर, हम लोगो को बहुत नाजुक स्थिति का सामना करना पड़ जायगा।

"अस्तु हम सभी का कर्तव्य है कि इस समय बहुत सोच विचार कर सब स्थिति और सब पहलुओ को ध्यान मे रखते हुए एक उचित निश्चय पर आवें और उसके मुताबिक कार्रवाई करें।"

इतना कह जनरल श्रू बैठ गये। उपस्थित मंडली मे उनके बैठते ही कानाफूसी आरम्भ हुई जो धीरे धीरे बातचीत और बहस मुबाहिसे के रूप मे बदल गई। कई तरह के मत और इच्छाएं प्रकट की जाने लगी। नरम गरम सभी तरह की नीति बरतने का मत प्रकाश किया जाने लगा।

इसी समय अपने बगल मे बैठे एक ऊँचे अफसर की किसी बात के जवाब मे अनरेबल लूई फराडे बोल उठे :—

फराडे०। बात ठीक वैसी ही नही है जैसी आप समझते हैं महाशय, फ्रेञ्च-इन्डो-चायना और श्याम देश के पुजारीगण, खास करके उनका वह वर्ग जो इन दोनों देशों को सीमा पर रहता है, आज उतना कमजोर नही रह गया है जितना कि तीन चार बरस पहिले था। आप शायद भूल रहे है कि कुछ दिन हुआ इनमे एक शारीरिक सुधार की लहर पैदा हुई थी जो इतनी तेजी से फैली कि जिसका नाम। सब जगह के साधू

धर्मात्मा और महात्मा ही नही गृहस्थों बल्कि भिखमंगो तक में एक यह विचार उत्पन्न किया गया कि कमजोर शरीर में मजबूत आत्मा रह ही नही सकती अस्तु अगर आत्मा को मजबूत करना चाहते हो तो साधन भजन के साथ साथ कसरत लड़ाई पटा वनैठी तलवार आदि भी सीखना चाहिये। इस लहर को पैदा करने का कारण चाहे जो भी हुआ हो, पर उसको मदद पहुँचायी थोड़े से डाकुओ ने जो सरहद पर न जाने कैसे पैदा हो गये। आपको मालूम ही है कि यहां के अधिकांश मठो और मंदिरों में अनगिनती धन दौलत और अगाध रत्न छिपे पड़े हैं। कुछ डाकू ऐसे पैदा हुए जो समय कुसमय इन मठो और मन्दिरो पर छापा मार कर इनकी दौलत लूटने लगे। कुछ समय तक तो पुजारो और साधु संप्रदाय इन डाकुओ से भयभीत बना रहा पर अन्त मे उनमे भी वदला लेने और अपनी रक्षा आप करने की प्रवृत्ति पैदा हुई, खास कर तब जब उन्होने देखा कि हमारी पुलिस और हमारो सेना उनकी रक्षा करने मे असमर्थ सिद्ध हो रही है। इन्ही दोनो कारणो से कुछ ही वर्षों में पुजारी और साधु वर्ग बहुत ही अधिक शारीरिक उन्नति कर ले गया, यहां तक कि कई घटनायें तो ऐसी हुई कि अल्पसंख्यक साधु पुजारियो ने वहुसंख्यक डाकुओं का न केवल जम कर मुकाविला किया वलिक कई मौको पर उनमे से कुछ को गिरफ्तार भी कर लिया। अवश्य ही जव शरीर मे वल होता है तो और तरह के खुराफात भी सूझते हैं। अब वे ही पण्डे पुजारी अपने को इतना मजबूत समझने लगे हैं कि खुद फ्रान्सीसी सरकार का मुकाविला करने पर आ तुले हैं, जैसा कि 'सांग-तिग' या 'मुन-ताऊ' की घटना प्रकट करती है।

"पर इसके साथ ही मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि कम से कम मुझे और मेरे कुछ दोस्तो को यह विश्वास है कि इन दोनों ही बातो का मूल कारण, साधु पुजारियो में शारीरिक वल वढाने की इच्छा पैदा होना, और डाकुओं के उपद्रव का वढना, इसमे त्रि-कंटक का जबर्दस्त हाथ है

और उन्ही की छिपी कार्रवाइयों का यह नतीजा है जो आज हमें भोगना पड़ रहा है।"

इसी समय एक अफसर बोल उठा, "सब आफत की जड़ ये कंबख्त त्रि कटक है ! क्या इनको नेस्तनाबूद करने का कोई उपाय नही है ?" एक दूसरे ने जवाब दिया, "उनका कहीं पता भी तो लगे ! वे तो न जाने कहाँ छिप के बैठे हैं कि कुछ पता नही चल पाता !!" एक तीसरा यह सुन बोला, "और अगर वे मिल भी जाय या उनके स्थान का पता लग भी जाय, तो हम उनका क्या कर सकते हैं ? उनके पास ऐसे ऐसे अस्त्र-शस्त्र हैं, ऐसी ऐसी किरणे हैं, ऐसी ऐसी गैसे है, कि वैज्ञानिक जगत को जिनका तोड मालूम ही नही है। वे इतनी दूर हमारी सीमा मे घुस आकर जब चाहे हमे तहस नहस करने की जब कूवत रखते है तो उनके स्थान का पता लगा के भी हम उनका क्या बिगाड़ सकेंगे ?"

यह एक गम्भीर प्रश्न था जिसके उत्तर पर ही समूचा दारोमदार था और जिसने सभी की गरदनें चिन्ता के साथ झुका दी, मगर उसी समय किसी ने खेमे के दर्वाजे के पास से कहा, "नही नहीं, हम लोग इस हालत मे भी उनको बहुत कुछ नुकसान पहुचा सकते है अगर जान पर खेल के काम करने वाले कुछ हिम्मतवर लोग हमे मिल जायं।"

सभी ने चौंक कर उस तरफ देखा और साथ ही काउन्ट गैवर को अन्दर आते पा सब लोग ताज्जुब और खुशी के साथ उठ खडे हुए। लूई फराडे और जेनरल श्र् तो एकदम चमक के उनके पास जा पहुँचे और दोनो तरफ मे दोनो ने उनका हाथ पकड के तरह तरह के सवाल करने शुरू कर दिये। काउन्ट गैवर इस समय थके घबराये और परेशान से जान पडते थे फिर भी तेजी के साथ चल कर बीच वाले टेबुल के पास आ गए और सभो की तरफ देख कर बोले, "दोस्तो, खुशी की बात है कि मैं ऐसे मौके पर यहाँ पहुँचा जब कि आप सभी लोग यहाँ मौजूद है और इसी मसले पर गौर कर रहे हैं जो मुझको परेशान किए हुए

है। आप लोगो को शायद मालूम ही हो चुका होगा कि हम लोग—मैं, फील्ड मार्शल कोमुरा, और मार्शल फाक, वहुत बड़े धोखे में डाल दिये गये थे। खुशकिस्मती से मैं किसी तरह बच कर निकल आया पर वे दोनो अपने वहुत से आदमियो के सहित अभी तक खतरे मे ही हैं। हम लोग किस तरह फँसे और मैं कैसे निकल आ सका यह सब तो पीछे सुनते रहियेगा, लेकिन सबसे जरूरी बात है जो मैंने कही, यानी हम लोगों को दुश्मन के मुख्य अड्डे का, उस जगह का जहाँ बैठ कर त्रि-कंटक यह सब फसाद वर्पा कर रहा है, पता लग गया है। अगर हम मे से कुछ हिम्मती आदमी अपनी जान पर खेल कर वहाँ चले जांय तो इसमें कोई शक न होने पर भी कि दुश्मन मजबूत और कातिल है, बहुत कुछ किया जा सकता है, मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि दुश्मन की ताकत को एक दम तहस नहस किया जा सकता है।"

काउण्ट गैंवर की वात सुनते ही लम्बी लम्बी ऊपर को चढी हुई मोछो वाला एक फौजी अफसर उठ कर बड़े तपाक से बोला, "क्या काउण्ट यह समझते हैं कि यहाँ कोई ऐसा भी आदमी मौजूद है जो दुश्मन से वदला लेने का मौका पाकर भी अपनी जान का खयाल करेगा।"

काउण्ट हँस कर वोले, "नही नही, वह बात कहने से मेरा मतलव आप लोगो की वहादुरी पर दाग लगाने से न था बल्कि इस बात से था कि जो लोग दुश्मन के अड्डे पर हमला करने जायेंगे वे सम्भवत: फिर जीते जी वहाँ से लौट के आ न सकेंगे।"

वह अफसर तन कर खड़ा हो गया और अपनी तलवार सिर से ऊँचे कर तेजी से बोला, "मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं कि उस मुहिम पर से जीता लौट कर न आऊँगा जहाँ काउण्ट मुझे भेजेंगे। क्या और कोई इसी शर्त पर मेरे साथ चलने को तैयार है?"

मानों इतने आदमियों के शरीरो के अन्दर केवल एक ही आत्मा

काम कर रही हो इस तरह वहाँ मौजूद सब के सब आदमी यकायक उठ कर खड़े हो गये और सभो के गलो से निकला, "हम सब के सब वहाँ चलने और अपनी जान देने को तैयार हैं, विना इस वात की फिक्र किए कि हमे सफलता मिलेगी या नही ।।"

अपने साथियो की इस वीरता और जोश को देख कर काउन्ट शैवर की बूढी आँखो मे आनन्द के आंसू उमड़ आये पर उन्होने अपने को सम्हाला और कहा, "दोस्तो, आप लोगो पर मुझे गर्व है, पर अब इस बारे मे पीछे बातें होगी। पहिले यह सुन लीजिए कि जेनरल कोमुरा के दोस्त प्रसिद्ध मेस्मेरिस्ट और हिप्नाटिस्ट प्रॉफेसर साऊ-चूकू ने किसी प्रकार यह पता लगा लिया है कि त्रि-कटक का गुप्त अड्डा कहाँ पर है और उसकी हिफाजत का वहाँ क्या इन्तजाम कर रक्खा गया है। शायद उसी भेद को जान लेने के कारण ही कम्वख्त दुश्मन ने हम लोगो को वैसी बुरी जगह मे ले जा फँसाया था और वही भेद आप लोगों से कहने अपनी जान पर खेल कर इस समय मैं यहाँ आया हूँ। आप लोग मुझसे वह वात सुनिए और तव कैसे क्या किया जाय इस पर विचार कीजिए।"

काउण्ट शैवर ने हाथ के इशारे से सभो को और पास आ जाने को कहा और तव आप भी आगे को झुक कुछ बहुत ही गम्भीर बात कहने को तैयार हुए मगर अभी उन्होने अपना मुँह खोला ही था कि दर्वाजे पर कुछ शोर गुल सुन चमक कर रुक गये। उनके साथ साथ वहाँ मौजूद सभी की निगाहे खेमे के वाहर की तरफ घूम गईं जहाँ थोड़े से आदमियो का एक छोटा गरोह अभी अभी आ कर खड़ा हुआ था। ये सभी जख्मी और खून से लथपथ हो रहे थे और कुछ की हालत तो बहुत ही नाजुक हो रही थी।

ताज्जुव मे पड़े हुए काउण्ट शैवर जेनरल श्रू की तरफ देख के वोले, "ये लोग कौन हैं, इनकी यह हालत कैसे हुई और ये यहाँ क्यों आए हैं?" मगर इसी समय एक फौजी अफसर जो स्वयं भी जख्मी हो रहा

था भीतर घुस आया और काउण्ट को सलाम कर बोला, "काउण्ट, बिना इजाजत आ जाने के लिए माफी मांगने के बाद मुझे बहुत अफसोस के साथ कहना पडता है कि अब तक की सब संधियो को एक दम तोड़ कर श्याम का नया राजा 'मंगर-सि' अकारण हमारे देश की सीमा के अन्दर घुस आया है और मार काट करता हुआ सीधा इसी तरफ को बढा आ रहा है। हमारे बहुत से देशी सिपाही उसके झंडे के नीचे चले गये हैं और इस देश के कितने ही पुजारियो और महन्तो ने उसको अपना राजा स्वीकार कर लिया है। हमारी यह गति उसी के हाथो हुई है। जल्दी उसकी रोक का कोई इन्तजाम अगर न हुआ तो भयानक मुश्किल होगी !"

यह एक ऐसी खबर थी जिसने वहाँ मौजूद सभी आदमियों को घबराहट और परेशानी में डाल दिया। काउण्ट शैवर त्रि-फंटक के गुप्त अड्डे के विषय में जो कुछ कहना चाहते थे उसे बिलकुल भूल कर इस नई और सिर पर आ गई हुई मुसीबत का मुकाबला करने की फिक्र मे पड़ गये और जेनरल श्र् की तरफ देखकर बोले,"जेनरल, क्या हमारे आपके और इन इतने बहादुरों के रहते दुश्मन हमारी जमीन मे घुस आयेगा !" जेनरल ने तडप कर कहा, "हरगिज नही !!" और साथ ही उन्होने अपनी तलवार म्यान के बाहर निकाल ली। वहाँ बैठे सभी फौजी अफसरो ने भी ऐसा ही किया और पचीसों गलों से गम्भीर स्वर में निकला,"हमारे रहते क्या मजाल 'मंगर-सि' की जो एक इञ्च भी हमारी जमीन दखल कर सके !!"

(२)

यह बात बिल्कुल ठीक थी कि श्याम के नये राजा 'मंगर-सि' ने मौका अच्छा जान फ्रेञ्च-इन्डो-चायना पर चढ़ाई कर दी थी।

एक तो 'मंगर-सि' स्वयं ही बड़ा हिम्मतवर और बहादुर आदमी था तथा बहुत समय तक श्याम की फौजी का सेनापति रह चुकने के कारण फौजी सिपाहियो का भी उस पर बहुत प्रेम हो गया था, दूसरे इधर गद्दी पर बैठने के बाद ही से उसने तरह तरह की फौजी तैयारियां शुरू

कर दी थी और युद्ध के आधुनिक अस्त्र-शस्त्रो से अपनी फौजों को अच्छी तरह सुसज्जित कर दिया था जिससे उसकी हिम्मत बहुत बढ गई थी। फिर वह यह भी जानता था कि फ्रास की फौजो मे कम से कम देशी फौजो मे, वह माद्दा नही है कि उसकी फौज का मुकाबला कर सके। वह सब कुछ था पर इस समय उसके हमला कर देने का मुख्य कारण यही था कि उसे न ही केवल त्रि-कंटक अथवा 'पूर्व गौरव सघ' की पूरी सहायता प्राप्त थी बल्कि वह यह भी देख रहा था कि इस संघ की कार्रवाइयो ने फ्रांसीसियो की नाक मे दम कर रक्खा है और उनकी फौजी ताकत को एकदम तोड डाला है। यह भी बहुत मुमकिन है कि उसकी इस कार्रवाई मे त्रि-कटक का भी हाथ हो और उसके भड़काने या बढावा देने से ही यह कार्रवाई की गई हो, खैर जो कुछ भी हो।

और इसमे कोई शक नही कि राजा मंगर-सि ने अपना काम बड़ी चतुरता से प्रारम्भ किया था। फ्रेञ्च-इण्डो-चायना की दक्षिणी पश्चिमी सीमा एक गोलाकार घेरा लेती हुई वहा की श्याम देश की सीमा से मिलती है, जिसे यदि एक गोलक मान लें तो फांसीसी भूमि के तीन ओर श्यामी भूमि और केन्द्र मे वह विशाल हृद जिसे 'तु-ली-सप' भूमि कहते हैं पडता है। यह सब भूमि किसी जमाने मे कंबोज देश और इस प्रकार उस देश के मुख्य अधिपति श्याम नरेश की ही थी, पर सन्धियो और युद्धो के बल पर फ्रास ने इसे छीन लिया था। इस समय मौका पा मगर-सि ने उत्तर पूर्व और दक्षिण तीनो ओर से अपनी सेनायें इस भूमि मे घुसा दी थी जो बडी तेजी से पर्वतों को लांघती, नदियों और विशाल झीलो को पार करती और पहाड़ियों तथा दलदली भूमि को रौंदती हुई 'तु-ली-सप' को अपना लक्ष्य बना कर केवल उस ओर बढ ही नही रही थी बल्कि इतने ही थोड़े समय मे उसने उस विशाल जलाशय को जो एक छोटे मोटे समुद्र के ही सरीखा है तीन तरफ से घेर कर अपने कब्जे मे भी कर लिया था। इस झील तक पहुँच कर अब 'मगर-सि' सीधा 'नोम-पेन' नगर की तरफ

बढ़ रहा था जो किसी समय कंबोज देश का मुख्य नगर बल्कि राजधानी था और फ्रान्सीसी दल का एक मुख्य केन्द्र हो रहा था।

जैसा कि हम ऊपर दरसा आए हैं, इतनी तेजी से उसकी फौजों के शत्रु के देश की सीमा मे घुस जाने में सफल होने के मुख्य कारण दो थे। एक तो सरहद पर समूची फ्रान्सीसी सेना अपने फौजी अड्डो और छावनियो के त्रि-कंटक द्वारा उड़ा दिये जाने के कारण विशृंखल और अस्त-व्यस्त सी हो गई थी दूसरे यहां के पुजारी-वर्ग ने पूरी तरह से 'मंगर-सिं' की सहायता की थी। इन्हीं दो कारणों से 'तुं-ली-सप' तक 'मंगर-सिं' की सेना धावा करती हुई बे-रोक-टोक और बिना किसी अधिक खून खराबे या किसी बड़ी लड़ाई के आ पहुँची थी, पर अब 'नोम-पेन' की तरफ बढने मे उसे कसाले का सामना करना पड़ रहा था, क्योंकि एक तो फ्रान्सीसी अधिकारी सजग होकर और सेना का संगठन करके अपनी समूची शक्ति से मुकाबला करने लगे थे, दूसरे अपनी सीमा से इतनी दूर, लगभग दो सौ मील के बढ़ आने पर अब 'मंगर-सिं' को सेना अपने केंद्र से दूर पड गई थी और उसके रसद पानी जुटाने मे तकलीफ होने लगी थी। यही सबब था कि 'नोम-पेन' नगर से करीब चालीस पचास मील के फासले पर पड़ने वाले 'उदंग' नामक शहर के पास पहुँच कर 'मंगर-सिं' को रुक जाना पड़ा था और इस जगह दोनों ओर से एक विशाल युद्ध की तैयारियाँ हो रही थी। हम भी इस समय इसी जगह अपने पाठकों को ले कर चलते है और यहां का कुछ हाल-चाल दिखलाते हैं।

एक बहुत ही लम्बे चौड़े और मीलों तक फैले हुए समथर मैदान के अन्त मे कुछ थोड़े से तम्बू लगे हुए हैं। इन तम्बुओं से कुछ आगे बढ़ कर उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई 'मंगर-सिं' की सेना का पड़ाव पड़ा हुआ है, जो मुख्यतः एक छोटी नदी के किनारे किनारे फैला हुआ है। यह नदी 'तुं-ली-सप' झील से निकल कर मेकंग नदी से जा मिलती है, जिसके किनारे ही वह उदंग शहर बसा हुआ है जो मंगर-सिं का वर्तमान

लक्ष्य है, क्योंकि इस नगर को लिए बिना वह 'नोम-पेन' की तरफ बढ़ नहीं सकता था। इस नदी के उस पार यानी दूसरी तरफ फ्रांसीसी सेना का पडाव पड़ा हुआ है जिधर भी युद्ध की तैयारी जोरों से जारी है। फ्रान्सीसी सेना के पीछे की तरफ 'उद्ंग' नगर के मकानो मन्दिरो और सरकारी इमारतों के ऊँचे कंगूरे अस्पष्ट रूप से दिखाई पडते हैं क्योंकि इस मैदान और उस कगर के बीच मे बड़ा ही घना जगल पड़ता है जिसने उस नगर को अपनी आड़ में छिपाया हुआ है।

सुबह का समय है। अपने खेमे के बाहर एक टेबुल पर बिछे नक्शे पर झुके हुए राजा मगर-सि अपने सेनापतियो तथा मंत्रियों के साथ कुछ सलाह बात कर रहे है, मगर बीच बीच मे उनका ध्यान उधर से हट कर मीलो तक फैली हुई अपनी सेना की लम्बी पंक्ति की ओर चला जाता है और तब वे अपनी दूरबीन उठा कर नदी के पास डेरा डाले दुश्मन की सेना की तरफ देखने लगते हैं जिससे साफ पता लगता है कि इस समय वे उसी के बारे में कुछ तय कर रहे हैं।

इसी समय तार घर वाले तम्बू से निकल कर तेजी के साथ इसी तरफ को आते हुए एक अफसर पर उनकी निगाह पड़ी और वे बात करना बन्द कर और हाथ की दूरबीन टेबुल पर रख उसी तरफ को देखने लगे, क्योंकि उस अफसर की आकृति बता रही थी कि वह कोई जरूरी खबर ला रहा है। बात की बात मे वह आदमी पास आकर रुका और तब महाराज का इशारा पा आगे बढ़ जंगी सलाम करने के बाद उसने एक तार का फार्म महाराज के आगे बढा दिया। महाराज मंगर-सि ने तार भेजने के स्थान पर निगाह डाली और तब कुछ चौक कर भेजने वाले के नाम को देखा, फिर तार का मजमून पढ़ने लगे। यह लिखा हुआ था—

"सैगन—वायसराय का कैम्प।

"हिज मैजिस्टी महाराज 'मंगर-सि को विदित हो कि वर्तमान जगत की युद्ध-नीति के बिलकुल विरुद्ध, बिना किसी भी कारण के, बिना कोई

युद्ध-घोषणा तक किये, जो आप फ्रांसीसी भूमि के अन्दर सैकड़ों मील घुस गये और फ्रांसीसी प्रजा-जन पर लूट मचा रहे हैं यह अत्यन्त अनुचित बात है। फ्रांस सरकार इस बात को बहुत ही आक्षेपजनक समझती है, फिर भी अब तक के श्याम और फ्रान्स के मैत्री-सम्बन्ध का ध्यान कर आपसे कहती है कि आप अविलम्ब अपनी सेना वापस लौटा कर अपनी सीमा के अन्दर चले जावे और जो कुछ नुकसानी आपकी सेना ने की है उसका उचित हरजाना दे नही तो हमे युद्ध के लिए तैयार हो जाना पड़ेगा और तब जो कुछ होगा वह किसी से छिपा न रहेगा। हमारे वायुयान देखते-देखते बंकक को छारखार कर डालेगे और हमारी सेनाएँ श्याम की भूमि की धज्जियाँ उड़ा डालेंगी।

—शैंवर (काउन्ट)।"

तार का मजमून पढ़ कर महाराज मंगर-सि जरा मुस्कुराए, तब इस तार को अपने सहायकों की ओर बढ़ाते हुए बोले, "लीजिए साहबो, सैगन गवर्नमेन्ट को पता लग गया कि हम लोग उनकी सीमा के अन्दर घुस आए हैं !" कह कर वे हँस पड़े और तब एक सादा कागज अपनी तरफ खीच कर उस पर उन्होने यह जवाब लिखा—

"हमारी युद्ध-घोषणा आज से नही सन् १८९३ से चल रही है जब फ्रांस जबर्दस्ती हमारी भूमि मे घुस आया था और हमारे प्रजाजनों को लूट पाट कर उसने हमारी भूमि के एक बहुत बड़े अंश को आत्मसात् कर लिया था। इसलिये हमे कोई नई युद्ध घोषणा करने की आवश्यकता नही। रही बंकक को नष्ट भ्रष्ट करने की बात, सो अब तक जो हमने अपने हवाई जहाजों से काम नही लिया है वह इसीलिए कि यह भूमि जहाँ अब हम हैं हमारी है और यहाँ की प्रजा अब भी हमारी प्रिय है जिसकी सम्पत्ति को आकाश से आग बरसा कर नष्ट करना हमारा अभीष्ट नही है। अगर आप लोगों की तरफ से ऐसी कोई कार्रवाई की गयी तो याद रखिए कि श्यामी भूमि पर आपका एक बम गिरते ही हम आपकी राजधानी

सैगन के धुर्रे-धुर्रे उड़ा देंगे जो हमारे वायुयानों की पहुँच के भीतर है।
—मंगर सि।"

जिस समय महाराज मंगर-सिं यह मजमून लिख रहे थे उसी बीच मे एक दूसरा व्यक्ति एक दूसरा समाचार लेकर तार-घर से आ पहुचा था। महाराज ने अपना लिखा मजमून भी अपने सहायको की तरफ बढाया और तब वह कागज लेकर पढने लगे। इसमे यह लिखा था :—

"खबर लगी है कि फ्रांस के दो सौ जंगी वायुयान इसी तरफ के लिए रवाना हो रहे हैं।"

इस मजमून के अन्त मे किसी का नाम न था, पर एक खास तरह का निशान बना हुआ था। महाराज ने यह तार भी अपने साथियों की तरफ बढा दिया और तब कहा, "लीजिए जिस बात के लिए आप लोग इतने दिनो से मुझपर दवाव डाल रहे थे वह मौका आ गया। मैं वायुयानो से काम लेने के विरुद्ध था, पर अब देखता हूं वही करना पडेगा।"

एक वृद्ध सेनापति बोला, "बिना उसके काम चल नही सकता।" मगर-सिं बोले, "खैर जरूरत होने पर तो मैं सब कुछ करने को तैयार हो हूँ। तो अब आपकी क्या राय है? क्या यह जवाब ठीक होगा? भेज दूँ इसे?" सभी ने "हा, हा" की आवाज लगाई और महाराज ने अपना लिखा हुआ कागज उस अफसर के हाथ मे दे के कहा, "इसे तुरन्त सेगन भेजो।"

सलाम करके अफसर ने यह कागज ले लिया और लौट ही रहा था कि एक तीसरा तार आ पहुँचा। महाराज ने इसे भी पढा और पढने से चिन्ता की रेखाये उनके माथे पर दिखाई पड़ गईं। उन्होने अपने अफसरो की तरफ देख कर उस कागज को कुछ जोर से पढा—

"टोकियो से तीन सौ फौजी हवाई जहाज किसी अज्ञात स्थान के लिए रवाना हुए हैं। हमारा दूत उनके साथ है, पर उनका लक्ष्य किधर

है इसका ठीक पता नही लगता, फिर भी सावधान !"

इस मजमून के नीचे भी वैसा ही गुप्त निशान बना हुआ था ।

तार पढ़ कर मंगर-सि ने कहा, "लीजिए, दो सौ फ्रांस से और तीन सौ जापान से आ रहे है । इन पाँचो सौ वायुयानो का मुकाबला करने को हमारे पास सिर्फ अढाई सौ वायुयान हैं। अब बताइए कैसे क्या किया जाय ?"

उपस्थित मण्डली मे गुरचर्गूँ मचने लगी, पर उस पर ध्यान न दे एक सादा कागज उठा मंगर-सि ने उसपर लिखा :—

"दुश्मन ने वायुयानो द्वारा बड़ा हमला करने की तैयारी की है । कृपा कर कुछ 'अलोपी वायुयान' 'ऐटमिक गने' तथा 'एटम बम' भेजिए—जल्दी !

—रतन ।"

यह तार भी उन्होने किसी गुप्त पते पर भेजवा दिया, मगर इसके मजमून का हाल किसी से कहा नहीं । तब वे अपने साथियो से बोले, "हा साहबो, अब बोलिए आपकी क्या राय पड़ती है ?"

एक बूढा अफसर बोला, "इन वायुयानो के पहुँचने के पहिले उड्डग पर कब्जा कर लेना चाहिए ।" दूसरे ने कहा, "यह अब सम्भव नही रहा ।" तीसरा बोला, "वे वायुयान हमारी राजधानी तक पहुचने न पावें इसका प्रबन्ध होना चाहिए ।" चौथा बोला, "अढाई सौ वायुयान पांच सौ का मुकाबिला किस तरह कर सकते है ?" गरज इसी तरह जितने मुँह उतने तरह के मत प्रकट किये जाने लगे जिनके बीच मे अकेले महाराज मंगर-सि चुपचाप बैठे कोई गम्भीर बात सोच रहे थे ।

(२)

एक घने जंगल के बीच में से होते हुए दो नौजवान आपुस मे धीरे धीरे बाते करते हुए उत्तर की ओर चले जा रहे हैं ।

सरसरी निगाह से जो कोई भी इन्हे देखेगा यही समझेगा कि ये

कोई देहाती किसान हैं, मगर नही, हम खूब जानते हैं कि ये न तो देहाती है और न किसान ही, और चाहे इनकी पोशाक कैसी ही क्यो न हो पर इनकी सूरते जिन पर पडी हुई धूल ने चेहरे का वहुत सा हिस्सा छिपाया हुआ है इन्हे कोई दूसरा ही वता रही हैं। पाठको को वहुत भुलावे मे न डाल कर हम साफ ही वताए देते हैं कि ये काउन्ट शैवर के दो वहुत ही विश्वासी और चतुर साथी हैं जिन्हे कई देशी भाषाएँ वहुत सफाई के साथ वोलने की महारत होने तथा अपनी सूरत वदल कर जासूसी का काम वहुत खूवसूरती के साथ अदा करने का कई सवूत दे चुकने के कारण उन्होने एक वहुत ही नाजुक काम के वास्ते चुना है।

इस समय जहाँ ये दोनों हैं वहाँ से मेकंग नदी यद्यपि कोसों दूर पड़ती है फिर भी उसका भयानक जल-प्रपात अपना घोर गर्जन थोडा वहुत सुना ही रहा है और इनके रुख से यह भी पता लगता है कि इन लोगों का लक्ष्य भी वही जल-प्रपात है। फिर भी ये लोग सीधे उसकी ओर नही वढ रहे हैं वल्कि घने जंगल मे मे होते रास्ता कतरियाते और सव तरफ की टोह लेते हुए जा रहे हैं। इनकी भावभंगी से यह भी पता लगता है कि ये वहुत डरते और सम्हलते हुए वढ रहे हैं और यह नही चाहते कि किसी को इनके आने की खवर लगे।

चूँकि हमारे पाठको को अव कुछ समय तक वरावर ही इन दोनो आदमियो की देखरेख करने की जरूरत पड़ेगी इसलिए हम इनका परिचय भी यही दे देना उत्तम समझते है। इनमे से वह जिसके माथे पर भद्दी देहाती टोपी है काउन्ट शैवर का नौजवान एड डी-कैंप सिलवा है, और दूसरा वह जो कंधे पर मोटी लाठी रक्खे हुए है, उनका प्राइवेट सेक्रेटरी कोमर है, पर इन दोनों ही ने मौका समझ कर न केवल अपने नाम ही वदल दिए हैं वल्कि अपनी मादरी यानी फ्रान्सीसी भाषा में वातें करना एकदम ही छोड़ इस प्रान्त की देशी भाषा मे ही वातें करते हुए जा रहे

है जिसे ये लोग बहुत सफाई के साथ और शुद्ध बोल सकते हैं। सिलवा ने अपना नाम सिग-ली रक्खा है और कोमर अपने को को-तून कहता है और इसलिए हम भी जब तक कि इनका असली मकसद जाहिर न हो इन्हे इनके इन्ही बनावटी नामो से ही पुकारेंगे। को-तून कह रहा है :—

को-तून०। मेकांग अभी कम से कम दो कोस दूर है।

सिग-ली०। मगर उसके प्रपात का शोर इतनी दूर भी साफ सुनाई पड़ रहा है।

को-तून०। एशिया भर मे इतना बड़ा जल-प्रपात कोई नही है बल्कि कई पर्यटकों का तो कहना है कि यह प्रपात अफ्रीका और अमेरिका के सुप्रसिद्ध जल-प्रपातो से भी बडा है पर अवश्य ही उनका कहना सही नहीं हो सकता।

सिग-ली०। इससे अगर बिजली पैदा की जाय तो बहुत फायदा हो सकता है।

को-तून०। हां, मगर वह बिजली खर्च किस काम मे होगी? यहां है हा कौन, न तो आबादी है और न कोई शहर।

सिग-ली०। यह बात भी ठीक है। प्रकृति का यही तो तमाशा है। जहां शक्ति है वहां उसका उपभोग करने वाला नही, और जहां उपभोग करने वाले है वहां शक्ति नदारद। मैंने तो........

यकायक सिग-ली चुप हो गया क्योंकि को-तून ने उसकी एक उंगली पकड़ कर दबाया था। कोतून की निगाह की सीध मैं देख वह यह भी समझ गया कि क्या बात है। जहां पर ये दोनो थे वहां से थोडी दूर, लगभग दो सौ कदम के फासले पर, पत्थरो का एक गोलाकार ढेर सा लगा हुआ था जिसके दूसरी तरफ खड़े एक आदमी पर इनकी निगाह पड़ी। पहिले तो खयाल हुआ कि उसने भी इन दोनों को देख लिया है, पर ऐसा न था और वह अपने बगल की किसी चीज को देखने मे इतना लीन था कि इन लोगों के आने की उसे खबर ही न हुई थी। दोनों

आदमियों ने अपने को घनी झाड़ियों की आड़ में कर लिया और उसी तरफ देखने लगे।

ज्यादा गौर करने की जरूरत न पड़ी और शीघ्र ही इन दोनों को मालूम हो गया कि क्या मामला है। जिस आदमी पर इनकी निगाह पड़ी थी उसके बाईं तरफ एक गुञ्जान झाड़ी थी जिधकी तरफ वह एकटक देख रहा था। हमारे दोनो नौजवानो ने भी अपनी निगाह उसी तरफ दौड़ानी शुरू की और कुछ ही देर में उस कद्दावर शेर को खोज निकाला जो अपना माथा बड़ उस झाड़ी के बाहर निकाले अपनी क्रूर आंखें एकटक उस व्यक्ति पर डाल रहा था। को-तून ने इशारे ही में सिग-ली से पूछा, "देखा तुमने इस शेर को!" और सिग-ली सिर हिलाकर बहुत धीरे से बोला, "हां, मगर मेरी समझ में यह नहीं आता कि वह आदमी इस तरह निधड़क खड़ा क्यों है। कोई हथियार भी तो उसके पास नजर नहीं आता!" को-तून कहने लगा, "यही तो मैं भी सोच रहा हूँ, मुझे तो जान पड़ता है कि शेर के डर के मारे उसकी सुध-बुध......"

इसके आगे की बात शेर की भयानक गरज और तड़प में दब गयी, क्योंकि उसी समय वह उस आदमी पर झपटा। मगर उस आदमी ने भी गजब की फुर्ती दिखाई। जैसे ही शेर के गले से उसकी डरावनी आवाज निकली, उसका हाथ कपड़ों के अन्दर गया तथा एक पिस्तौल उसमें दिखाई पड़ने लगी, और जिस समय वह शेर उस व्यक्ति पर झपटा उसी समय उस आदमी ने भी अपनी पिस्तौल का निशाना उसको बनाया और हाथ बढ़ा कर लिबलिबी दबा दी।

मगर कुछ अजीब ही पिस्तौल थी वह! न तो उसमें से कोई आवाज निकली और न धूआं या आग की कोई चमक ही, मगर उस शेर पर लिबलिबी के दबते ही बड़ा भयानक असर हुआ। कहाँ तो वह खूँखार जानवर आंधी की तरह टूटा था, कहाँ उछल कर उलट पुलट होता अरर

कलाबाजी खाता हुआ कई गज पीछे जाकर इस तरह गिरा मानों किसी दैवी हाथ ने बहुत जबर्दस्त तमाचा रसीद किया हो। गिरने के बाद उसने फिर एक दफे भी जुम्बिश न खाई और हमारे दोनों नौजवानों को यह समझने में देर न लगी कि उसके बदन में जान नहीं रह गई है।

एक ने दूसरे की तरफ देखा। बिना जुबान के ही आँखों ने अपना संदेश एक दूसरे पर जाहिर कर दिया—यह कैसी गजब की पिस्तौल है!!

इस तरह पर कि मानो कुछ हुआ ही नहीं है उस व्यक्ति ने अपनी पिस्तौल पुनः जेब मे डाल ली और धीरे धीरे कुछ गुनगुनाता हुआ आगे बढ चला। को-तून के मुँह से निकला, "जरूर वह 'भयानक चार' का कोई पहरेदार है।" सिग-ली बोला, "और वह पिस्तौल भी इन लोगो की वही प्रसिद्ध आटमिक पिस्तौल है। उसको काबू मे करना चाहिये।" को-तून ने जवाब दिया, "यही राय मेरी भी है, मगर यह कैसे मुमकिन होगा? उसकी वह भयानक पिस्तौल तो दम के दम मे हम दोनों का खातमा कर देगी!" सिग-ली ने यह सुन कहा, "मैंने एक तर्कीब सोची है, शायद उससे काम बन जाय।" दोनो आपुस मे कुछ देर तक सलाह बात करते रहे और तब दबे पाँव झाड़ी से निकल उसी तरफ को चल पड़े जिधर वह आदमी गया था।

ज्यादा दूर न गया होगा कि यकायक उस आदमी को अपने पीछे किसी की चीख की आवाज सुनाई पड़ी। वह चमक कर घूमा और तब उसे एक अजीब दृश्य दिखाई पड़ा। एक अजनबी जमीन पर गिरा छट-पटा रहा था और एक दूसरा व्यक्ति उसके ऊपर झुका कुछ कर रहा था। जरा देर तक तो वह खड़ा देखता रहा, इसके बाद तेजी से चल कर उसके पास आया और पूछने लगा, "क्या हुआ? यह आदमी इस तरह छटपटा क्यों रहा है और तुम लोग कौन हो?"

घबड़ाए हुए स्वर मे सिग-ली ने जवाब दिया, "बेचारे को सांप ने

जिसमे एक जगह छोटा सा जख्म हो कर उसमें से जरा सा खून बह रहा था। वह आदमी आगे बढ़ और पास आ झुक कर देखने लगा मगर उसी समय यकायक सिग-ली ने पीछे से उसके दोनो हाथ कस कर पकड लिए और जमीन पर पड़े हुए को-तून ने उठ कर जोर का एक घूंसा ऐसा उसकी गरदन पर जमाया कि वह च्योरा कर जमीन पर आ गिरा। देखते ही देखते दोनो ने उसकी मुश्कें कस डालीं और मुंह मे लत्ता ठूंस सब तरह से वेकाबू कर दिया।

इतना करके भी दोनो शान्त न हुए। को-तून ने तो उसकी तलाशी ले वह पिस्तौल तथा एक छूरा जो उसकी कमर में था निकाल लिया और इधर सिग-ली ने अपने कपड़ों के अन्दर छिपा हुआ छोटा औजारों का बक्स बाहर किया और उसमें से इन्जेक्शन देने की सूई और पिचकारी निकाल उसमे एक शीशी से कोई दवा भरी। यह दवा सूई द्वारा जबर्दस्ती उस वेचारे की बाह में चढा दी गई और तब सब चीजें ठिकाने रखता हुआ सिग-ली बोला, "अब इधर से तो निश्चिन्ती हुई। तीन चार दिन तक तो हजरत को होश न रहेगी, और इसके बाद भी अकल ठिकाने आते आते हफ्तो लग जायेंगे।"

और वास्तव में बात भी यही हुई। सूई द्वारा वह दवा बदन के अन्दर जाते ही उस आदमी का सब जोश काफूर हो गया। कहाँ तो वह इन लोगो की कैद से छूटने के लिए बेतरह जोर लगा और उछल कूद मचा रहा था, कहाँ एक दम सुस्त होकर पड गया। सिग-ली बोला, "अब इसके हाथ पांव खोल दो और किसी झाडी मे इस तरह से छिपा दो कि जंगली जानवरो से बचा रहे, तब सोचो कि आगे क्या किया जाय। जब तक यह पूरी तरह होश मे नही आ जाता उसी बीच में हमे कुछ कर गुजरना चाहिये।" मगर को-तून ने जवाब दिया, "सो पीछे किया जायगा, अभी एक दूसरा काम करो। मेरा इसका डीलडौल एक दम बराबर है और चेहरा मोहरा भी इससे कुछ कुछ मिलता जुलता है,

क्यों न मैं इसके कपड़े पहिन कर इसी का स्वरूप वन जाऊं !" सिग-ली कुछ सन्देह के साथ वोला, "उससे क्या फायदा होगा और कौन सा काम वनेगा ?" को-तून ने जवाव दिया, "तुम देखते तो रहो !"

सचमुच ही जिस समय उस आदमी की पूरी पौशाक पहिन और भौहों पर कुछ रंग रोगन लगा को-तून खड़ा हो गया, सिग-ली को मंजूर करना पड़ा कि वह वहुत कुछ उस पहरेदार जैसा ही मालूम होने लगा है। उसने खुशी खुशी को-तून के कपड़े उस वेहोश पहरेदार को पहिना दिये और तव एक कटीली झाड़ी मे ले जाकर उसे छिपा देने वाद दोनों वहाँ से आगे वढ़े, उस तरफ नही जिघर वह पहरेदार जा रहा था, बल्कि उघर जिघर से मेकंग के जल-प्रपात का रव उठ रहा था, आपुस में ये दोनो वड़े ही धीरे धीरे कुछ वातें भी करते जा रहे थे।

ज्यो ज्यों आगे वढ़ते जाते थे शोर भी वढ़ता जाता था, यहाँ तक कि प्रपात के पास पहुँच कर तो आपुस में वातें करना भी मुश्किल हो गया। जिस समय ये लोग एक टीले पर चढ़ते हुए उसकी चोटी के पास पहुँचे और वहाँ से मेकंग के प्रपात का पूरा दृश्य इनकी निगाहो में पड़ा दोनों कुछ देर के लिए ठगे से रह गये। ऐसा सुन्दर, ऐसा महान, एक दृश्य उनकी आँखो के सामने था कि मनुष्य उसका वर्णन नही कर सकता। एक विशाल नदी उछलती कूदती नाचती हुई आकर बीसों पुरसे नीचे गिरती और तव एक तंग रास्ते से होकर डर कर भागे हुए घोड़े की तरह दौड़ती हुई उनके सामने चली जा रही थी। जल की छोटी छोटी बूंदें बिगहों ऊपर तक फैल कर एक कोहरा सा सब तरफ फैलाये हुई थी जिन पर सूर्य की किरणों पड़ने से पचासों इन्द्र-धनुष बन और बिगड़ रहे थे।

को-तून मुग्ध दृष्टि से एकटक इस मनोरम दृश्य को देख रहा था कि यकायक सिग-ली ने उसका हाथ पकड़ कर दवाया और धीरे से खीच कर पीछे की एक झाड़ी की आड़ में कर लिया। को-तून ने इशारे से पूछा, "क्या बात है ?" उसने होठों पर उंगली रक्खी, और तब

नदी के किनारे की तरफ दिखाया। जरा गौर में ही को-तून की निगाह उस आदमी पर जा पड़ी जो पत्थर के एक बड़े ढोके पर बैठा अपने सामने की जमीन मे कुछ कर रहा था, और वह धीरे से बोला, "यह भी त्रि-कंटक का ही कोई आदमी जान पड़ता है, क्योंकि इसकी भी पोशाक वैसी ही है जैसी मैं इस वक्त पहिने हुआ हूँ।" सिग-ली बोला, "यही बात है, और इसी लिए मै सोचता हूँ कि अगर इसे भी कब्जे मे करके मैं इसकी सूरत बन सकूँ तो आगे का काम तुम्हारे इरादे के मुताबिक हम लोग बहुत खूबसूरती से कर पावेंगे।" को-तून कुछ देर चुप रहा इसके बाद बोला, "ऐसा होना कुछ मुश्किल नही है, तुम जैसे जैसे मै कहता हूँ वैसे वैसे झटपट कर तो डालो।"

जिस समय उस ढोके पर बैठे हुए आदमी ने अपने पीछे किसी तरह की आहट पा सर घुमा कर देखा, उसे एक अजीब तमाशा नजर आया। उसने देखा कि उन्ही के दल का एक आदमी, जिसके सिर पर खून से तर एक पट्टी बँधी है, और जिसकी ठुड्डी पर की दूसरी चौड़ी पट्टी ने उसके चेहरे का काफी हिस्सा छिपाया हुआ है, एक दूसरे आदमी को जो देखने मे कोई देहाती सा जान पडता है रस्सियों से बाँधे पीटता हुआ लिए आ रहा है। यह तमाशा देख वह अपनी जगह से उठ कर खड़ा हो गया बल्कि इनकी तरफ दस पाच कदम बढ कर बोला, "यह क्या तमाशा है नम्बर चौदह? तुम इस बेचारे को इस तरह मार क्यो रहे हो? क्या किया है इसने तुम्हारा? और हाँ तुम इस कदर जख्मी कैसे हो गये?"

हाँफते हाँफते और हाथ की छड़ी दो चार वार उस अभागे पर और चला कर नम्बर चौदह बोला, "इस कम्बख्त को बेचारा कहते हो! शैतान जासूस है जासूस, दुश्मन का जासूस है! मुझे जख्मी करके मेरी पिस्तौल छीन लेना चाहता था। लो इसे कब्जे में करो। मुझसे सम्हल नही रहा है क्योंकि खून जाने से मैं बहुत कमजोर हो गया हूँ, खड़ा रहना भी मेरे लिए मुश्किल हो रहा है। मगर होशियार रहना, कम्बख्त

कही भाग न निकले, शैतान के वदन मे ताकत बहुत है !" इस बात को सुनते ही कैदी का एक हाथ मजबूत थामता हुआ वह आदमी बोला, "नम्बर चौरासी के हाथ से छूट जाय ! मजाल है ?" वह इतना कह ही रहा था कि नम्बर चौदह ने दोनो हाथो से अपना सिर पकड़ा और एक 'आह' के साथ जमीन पर बैठते ही लोट गया।

मगर नम्बर चौरासी ने उसकी फिक्र न कर दूसरे हाथ से उस देहाती का चेहरा जो वह नीचे लटकाये हुए था उठा कर अपने सामने किया और गौर से उसकी सूरत देख कर कहा, "वेशक नम्बर चौदह का कहना ठीक है, यह देहाती नही और न श्यामी या चीनी ही है, यह तो जरूर कोई फ्रान्सीसी है और अगर मैं गलती नही करता......."

मगर इसके आगे उस धोखे में पड़े नौजवान के मुँह से कुछ निकल न सका, क्योकि उसी समय उस व्यक्ति ने जो कैदी की तरह उसके सामने खड़ा था झटका देकर अपना हाथ छुड़ा लिया और जोर से एक घूँसा उस पर चलाया। औचक की चोट बहुत करारी लगी जिसने उसका सिर घुमा दिया। सम्हलने की कोशिश कर ही रहा था कि जमीन पर पड़े व्यक्ति ने उसके दोनो पैर थाम कर झटका दिया, सामने वाले ने भी हाथ बटाया और नतीजा यह हुआ कि देखते देखते वह जमीन पर आ गिरा। वही तर्कीव जो उस पहिले पहरेदार के साथ की गई थी इसके साथ भी की गई अर्थात् सूई से कोई दवा उसके बदन में चढा वह वेहोश कर दिया गया और तब दोनो आदमी उसे घसीट कर झाडियो की आड में ले गये जहां उसके कपडो की तलाशी ले कर इन्होने कई चीजें निकाल अपने कब्जे में करी, इसके बाद दोनों मे बातें होने लगी। पाठक तो समझ ही गये होगे कि यह दोनों और कोई नही का-तू न और सिग-ली ही थे।

सिग-ली कुछ देर तक वेहोश आदमी का चेहरा देखता रहा, तब सिर हिला कर बोला, "उहुँक, मेरी इसकी सूरत जरा नही मिलती। वह इरादा हम लोगों का पूरा नही उतर सकता।"

को-तून बोला, "हाँ डील-डौल और चेहरे-मोहरे दोनों ही मे फर्क है, मगर फिर भी काम चलाऊ तो हो ही सकता है।"

सिग-ली०। काम चलाऊ? इसकी दाढी नही देखते? महीनों मैं दाढ़ी न घुटाऊं तो भी शायद इतने बड़े बड़े बाल मेरी ठुड्डी पर न इकट्ठे होंगे और उगेंगे भी तो मेरे बाल शायद भूरे ही निकलें जब कि इस कम्बख्त के एक दम काले हैं!

को-तून अपने कपडो मे मे कोई चीज निकालता हुआ बोला, "थोड़ा देर बाद तुम ऐसा न कहोगे।"

वह एक छोटी पोटली थी जिसमें भेष बदलने के तरह तरह के सामान जैसे अकसर थियेटरो मे पार्ट करने वाले ऐक्टरो के काम मे आते है, दाढी मोछ बाल रग आदि आदि थे। इनमे से चुनकर एक दाढ़ी और मोछ कोतून ने अलग की और उसको काट छाट कर उसकी शकल ठीक वैसी ही बनाई जैसी उस बेहोश आदमी के दाढी और मोछ की थी, तब सिग-ली की तरफ देख के बोला, "अच्छा अब तुम चुपचाप आकर मेरे सामने बैठ तो जाओ! पन्द्रह मिनट के बाद मैं तुमसे पूछूंगा कि अब तुम्हारी सूरत कैसी है?"

(४)

अनगिनती वायुयान परा बांधे कुछ कुछ पश्चिम झुकते हुए दक्खिन की ओर चले जा रहे है। समय आधी रात का है।

इनकी संख्या क्या होगी कुछ कहा नही जा सकता क्योकि बीस बीस के झुण्ड मे तीर की सी शकल बनाए इनके गरोह आस्मान पर जहाँ तक निगाह जाती है फैले हुए हैं और फीके चन्द्रमा की रोशनी में पड़ती हुई इनकी छाया इनके नीचे पडने वाले बादलो पर गिर कर एक डरावनी आशंका पैदा कर रही है, पर इतना हम जानते हैं कि ये जापान के हैं और किसी खास मतलब से, जो बहुत ही गुप्त रक्खा गया है, उस ओर जा रहे हैं जिधर फ्रेन्च-इण्डो-चायना को राजधानो सैगन भी पड़ता है

तथा श्याम की राजधानी बैंकक भी, अथवा जिधर ही अंग्रेज सरकार की नई मोरचाबन्दी अर्थात् सिंगापूर का किला भी है और मलय आस्ट्रेलिया तथा फिलीपाइन्स आदि द्वीप-पुञ्ज भी। इन सब स्थानों में से कौन इस भयानक दल का लक्ष्य है कुछ कहा नहीं जा सकता क्योंकि इस बात का पता सिवाय जापान के बहुत ही ऊंचे फौजी अफसरों या स्वयं सम्राट को छोड़ किसी गैर को नहीं है, उन छोटे अफसरों को भी नहीं जिनके हाथ बीस बीस के एक एक झुण्ड का नेतृत्व है। पर हां इन सभों के बीच में चलने वाले उस बहुत बड़े वायुयान पर बैठे हुए कुछ अफसरों को जरूर यह बात मालूम है जिनके हाथ में इन कई सौ वायुयानों का पूरा भार है। हमें भी इस समय इसी एक वायुयान और इस पर सवार लोगों से ही मतलब है अस्तु औरों की फिक्र छोड़ हम इसी पर पहुँचते हैं।

यह वायुवान जो बहुत ही बड़ा है, इस लायक है कि इस पर पचास साठ आदमी आराम से सफर कर सकें। इसकी भीतरी सजावट, रहने बैठने सोने और काम करने के कमरों की कैफियत तथा साधारण व्यवस्था देख कर यकायक यह अनुमान नहीं हो सकता कि यह फौजी काम में भी आ सकता होगा, पर हम खूब जानते हैं कि इस पर भी युद्ध करने और आग बरसाने का प्रबन्ध ठीक उसी तरह पर है जैसा बाकी के वायुयानों पर। बमों, मशीनगनों और दो तथा तीन इञ्च वाली तोपों से यह भी अच्छी तरह सुसज्जित है पर खैर, हमें इस झगड़े से कोई मतलब नहीं, हम तो यहां इस समय उन तीन चार आदमियों की बातें सुनना चाहते हैं जिनकी भड़कीली पोशाकें उनके जापानी हवाई सेना के ऊंचे अफसर होने की सूचना दे रही हैं।

दीवार पर टंगे एक नकशे के सामने तीन आदमी कुर्सियों पर बैठे हैं और एक आदमी उनके पीछे खड़ा होकर एक लम्बी पतली छड़ी की सहायता से नकशे के विभिन्न स्थानों को छूता हुआ कह रहा है—

"बैरन मिन्चुको, यह देखिए वह 'तुं-ली-सप' झील है जिसके किनारे

तक 'मंगर-सि' आ पहुंचा है और यह देखिये मेकांग का वह प्रपात है जहाँ त्रि-कंटक का अड्डा बताया जाता है। हम लोग इस समय यह देखिये इस जगह के आस पास है। जैसे ही चीन देश की सीमा हमने पार की हमारे भिन्न भिन्न दलों को अलग अलग हो जाना पड़ेगा अस्तु अब आप निश्चय कर कर लीजिए कि कैसे क्या करना उचित होगा।"

बैरन मिन्चुको०। हम लोगो का निश्चय ठीक है। जो कुछ सोचा जा चुका उसमे अदल बदल करने की कोई जरूरत नही। क्यों एडमिरल ओसाका ?

एडमिरल ओसाका०। जी हा बैरन, (अपने बगल वाले की तरफ देख कर) क्यो एडमिरल सिचू ?"

एडमिरल सिचू०। जी हां ठीक है, लेकिन मेरी समझ मे अब हमें सब दलो को उनका काम बता देना चाहिए।

बैरन मिन्चुको०। लिफाफे मे बन्द आर्डर तो सभों के पास मौजूद ही है और सब यह भी जानते है कि चीन देश की सीमा पार करते ही उन आर्डरों को पढ उनके मुताबिक काम करना होगा, मगर तो भी जुबानी भी कह देना अगर आप जरूरी समझते है तो कहिए वैसा ही किया जाय।

सिचू०। मैं तो समझता हूँ कह देना हो मुनासिब है ताकि किसी को भ्रम न रह जाय।

ओसाका०। इस जगह मैं आपकी राय से इत्तफाक नही करता। मेरी समझ मे अगर हम लोग कोई भी बात बेतार की तार से करेंगे तो दुष्ट त्रि-कंटक के भेदिये चट उसे पकड लेंगे और उसके प्रतिकार का उपाय करने लगेंगे, अस्तु इस तरह पर कुछ आदेश देना मुनासिब नही।

सिचू०। (सिर हिला कर) नही नही, भला हमारे कोड को दुश्मन कैसे समझेगा और मान लें कि समझ भी जाय तो अभी नही तो घण्टे भर बाद जहा हमने सीमा पार की और इन वायुयानो के आठ दल हुए तथा उन दलों ने यही ढंग भी अख्तियार किया जो मुहर बन्द आर्डरो

में उन्हें मिल चुका है, तहाँ तो दुश्मन पर हमारी सब कारंवाई जाहिर हो ही जायगी, अस्तु इसका डर करना वेकार है। सब अफसरों को अभी से ही होशियार कर देना मुनासिब है।

दोनो एडमिरल वैरन मिन्चुको का मुँह देखने लगे जो कुछ विचार कर बोले, "चूँकि हम लोग प्रारम्भ से ही यह निश्चय किये हुए हैं कि हमारे दल के किसी भी उड़ाके को सीमा पार करने के पहिले तक यह पता न रहना चाहिए कि हमारा धावा किस पर हो रहा है और उसी मुताबिक अब तक सब काम हुआ भी है अर्थात् सिवाय हम तीन चार आदमियो के और किसी को भी मालूम नही है कि किधर जाना या क्या करना है अतएव थोड़ा और ठहर जाने में कोई हानि नहीं। घण्टे सवा घण्टे का मामला ही और रह गया है। चीन देश की सीमा पार करते ही वेतार की तार से सभों को सूचना दे दी जायगी और तब तक हमारे आठों हवाई अफसर भी अपने अपने लिफाफे फाड़ कर किसे क्या करना है सो जान जायँगे। हाँ इस बीच में हमे यह जरूर निश्चय कर लेना चाहिए.......मगर हैं, यह क्या ?"

वैरन को अपना वायुयान यकायक कुछ काँपता हुआ सा जान पड़ा और उसके इंजिनों की आवाज में भी कुछ फर्क सा पड़ता सुन पड़ा। बाकी सब आदमियो का भी ध्यान उधर ही को चला गया। पहिले तो कोई साधारण बात समझ किसी ने कुछ चिन्ता न की, पर जब उन्होने एक एक कर के वायुयान के कई इंजिनो को बन्द होते सुना तो आशंका बढी और वैरन ने अपने पीछे खड़े व्यक्ति से कहा, "मेजर वासू, जरा देखो तो क्या मामला है ?"

मगर मेजर वासू अपनी जगह से हिल भी न पाए थे कि यकायक फट से एक तेज आवाज हुई और कोई चीज वायुयान की दीवार को फोड़ती हुई आकर इन सभो के बीच में गिरी। पहिले तो बन्दूक की गोली और दुश्मन का ख्याल हुआ, पर सो न था। आने वाली चीज कोई

अजीब ही वस्तु नजर पड़ी। जिस तरह लड़कों के छोड़ने की आतिशबाजी का मुर्रा पटाका या जलेबी आदि होता है इसी तरह की यह कोई छोटी सी चीज थी जो फर्श पर गिरने के साथ ही जल उठी, केवल जल ही नहीं उठी बल्कि फुलझड़ी की तरह आग की फुहारें फेंकती हुई इधर से उधर छटकने और उछलने भी लगी !

बैरन मिन्चुको आश्चर्य से बोले, "यह क्या तमाशा है और कहाँ से आया ?" पर ए० मिरल सिचू जिनके मन मे फौरन ही एक दूसरा खयाल आ घुसा था फुर्ती से उठे और उन्होने उस फुलझड़ी पर अपना बूट रख कर उसको बुझा देना चाहा पर वह इतनी तेजी से उछल कूद मचा और इधर से उधर छटक रही थी कि ऐसा करने मे उन्हें कुछ देर के बाद ही सफलता मिली। फिर भी जब उन्होने जूते से दबा उस चीज को बुझा दिया तो हाथ मे उठा लिया और सभो को दिखाते हुए बोले, "अजीब चीज है ! मगर यह आई यहाँ कैसे ?"

उस चीज को देखने और कैसे वह आई इस पर आश्चर्य करने में ही इन लोगो ने कई कीमती सेकेण्ड बरबाद कर दिये और इसी बीच में उसमे से निकली हुई कारी गैस केवल उस कमरे भर में फैल ही नहीं गई बल्कि उसने अपना काम भी बड़ी ही तेजी से पूरा कर डाला। यहाँ मौजूद चारों ही आदमियों की नाक में वह गैस गई और नतीजा यह हुआ कि कोई भी फिर दो चार साँस से ज्यादा ले न सका। उस फुलझड़ी के आकर गिरने के दो तीन मिनट बाद ये चारों ही बेहोश होकर अपनी अपनी जगह पर पड़ गये थे।

उधर इस वायुयान के अन्य कर्मचारी भी एक दूसरी ही मुसीबत मे पड़े हुए थे जिस कारण किसी का भी ध्यान इस ओर जा ही न पाया था। एक एक करके वायुयान के चार इंजिन अब तक बंद हो चुके थे और बाकी के दोनों भी कुछ रुकावट के साथ चल रहे थे। ऐसा क्यों हुआ इसी बात की जाँच करने मे इस समय इस यान के सब इंजिनियर मिस्त्री और अफसर

लग रहे थे, क्योंकि केवल दो बचे हुए इञ्जिनों से इतने बड़े वायुयान को अपनी इच्छानुसार चलाना कठिन था। यद्यपि गिर जाने की आशंका तो न थी, पर चालमें बहुत बड़ी कमी आ गई थी और डर यह था कि अगर और एक इञ्जिन बन्द हो गया तो मजबूरन जहाज को नीचे उतारना ही पड़ेगा यह वायुयान इस ढंग का बना हुआ था कि हवा मे उड़ते हुए ही इसके हर एक इञ्जिन की सफाई और मरम्मत हो सकती थी, अस्तु कई होशियार इञ्जिनियर इञ्जिनो को ठीक करने की फिक्र मे पड़े और कई मिस्त्री इस फिक्र मे कि बचे हुए इञ्जिन बिगड़ने न पावें। यही सबब था कि उधर अफसरों के कमरे मे क्या हो गया इसकी तरफ ध्यान देने की किसी को सुध ही न रह गई। हाँ, कुछ देर के बाद जब होश-हवाश कुछ ठिकाने आया तो चीफ इञ्जिनियर के हुक्म से एक आदमी इस मामले की खबर देने उधर गया, पर उस कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द पा कर यह समझ वापस लौट आया कि शायद बैरन अपने साथी दोनों एडमिरलों से कोई गूढ़ सलाह मशविरा कर रहे हों और इस समय छेड़ने से नाराज हों! चूँकि फिलहाल कोई खतरे की सम्भावना जान भी न पड़ती थी इससे किसी ने इस पर ज्यादा ध्यान भी नही दिया और सब के सब अपने काम में लगे रहे। वह कोठरी जिसमें बैरन और उसके तीनों साथी बेहोश पड़े हुए थे इस लम्बे चौड़े वायुयान के एकदम पिछले हिस्से में पड़ती थी और इंजिन एकदम आगे की तरफ, इस तरह इन दोनों स्थानों के बीच में काफी लम्बा फासला था।

यकायक वायुयान के इस हिस्से को एक हलका सा झटका लगा, मानों कोई बोझ उस पर आकर गिरा हो, और साथ ही उसके बगल वाली एक खिड़की पर कुछ अंधेरा सा पड़ा। बाहर के आकाश मे चमकते हुए तारे थोड़ी देर के लिए छिप गये मगर फिर तुरत ही प्रकट हो गए और अब उस जगह एक आदमी जो सिर से पैर तक काले कपड़ों से ढंका हुआ था खड़ा दिखाई पड़ा। अवश्य ही यह उस खिड़की की राह

भीतर आया था, पर इस वायुयान पर वह कैसे आ पहुंचा यह हम कुछ नहीं कह सकते, क्योंकि इसमे तो कोई शक नही कि यह इस वायुयान पर के आदमियों मे से नहीं है।

कमरे मे पहुँचते ही यह आदमी सीधा दरवाजे की तरफ गया जिसे भीतर से बन्द पा इसने सन्तोष की साँस ली। तब स्विच की तरफ बढा और कमरे मे बलने वाले कई बिजली के लट्टुओं में से सबको बुझा केवल एक कमती रोशनी वाला ही बलता रहने दिया। इतना कर वह उन चारों बेहोश आदमियों की तरफ बढ़ा और उनकी अच्छी तरह जाँच कर यह निश्चय कर लिया कि वे पूरी तरह से बेसुध हैं।

इस तरफ से अपनी निश्चिन्ती कर वह आदमी पुनः खिड़की के पास गया। उसमे से झांक कर उसने एक बार ऊपर नीचे तथा चारों ओर देखा शेष वायुयानो का परा अपनी उसी चाल से बढता चला जा रहा था, केवल यही वायुयान अपने इञ्जिनों की खराबी के कारण कुछ पिछड़ गया था तथा कुछ नीचे भी उतर आया था। यद्यपि अंधेरे के सबब ठीक ठीक कुछ जानना कठिन था फिर भी अन्दाज से पता लगता था कि इस वायुयान पर के किसी भी व्यक्ति को उस मुसीबत की कोई खबर नहीं है जो इस मुहिम के मुख्य और प्रधान अधिकारियो पर आ पड़ी है। चारों तरफ जहाँ तक निगाह जाती थी, यद्यपि साफ साफ तो कुछ नही दिखता था फिर भी इञ्जिनो की आवाजें बता रही थी कि सब तरफ वायुयान ही उडते जा रहे हैं और इस यान के आगे वाले हिस्से से आने वाली खटपट की आवाजें बता रही थी कि इस यान के इञ्जिनियर लोग अभी भी अपने इञ्जिनों की मरम्मत मे लगे हुए है।

उस आदमी ने अब अपने कपड़ों के अन्दर से एक बड़ी सी डिबिया निकाली, अजीब ढंग की, जिसके ढकने पर एक छोटा सा चोगा बना हुआ था तथा पतली तार के साथ एक छोटी सी चीज लटक रही थी जो देखने मे किसी शीशी के काग की तरह जान पड़ती थी। इस काग को

उसने अपने कान में लगा लिया और तब चोगे मे मुंह सटा उसमे धीरे से कहा, "अपना काम खूब सुन्दरता से हुआ है। बैरन और उनके तीनों साथी बेहोश पड़े हैं और यान पर के किसी अन्य व्यक्ति को इस घटना की कोई भी खबर नही।"

न जाने कहां से उसके कान मे जवाब मिला, "पहुच गये उस पर? मैं तो डर ही रहा था! किसी को तुम्हारे आने की खबर तो नही लगी?" इसने जवाब दिया, "ऐसा मालूम तो नही पड़ता, फिर भी यहां ज्यादा देर लगाना मुनासिब नहीं।" जवाब आया, "कोई जरूरत है भी नहीं। तुम फुर्ती-फुर्ती वही कर डालो जो तय हो चुका है। अफसरों वाले कमरे की पश्चिमी दीवाल के साथ एक टेलीफोन होगा। उसके जरिये, अपनी आवाज जरा भारी करके, जापानी भाषा में बोलो कि 'तुंग-नाशी' को बैरन साहब बुलाते हैं। यह 'तुंग-नाशी' इस यान पर का कम्यूनिकेशन अफसर और हमारा खास आदमी है। इसकी ठुड्डी के बाईं तरफ एक चिपटा सा काला मस्सा है, उसी से इसको पहिचान लेना और इसी के जरिये वह काम लेना जो हम लोगो मे तय चुका है।" "बहुत खूब" कह उस आदमी ने डाट कान से निकाल डिबिया बन्द कर फिर कपड़ों के अन्दर छिपा ली और तब खिड़की के पास से हट कर कमरे की पश्चिमी दीवार के पास गया। सचमुच ही यहां एक टेलीफोन टंगा हुआ था जिसके चोंगे मे मुंह लगा कर भारी आवाज मे जापानी भाषा मे उसने कुछ कहा।

कुछ ही देर बाद दरवाजे के बाहर किसी के पहुंचने की आहट लगी और दर्वाजे पर धक्का पड़ा। इस आदमी ने अपनी सूरत कपड़ों से और भी अच्छी तरह ढांक ली और तब दर्वाजे को जरा सा खोल भारी आवाज मे पूछा, "कौन है?" जवाब आया, "मैं हूँ, तुंग-नाशी, क्या हुजूर ने बुलाया है?" इसने कहा, "हां, भीतर आ जाओ।" और जब वह आदमी भीतर आ गया तो दर्वाजा पुनः बन्द कर लिया।

आने वाला एक नौजवान खूबसूरत सा आदमी था। कमरे में घुसते

ही उसने एक तेज निगाह अपने सामने वाले आदमी पर डाली और तब दूसरी निगाह मे कमरे की हालत देख डाली। पर सब कुछ देख के भी वह चुपचाप दर्वाजे के पास खड़ा रहा।

उस आदमी ने कहा, "तुम्हारा ही नाम 'तुंग-नाशी' है ? देखो इस चीज को पहिचानते हो ?" कोई चीज उसने क्षण भर के लिए उसकी आँखों के सामने की जिसे देखते ही 'तुंग-नाशी' ने हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और तब बोला, "जो कुछ हुक्म हो मैं बजा लाने को तैयार हूँ।" वह आदमी बोला, "अच्छा इधर आ जाओ और जो कुछ मैं पूछता हूँ पहिले उसका जवाब दो।"

"जो हुक्म" कह वह आदमी कमरे के और भीतर आ गया तथा उसके पीछे दर्वाजा बन्द करने के बाद उस अजनबी ने पूछा, "सब से पहिले तो तुम यह बताओ कि क्या किसी को इस घटना की खबर है जो तुम यहाँ देख रहे हो ?"

तुंग-नाशी०। (सिर हिला कर) जी कुछ भी नहीं। सब लोगों का ध्यान इन्जिनो की तरफ लगा रहने से इधर क्या कुछ हो गया कोई जरा भी जानता नही।

अजनबी०। ठीक है, अच्छा वायुयान इस मुहिम पर कुल कितने आये हैं ?

तुंग-नाशी०। कुल पौने चार सौ रवाना हुए थे। उनमें से दो सौ के करीब तो रास्ते से ही अलग हो गये, किधर गये या किस लिए गए कुछ कह नहीं सकता। बाकी के बीस बीस के आठ ग्रुपों मे एक सौ साठ यान आठ अफसरों की मातहती मे हमारे साथ चल रहे हैं जिनके नेता ये ही दोनो एडमिरल है और इन एडमिरलो को वार-सेक्रेटरी बैरन मिचुको के कथनानुसार चलना पड रहा है।

अजनबी०। उन आठो अफसरों को मालूम है कि किधर जाना या क्या करना है ?"

तुंग-नाशी० । कुछ ठीक ठीक नहीं, चाहे अनुमान भले ही लगाते रहे हों। सभों को 'सील्ड आर्डर्स' मिले हैं। चीनी सीमा पार करने के बाद वे लोग मोहर तोड़ उन आर्डरों को पढ़ेंगे और तब उसमे लिखे मुताबिक कार्रवाई करेंगे।

अजनबी० । ठीक है, अच्छा तुम्हें कुछ मालूम है कि इन लोगों का क्या करने का इरादा है ?

तुंग-नाशी० । जी, कुछ थोड़ा बहुत बैरन और दोनों एडमिरलों की बातचीत से जान सका हूँ।

अज० । क्या ?

तुंग० । बीस बीस के आठों ग्रूपों में से दो ग्रूप तो सीमा पर ही कहीं रुक जायेंगे, बाद में जहाँ जैसी जरूरत जान पड़ेगी वैसा करने के लिए। बाकी छहों मे से दो मेकंग के प्रपात की ओर जायेगे, दो तुं-ली-सप की तरफ, और दो सीधे सैगन।

अज० । और ये तीनो ग्रूप क्या क्या काम करेंग ?

तुंग० । मंगर-सि की सेना को नष्ट कर देंगे, प्रपात पर बम बरसा कर 'सांता-पू' का बांध तोड़ देंगे, और सैगन की वैकक के वायुयानो से रक्षा करेंगे।

अज० । जो दो ग्रूप पीछे रह जायेंगे उन्हें क्या आर्डर मिला है ?

तुंग० । उनके आर्डरो में शायद यह लिखा है कि सीमा पर रुक जाओ और बैरन मिन्चुको जैसा हुक्म दें वैसा करो।

अज० । सीमा पर अब हम लोग कितनी देर में पहुँच जायेंगे ?

तुंग० । लगभग आधे घन्टे में। इस यान के इंजिन खराब हो जाने से हमारी चाल जरा कम हो गई है नही तो और भी कमती में।

अजनबी ने फिर कुछ न पूछा और थोड़ी देर तक न जाने क्या सोचता रहा, तब तुंग नाशी से बोला, "वायुयानों को कोई हुक्म देना हो तो बैरन खुद देते हैं या तुम्हारे जरिये जाता है ?"

तुंग० । वे मुझसे कहते हैं और मैं सभों को वेतार की तार से सुना देता हूँ ।

अज० । वैरन के हाथ मे कहाँ तक ताकत है ? वे अगर चाहे तो उन 'सील्ड यार्डर्स' के खिलाफ भी इन वायुयानो से काम ले सकते हैं ?

तुंग० । हाँ, उन्हे सब अधिकार है ।

अज० । ठीक है, ऐसा ही हम लोगों ने भी सुना था । अच्छा तो तुंग-नाशी, अब तुम एक काम करो ।

तुंग० । (हाथ जोड़ कर) आज्ञा ?

अजनबी थोडा तुंग-नाशी के पास बढ़ गया और धीरे धीरे कुछ कहने लगा ।

× × ×

जिस समय वैरन मिञ्चुको होश मे आए उन्होने अपने को अजीब हालत मे पाया ।

एक छोटी-सी कोठरी मे जो रंग ढंग से किसी वायुयान का कमरा जान पड़ती थी, वे एक तंग कुरसी पर बैठाये हुए थे और उनके हाथ और पैर उस कुरसी की बाँहों और टाँगों के साथ चमड़े के तस्मो से कसे हुए थे । उनके सामने एक लम्बा चौड़ा जवान खड़ा हुआ गहरी निगाहों से उन्हे देख रहा था जो वास्तव में वही अजनबी था जिसे पाठक अभी थोड़ी देर पहिले देख चुके हैं ।

अपनी यह हालत देख वैरन को बड़ा ही आश्चर्य और उससे भी अधिक क्रोध मालूम हुआ और उन्होने यह देखने के लिए अपनी आँखें इधर उधर घुमाईं कि वे अकेले ही इस तरह पर कैद हैं या और कोई भी है । अपने बगल ही मे उन्हें अपने दोनों साथी एडमिरल ओसाका और एडमिरल सिंचू भी उसी तरह बँधे नजर आए और पीछे की तरफ की दो कुरसियों पर उन्होंने मेजर वासू और कार्नल तुंग-नाशी को भी वैसे ही बँधा हुआ पाया । इन सभी आदमियों को उस जगह अपनी ही

तरह बेबस और मजबूर था उनका माथा घूम गया और वे कुछ भी समझ न सके कि यह क्या हो गया है।

इनको ताज्जुब के साथ इधर उधर देखते था वह अजनबी कुछ मुस्कुरा कर बोला, "बैरन मिन्चुको, आपको अपनी और अपने दोस्तों की हालत देख जरूर ताज्जुब हो रहा होगा, पर मैं बहुत थोड़े में आपके ताज्जुब को दूर कर सकता हूँ। आप इतने ही मे सब मामला समझ जायेंगे कि इस समय आप लोग 'त्रि-कंटक' की कैद में और उसी के एक 'अलोपी' वायुयान पर हैं।"

वैरन के मुंह से आश्चर्य के साथ निकला—"है, त्रि-कटक की कैद में! मगर सो कैसे सम्भव हुआ?" नौजवान बोला, "हम लोग आपको आपके वायुयान पर से पकड़ लाये हैं।"

अविश्वास के साथ वैरन बोले, "ऐसा नही हो सकता! सैकड़ों वायुयानो के बीच में मेरा वायुयान था, उस पर से......"

नौजवान हँसा, तब बोला, "आपको त्रि-कटक की ताकत का थोड़ा नमूना दिखाने के लिए ही ऐसा किया गया है। पर खैर, ये बातें तो पीछे होगी। इस समय आप जल्दी से जल्दी यह निश्चय करके मुझे बताइये कि आप किस शर्त पर 'त्रि-कंटक' के साथ सुलह करने को तैयार है?"

वैरन०। त्रि-कंटक के साथ सुलह?

नौज०। जी हाँ, त्रि-कंटक के साथ सुलह!

वैरन०। त्रि-कंटक के साथ हमारा झगड़ा ही क्या और सुलह ही कैसी?

नौज०। अगर झगड़ा नही था तो आपने अपने वायुयान उसके अड्डे पर बम बरसाने के लिए क्यो भेजे हैं?

वैरन यह सुन चुप रह गये, कुछ बोले नही। नौजवान जरा देर राह देख कर फिर बोला, "चूँकि इस समय वक्त इतना नही है कि आपके साथ विस्तार से बातें की जायँ, इसलिए मैं थोड़े मे सब मामला

आपसे कहे देता हूँ। आप जिन वायुयानों के साथ आये थे उनमे से कुछ तो 'मेकंग' की तरफ गये और कुछ 'तु-लो-सप' की तरफ। त्रि-कटक और मंगर-सि अपनी हिफाजत आप करने मे समर्थ हैं, पर मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपने जो अपने वायुयानों के चार गरोहों को सैगन, हांग-कांग, सिंगापूर और फिलिपाइन पर बम बरसाने को भेज दिया है वह क्यों? इन बेचारे स्थानो ने आपके साथ क्या दुश्मनी की थी जो आप उन्हे छार-छार करने पर तुल गये ?

वैरन०। (घबडा कर) सैगन, हांग-कांग, सिंगापूर और फिलिपाइन पर बम! कभी नही, मैंने कोई हुक्म नही दिया!!

नौज०। (अपनी बात पर जोर दे कर) बेशक आपने यही हुक्म दिया है। अगर आपको विश्वास न हो तो आप अपने सहायकों से पूछ देखें।

वैरन ने आश्चर्य से अपने साथियों की तरफ गरदन घुमाई। पीछे से 'तुंग-नाशी' इस पर बोल पड़ा, "जी हाँ वैरन, आपने टेलीफोन मे यही हुक्म मुझे दिया और मैंने भिन्न-भिन्न ग्रुपों को सुना कर उन्हें उधर ही को रवाना कर दिया।"

वैरन तड़प कर बोले, "कभी नही, हरगिज नही, मैंने ऐसा कोई हुक्म नही दिया और न ऐसा करने का हम लोगों का कोई इरादा ही था!"

नौज०। खैर मुमकिन है। आपने न दिया हो, पर आपकी तरफ से ऐसा हुक्म आपके मातहतों को मिला और वे अपना खूनी काम करने को रवाना हो चुके हैं। अब यह समझ कर कि बहुत जल्दी ही इन स्थानो पर बम बरसने शुरू हो जायेंगे, आप बताइये कि क्या कहते हैं? क्या आप इस बात को सोच सकते हैं कि एक साथ ही फ्रांस, इंगलैण्ड, और अमेरिका को नाराज करके जापान कहाँ का रह जायगा! क्या इन महा-देशो को भी आपने चीन या श्याम समझ रक्खा है?"

वैरन खिजला कर बोले, "अजी मैंने ऐसा कोई हुक्म दिया ही नही!!" पर नौजवान जवाब में केवल जरा मुस्कुरा दिया, तब अपनी जगह से

कुछ हट के उसने कोठरी के फर्श में लगे एक बटन को पैर से दबा दिया। एक खटके की आवाज हुई और इन सभों के नीचे की तरफ का काठ का एक पल्ला हट कर वहाँ एक खिड़की सी नजर आने लगी जिसमें से नीचे का आकाश दिख रहा था। सभों की निगाहें उसी तरफ चली गईं और सभों ने देखा कि नीचे लहराता हुआ समुद्र है जिससे करीब पाँच हजार फिट ऊंचे पर से उनका यह वायुयान भयानक तेजी के साथ उड़ा जा रहा है। दूर की एक धुंधली चीज की तरफ उंगली उठा कर नौजवान बोला, "वह देखिये फिलाइन द्वीप पुञ्ज, पहिचानते हैं आप उसे ? अच्छा अब उधर देखिये, उस बादल के टुकड़े के पीछे, आपके वायुयान परा बाँधे चले जा रहे हैं। अगर जो आर्डर उन्हे दे चुके हैं वह आपने वापस न लिया तो आधे घंटे के अन्दर ये बम बरसाना शुरू कर देंगे। तब क्या होगा इसे शान्त चित्त से थोड़ा सोचिए।"

जरा रुक कर नौजवान फिर बोला, "मुझे अफसोस है कि हम लोग सिंगापूर से दूर निकल आये हैं नही तो वहाँ पर के भी कुछ कुछ ऐसे ही दृश्य को मैं आपको दिखा देता, हाँ अगर आपको विश्वास न होता हो तो कहिए मैं आपको वही ले चलूं और वहाँ की कैफियत दिखाऊं !"

एडमिरल सिचू ने धीरे से कहा, "वह टापू फिलिपाइन है इसमें तो कोई सन्देह नहीं !" एडमिरल ओसाका वैसे ही धीरे से बोले, "और वह ग्रुप भी हमारे ही वायुयानो का है !" बैरन मिन्चुको ने परेशानी से कहा, "पर इन्हें फिलिपाइन्स पर बम बरसाने को कहा किसने ?" पीछे से मेजर वासू बोल उठे, "कौन जाने यह भी इन्ही कम्बख्तों की कोई शैतानी हो लेकिन यह बात बहुत बुरी होना चाहती है ! अमेरिका से ऐसे हीं हमारी तनातनी चल रही थी, अब तो आफत ही होना चाहती है !"

नौजवान बोला, "अब बहस करने का मौका नहीं है महाशयों, या तो आप एक साथ ही फ्रान्स इंगलैंड और अमेरिका से युद्ध मोल लेने को तैयार हो जाइये, और या फिर 'त्रि-कंटक' से सन्धि कीजिये।"

बैरन कुछ बिगड़ कर बोले, "त्रि-कंटक से इस वक्त संधि कर लेने से ही क्या होगा ?" नौजवान बोला, "उस हालत मे मैं आपको यह मौका दूँगा कि आप अपने इन सब दलों को यह आफत लाने से रोक सकें जो वे बहुत जल्दी ही लाया चाहते हैं !"

बैरन जल्दी से बोले, "क्या मेरा हुक्म मेरे मातहतों तक पहुँच सकेगा ?" नौजवान ने जवाब दिया, "बखूबी !" बैरन ने अपने साथियों से आँखें मिलाईं, तब एक ठंढी साँस भर कर बोले, "अच्छा नौजवान, बोलो, 'त्रि-कंटक' क्या चाहता है ?"

नौजवान० । अपने लिए वह कुछ भी नहीं चाहता, पर अपने एक आश्रित और दोस्त के लिए वह जरूर कुछ चाहता है ।

बैरन० । क्या ? किसके लिये ?

नौजवान० । श्याम देश के नये राजा 'मगर-सि' से वह चाहता है कि जापान की सुलह हो जाय । दोनों एक दूसरे के दुश्मन नहीं बल्कि सहायक बनें और एक दूसरे की सहायता से अपना-अपना राज्य विस्तार करें ।

बैरन० । फ्रान्स से बिना झगड़ा किये जापान ऐसा कैसे कर सकता है ?

नौजवान० । फ्रान्स ने आपको 'हैनान' का टापू दिया है । मैं आपको श्याम के दक्षिणी अन्तरीप मे से एक नहर बनाने की इजाजत देता हूँ । सिंगोरा और पालियन के बीच की समस्त भूमि अगर सौ वर्ष के लिए ठीके पर आपको जो आप चाहे करने के लिए मिल जाय तो क्या आप श्याम से सुलह करने को तैयार हैं ? बोलिए ?

बैरन चमक उठे, उनके साथी भी चिहुँक गए । नौजवान ने एक ऐसी बात कह दी थी जिसका विचार जापानी अधिकारी-गण कभी कभी लालच के साथ किया करते थे । अंगरेजों के सिंगापुर को मजबूत कर लेने से जापान को जो कुछ भी अंडस होती थी वह बिल्कुल दूर हो जा सकती

थो अगर श्यामी अंतरीप में से एक नहर खुल जा सके, अवश्य ही जापान के प्रभाव क्षेत्र में। इसके सुफल का अन्त नही था।

सोच विचार में ज्यादा वक्त बरबाद करने की बैरन की आदत न थी। कुछ ही सेकेण्डो के बाद वे बोले, "नौजवान, क्या तुम खूब सोच समझ के यह बात कह रहे हो?" नौजवान ने छाती पर हाथ रख के कहा, "खूब अच्छी तरह!" बैरन बोले, "तो इस शर्त पर मैं 'मगर-सि' से सुलह कर लेने को तैयार हूँ। अगर श्याम अपने दक्षिणी अन्तरीप में से एक नहर काट लेने लायक भूमि हमे दे दे तो फिर उसे जापान से डरने की कोई जरूरत रह न जायगी।"

विचित्र ढंग से मुस्कुरा कर नौजवान बोला, "वह देने को तैयार है।" बैरन ने जवाब दिया, "तब मैं भी तैयार हूँ।" इसी समय एड-मिरल मिन्चू बोले, "मगर एक बात रह जाती है।" दोनों ने उनकी तरफ प्रश्न की निगाह डाली। उन्होंने कहा, "बैरन मिन्चुको एक जिम्मेदार जापानी प्रतिनिधि हैं जिन्हें जापान की तरफ से बोलने का हक है। मगर हमलोग कैसे जानें कि श्याम-नरेश की तरफ से बोलने का आप हक रखते हैं?"

नौजवान ने आगे को झुक के मानो इन लोगो का अभिवादन करते हुए कहा, "मै ही श्याम देश का नया राजा 'मगर-सि' हूँ।"

———

श्री-पद्म

(१)

सैगन के उस बाहरी हिस्से मे जिसमे पाठक हमारे साथ पहिले भी जा चुके हैं, आज हम पुनः चलते हैं और उनको उस छोटी बैठक मे ले चलते हैं जिसमे काउण्ट शैवर के सिवाय कुछ ही इने गिने लोग और हैं। यह छोटी सी बैठक एक तरह पर वार-बोर्ड को मीटिंग भी कही जा सकती है, क्योंकि इसमे 'मंगर-सि' के फ्रेञ्च-इण्डो-चायना पर हमला कर देने से उत्पन्न स्थिति पर विचार किया जा रहा है।

यहां जो लोग मौजूद हैं उनमे से प्रायः सभी को पाठक पहिचानते हैं क्योंकि सभी उनकी जानी पहचानी शकलें हैं, हां उस एक व्यक्ति को शायद वे पहिचान न सकें जिसे अभी-अभी बहुत खातिर के साथ ले आकर काउण्ट के प्राइवेट सेक्रेटरी ने ठीक उनके बगल की कुरसी पर बैठाया है और जिसके प्रति यहां उपस्थित सभी आदर का भाव प्रदर्शित कर रहे हैं। काउण्ट के मुस्कुरा कर इसके साथ बातें करने से यह भी प्रकट होता है कि यह कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे इस मौके पर देख के वे बहुत प्रसन्न हुए हैं अथवा जिससे इस मौके पर कुछ काम निकलने की सम्भा-

बना देखते हैं, साथ ही इसके बेखटके ऐसी जगह पर पहुँचा दिये जाने से जहाँ युद्ध-क्षेत्र का मसला पेश है यह भी स्पष्ट है कि इस पर सभों को ही विश्वास और भरोसा है, अस्तु हमें भी इसके बारे में बहुत कौतूहल हो रहा है कि यह कौन व्यक्ति है अथवा क्या पद रखता है, अस्तु आइये पाठकगण, हम आप भी छिप कर इस पर्दे की आड़ में खड़े हो जायँ और सुनें कि यहाँ क्या बातें होती हैं। अवश्य ही इससे कुछ न कुछ पता लग जायगा।

काउण्ट शैंवर०। मैं आपको देख के बहुत ही प्रसन्न हुआ। आज कई रोज से मैं आपके पहुंचने का इन्तजार कर रहा था बल्कि आपके आने मे देर होती हुई पा यह डर रहा था कि कहीं आप किसी दुर्घटना में तो नहीं पड़ गये।

अनजबी०। जी नहीं काउण्ट, मेरे आने मे जो कुछ देर हो गई उसका सबब सिर्फ यही था कि मैंने सोचा कि चलते-चलाते जरा 'मंगरसि' के लश्कर का भी हाल-चाल लेता चलूँ, कौन ठिकाना फिर वहाँ आना हो सके कि न हो। और यह भी अच्छा ही हुआ कि मैं उधर चला गया क्योंकि वहाँ जाने से मुझे एक बहुत बड़े भेद का पता लग गया।

शैंवर०। (खुश होकर) अच्छा ! तो आप दुश्मन के लश्कर के तरफ से होते हुए आ रहे हैं ! तब तो आपकी जुबानी हम लोगो को बिल्कुल सच्चा-सच्चा और ताजा हाल मालूम हो जायगा, क्योंकि हमारे जासूसो की खबरें ऐसी विचित्र और भिन्न-भिन्न ढंगो की आ रही हैं कि उन पर सहसा विश्वास नहीं होता।

अजनबी०। आपके जासूसों ने आपको क्या खबर दी सो तो मैं कह नहीं सकता, पर मैं आपको एक नई खबर जरूर सुना सकता हूँ। जापान ने जो हवाई मदद आपको देने को कही थी पर न दी उसके बारे में आपको क्या मालूम है ?

शैंवर०। मुझसे यह कहा गया है कि रात के अन्धेरे मे बहक कर वे

सब वायुयान समुद्र की ओर निकल गये और इसी से मौके पर पहुंच न सके।

अज०। मौके पर पहुंच न सके तो मौके के बाद ही पहुँचते ! वे एक दम गायब ही कहाँ हो गये? आपको तो सब तरह से मदद पहुंचाने का उनका प्रण था और आप उनका आसरा देख रहे थे ?

शैवर०। देख रहा ही नही था बल्कि अभी तक देख रहा हूँ, क्योंकि जापानी अधिकारियों का कहना है कि पेट्रोल आदि भर कर वे सब बहुत जल्द ही पुनः मेरी सहायता के लिए रवाना हो जायंगे।

अज०। (सिर हिला कर) इस फेर मे आप न रहिए। अब वे आने वाले नही और न आपको जापान से जरा भी मदद ही मिलने को है।

शैवर०। (चौक कर) सो क्यों ?

अज०। इसलिए कि श्याम-नरेश के लश्कर मे जाने से मुझे पता लगा कि श्याम और जापान में सन्धि हो गई है और अब जापान उनसे किसी तरह की दुश्मनी नही कर सकता।

शैवर०। (घबड़ा कर) श्याम और जापान मे सन्धि हो गई है ! नही नही, सो भला कैसे हो सकता है ? यह आपसे किसने कहा ?

अज०। खुद महाराज 'मंगर-सि' ने। उन्होंने मुझे बताया कि जापान ने श्याम के दक्षिणी अन्तरीप मे से एक नहर बनाने का अधिकार ले के हम लोगो से सुलह कर ली है और अब वह श्याम के विरुद्ध फ्रांस की मदद किसी तरह नही करेगा।

यह एक ऐसी खबर थी कि जिसका यहाँ मौजूद आदमियों में से किसी को शानोगुमान भी नही हो सकता था, अस्तु इसे सुन सभी लोग आश्चर्य से एक दूसरे का मुंह ताकने लगे, बल्कि आनरेबिल लूई फराडे तो सिर हिला कर बोल पड़े, "नही नही, ऐसा कभी नही हो सकता!" वह अजनबी यह सुन मुस्कुराया और बोला, "खैर अगर अभी नहीं तो कुछ दिन बाद जापान का रंग-रवैया देख कर आपको मेरी बात का स्वयं

ही विश्वास हो जायगा।" काउण्ट शेवर जो इस खबर को सुन एक दम ही परेशान हो गये थे केवल इतना ही कह सके, "जब आप कह रहे हैं तो हमें इसको सही मानना ही पड़ेगा, लेकिन अगर यह बात ठीक है तो सिर्फ बड़े ताज्जुब की ही नहीं है बल्कि दुःख की भी, क्योंकि अभी उसी दिन जापान के राजदूत ने स्वयं मुझसे मिल कर कहा था कि जापान पूरी तरह से फ्रांस की मदद करेगा!"

अजनबी०। जापानी राजनीतिज्ञों की भी बातों पर आप विश्वास करते हैं काउण्ट! वे सब एक नम्बर के बतोलिए धोखेबाज और मतलबी होते हैं। झूठ बोलने, कह कर मुकर जाने, और मदद का वादा करते हुए दुश्मनी कर जाने मे तो वे लोग हातिम हैं। कम से कम मेरा अनुभव तो उनके बारे मे यही है और इसका नमूना इसी से समझ लीजिये कि 'मंगर-सि' से सुलह कर लेने पर भी आपको वे मदद का भरोसा दिलाए ही जा रहे हैं और इस तरह का झूठा सब्ज-बाग दिखला कर मुमकिन है कि आपका कोई बहुत बड़ा नुकसान कर दें।

काउण्ट०। इसमे क्या शक है! अगर आपकी बात सही है, अगर सचमुच ही जापान ने 'मंगर-सि' से सुलह कर ली है और अब उसका कोई इरादा हमारी मदद करने का नहीं है, तो हम उसकी मदद की राह देखते हुए बेशक अपना बहुत बड़ा नुकसान कर लेंगे, मगर एक बार फिर मुझे विश्वास दिलाइए कि आप ठीक कह रहे हैं। मुझे सुन के भी विश्वास नहीं हो रहा है।

अज०। (हँस कर) मैं बहुत सही कह रहा हूँ और अपनी बात की ताईद में यह कागज पेश करता हूँ जिस पर जापान और श्याम के बीच में हुए सुलहनामे की नकल दर्ज है। मुझे 'मंगर-सि' ने खास वह सुलहनामा पढ़ने को दे दिया था और मौका मिल जाने से याददाश्त के भरोसे मैंने उसकी यह नकल कर ली थी।

अजनबी ने अपनी जेब से एक कागज निकाला और काउण्ट शेवर

के आगे रख दिया जिन्होंने बेचैनी के साथ उसे उठा कर पढा और तब आनरेबिल लूई फराडे की तरफ बढा दिया। बारी-बारी से वह कागज वहाँ मौजूद कई आदमियों के हाथ में घूम गया और उसका मजमून पढ़ कर सभी के चेहरे चिन्ताकुल हो उठे।

अजनबी ने उस कागज को पुनः जेब के हवाले करते हुए कहा, "आप लोगो को अभी चाहे मेरी बात पर विश्वास न होता हो पर बहुत जल्द ही उस पर विश्वास करने का मौका मिल जायगा।"

काउण्ट०। नही नही, इस संधिपत्र की शर्तें पढ़ कर अब मेरे मन मे कोई शक बाकी रह नही गया है। 'मंगर-सिं' ने जापान को वह नहर बनाने की इजाजत देकर एक ऐसी घूस दे दी है कि जिसका कोई भी तोड़ हमारे पास नही है और अब हमे जापानियो का आसरा बिल्कुल छोड़ कर अपना काम करना पड़ेगा।

अज०। केवल आसरा छोड़ कर ही नहीं बल्कि इस सम्भावना को भी ध्यान मे रखते हुए कि मुमकिन है कि अपनी गरज जापान को एक दम अन्धा कर दे और वह जरूरत समझे तो आपके स्वार्थों के विरुद्ध भी चल कर श्याम से मित्रता बनाये रक्खे।

शैवर०। इसका क्या मतलब ? क्या आपका कहना यह है कि मौका पड़े तो जापान हमारे साथ दुश्मनी का भी बर्ताव कर सकता है ?

अज०। (गम्भीरता से) बेशक मैं तो ऐसा ही समझता हूँ।

अजनबी की इस बात ने कुछ देर के लिए वहां सन्नाटा पैदा कर दिया जिसे तोड़ते हुए काउण्ट शैवर बहुत देर बाद एक लम्बी साँस लेकर बोले, "खैर जो होगा देखा जायगा, अब इसकी चिन्ता करना व्यर्थ है, अब अगर आपकी इजाजत हो तो हम लोग अपने मतलब पर आवें क्योंकि मैं समझता हूँ कि आप शायद ज्यादा देर यहाँ रुक न सकेंगे ?"

अज०। किसी तरह नही।

शैवर०। तो फिर आपसे किस तरह की मदद पाने की हम लोग

आशा करें यह आप स्वयम् ही हमें बता दें, और हमसे आप क्या-क्या उम्मीद रखते हैं इसको भी कह सुनावें, क्योंकि को-तून के खत ने इस बात को स्पष्ट नहीं किया था।

अज०। उन्होंने मेरे बारे में आपको क्या लिखा था यह मैं जानता नहीं हूँ, अगर मुझे मालूम हो जाय........?

शैवर०। उनके खत का वह अंश मैं पढ़ कर आपको सुनाए देता हूँ।

काउण्ट शैवर ने टेबुल पर पड़े बहुत से कागजों में से ढूँढ़ कर एक चीठी निकाली और उसका कुछ अंश पढ़ना शुरू किया।—

"........के लड़के और श्याम के वर्तमान महाराज 'मगर-सिं' के चचेरे भाई राजकुमार श्री-पद्म से यहाँ मेरी भेंट हुई। असल में श्याम की गद्दी के ये ही वास्तविक हकदार हैं पर अपने देश के कल्याण के लिए इस समय कोई झगड़ा उठाना पसन्द नहीं करते और इसलिए बिल्कुल मामूली आदमी या वालंटियर की तरह यहाँ काम कर रहे हैं। मगर त्रि-कंटक के किसी वर्ताव ने इन्हें सख्त नाराज कर दिया है जिससे ये यहाँ का सब काम काज छोड़ कर साधु हो जाना चाहते थे। मैंने इनसे बहुत बातचीत कर एक बार आपसे मिलने पर राजी किया है। अगर ये आपसे मिलें और आप इनकी कोई सहायता कर सकें तो यह दोनों ही के लिये अच्छा होगा ऐसा मैं अनुमान करता हूँ........।'

कुछ अटक कर काउण्ट बोले, 'बस आपके बारे में इतना ही मेरे आदमी ने लिखा है, हाँ आपकी हमारी बातचीत से मामला कुछ और भी साफ किया जा सकता है।"

अजनबी अर्थात् राजकुमार श्री-पद्म थोड़ी देर तक आंख बन्द करके कुछ सोचते रहे तब गम्भीर मुद्रा से बोले—

श्री-पद्म०। अगर आप लोग यह गुमान करते हो कि मेरे मन में श्याम का राजसिंहासन पाने की लालसा है, तो यह बात बिल्कुल गलत होगी। एक तो मंगर-सिं की बहादुरी की, उसकी दूरदर्शिता की, उसकी

हिम्मत की, मेरे दिल में बहुत कद्र है, दूसरे इस समय मैं श्याम के राज्य सिंहासन के लिए दावा करके उस राज्य का नाशक भी नही बनना चाहता। अस्तु उस बात का तो जिक्र भी उठाने की आवश्यकता नही, हाँ एक दूसरी बात मेरे दिल मे जरूर कसक रही है और उसमें मैं आपकी मदद लेने को भी तैयार हूँ और करने को भी ! वह यह है कि त्रि-कंटक ने मेरा बड़ा भारी अपमान किया है, ऐसा अपमान कि जो श्याम के किसी राजकुमार की तो बात ही क्या, किसी भी श्यामी भव्य पुरुष का कर देना उसका सिर काट लेने से बदतर है, अस्तु मैं उस अपमान का बदला त्रि-कंटक से जरूर लेना चाहता हूँ और मेरा विश्वास है कि इसके लिए जो तर्कीब मैंने सोची है वह अगर पूरी उतर गई तो ऐसा करके हम आप दोनो ही फायदे मे रहेगे।

काउण्ट०। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपने वह कौन सी तर्कीब सोची है ?

श्री-पद्म०। उस तर्कीब की बात पीछे कह कर पहिले मैं उस फायदे का जिक्र करना चाहता हूँ जो ऐसा होने पर दोनो तरफ को पहुँच सकता है।

काउण्ट०। ठीक है आप पहिले वही कहे !

श्री-पद्म०। आप लोगो का त्रि-कंटक ने बहुत नुकसान किया है इसी लिए आप जरूर ही चाहते होगे कि उसका सत्यानाश हो जाय, और मेरा उसने अपमान किया है इसलिए मैं भी चाहता हूँ कि उसका नाम निशान मिट जाय।

शैवर०। ठीक ही है, मगर वह फायदा.......?

श्री-पद्म०। मैं उसी को बता रहा हूँ। इस समय अगर आप त्रि-कंटक को दबा लेते हैं और इसके साथ ही साथ उसके जो भिन्न-भिन्न वैज्ञानिक आविष्कार हैं वे भी अगर सब के सब आपके हाथ मे आ जाते हैं तो आपका कितना बड़ा लाभ होगा यह क्या आप सोच सकते हैं ?

शैवर० । बेशक, अगर उसके कुछ अलोपी वायुयान, थोड़े से आटो-मैटिक पाइलट और दो चार भी ऐटोमेटिक गनें हमारे हाथ लग जायँ तो हम गजब कर सकते हैं ।

श्री-पद्म० । केवल हाथ ही न लग जायँ बल्कि अगर उनको बनाने की तरकीब भी आपको मालूम हो जाय..........?

शैवर० । ओह, तब तो दुनिया में फिर हमीं हम रह जायँ । उस वक्त, ऐसे ऐसे अस्त्र-शस्त्र हमारे हाथ में होते हुए, क्या किसी की मजाल है कि फ्रांस के मुकाबिले एक उँगली उठा सके !!

श्री-पद्म० । आपने जो तर्कीब उन लोगो के दबाने की सोची है, अर्थात् वायुयान से बम बरसा कर उनके अड्डे को नष्ट-भ्रष्ट कर देने की, उससे मर खप तो वे जरूर जा सकते हैं पर साथ ही साथ उनके ये आविष्कार सब भी नष्ट हो जायेंगे जो अगर आपके हाथ लगें तो आपका अनन्य लाभ कर सकते हैं,लेकिन मैंने जो तर्कीब सोची है उससे वे त्रि-कंटक भी जीते जागते आपके हाथ में आ जायेंगे और उनके सब आविष्कार भी । पर उस तर्कीब की बात पीछे होगी, पहिले मेरा क्या फायदा होगा, उसे भी सुन लीजिये—क्या होगा सो तो कहना उचित नही है, क्या हो सकता है यह कहना मुनासिब है, क्योंकि उसे होने या न होने देना यह बिलकुल आप लोगों के आधीन रहेगा ।

शैवर० । (मुस्कुरा कर) आप बहुत हिचक-हिचक कर बातें कर रहे हैं राजकुमार, जिससे मुझे अंदेशा होता है !

श्री-पद्म० । और बेशक वह अंदेशे की बात भी है, पर मैं उसे कह ही डालता हूँ । क्या आपने कभी सोचा है कि त्रि-कंटक को ऐसे-ऐसे अद्भुत अस्त्र-शस्त्र बनाने और अपना ऐसा मजबूत अड्डा कायम करने का मौका किस तरह मिला ?

शैवर० । अवश्य ही उसके कार्यकर्ता...........।

श्री-पद्म० । कार्यकर्ताओं की बात जाने दीजिए । ऐसे सब काम केवल

मेहनती सच्चे ईमानदार और जान पर खेल के काम करने वाले आदमियों के रहने से ही नही हुआ करते। ऐसे कामों का मूल स्तम्भ रहता है रुपया, रुपया !!

शैवर०। वेशक इसमे रुपयों का भी वहुत ज्यादा खर्च है।

श्री-पद्म०। वहुत ज्यादा खर्च ! जनाव, आपको मालूम है कि त्रि-कंटक अव तक कितना रुपया अपनी स्कीमों पर खर्च कर चुका है ! कैसे मालूम होगा ? आप मुझसे सुनिए कि त्रि-कंटक ने अपनी मशीनें ईजाद करने, वनाने और उन्हे खड़ी करने तथा उनके लायक स्थान चुनने और वनाने तथा चलाने योग्य कारीगरो को इकट्ठा करने मे अव तक कुल मिला कर वीस अरव रूपये खर्च किए।

शैवर०। वीस अरव ! वीस अरव ? नहीं नहीं, इसमे जरूर कुछ मुवालिगा होगा, इतना रुपया वह पायेगा ही कहाँ से और खर्च ही कैसे करेगा !

श्री-पद्म०। जी हाँ जनाव वीस अरव ! उतना ही जितना आपलोग एक महायुद्ध मे कुछ थोड़े से ड्रेडनाट और क्रूजर वनाने मे खर्च कर देते हैं और इस वात को सोचते तक नही कि वह कहाँ से आवेगा या आया !

शैवर०। ठीक है, मगर फ्रांस या किसी भी यूरोपियन गवर्नमेंट और एक छोटे मोटे आतंककारियो के गिरोह के वीच मे फर्क भी तो है ! वे इतना पा ही कहाँ से सकते हैं जो खर्च करेंगे ?

श्री-पद्म०। ठीक है, अव आप उस वात पर आये हैं। कहाँ से त्रि-कटक ने इतना रुपया पाया ? वह मैं वताता हूँ, सुनिये। उनके हाथ मे जवाहिरात की एक ऐसी खान लग गई है कि जिसके जवाहिरात कभी खतम नही हो सकते ! उस खान मे से वे लोग अब तक तीस अरव रुपये के जवाहिरात निकाल चुके और उनमें से वीस अरव के वेच चुके हैं तथा वाकी के सव अभी वही किसी स्थान में सुरक्षित रक्खे हुए हैं। अगर मेरी आपकी पटरी बैठ जाय तो शर्त यही रहेगी कि आप उनके सब

अस्त्र-शस्त्र और आविष्कार ले लीजिए और मुझे वे बाकी के जवाहिरात और वह खदान ले लेने दीजिए। कहिये, यह आपको मंजूर है?

काउण्ट शैवर जरा देर के लिए चुप हो गये। उनकी निगाह एक बार अपने चारो तरफ बैठे अपने साथियों और सहायकों की तरफ घूम गई जिनमें से कइयों की आँखो मे लालच की चमक दिखाई पडने लगी थी, पर सब से ज्यादा देर तक जिसके साथ वह खड़ी रही वह राजकुमार श्री-पद्म ही थे। राजकुमार की दृष्टि मे एक आग्रह था, साथ ही एक प्रकार का मनोबल भी उससे प्रकट होता था जो काउण्ट को बता रहा था कि जरूर इसे कोई ऐसी तर्कीब मालूम है जिसके जरिये वह सब, जो कुछ इसने कहा, पूरा उतारा जा सकता है! आखिर बहुत कुछ सोच विचार कर उन्होने कहा :—

काउण्ट०। राजकुमार श्री-पद्म, इसके पहले कि मै आपकी बात के जवाब मे कहूँ कि 'हाँ मुझे मंजूर है', आप बतलाइए कि आपकी बातें केवल कोरी बकवास ही हैं या उनमें कुछ सार भी है? मुझे इस स्पष्ट-वादिता के लिए क्षमा कीजिएगा, पर मेरी समझ में ही नहीं आता कि जिस त्रि-कंटक ने अकेले कितनी ही यूरोपियन और एशियन शक्तियों के परेशान कर डाला है हम एक साथ ही उसके मुखियों, उसके आविष्कारों और उसके अड्डे पर कैसे कब्जा कर ही सकते हैं। वह तो बिल्कुल असम्भव सी बात मालूम होती है।

श्री पद्म०। आपका कहना सही है और साफ साफ यह कह देने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। सच तो यह है कि आप अगर तुरत यह कह देते कि—'हाँ हम तैयार हैं'—तो शायद मुझे सन्देह हो जाता कि आप सिर्फ मतलब बनाना चाहते हैं और काम हो जाने पर मुझे दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंके तो भी ताज्जुब नहीं। क्योंकि यह तो सभी समझ सकते है कि जिस खदान मे से तीस चालीस अरब का जवाहिरात अब तक निकल चुका और फिर भी वह खाली नही हुई उसकी वास्त

विक कीमत क्या समझनी चाहिए। सच तो यह है कि इसी खयाल से मैं अपना प्रस्ताव लेकर जापानियों के पास नहीं गया और आपके पास आया, क्योकि मुझे उनकी बनिस्बत आपकी सच्चाई और ईमानदारी पर ज्यादा विश्वास हुआ।

काउन्ट०। आपने इतना विश्वास हम लोगों पर किया इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, पर मेरे प्रश्न का उत्तर अभी नही मिला।

श्री-रद्म०। वह मैं अब देता हूँ। उसके साथ एक छोटा इतिहास है जिसको सुने बिना आप सब बाते पूरी तरह पर नही समझेंगे। हिन्दुस्तान के उत्तर मे कोई एक स्वाधीन रियासत है। किसी समय वहाँ का राजा अपने शत्रुओ द्वारा विताड़ित होकर भागता फिरता इस देश मे आया और यहाँ ही उसे किसी तरह पर उस जवाहिरात की खान का पता लगा, मगर वह उससे कोई लाभ न उठा सका और उसका शरीर छूट गया। मरती समय उसने उस खदान का हाल एक कागज पर लिख कर अपने लड़के के पास भेजा जो अपने पिता का गया हुआ राज्य पुनःवापस पाने की चेष्टा कर रहा था। इस काम मे उसकी मदद वे ही लोग कर रहे थे जो यहाँ आकर त्रि-कंटक के नाम से यह सब पापड़ बेल रहे है और इन लोगो ने ऐसी खूबी से अपना काम किया कि उसको अपने पिता का राजसिंहासन मिल भी गया, जिसके बदले मे खुश होकर इनाम के तौर पर उसने वह कागज जिसमे खदान का हाल था इन लोगों को देकर उसके बारे मे जो कुछ मालूम था वह बताया, बल्कि और तरह से भी मदद करके उनको यहाँ भेजा। उसी कागज और उसी राजा की मदद से इन लोगो ने उस खदान को खोज निकाला और उसके जवाहिरातों को निकाल और बेच कर अपना खूनी काम जारी किया। भाग्यवश उसी राजा का एक विश्वासी आदमी मुझसे मिला और उसके मुँह से मैने वह सब किस्सा सुना। उसने मुझे ले जाकर वह खदान भी बताई और वह जगह भी दिखाई जहाँ उस खदान से निकले जवाहिरात रक्खे जाते हैं और उसी

की जुबानी मुझे पता लगा कि इन्ही जवाहिरातो को वेच-वेच वह विशाल धन-राशि इकट्ठा की गई जिसकी सहायता ने त्रि-कंटक ने यह सब सामान जुटाया है।

शैवर०। क्षमा कीजियेगा, आपने शायद मेरा मतलव समझा नही। मेरा पूछना यह नहीं कि वह खदान कहाँ है, कैसे मिली, या उसके जवाहिरात कहाँ छिपाए गए हैं, वल्कि मेरे कहने का तात्पर्य यह था कि क्या वास्तव मे आपको कोई ऐसी तर्कीव मालूम है जिसके जरिये त्रि-कंटक पर भी कब्जा किया जा सके और यह सब चीजें, उनके नेता-गण भी और मशीनरियाँ तथा उन्हे बनाने की तर्कीव भी, नष्ट न होकर उल्टा हम लोगो के हाथो मे आ जांय? आप साफ साफ यह बताइए कि क्या ऐसी तर्कीब हो सकती है और क्या उसे आप जानते हैं?

श्री-पद्म०। (कुछ हँस कर) जानता नही तो इतना जोर देकर यह बात आपसे कहता ही कैसे? लेकिन आपने मेरी बात पूरी नही होने दी! मैं यही बात कहने जा रहा था जब आपने टोका।

शैवर०। अगर ऐसा है तो अपने उतावलेपन की आपसे माफी माँगता हूँ, आप कहें जो आपको कहना है।

श्री-पद्म०। त्रि-कंटक इस वात को वखूबी समझते हैं कि उनके दुश्मनों की गिनती दिन पर दिन बढ़ती जा रही है, शायद वे यह भी समझते हैं कि उनके पास जवाहिरातो का ढेर होने की वात भी लोगो को मालूम हो चुकी है। उनके आविष्कार, उनकी मशीनरियाँ, उनके वनाए अद्भुत अद्भुत बम, वायुयान, पिस्तौलें और तोपें जहाँ दुश्मन को भयभीत कर सकते हैं वहां उनको आकर्षित भी कर सकते हैं, उनका रहस्य जान कर वैसा ही खुद भी बना लेने के लिए लोगों को उभाड़ भी सकते हैं। यह सब वे जानते हैं और इसीलिए उन्होने जहाँ वे रहते है वहाँ एक ऐसी तर्कीब कर रक्खी है कि अगर किसी दुश्मन के हाथ मे उनका भेद पड़ जाने की जरा भी सम्भावना दिखाई दे तो वह समूचा स्थान नष्ट कर दिया जाय,

वहाँ का एक एक प्राणी मार डाला जाय। आप ज़्यादा से ज्यादा कुछ कर सकते हैं तो यही कि वायुयानो से उस जगह पर बम गिरावेगे। जहाँ वे रहते हैं उस जगह का तो शायद ही कोई बम कुछ नुकसान कर सकेगा, लेकिन अगर कर भी ले तो उन सब आविष्कारों के नष्ट हो जाने की आशंका बनी ही रह जायगी, अथवा यह भी सम्भव है कि उन चीजों के दुश्मन के हाथो पड़ जाने का डर त्रि-कंटक से वही काम करा डाले यानी वे खुद-बखुद उस जगह को उड़ा डाले। यह तो निश्चित ही है कि वे मशीनरियाँ और अद्भुत अद्भुत ईजादें खुद-बखुद नष्ट कर देना पसन्द करेंगे बलिक साथ साथ खुद भी नष्ट हो जायेगे लेकिन उसे दूसरे के हाथ में न जाने देगे। इसलिए प्रकट रूप से उन पर हमला करने का नतीजा कभी भी अच्छा नही निकल सकता या अगर कुछ निकल सकता भी है तो यही कि ऐसी ऐसी कीमती चीजो के हाथ आने की उम्मीद सदा के लिए जाती रहे लेकिन हाँ अगर अप्रकट रूप से वैसा हमला उन पर किया जाय जैसा मैने सोचा है तो बेशक त्रि-कंटक भी हाथ आ सकते हैं, उनके आटोमैटिक पाइलट, ऐटमिक गनें, अलोपी वायुयान आदि भी मिल सकते हैं, और उनको बनाने की तर्कीब भी हाथ लग सकती है, साथ साथ वह खदान कहाँ है यह भी मालूम हो सकता है और ऐसा करने का उपाय बताने की कीमत स्वरूप जो कुछ मैं चाहता हूँ वह यही है कि वह बचा हुआ रत्न और खदान तो मेरे हिस्से पड़े और बाकी को सब चीजें आप ले लें।

काउन्ट०। मगर जिस तरह से ऐसा हो सकता है उस तर्कीब को बताने मे आप बड़ा आगा-पीछा कर रहे है। शायद हमे इतना भी नही बताना चाहते कि ऐसा कोई तर्कीब हो भी सकती है कि नहीं !!

श्री-पद्म०। (हँस कर) बस-बस अब वही मैं कह रहा हूँ। वह स्थान कहाँ है यह तो मैं अभी आपसे कहूँगा नहीं, कम से कम तब तक नही जब तक कि आपका मेरा एक समझौता इस बात का नहीं हो जाता कि जवाहिरातों का ढेर और उनको पैदा करने वाली खदानें मेरी रही

और त्रि-कंटक तथा उसके आविष्कार आपके, मगर इतना मैं बताए देता हूँ कि उन लोगों ने जहाँ वह खदान है उस जगह से जहाँ उनका खजाने का घर है उस जगह तक एक गुप्त सुरंग बना रक्खी है जिसके जरिये जवाहिरात आते जाते हैं और उस जगह त्रि-कंटक मे से कोई न कोई एक सदा मौजूद रहता है, यही नही, उसी जगह उनके सब विचित्र आविष्कारो के भेद बताने वाले कागज़-पत्र भी रक्खे रहते हैं। उन लोगों ने उस जगह से अपने मेकंग के नीचे वाले अड्डे तक भी एक सुरंग बना रक्खी है तथा एक दूसरी उस घाटी मे पहुंचाई है जिसमे उनके वायुयान और अद्भुत अद्भुत यन्त्र लगे हैं। एक तरह पर वह खजाने वाली कोठरी ही उनका केन्द्र है और उस केन्द्र तक मैं आपको पहुंचा सकता हूं। बस यही तर्कीब है जो मेरे हाथ मे है। अब आप बताइये कि अगर मैं आप लोगो को बगैर दुश्मन पर जरा भी भेद प्रकट हुए उसके इस केन्द्र तक पहुचा दूं तो क्या इसके बदले में वहाँ का खजाना और वह खदान आप मुझे दे देंगे ? क्या आप सिर्फ त्रि-कंटक और उसके आविष्कारो पर कब्जा कर के ही सन्तोष कर सकेंगे ?

काउन्ट के साथियों की आंखे चमक उठी, स्वयम् काउन्ट की आँखो मे भी एक बार चमक आ गई, मगर वे सच्चे और धर्म-भीरु आदमी थे, वे तुरत बोल उठे :—

काउन्ट०। सिवाय 'हाँ' कहने के हम और कोई उत्तर इस वक्त दे ही नहीं सकते है, पर आप यह बताइये कि क्या मेरे केवल 'हां' कह देने मात्र से आपको सन्तोष हो जायेगा ?

श्री०। (जोर से-सिर हिला कर) कदापि नही, अगर वही होता तो मैं इतनी लम्बी चौड़ी भूमिका बांधने के बाद अपनी बात क्यों कहता ? मुझे आपको कोई गारण्टी देनी होगी, इस बात की गारण्टी कि सफलता मिल जाने पर आप मुकर तो नही जायेगे। कही ऐसा तो नही होगा कि त्रि-कटक के केन्द्र मे पहुँच जाने पर, उसके नेताओ उसके आदमियो तथा

उसके अस्त्र-शस्त्रों पर कब्जा हो चुकने पर, आप कहीं उसके खजाने और जवाहिरात की खदान पर भी तो कब्जा नहीं कर लेंगे ? उस समय, जैसा कि मैंने कहा, मुझे दूध की मक्खी की तरह आप बाहर तो नहीं कर देंगे ?

काउन्ट शैवर ने इस बात के जवाब मे सिर्फ इतना ही कहा, "सिवाय वचन देने या लिखा पढी कर देने के—और किस तरह की गारंटी हम लोग दे ही सकते हैं !" मगर उनके सामने बैठे हुए आनरेबिल लूई फराडे बोल उठे, "क्या राजकुमार को हम लोगों, फान्सिसी जेण्टिलमैनों, के वचनो पर विश्वास नही होगा ?"

राजकुमार श्री-पद्म सिर हिला कर बोले, "जरा भी नही, एक मिन के लिए भी नही ! जेण्टिलमैनो की बातो पर एक बार विश्वास भी कर लूँ परन्तु राजनीतिज्ञो की बातो पर जरा भी नही !" सामने बैठी मण्डली क्रोध से हुँकार कर उठी, पर शैवर उसी तरह शान्त बने रहे जैसे अब तक थे। उन्होने सिर्फ यही कहा, "तब और किस तरह की गारण्टी चाहते हैं, श्रीमान् ?"

राजकुमार ने कहा, "यह मैंने अभी स्थिर नही किया है, सच तो यह है कि मै स्थिर कर ही नही पा रहा हूँ। मैं खुद नही सोच सका हूँ कि किस तरह से मुझे यह सन्तोष हो पावेगा कि काम निकल जाने पर मेरे साथ दगा नही की जायगी। आप वृयोवृद्ध हैं, अनुभवी हैं, इतिहासज्ञ हैं, भेदियो को किस किस तरह के इनाम मिल चुके हैं और मिला करते हैं इसको जानते हैं, अस्तु आप ही मुझे जैसे बने वैसे सन्तोष दिला दीजिए कि मेरे साथ दगा नही होगी। बस वह सन्तोष होते ही मैं उस केन्द्र-स्थल का समूचा भेद आपको बता दूँगा, केवल बता ही नही दूँगा खुद आपके साथ चल कर आपको उस जगह तक पहुचा भी दूँगा।"

कह कर राजकुमार श्री-पद्म काउण्ट और वहाँ उपस्थित मंडली का मुँह देखने लगे। काउण्ट का चेहरा तो यद्यपि बिल्कुल शांत और पहिले ही की तरह गम्भीर बना हुआ था पर उनके साथियो के बारे मे वही बात

नही कही जा सकती थी। जितने चेहरे थे उन पर उतने ही भाव प्रकट हो रहे थे। किसी के चेहरे पर क्रोध था, किसी पर आश्चर्य, किसी पर अविश्वास, किसी पर लोभ, और किसी पर क्षोभ।

थोड़ी देर तक वहाँ सन्नाटा रहा। इसके बाद काउण्ट शैवर बोले, "अगर आपने स्वय ही, अपने मन मे, यह निश्चय नही किया है कि हमारी तरफ से क्या कर देने पर आपको यह सन्तोष हो जायगा कि आपके साथ दगा नही होगी, तो मैं कैसे इसका विश्वास दिला सकता हूँ और कैसे कुछ कह ही सकता हूँ? इस विषय में तो आप ही को निर्णय करके बताना होगा?"

श्री-पद्म सिर हिला कर बोले, "नहीं, आप ही जैसे बने मेरा सन्तोष करा दीजिये, मुझे जब कुछ सूझता ही नही तो मैं क्या बताऊँ और क्या कहूँ?"

लूई फराडे यह सुन कुछ तेजी से बोले, "आप भी कुछ अजीब से आदमी जान पड़ते हैं राजकुमार, और वैसा ही अजाब सा बोझ भी आप हम लोगों पर डाल रहे हैं! हम लोगों की सत्यता पर आपको विश्वास नही है, और न आप यही समझ पाते हैं कि हम किस तरह की गारण्टी दे तो आपको विश्वास होगा? यह तो कुछ एक पहेली जैसी बात है!!"

कितने ही अन्य लाग भी बोल उठे, "वेशक यही बात है, जरूर ऐसा ही है। राजकुमार को खुद ही बताना चाहिये कि किस तरह उन्हें हमारी बातों पर विश्वास होगा?"

बहुत सोच विचार कर राजकुमार श्री-पद्म बोले, "अच्छा तो इसको सोचने के लिये चौबीस घंटों का अवसर आप मुझे दीजिये। मैं कोशिश करूँगा और सोचूँगा कि किस तरह आप लोग मेरा मन भर सकते हैं, मगर इस बीच में आप लोग भी माथा लड़ाइये और देखिये कि कोई तर्कीब निकल सकती है कि नहीं।"

काउण्ट शैवर ने कहा, "अच्छी बात है, यही सही, हम भी सोचेंगे

और आप भी सोचिए, तब इस वक्त यह बातचीत बन्द हो, कल फिर इसी समय इस विषय पर बातें होंगी। तब तक राजकुमार, आप मेरा आतिथ्य स्वीकार करें और मेरे खेमे को अपना निवास-स्थान बनावे।"

राजकुमार बोले, "बड़ी खुशी से, अगर वैसा करने मे आपको कोई कष्ट न हो, पर इस समय मैं दो घंटे के लिए किसी काम मे जाना चाहता हूँ, दो घंटे बाद हाजिर हूँगा।"

दो चार भद्रता की बातें हुई और तब राजकुमार उठ खड़े हुए। काउन्ट शैवर स्वयं उन्हे दर्वाजे तक पहुँचा आये और जब राजकुमार उनसे विदा हो कुछ दूर निकल गये तो लौट आकर अपनी कुर्सी पर बैठते हुए बोलें, "सज्जनों, आपने राजकुमार की बाते सुनी। कुछ अजीब से आदमी जान पडते हैं ये, परन्तु क्या निष्कर्ष निकाला आप लोगो ने?"

जितने मुँह उतनी ही बातें सुन पड़ने लगी। फराडे बोले, "अगर जैसा यह कहता है वैसा कर भी सकता है तो इसे जैसे भी हो राजी करके अपना काम बनाना ही चाहिये।" जेनरल श्र ने कहा, "अगर हम लोगो के हाथ मे त्रि-कंटक के सब अस्त्र-शस्त्र मय उन्हे बनाने की तरकीबो के आ जायं तो हम दुनिया को फतह कर डालें!" एक तीसरा अफसर बोला, "मगर दस अरब मूल्य के जवाहिरात और अनगिनती अन्य रत्नो से भरी वह खदान क्या यो ही छोड़ दी जायगी?" एक चौथे ने कहा, "वादा करके भी उससे मुकरा कैसे जायगा?" पाँचवे ने सुझाया, "इतिहास और राजनीति मे अब तक बराबर जो होता आया है वही हम भी करेगे।"

सभो के बीच मे केवल एक काउन्ट शैवर चुप थे। जब सब कोई एक एक बार अपने अपने वाली कह चुके तो वे सिर्फ इतना बोले, "सो सब सोचने के पहिले आप लोग यह सोचिये कि हम लोगो का वर्तमान कर्तव्य क्या है? फ्रान्स से आने वाले वायुयानो को ले के मेकंग के पीछे वाले त्रि-कंटक के अड्डे पर हमला कर देना मुनासिब है, जैसा कि इस राजकुमार के आने के जरा ही पहले हम लोगो ने तय किया था और जो

कोतू न चाहता है, अथवा इस प्रोग्राम को बदल राजकुमार के बताये अनुसार चलना उचित होगा। इनका कहना यह तो बिल्कुल सही हैं कि जो हम लोगो ने सोचा है वैसा करने से अगर सफलता मिल भी गई तो भी त्रिकटक के वे सब अद्भुत अद्भुत अस्त्र शस्त्र और उनके बनाने की तर्कीवें सदा के लिए नष्ट हो जायँगी। हमारे बम अगर वह काम न करेंगे तो दुश्मन स्वयं ही इसलिए कि जिसमे वे हमारे हाथों मे न पड़ें उन चीजों को तहस नहस कर डालेगा। ऐसी हालत मे दोनो मे क्या अच्छा है? दुश्मन को मय उसकी समस्त सम्पत्ति के नष्ट कर देना, या उसको अपने कब्जे मे करके उसकी संपत्ति पर भी कब्जा कर सकने की सम्भावना में एक दो रोज ठहर कर कोई नया उपाय करना?"

काउण्ट की इस बात ने उपस्थित मंडली में कुछ देर के लिए सन्नाटा पैदा कर दिया और इसका कारण भी था। बेतार की तार से इन लोगो को सूचना मिल चुकी थी कि फ्रेञ्च-इन्डो-चायना की मदद के लिए फ्रांस से जो वायुयान रवाना हुए हैं वे अब बहुत नजदीक आ चुके है और आज ही किसी समय उस स्थान पर पहुँच जायँगे जो त्रिकंटक का अड्डा है अर्थात् मेकंग के जल-प्रपात के ऊपर। किसी तरकीब से, हम नही कह सकते कि वह क्या थी, को-तून ने भी इन लोगो को यही लिख भेजा था कि उसे त्रि-कटक के अड्डे का पता लग गया है मगर वह बड़ी ही गुप्त जगह मे है और साथ ही खूब सुरक्षित भी है, अस्तु जैसे ही काफी संख्या मे वायुयान मिलें वहाँ पर बम बरसा कर उस जगह को तहस नहस कर देना जरूरी है, नहीं तो अगर दुश्मन को यह मालूम हो जायगा कि विपक्ष का कोई जासूस उनमे आ मिला है तो वे होशियार हो जायँगे और सब किया धरा चौपट हो जायगा। वह स्थान जिस पर आक्रमण करने से दुश्मन पस्त हो जायगा कहाँ पर है, उस पर किस प्रकार आक्रमण करना चाहिए, और कैसे वह उसका पता आक्रमणकारी वायुयानों को बतावेगा यह सब को-तून ने स्पष्ट करके लिख दिया था और राजकुमार श्री-पद्म के आने के ठीक पहिले इन

लोगो ने यही तय किया था कि जैसे जैसे कोतून चाहता है वैसे वैसे ही करना मुनासिब है। मगर इन राजकुमार श्रीपद्म के आ जाने और इनकी बातें सुन लेने से एक नया ही खयाल सभी के मन मे दौड़ने लगा था जिसने एक नई लालच की सृष्टि करके सभी का मन पलट दिया था। अगर कम्बख्त त्रिकंटक ही हाथ मे न आ जावे बल्कि उनके अस्त्र शस्त्र भी सब मिल जाय और उनके बनाने की तर्कीब भी जान ली जा सके, तो फिर क्या कहना है। इस बात के फायदे के बारे मे तो कुछ कहना ही नही था। जिन ऐटोमिक गनो आटोमैटिक पाइलटो और अलोपी वायुयानों ने तुच्छ त्रिकंटक को इतने ऊँचे दर्जे पर पहुँचा दिया था कि आज एशिया के समस्त राज्य उसके नाम से थर-थर काँप रहे थे, वे ही सब चीजे अगर फ्रांस के हाथ लग जांय तो वह क्या नही कर सकता है? अस्तु सवाल इस लाभ के बारे मे नही था, सवाल अगर कुछ था तो यह था कि राजकुमार को अरबो के रत्न और वह खदान दे देनी चाहिए या लगे हाथ उस पर भी कब्जा कर लेना चाहिए ?

मगर यह सवाल भी क्यों ? दुनिया के इतिहास में अब तक बराबर जो होता आया है, दुनिया भर के भेदियो, राष्ट्र से फूट कर शत्रु से मिल जाने वालों, राजा का भेद दुश्मन पर खोल देने वालों——को अब तक जो इनाम मिलता आया है वही इन राजकुमार श्री-पद्म को भी क्यो न मिले? क्यों न काम निकल जाने पर वे तोप-दम कर दिये जांय ? या क्यो न अगर उन पर दया ही दिखानी है तो काम हो जाने पर उन्हे कुछ थोड़ा बहुत दे दिला कर जीते जागते निकल जाने की कृपा उन पर कर दी जाय ? यह प्रश्न उठे ही क्यो कि राजकुमार जो कुछ भी गारंटी मांगें उनको दी जाय या नही ? सिर्फ इस लिए कि इनके सम्बन्ध मे को-तून का एक दूसरा पत्र मिला था जिसमें उसने इनकी बहुत प्रशंसा करते हुए लिखा था कि इनकी मदद से उसका बहुत बड़ा काम निकला है और इनके हाथ मे एक बड़ी ही सुन्दर तरकीब दुश्मन को काबू मे करने की है जो

इनसे कोई सच्चा समझौता कर के जान ली जानी चाहिये,मगर साथ ही इसका भी खयाल रखना चाहिए कि ये नाराज न हो जायँ नहीं तो उसको—को तून-की—जान पर आ बनेगी। राजकुमार श्री-पद्म से भले ही दगा कर दी जाय, पर अपने ही एक देशवासी के साथ कैसे दगा की जा सकती थी ? को-तून को कैसे खतरे में डाला जा सकता था ?

बहुत देर तक सन्नाटा रहा। किसी की यकायक कुछ कह देने की हिम्मत न पड़ती थी। पर आखिर जेनरल श्रू ने यह कह कर उस सन्नाटे को तोड़ा—"राजकुमार ने जो कुछ बताया है वह गहरी बात है। उतने फायदे के लिए थोड़ी जोखिम उठाई जा सकती है। मान लिया जाय कि आज मेकंग पर बम-वर्षा न हो सके, तो अगर हमारे वायुयान सही सला-मत हैं तो वह कल की जा सकती है, पर वह सब सम्पत्ति एक बार नष्ट हो जाय तो फिर कदापि नहीं आ सकती। अस्तु मेरी राय तो है कि राजकुमार जो गारन्टी मांगें उनको देकर उनसे समझौता कर लिया जाय और त्रि-कंटक के उस केन्द्र पर कब्जा करने की कोशिश की जाय। सफ-लता मिल गई तो ठीक ही है, न मिली तो फिर वही किया जायगा जो सोच चुके है।"

ज्यादातर लोगों ने यही मत प्रकट किया पर कुछ ने कहा, "लेकिन को-तून इस समय वहाँ है और जैसा कि लिख चुका है इस समय हमारे वायुयानों को वह इशारा कर भी सकता है कि फलां जगह बम गिराओ। लेकिन इस काम मे अगर देर हो जाय तो मुमकिन है कि फिर वह सुविधा न रह जाय। सम्भव है कि मौके पर को-तून वह इशारा कर न सके या खुद ही दुश्मन के काबू मे पड़ जाय। तब इस समय जो त्रि-कंटक को नष्ट करने का मौका मिल रहा है वह जाता रहेगा।"

काउन्ट शॅवर बोले, "सिर्फ यही बात मुझे राजकुमार का प्रस्ताव स्वीकार क[illegible]ोक यही है।" लूई फराडे ने जवाब दिया, "[illegible] पास रहेंगे तो बहुत कुछ हो

न हो तो भी जब 'एक को-तून वहाँ तक पहुँचा तो दस को-तून वहाँ पहुँच सकते है, मगर वैसा अवसर बार-बार नही आ सकता जो आज इस राजकुमार की बदौलत हमे मिल रहा है। इस बहुत लाभ के लिए थोड़ी हानि भी उठाने की सम्भावना हो तो भी वह जोखिम उठानी चाहिए !"

काफी देर तक बहस होती रही। ज्यादातर लोगों का यही मत था कि राजकुमार श्री-पद्म की मांगी गारन्टी उन्हे देकर उनसे समझौता करना और स्वयम् "त्रिकं टक सहित उसके अस्त्र-शस्त्र पर कब्जा कर लेना चाहिए पर केवल एक काउन्ट शैवर अथवा दो चार ही अन्य इस लालच मे न पडने की सलाह दे रहे थे। पर इनकी कुछ चली नही और अन्त मे यही तय हुआ कि राजकुमार को राजी करके वही करना चाहिये जो वे बतावे।

(२)

रात लगभग पहर भर के जा चुकी है। चारो तरफ घनघोर अंधकार और डरावना सन्नाटा छाया हुआ है, खास कर उस घाटी मे जिसमे पाठको को लेकर हम इस समय चल रहे हैं।

यद्यपि रात का समय होने के कारण हम अपने इधर उधर का दृश्य कुछ भी देख नही सकते फिर भी इतना जानते हैं कि यह जगह मेकंग के जल-प्रपात से कोई दस बारह कोस ऊपर चढ कर है। तीन तरफ से ऊँची-ऊँची पहाडियो ने इसको घेरा हुआ है और चौथी तरफ से मेकंग अपने विशाल वक्षस्थल को फुलाये दौड़ती चली जा रही है। इसी से इसके बीच वाला वह लम्बा चौड़ा मैदान कुछ ऐसा बन गया है कि जल्दी कोई वहाँ पहुँच सकता मगर इससे अगर हम यह समझना चाहे कि वहाँ कोई आदमी हई नही तो ऐसा बिल्कुल नही है। और तो जो कुछ यहाँ है सो है ही, वे दो आदमी तो जरूर ही हमारी निगाह के सामने हैं जो अधर मे से निकली हुई एक विशाल चट्टान के नीचे ठीक किसी जंगली जानवर की तरह दबके हुए हैं और न जाने किस सबब से ऐसा डरे हुए हैं कि आपुस मे बात करने की भी हिम्मत नहीं कर रहे हैं।

इस जगह का अन्धकार ऐसा घोर है कि हाथ को हाथ दिखाई नहीं पड़ता, इसी से पाठक बहुत चेष्टा करके भी इन दोनो को पहिचान न सकेंगे अतएव हम ही बताए देते हैं कि ये कौन हैं। ये और कोई नही वही को-तून और सिग-ली हैं जिनसे हमारे पाठक ऊपर बहुत अच्छी तरह परिचित हो चुके हैं। पर इस बात की हमे कुछ खबर नही है कि यह जगह कौन सी है या ये दोनो किस तरह अथवा किस इरादे से यहाँ आये हैं। को-तून बार-बार अपनी दृष्टि आकाश के नक्षत्रों की ओर घुमाता है और किसी यंत्र को अपने कान से लगा गौर से कुछ सुनता है पर हर बार उसके सिर हिलाने से यही जाहिर होता है कि जो वह चाहता है सो नहीं हो रहा है।

धीरे-धीरे रात ज्यादा जाने लगी। घना अधकार और भी घना होने लगा। घोर सन्नाटा और भी गहरा हो उठा! चारो तरफ मौत का साम्राज्य सा फैल गया। मेंकंग का भाषण रव भी न जाने कैसे कुछ कम होता-सा भास होने लगा। को-तून ने पहाडी चोटी की आड़ मे से निकलते हुए एक तारे को देखा और तब सिर हिला कर बहुत धीरे से कहा, "आधी रात हो गई पर वे लोग नही आए, मालूम होता है किसी दूसरी तरफ बहक गए या फिर कोई दुर्घटना हो गई। अब इस खतरनाक जगह में और रुकना व्यर्थ ही अपनी जान को......."

यकायक सिग-ली ने को-तून का हाथ दबाया और तब उंगली उठा आसमान के छोर पर कुछ दिखाया। को-तून ने पश्चिम तरफ के आकाश पर एक काला बादल सा उठते हुए देखा। वहां के तारे एक एक करके लोप होते जा रहे थे। वह कुछ देर तक गौर से उधर देखता रहा तब धीरे से बोला, "बादल उठ रहे हैं।" सिर हिला कर सिग-ली ने कहा, "हमारे वायुयान हैं।"

को-तून चमक गया। उसने हाथ वाला यन्त्र कान से लगाया और देर तक कुछ सुना, तब सिर हिला कर कहा, "नही-नही, वायुयान नहीं

बादल हैं, मैं कोई शब्द नही सुन पाता।" सिग-ली ने कुछ जवाब न देकर सिर्फ शान्ति-पूर्वक देखते रहने का इशारा किया।

और कुछ ही देर बाद को-तून को मानना पड़ा कि उसके यन्त्र की बनिस्बत उसके साथी की आँखे तेज थी। यद्यपि तारे अब और भी तेजी से ढँकते जा रहे थे पर बीच-बीच में कही-कही पर उनके दिखाई देते रहने के ढंग से पहिले का विश्वास बदल कर कुछ ऐसा भास हो रहा था कि वह बादल नही बल्कि कोई अन्य चीजें हैं जो अपनी ओट में उन तारों को करती बढ़ी आ रही हैं। थोड़ी देर बीतते न बीतते तो आखिर विश्वास करना ही पड़ा कि सैकड़ो वायुयानों का झुण्ड है जो युद्ध-यान मालूम होते थे, क्योकि वे सैनिक-श्रेणी-बद्ध भाव से आ रहे थे। उसके भरे हुए गले से निकला—"आ गये, आ गये, हमारे वायुयान आ गये, कम्बख्त शत्रु का नाश होने मे अब देर नही!"

सिग-ली ने हाथ दबा कर अपने दोस्त का जोश ठंढा किया और कहा, "अब जो करना है सो करो। चारो तरफ शत्रु के जासूस भरे हैं, फजूल को बको मत। किसी के कान में जरा भी भनक पड़ जायगी तो लेने के देने पड़ जायेंगे।" को-तून उत्साह से बोला, "ओह, अब क्या डर है! भला सैकड़ो वायुयान जब बम बरसाना शुरू करेंगे तो शत्रु का कही नाम निशान भी बच जायगा? फिर भी हमें अपना काम तो जरूर कर ही डालना चाहिये, अच्छा उठो।"

दोनों आदमी उठ खड़े हुए। कही से खोज ढूँढ के उन लोगों ने तार के दो लम्बे टुकड़े निकाले जिनके दूसरे सिरे क्या जाने कहाँ दबे हुए थे और इन टुकड़ो का संयोग दो बड़ी बैटरियो से किया जो इनके पास मौजूद थी, तब इस बात की राह देखने लगे कि वायुयान और नजदीक आ जाएं तो आगे की कार्रवाई की जाय।

वायुयान तेजी से बढ़े आ रहे थे, पर उनका रुख कुछ उत्तर की ओर दबा हुआ था। को-तून बोला, "ठीक हमारे सिर पर नही हैं, फिर भी

बहुत कुछ रास्ते पर है। लेकिन ताज्जुब मुझे इस बात का हो रहा है कि उनके इञ्जिनों की आवाजें हम लोगों को कुछ भी सुनाई नही पड़ रही हैं।" सिग-ली ने जवाब दिया, "हमारे साइलेन्सरों में और भी उन्नति हुई दीखती है।" को-तून ने कहा, "यही जान पड़ता है, पर उन्हे ठीक रास्ते पर कर देना चाहिये, कहो तो एक बार जरा सा स्विच दबा कर इशारा करूँ?" सिंग-ली बोला, "दबाओ, पर दुश्मन होशियार न हो जाय कही!" "होशियार हो के भी अब हमारा क्या बिगाड़ लेगा?" कहते हुए को तून ने एक छोटे से बटन को जो बैटरी के बगल मे लगा हुआ था जरा देर के लिये दबा दिया।

विजली का बटन दबने के साथ ही ऐसा भास हुआ मानों सामने के मैदान और मेकंग तट के बीच में कई जुगनूँ यकायक चमक गये हों। बिजली के कई छोटे छोटे लट्टू क्षण भर के लिये जल कर तुरन्त ही बुझ गये, जिनका प्रकाश यद्यपि बहुत ही क्षीण था फिर भी निगाह आकर्षित करने को काफी था।

दोनों आकाश की ओर देखते लगे, यह जानने के लिये कि वायुयानों तक यह इशारा पहुँचा या नही, पर उन वायुयानो की गति विधि मे जरा भी अन्तर न पड़ा। सिग-ली बोला, "जान पड़ता है उन्होंने देखा नहीं! फिर एक बार!" पुनः एक बार वैसे ही जुगनू कितनी ही जगह चमक गये, लेकिन इस पर भी कुछ न हुआ। गहरी निगाह देर तक आसमान की तरफ जमा को-तून कुछ घबड़ाहट के साथ बोला, "यह क्या मामला है? ये लोग हमारे इशारे पर ध्यान क्यो नही दे रहे हैं?" सिग-ली भी बोला, "युद्ध-यान होते हुए ऐसी लापरवाही!"

कुछ देर तक और राह देखी गई। अब तक पश्चिम के आकाश को तेजी से मगर सन्नाटे में उड़े जाते हुए वायुयानों ने काला कर दिया था, पर उनकी चाल मे कोई कमी या रुख मे कोई परिवर्तन इन दोनो को मालूम न पड़ा। वे जिस ढंग से जा रहे थे उसी ढंग से बढ़ते गये, बल्कि

उनकी आगे वाली पंक्ति तो अब पूर्व के क्षितिज के पास पहुँच रही थी।

कुछ आशंका से को-तून बोला, "आखिर यह मामला क्या है ? क्या मेरा सन्देसा काउन्ट के पास नहीं पहुँचा ? क्या इन लोगो को मेरे इस इन्तजाम की खबर नहीं हुई ?" सिंग-ली बोला, "ऐसा होना असम्भव है।" को-तून ने जवाब दिया, "लेकिन अगर ऐसा नहीं है तो फिर क्या बात है ? ये लोग न तो रुकते है और न घूमते है ! न कोई जवाबी इशारा ही दे रहे है ! आखिर हो क्या गया है इन्हे !!"

जरा देर और बीती। निराशा के साथ को-तून बोला, "तब क्या करना चाहिये ? क्या पूरा इशारा कर दूँ ?" सिंग-ली ने जवाब दिया, "कर दो, मगर उससे दुश्मन जरूर होशियार हो जायगा।" को-तून बोला, "तब फिर और चारा ही क्या है ? अगर सब वायुयान मार के बाहर निकल गये तो क्या फिर लौट के आवेंगे ? और क्या हमी फिर से इशारा करने मे समर्थ होंगे ? कौन ठिकाना पुनः हम यहाँ आ भी सके या नहीं !" सिंग-ली बोला, "अच्छा तो दो फिर पूरा इशारा !"

को-तून ने जोर से एक लीवर दबा दिया, साथ ही ऐसा जान पडा मानों बगल वाले मैदान मे आग की एक लपट दौड़ गई हो। एक तरह की पतली तेज रोशनी की लकीर दूर दूर तक चमकती दिखाई पडी जिसने हमे भी दिखा दिया कि मेकंग नदी के ठीक बगल से शुरू होकर एक पतला मगर मजबूत बाँध दूर तक गया हुआ है जिसने उसके पानी को इस घाटी मे आकर भर जाने से रोक रक्खा है।

रोशनी की यह चमक इतनी तेज और स्पष्ट थी कि इस पर ध्यान न जाना असम्भव था, पर अब भी आकाश मे उड़े जाते हुए उन वायुयानो की गति मे कोई अन्तर न पडा। वे सब के सब उसी तरह उड़ते और बढते चले गये। निराशा के भाव से को-तून बोला, "बस हो गया ! इन सभो को हमारे किये धरे की या तो कोई खबर ही नहीं है या फिर ये जान बूझ कर इस तरफ से बेफिक्र है।" सिंग-ली कोई जवाब देना ही

चाहता था कि यकायक उसके पास ही कहीं से, पिस्तौल की चमक और तब आवाज उठी। फट से एक शब्द हुआ और इन लोगों के सिर के ऊपर वाली चट्टान से टकरा कर एक गोली चिपटी होकर इनके सामने गिर पडी। सिग-ली के डरे हुए गले से निकला, "सब खेल खतम ! हम लोग देख लिये गये !"

फुर्ती से को-तून ने कोई तर्कीब की जिससे वह रोशनी जो दूर-दूर तक फैल रही थी बुझ गई, तब सिग-ली का हाथ पकड कर उठते हुए वह बोला, "यद्यपि भाग निकलने की आशा बहुत कम है फिर भी एक बार कोशिश तो करेंगे ही।" दोनो आदमी उठे और अंधेरे ही मे तेजी से एक तरफ को भागे, मगर उसी समय चारो तरफ से अनगिनती बन्दूके और पिस्तौले छूटने लगी और इनको अपने सभी तरफ गोलियो की सनसनाहट सुनाई पड़ने लगी।

को-तून ने सिग-ली का हाथ दबा कुछ इशारा किया, दूसरे क्षण वे लोग जमीन पर लेट गये और रेंगते हुए एक पहाड़ी गुफा की तरफ बढ़े जिसका काला मुहाना मुँह फाड़े हुए अजगर की याद दिला रहा था।

× × ×

एक बहुत बड़ा वायुयान जमीन से बहुत ऊँचे ऊँचे उड़े जाते हुए पचासो वायुयानो से भी कही ऊँचे, शान्त निस्तब्ध भाव से खडा है।

हाँ, वह खड़ा है, उड़ता उड़ता कही जा नही रहा है। हमने गलत नहीं कहा कि वह खड़ा है। वह वायु-हीन आकाश में आ पड़े हुए किसी काले बादल के टुकड़े की तरह स्थिर है, अपनी जगह से जरा भी किसी ओर हिलता डुलता या हटता बढता नही है। कोई अलौकिक शक्ति उसे न केवल जमीन से इतना ऊपर उठाए हुए है बल्कि एकदम स्थिर भाव से उसे इसी जगह रोके हुए भी है। साधारण वायुयान, जब तक उनमे गति न रहे, जब तक वे आगे को बढते न रहे, हवा में टिके नहीं रह सकते, पर यह न जाने कैसा विचित्र यान है कि स्थिर भाव से केवल एक ही

जगह ऐसा रुका हुआ है मानो आकाशी चंदवे में सी दिया गया हो। तुर्रा यह कि न तो इसके अन्दर से किसी यन्त्र के चलने की आवाज आती है और न इसके इञ्जिनों और प्रोपेलरों के घूमने का शब्द ही सुन पड़ता है। हमे तो गुमान होता है कि कोई ताज्जुब नहीं अगर यह नीचे से अदृश्य हो।

वायुयान पर एकदम सन्नाटा है। कोई रोशनी कहीं होने या किसी के बातें करने का तो सवाल ही क्या कोई कहीं सांस लेता भी जान नहीं पड़ता। मगर इससे यह नहीं समझना चाहिये कि इस पर कोई हई नहीं। नहीं, इस पर एक नहीं कई आदमी हैं जो सभी अपना अपना काम कर रहे हैं मगर पूरी चुप्पी और निःस्तब्धता के साथ।

और सभो की फिक्र छोड़ हम उस चारो तरफ से एकदम बन्द कोठरी मे पहुचते हैं जिसमे दो आदमी चुपचाप दो कुरसियो पर बैठे हुए हैं। कोठरी मे एकदम अंधेरा है इससे इन दोनो के नखसिख अथवा सूरत शक्ल के बारे मे हम पाठको को कुछ भी नहीं बता सकते, पर इतना कह सकते हैं कि इन दोनो ही की निगाहे नीचे, वायुयान के फर्श की तरफ, गड़ी हुई हैं जहा की किसी चीज को ये बड़े ध्यान से देख रहे हैं।

वह चीज जिस पर इनकी निगाहे गड़ी हुई हैं और कुछ नहीं एक अ-पारदर्शक शीशा है जो यान के फर्श मे जमाया हुआ है और जिस पर कही से आती हुई बहुत ही हल्की सी किसी तस्वीर की आभा पड़ रही है। जब तक बहुत पास न हो जायेगे हमे मालूम न होगा कि यह तस्वीर कैसी या किसकी है अस्तु आइये हम इस शीशे को पास से और झुक कर देखें।

आह अब मालूम हुआ कि इस शीशे पर तो नीचे, बहुत नीचे, पड़ने वाली पृथ्वी की तस्वीर बनी हुई है। फोटो कैमरों के पीछे लगे हुए अ-पारदर्शक शीशो पर जैसे लेन्स के आगे के दृश्य का अक्स पड़ा करता है करीब-करीब उसी तरह इस शीशे पर नीचे की भूमि का अक्स पड़ रहा है। वह घाटी, वे तीन तरफ के ऊंचे ऊंचे पहाड़, वह चौथी तरफ बहती

जाने वाली मेकंग, यह सभी कुछ उस शीशे पर दिखाई पड़ रहा है, और दिखाई पड़ रहे हैं वे बहुत से आदमी भी जो उन घाटी मैदान और पहाड़ियों पर जगह ब जगह छिटके हुए हैं।

अगर दिन का वक्त होता, अगर चन्द्रमा की रोशनी भी आस्मान पर छाई होती, तो घिसे हुए शीशे पर इस तरह नीचे का दृश्य दिखाई पड़ जाना कोई भी ताज्जुब की बात न होती, पर हमें जो ताज्जुब हो रहा है वह इस बात पर कि यह वक्त रात का है और अंधेरा इस कदर गहरा है कि हाथ को हाथ नहीं सुझाई पड़ रहा है। नीचे के पहाड़ो और दृश्यों पर अन्धकार की काली चादर पड़ी हुई है और सिवाय पहाड़ो की चोटियों या मेकग के कभी कभी कहीं कहीं से चमक उठने वाली पानी की किसी लहर के और कुछ भी, बहुत गौर करने पर भी, यहां से दिखाई नहीं पड़ता, मगर फिर भी इस शीशे पर न जाने किस माया के बल से नीचे का पूरा दृश्य बन रहा है।

केवल नीचे का दृश्य बन रहा हो सो ही बात नहीं, इस अधर से अचल पड़े हुए वायुयान और नीचे वाली जमीन के बीच मे से जो कितनी ही काली-काली शकलें उड़ती हुई चली जा रही हैं वे सब भी इस शीशे पर स्पष्ट दिखाई पड़ रही हैं और साफ मालूम हो रहा है कि ये कितने ही वायुयान हैं जो अन्धेरे की ओट लेकर चुपचाप उड़े चले जा रहे हैं। इन वायुयानों के बारे में भी पाठकों को कुछ बताने की जरूरत नहीं है क्योंकि ये वे ही हैं जिनका हाल अभी अभी आप ऊपर पढ चुके हैं अर्थात् फ्रांस से आने वाले वे ही फ्रांसीसी हवाई जहाज जो सैगन की मदद के लिए जा रहे हैं। शीशे के ऊपर झुके हुए दोनों व्यक्ति इस समय इन्हीं यानों की उड़ान को बड़े गौर से देख रहे हैं।

यकायक नीचे जमीन पर किसी तरह की बहुत ही हलकी रोशनी कई जगह चमक गई। ऐसा जान पड़ा मानों कुछ जुगनू चमक गये हों। दोनों व्यक्तियों का ध्यान तुरत वायुयानों पर से हट कर उस तरफ चला गया

मगर फिर किसी तरह की घटना न हुई। एक ने दूसरे से कहा, "मेरा भ्रम था या कोई चीज चमकी ?" दूसरे ने जवाब दिया, "जरूर कई जगह कुछ चमक दिखाई पड़ी।" दोनों बड़े गौर से उधर ही अपना ध्यान जमा कर देखने लगे। कुछ ही मिनट बीते होंगे कि फिर वैसी ही चमक उठी। दोनों के मुँह से एक साथ ही निकला, "को-तून इशारा कर रहा है, जरूर अपने वायुयानों को। मगर ये काहे को रुकने के !" एक बहुत ही धीमी हँसी की आवाज उनके मुँह से निकली और दोनों ने कौतुक की दृष्टि से एक दूसरे की तरफ देखा, मगर यहाँ अंधेरा इस कदर था कि कोई भी दूसरे की शकल देख न सकता था।

नीचे के आकाश में से उड़े जाते हुए वायुयानों का तांता अब टूटने लगा था अधिकतर यान पूरब तरफ के क्षितिज की ओर बढ़ गये थे, सिर्फ थोड़े पश्चिमी आकाश मे और बच रहे थे। यकायक तीसरी दफे नीचे से रोशनी की चमक दिखाई पड़ी, मगर इस बार की चमक पहिले से बहुत तेज और बहुत दूर तक फैली हुई थी, पहिले की अपेक्षा देर तक कायम भी रही। इस रोशनी की मदद से साफ दिखाई पड़ गया कि एक लम्बे चौडे बाँध ने मेकंग के पानी को बगल वाली नीची घाटी में आ भरने से रोका हुआ है।

मगर उडते जाते हुए वायुयानों पर इस तेज रोशनी ने भी कोई असर न डाला और वे पहिले जैसा ही उड़ते चले गये। दोनो आदमियों ने एक बार ऐसी दृष्टि से उन यानों को देखा जिससे चिन्ता स्पष्ट प्रगट होती थी, पर जब उनकी गतिविधि मे कोई अन्तर आता न दिखा तो सन्तोष की लम्बी साँस खींच उन दोनों ने फिर जमीन की तरफ निगाह डाली। इधर उधर फैले हुए उन आदमियो मे कुछ बेचैनी और घबराहट काम करती सी जान पड़ी। कुछ हाथ इधर-उधर हिलते और कुछ निगाहें इधर उधर गौर करती जान पड़ी। साथ ही साथ पतली पतली पीली पीली रोशनियाँ भी कई जगह से उठने लगी। अवश्य ही वह पिस्तौल और

वन्दूकों के छूटने की चमकें थी, मगर इतनी दूर ऊँचे और इस बन्द कोठड़ी मे उनकी आवाजें कुछ भी सुनाई न पड़ने से उनका एक अजीब सा आभास मात्र मिल रहा था।

एक आदमी ने पतली छड़ी से शीशे पर एक जगह दिखा कर कहा, "यह देखो इस चट्टान की आड़ में, दो आदमी छिपे दिखाई पड़ रहे हैं न ?" मगर इसके पहिले कि दूसरा व्यक्ति उनको देखे या कुछ जवाब दे वे तेजी से वलने वाली रोशनियाँ गुल हो गई और नीचे अन्धेरा हो गया जिससे फिर पहिले ही की तरह एक अस्पष्ट सा चित्र मात्र उस शीशे पर दिखाई देता रह गया, हाँ गोलियों के छूटने की चमकें अवश्य ही अब भी दिखती रहीं।

एक ने कुछ घबड़ाहट के साथ कहा, "हमारे आदमी मार न डालें कही उन दोनों को !" दूसरे ने शान्ति से कहा, "नही उन्हे, पूरे आदेश मिले हुए हैं और वे ठीक काम करेंगे। अच्छा अब चलना चाहिये। फ्रान्सीसी वायुयान निकल गये। यह एक बला तो टल गई, अब उस दूसरी तरफ की टोह लेनी चाहिए।"

उस व्यक्ति ने अपने बगल से लटकता हुआ एक चोगा उठाया और मुँह के पास ले आकर उसमे कुछ कहा। दूसरी तरफ से कुछ आवाज आई, साथ ही वायुयान मे कुछ कंपन सा भास हुआ, मानों कोई यन्त्र चलाया गया हो। यान यकायक एक तरफ को टेढ़ा हुआ, तब तेजी से नीचे को गिरा, मगर शीघ्र ही सम्हला। आगे की तरफ कुछ खिचाव सा पड़ता जान पड़ा। पंखियो के चलने की हलकी गूँज सुन पड़ी। वायुयान को आगे की तरफ एक झटका लगा। दूसरे क्षण उसका गिरना बन्द हो गया और वह एक गोल-चावा काटता हुआ दक्खिन तरफ को निकल चला।

(३)

"यह क्या राजकुमार, आप इतनी देर तक रहे कहाँ और यह आपकी हालत क्या हो रही है ? अरे, आपके कपड़े तो खून से तरबतर हो रहे

हैं ! क्या आप जख्मी भी हो गए हैं ? हैं, अरे, यह क्या, ये तो बेहोश हो रहे हैं !!"

काउण्ट शैवर ने झपट के राजकुमार श्री-पद्म को सम्हाला और तब एक कोच पर लिटा दिया। सचमुच राजकुमार की हालत इस समय बड़ी ही त्रासजनक हो रही थी। उनके तमाम कपड़े खून से तर हो रहे थे, चेहरा पीला हो गया था, पैरो पर इतनी धूल चढी हुई थी मानो कोसो का पैदल सफर करते हुए आ रहे हो, और ऊपर से अब वे संज्ञा-हीन भी हो गए थे।

काउण्ट के दो एड-डी-कैम्प उनकी आवाज के साथ ही खेमे के भीतर आकर राजकुमार की देख रेख करने लगे थे और एक तीसरा डाक्टर को बुलाने दौड गया था, मगर उसकी जरूरत न पडी। आप से आप ही राजकुमार ने आँखें खोल दी और एक सूखी मुस्कुराहट के साथ कहा, "जान पड़ता है मुझे गश आ गया था, मगर घबड़ाने की कोई बात नही, अब मै पूरे होश हवाश मे हूँ।"

काउण्ट शैवर कहते ही रह गये—"है हैं, उठिये नही, पडे रहिये, पड़े रहिये !" पर वे उठ कर बैठ गये और तब बोले, "नही अब घबड़ाने की कोई बात नही, मैं पूरी तरह से दुरुस्त हो गया हूँ, मगर आप कृपा कर मेरे स्नान का बन्दोबस्त कर दीजिये और पहिनने के लिए कुछ कपड़ो का भी इन्तजाम करा दीजिए। मेरे ये कपड़े तो एक दम नष्ट हो गये है।"

काउण्ट बोले, "मै अभी सब बन्दोबस्त कराए देता हूँ, मगर आप कृपा कर यह तो बता दीजिए कि हुआ क्या आखिर और आपकी यह हालत कैसे हो गई ?"

राजकुमार जरा हँस कर बोले, "क्या आप समझ नहीं सकते काउन्ट शैवर ? हुआ बस यही कि आपके दुश्मनों को मेरे यहाँ आने की खबर लग गई और शायद कुछ अभिप्राय भी प्रकट हो गया जिससे उन्होने मुझे मार खपा कर बखड़ा तय कर देना चाहा। बारे ईश्वर ने मेरी रक्षा की।"

काउण्ट ताज्जुब से बोले, "दुश्मन ! क्या 'मंगर-सि' ने आप पर हमला किया ?" राजकुमार बोले, "नही, 'त्रि-कंटक' ने । मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आपके लश्कर में दुश्मन के आदमी मौजूद हैं और खास आपके नौकरों का भेष घरे हुए, आपको उनसे होशियार रहना चाहिए ।"

काउण्ट० । खैर दुश्मनों के जासूस यहाँ हों इसमें तो कोई आश्चर्य की बात नही है पर वे इतनी हिम्मत करें कि आप पर हमला कर दें यह जरूर ताज्जुब की बात है । कैसे क्या हुआ जरा बताइए न, और हमारे किस आदमी ने यह काम किया वह भी जरा सुनाइए ।"

राज० (कुछ हँस कर) क्या वे लोग अभी बैठे होंगे जो आप पूछ रहे हैं काउन्ट ? क्या वे इस साधारण बात को समझ नही सकते कि मैं जब उनके हमले से जीता जागता बच निकला हूँ तो आपसे जरूर हाल कहूँगा और आप जब मेरे मुँह से वह हाल सुनेंगे तो जरूर उन्हें गिरफ्तार करने की कोशिश करेंगे ! नही नही, वह सब ध्यान जाने दीजिए और सिर्फ इतने ही पर संतोष कीजिए कि मैंने खुद ही उन्हे काफी सजा दे दी है । यह खून जो आप मेरे कपड़ो पर देखते हैं मेरा नही उन्ही लोगो का है, कम से कम इसका अधिकांश ।

कह कर राजकुमार श्री-पद्म खिलखिला कर हँस पड़े मगर तब तुरत ही कुछ गम्भीर होकर उन्होंने कहा, "लेकिन एक बात है काउन्ट, मेरी आपकी क्या बाते होती हैं इसकी खबर दुश्मन तक न जाय इसका पूरा एहतियात रखना होगा । वे लोग भले ही अनुमान लगाते रहे कि मैं किस-लिए आपके पास आया हूँ, उससे कोई हर्ज न होगा, पर जिस क्षण वे जान जायेंगे कि उनके केन्द्र का भेद मुझे लग गया है और मैं उसका हाल आप लोगों पर प्रकट कर देना चाहता हूँ उसी क्षण आफत आ जायगी, अस्तु इसका पूरा बचाव रखना होगा, क्योंकि मुझे तो संदेह है कि आपके ऊँचे अफसरो में से भी कुछ दुश्मन से मिले हुए हैं ।"

कह कर राजकुमार ने इस तरह अपने चारो तरफ देखा जैसे उन्हें इस बात के किसी दूसरे कान तक चले जाने का भय हो आया हो, पर इस समय खेमा खाली था और जो दो एक लोग वहाँ मौजूद थे वे भी दूर-दूर थे, साथ ही इनकी बातचीत बहुत धीरे-धीरे हो भी रही थी। काउन्ट उनकी बात सुन गंभीरता से बोले, "बेशक आप सही कह रहे हैं राजकुमार, यद्यपि मैं उन्हीं लोगों को अपने आस पास रखता हूं जिन पर मेरा पूरा विश्वास होता है फिर भी मनुष्य की मति कब बदल जाय इसका कोई ठिकाना नहीं है।"

राजकुमार ने कहा, "यही बात है और इसी से मैं......।" पर इसी समय एक एड-डी-कैम्प को पास आते देख वे बात बदल कर बोले, "......मैं चाहता हूँ कि पहले स्नान कर लूं तब आपसे उस बारे में बातें करूँ।" एड-डी-कैम्प बोला, "राजकुमार के स्नान का सब प्रबन्ध हो गया है।" जिसे सुन वे चट उठ खड़े हुए और काउन्ट से बिदा हो उस खेमे में चले गये जहाँ नहाने धोने का सब प्रकार का उत्तम से उत्तम प्रबन्ध था।

× × ×

राजकुमार श्री-पद्म और काउन्ट शैवर ने अभी अभी भोजन किया था और तब दो गद्देदार कुरसियों पर बैठ के कीमती सिगारों का धूँआ उड़ा रहे थे। ये कुरसियें भी इस बहुत बड़े खेमे के ठीक बीचोबीच मे रक्खी हुई थीं जिससे इन पर बैठे आदमियों की बातचीत खेमे के बाहर छिप कर सुनने वाले के कानों तक किसी तरह भी जा न सकती थी। खेमें में इनके सिवाय और कोई नहीं था, दर्वाजों पर मोटे पर्दे पटे हुए थे, और बाहर काउन्ट के विश्वासी सिपाही पहरा दे रहे थे।

दोनो आदमी केवल धूँआ ही नहीं उड़ा रहे थे, दोनो में धीरे धीरे किसी बहुत ही गंभीर विषय पर बातें भी हो रही थी।

राजकुमार०। मुझे यह जान बहुत प्रसन्नता हुई कि आपने मुझसे सहायता लेना स्वीकार कर लिया और साथ ही जिस तरह से मुझे संतोष

हो जाय वैसी गारन्टी दे देना भी मंजूर कर लिया। मैं यही डर रहा था कि शायद किसी तरह की गारन्टी देने में आप लोग कही अपना अपमान न समझें और तैश में आकर अपना और साथ-साथ मेरा भी नुकसान न कर बैठें।

शैवर०। (सूखी हंसी हंस कर) अपना हानि लाभ पशु पक्षी जब समझ सकते हैं तो हम लोग भला क्यो न समझेंगे ! आपके जरिये हमारा जब इतना भारी काम निकलने की उम्मीद है तो क्या हम घमण्ड को अपने बीच मे आने देंगे ?

राजकुमार०। बेशक ऐसा ही है। अच्छा तो क्या इस विषय में भी आप लोगों ने कुछ तय किया कि वह गारन्टी क्या होगी ? किस तरह आप मुझे यह विश्वास दिलावेंगे कि काम हो जाने पर मेरे साथ दगा न की जायगी ?

शैवर०। इसका विचार और निर्णय हम लोगों ने बिल्कुल आप पर ही छोड़ दिया है। आप जो कुछ भी कहे हम करने को तैयार हैं और सब तरह से यह विश्वास आपके मन मे पैदा करने के इच्छुक हैं कि आपके साथ जरा भी दगा न की जायगी। अब आप ही बता दीजिए कि कैसे वह विश्वास आपको होगा ?

राजकुमार०। (कुछ देर चुप रहने बाद) यह विषय जरा कडुआ सा है और आप स्वयं भी मानेंगे फाउन्ट कि मैं चाहे जैसे ठंढे मन से जो भी बात कहूँ फिर भी बहुत सम्भव है कि मेरी बात सुन आपको क्रोध आ जावे, क्रोध नही तो मनःकष्ट ही हो उठे, यह सोच कर कि मै आप लोगों पर विश्वास नहीं करता और ऐसी बातें कहता हूँ जो शायद अपमानजनक हैं, अस्तु बेहतर होगा कि आप ही इस बारे में अपना कोई प्रस्ताव मुझे सुनावें।

शैवर०। (आग्रह के साथ) नही नही राजकुमार, आप विश्वास रखिए कि इस सम्बन्ध मे आप जो कुछ भी कहेगे मैं उसका बुरा कदापि

न मानूँगा। आप खुले दिल से अपनी इच्छा बयान कीजिये।

राजकुमार को फिर भी हिचकिचाते देख काउन्ट शैवर बोले, "मैं आपसे कहता हूँ न राजकुमार, कि आप खुले दिल से बातें कीजिये। मैं जोर देकर कहता हूँ कि मुगल बादशाहों की तरह अगर आप यह भी कह दें कि अपने लड़को अथवा परिवार को मैं जमानत मे आपके सुपुर्द कर दूं तो मैं इसका भी बुरा न मानूँगा और खुशी खुशी वैसा ही करने पर आमादा हो जाऊँगा। आखिर जब एक बार तय ही कर लिया गया कि आपके साथ हम लोग ईमानदारी का बर्ताव करेंगे तो फिर हमे डर ही किस बात का हो सकता है !!

राजकुमार०। (आश्चर्य से) क्या आप यहाँ तक करने को तैयार हैं ?

शैवर० (कलेजे पर हाथ रख के) हाँ मैं अपनी कन्या, स्त्री, पुत्र, सभी को आपके कब्जे मे देने को तैयार हूँ और खुले दिल से आपसे कहता हूँ कि अगर आप हम लोगो को दगा देते हुए पावें तो उनके साथ जैसा भी बर्ताव चाहे करें। मैं आपसे कहता हूँ कि आपका अगर मन चाहे तो मेरे कुटुम्ब से अथवा मेरे अफसरों दोस्तों या सहायको मे से, जिस जिस को या जितनों को भी चाहिये अपने साथ ले जाइये और जहाँ चाहिये ले जाकर रख दीजिये, अगर चाहिए तो ऐसा बन्दोबस्त कर दीजिये कि वे आपके पूरे कब्जे में रहे और जब आपका हिस्सा आपको मिल जाय तभी वे लोग हमारे पास लौट कर आवें अन्यथा नही, अथवा और भी जो कुछ या जैसा कुछ भी चाहिए बन्दोबस्त कर डालिए, मैं या मेरे साथी इसका कुछ भी बुरा न मानेंगे।

राजकुमार को आँखो मे प्रेमाश्रु भर आए। उन्होने काउन्ट शैवर के दोनो हाथ पकड़ कर अपने हाथो मे दबा लिया और कुछ रुँधे हुए कंठ से बोले—"आपकी सचाई पर मैं मुग्ध हो गया काउन्ट ! सचमुच आपके बारे मे जैसा मैंने सुना था आपको उससे बढ कर पाया। आपके ऐसा शान्त गम्भीर सत्यवक्ता आदमी होना दुर्लभ है ! अब मुझे आपसे कोई

भी गारंटी लेने की जरूरत नही है। मुझे विश्वास हो गया कि आपके हाथों मुझे धोखा न मिलेगा, आपसे कुछ लिखाने तक की अब मैं जरूरत नही समझता और आपका एक हैन्डशेक अपने लिए काफी समझता हूँ। आइये मैं और आप हाथ मिलावें और यह निश्चय कर लें कि अगर मेरी सहायता से आप लोग त्रि-कंटक के केन्द्र पर कब्जा कर सकें तो आप त्रि-कटक के अस्त्र-शस्त्र और उनको बनाने की तर्कीबें ले लीजियेगा और मुझे वहाँ का धन-रत्न और वह खदान ले लेने दीजियेगा, कहिये यह आपको मंजूर है ?"

काउन्ट की आँखों मे भी कुछ जल भर आया। उन्होंने राजकुमार श्री-पद्म का हाथ दबाते हुए कहा, "खुशी से मंजूर है, पूरे दिल से मंजूर है !"

दोनों के मुँह से कुछ देर तक कोई आवाज न निकली क्योंकि दोनों ही के दिल भरे हुए थे और दोनो ही न जाने क्या क्या सोच रहे थे। इसके बाद काउन्ट शैवर बोले, "अब अगर आपका मन भर गया हो तो आप मुझे बतावें कि आपका विचार क्या है और आप कैसे क्या करना चाहते है ?"

श्री-पद्म०। हाँ मुझे पूरी तरह से सन्तोष हो गया और अब उस विषय का तो आप दया कर जिक्र भी न उठावे ! मैं आपको सब कुछ साफ-साफ बताने को तैयार हूँ। कृपा कर उस स्थान का जहाँ फ्रेन्चइन्डो-चयना वर्मा श्याम और चीन देश की सीमाएँ मिलती हैं एक बड़ा नकशा मँगाइए और अपने आदमियो को आदेश दे दीजिये कि कोई हम लोगो को छेड़े नही। हमारी बातें किसी तीसरे के कान में न जायँ इसका तो पूरा प्रबन्ध रहना ही चाहिये।

"बहुत अच्छा" कह काउन्ट उठ कर खेमे के बाहर चले गये और लगभग दस मिनट तक लौट कर न आये। इस बीच में उन्होंने क्या क्या किया सो तो हम नही कह सकते, हाँ जब वे लौटे तो उनके हाथ मे एक

बड़ा सा लुपेटा हुआ नक्शा था जिसे एक टेबुल पर फैलाते हुए वे बोले, "मैं विश्वास करता हूँ कि अब न तो कोई हमे छेड़ने ही यहाँ आवेगा और न किसी तीसरे के कान में हमारी बातें ही जायँगी। आप उस तरफ से निश्चिन्त होकर अपनी बातें कहिये।"

राजकुमार श्री-पद्म उठ कर उस नक्शे के पास जा खड़े हुए। कुछ देर तक वे बहुत गौर से उसे देखते रहे, इसके बाद सिर हिला कर बोले, "नहीं, यह नक्शा ठीक नहीं है। यद्यपि आपके नक्शा-नवीसों ने मेहनत से काम किया है फिर भी (ऊँगली से बता कर) यहाँ, यहाँ, यहाँ, गल-तियाँ कर ही गये है। खैर ऐसा होना स्वाभाविक भी है। ये पहाड़ बड़े ही दुरूह और दुर्गम्य है। इन पर चढना या इनकी ठीक ठीक नाप जोख करना वायुयानो की सहायता से सम्भव नहीं। आप यहाँ देखिये, इस जगह तीन तरफ से घिर आने वाली पहाड़ियो के बीच मे—यहाँ पर, आपके नक्शा-नवीसो ने यह जो झील दिखाई है, वह पहिले जरूर थी, मगर अब उसका कुछ भी अस्तित्व नहीं रह गया है और झील की जगह यहाँ एक सुन्दर सरपट मैदान या घाटी बन गई है। मेकंग इस जगह से हट कर देखिये यहाँ से हो के अब बहती है।

काउन्ट०। (धीरे से) इसी जगह पर आक्रमण करने की सलाह को-तून ने दी थी।

राजकुमार०। और उसकी समझ के मुताबिक या जितना वह जान सका है उसको देखते हुए यही राय ठीक भी है, पर इसका नुकसान क्या है वह मैं आपको बता चुका हूँ और पुनः अब बताता हूँ। देखिये, इस जगह एक बाँध बना कर त्रि-कंटक ने इस घाटी को पानी से एक दम रहित करके सुखा दिया है अन्यथा मेकंग का पानी इस घाटी मे भर कर इसे एक झील के रूप मे परिणत किए हुए था, केवल झील ही बनाए हुए था सो नहीं इसमे एक रहस्य और भी है।

राजकुमार ने टेबुल पर के सामनों से एक टुकड़ा सादा कागज औ

एक पेन्सिल उठा ली और उस पर नक्शा खींचते हुए काउण्ट को समझाने लगे —

राज० । देखिये काउण्ट शैंदर, यह तो ये तीन तरफ पहाड़ हैं, यह चौथी तरफ वह बाँध है, और यह मेकंग बह रही है । यह देखिये यहाँ पर, इस जगह से इतना आगे बढ़ कर, मेकंग का वह भयंकर जल-प्रपात है जिस जगह वह नदी पहाड़ पर से एकदम सीधी सैकड़ो फिट नीचे आकर गिरती है । और इसी जगह, इस प्रपात की आड़ में, करीब-करीब इस जगह वह गुप्त गुफा है जिसकी राह नि-कंटक और उनके आदमी टापू के भीतरी हिस्सों मे आते जाते हैं या छिप कर अन्दर के गुप्त स्थानों में रहते हैं । शायद आपको उस गुप्त जगह का हाल मालूम हुआ हो ।

काउन्ट० । हमारे जासूसों ने इसके बारे मे हमें कुछ खबर दी थी पर इसका ठीक ठीक पता हमें जापानी प्रोफेसर साऊ-चूकू से लगा । अफसोस कि हम उनके कहे पर कुछ भी अमल कर न सके और वे पागल हो गए ।

राज० । अफसोस करने की जरूरत नहीं । यह भी अच्छा ही हुआ जो आपने उस पर कोई कार्रवाई न की, नही तो मेरे बताए लाभो से आप ंचित ही रह गये होते, अच्छा अब सुनिये ।

राजकुमार श्री-पद्म फिर कहने लगे—

ठीक बगल ही में पड़ता है जहाँ इन सभों ने बाँध बना कर यह घाटी निकाली है। यहाँ आकर नदी के किनारे सकरे हो जाते हैं और इस कारण यहाँ मेकंग का पूरा पानी एक दफे सिमट कर तब गिरता है। इतनी बड़ी नदी के सिमट जाने से उसके जल में कितना बल आ जायगा यह आप भी समझ ही सकते हैं, अस्तु उस पानी के दबाव के कारण इस घाटी के तीनो तरफ वाले पहाड़ो की गुफाओ के अन्दर बहुत दूर दूर तक पानी घुसा रहता था और इस घाटी मे तो कम से कम तीस पैंतीस हाथ पानी हमेशा भरा रहता था। वह पानी धीरे धीरे दूर-दूर तक रसता रहा और सैकडो वर्षों में काल-प्रभाव से उसने पहाड़ के भीतर ही भीतर अपने जाने के लिए कई सुरंगें बना ली। उन सुरंगो की राह दिन पर दिन ज्यादा से ज्यादा पानी बहता गया जिससे दिन दिन, पानी की रगड़ खा के, वे सुरंगे बड़ी होती गईं और भीतर ही भीतर से पहाड़ को अधिकाधिक खोखला करती रहीं। अवश्य ही सैकडो नही हजारों वर्षों का यह काम है फिर भी जल की रगड़ ने अब इतने बड़े-बड़े खोखले उन पहाडो के भीतर बना दिए हैं कि आज उनमे सैकड़ों ही आदमी रह भी सकते नहीं बल्कि रहते हैं भी—मेरा मतलब त्रि-कंटक और उनके कार्यकर्ताओ से है जो पहाड़ो के अन्दर की इन गुफाओ के भीतर चींटी की तरह या मिट्टी के अन्दर दीमको की तरह फैले हुए हैं।

काउन्ट ने सिर हिलाया। जरा रुक कर राजकुमार फिर कहने लगे—

राज०। इन गुफाओ के भीतर भीतर आने वाला पानी जिस जगह से बाहर होता था वही वह स्थान है जो आजकल त्रि-कंटक की गुफा का बाहरी और प्रकट मुहाना है, यानी जहाँ से प्रपात के पीछे वाली सुरंग की राह झूले के जरिये वे आते जाते हैं। आज उस गुफा के अन्दर से कुछ भी पानी नही बहता या अगर बहता भी है तो केवल बरसात के दिनों में थोड़ा सा ही, पर यदि यह बांध टूट जाय जो त्रि-कंटक ने इस जगह बना रक्खा है तो मेकंग का पानी फिर इस घाटी में आ भरेगा और

वहां से पहाड़ी गुफाओं के भीतर से होता तथा इन गुफाओं को भरता हुआ फिर उसी मार्ग से बहने लगेगा जिससे पहिले बहता था। तब जिस राह से आज त्रि-कंटक और उसके आदमी अपनी गुफा मे आते जाते हैं उसकी राह बहुत जोर से पानी निकलना शुरू हो जायगा और उस गुफा का भीतरी हिस्सा जल से एकदम भर कर उसके अन्दर का कोई भी जिन्दा रहने न पावेगा, मगर उस हालत मे त्रि-कंटक और उसके सब आदमी ही नही बल्कि वे सब मशीनें और उनकी विचित्र ईजादों को बनाने वाले यंत्र और सामान भी नष्ट-भ्रष्ट हो जायेंगे—ऐसे सामान जो अगर फ्रांस के हाथ लग जायें तो फ्रांस को समस्त संसार का प्रभु बना सकते हैं। अस्तु दुश्मन पर कब्जा करने की यह तर्कीब कम से कम मुझे तो पसन्द नही, खास कर इसलिए कि उस हालत में वह अरबों की दौलत भी नष्ट हो जायगी जो रत्नों के रूप मे वहां पड़ी हुई है।

एक क्षण के लिये राजकुमार और काउन्ट की आंखें मिल गईं। तब राजकुमार अपना बनाया नक्शा दिखाते हुए फिर कहने लगे—

राज०। इस जगह का यह बांध बना देने से जो घाटी निकल आई है इसी घाटी में त्रि-कंटक अपने वायुयानों के आने जाने और ठहरने का अड्डा बनाये हुए हैं और इसके चारो तरफ की इन पहाड़ियों मे भी उन्होंने अपने बहुत से यन्त्र और अस्त्र-शस्त्र रक्खे हुए हैं। अगर त्रि-कंटक के इस अड्डे पर हम हमला करें तो अपने को हारता देखने की हालता में इस घाटी वाले जब चाहे तभी इस बांध को तोड़ कर इसे जलमग्न कर सकते हैं और इस प्रकार अपने धन और अपनी चीजों का दुश्मन के हाथ में जाना रोक सकते हैं। जब इस घाटी में, और इसमें रहने वाली सब चीजों के ऊपर, तीस पैंतीस हाथ पानी लहराने लगेगा तो कोई क्या खाक कर सकता है?

काउन्ट०। मगर-उस हालत में यानी अगर त्रि-कटक के आदमी खुद ब खुद इस घाटी को पानी से भर दें तो फिर नीचे वाली गुफाओं

में भी तो पानी भर जायगा और वहाँ रहने वाले सब लोग डूब मरेंगे ?

राज० । नहीं, इस बात का थोड़ा बहुत डर तो जरूर है परन्तु ज्यादा नही, क्योकि इस घाटी की किन-किन गुफाओ मे से होकर पानी भीतर की तरफ घुसता है इसका पता उन लोगो ने लगा लिया है और उनके मुहानों को भी ऐसा बना रक्खा है कि जब चाहे उन्हे खोला और जब चाहे बन्द किया जा सकता है । यो तो साधारणतः वे सभी मुहाने खुले रहते हैं पर आवश्यकता होने पर बन्द भी तुरत ही किए जा सकते हैं ।

काउन्ट० । ठीक है, मैं समझ गया, मगर बड़े ही चतुर हैं ये कम्बख्त त्रि-कंटक भी जो ऐसे दुर्गम पहाड़ो के पेट के भीतर छिपी गुफाओं का पता लगा कर इन्होंने इस प्रकार उन्हें अपना किला बना डाला है !

राज० । ठीक है, मगर इसमे इन लोगों की कोई चालाकी या कारीगरी नही है । इसका पता तो इन लोगो को एक घटना-वश ही लग गया । वह घटना भी कुछ विचित्र और आपके सुनने लायक है ।

काउन्ट ने कौतूहल की दृष्टि राजकुमार पर डाली । वे कहने लगे—

राज० । श्याम देश के राजकुमार प्रजा-दीपक पाँचवें एक बार इन्ही पहाड़ों मे शिकार के लिये गये हुए थे । एक घड़ियाल का शिकार करते हुए किसी दुर्घटनावश वे मेकंग मे गिर गये और प्रपात की ओर वह चले । उस समय त्रि-कंटक में से एक कोई केशवजी नामक वृद्ध सज्जन ने अपनी जान पर खेल के उन्हे बचाया, पर उनको बचा के भी अपने को बचा न सके और उसी मेकंग मे डूब मरे ।

केशवजी के साथी उन पर बड़ी ही श्रद्धा-भक्ति रखते थे । उनके डूब मरने का विश्वास हो जाने पर भी उन्होने लाश की खोज मे कोसों तक नदी छान मारी, पर लाश कही न मिली । एक एक गुफा, एक एक घाटी, एक एक कुण्ड वे तलाशने लगे और इसी खोज ढूँढ मे इन गुफाओं का उन लोगो को पता लगा ।

काउन्ट० । उनकी लाश मिली ?

राज०। नहीं, वह तो नहीं मिली, मगर एक गुफा मिली जिसकी राह घाटी का पानी बहता हुआ नीचे की गुफाओं में घुस जाया करता था। ऊपर वाली गुफा का मुहाना बन्द कर देने से नीचे वाली गुफाओं का पानी धीरे धीरे निकल गया और वे खाली हो गईं, और तब उन्हीं गुफाओं के भीतर-भीतर चलते हुए वे लोग वहाँ पहुँचे जहाँ आज कल मेकंग का जलप्रपात अथवा वह मुहाना है जिसको इन लोगों ने अपने आने जाने का वर्तमान रास्ता बना रक्खा है।

काउन्ट०। ठीक है, अच्छा तब? अब अपना आगे का विचार कहिये। नि-कंटक का वह गुप्त केन्द्र कहाँ है जिसका सुबह आपने जिक्र किया था और उस पर किस तरह आप हम लोगों का कब्जा करा सकते हैं।

राज०। उसका भी हाल सुनिये। अब फिर जरा मेरे बनाए इस नक्शे पर ध्यान दीजिये। देखिये यह तो वह घाटी है जिसे उन लोगों ने बाँध बना कर पानी से खाली किया है या जिसमे उनके वायुयान और यंत्रादि रहते हैं, और यह देखिये इस पहाड़ी के दूसरी ओर, यहाँ इस जगह, माती-पू* का प्रसिद्ध दलदल है, तथा यह देखिये इस लंबे पहाड़ी सिलसिले के दूसरे छोर पर श्याम देश के युद्ध-देवता का वह सुप्रसिद्ध मंदिर है जो 'आहों की गुफा' के अन्दर पड़ता है।

काउन्ट०। वही जिसमें भारतवर्षीय वैज्ञानिक गोपालशंकर गये थे?

राज०। हाँ, वही।

काउन्ट०। अच्छा! वह मंदिर इस जगह के इतने पास से पड़ता है!

राज०। जी हाँ, यद्यपि उसके और इसके बीच के पहाड़ घाटियाँ और रास्ते ऐसे दुर्गम हैं कि ऊपर ऊपर वहाँ जाने में सत्तर अस्सी कोस का मार्ग पड़ जाता है, लेकिन आपको यह सुन के आश्चर्य होगा कि उन आहों की गुफा से यहाँ इस घाटी तक भीतर ही भीतर सुरंगो का एक

---

* 'माती-पू' श्यामी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'मौत की घाटी'। ये सब नाम इस उपन्यास के पहिले भाग में आ चुके है।

लंबा सिलसिला है जिनके जरिये कुछ ही घंटों मे वहाँ से यहाँ पहुँचा जा सकता है।

काउन्ट०। अच्छा!

राज०। हाँ, और केवल यही नही, उस 'आहो की गुफा' से निकलने वाली इन सुरंगो का एक सिरा इधर 'माती-पू' और दूसरा इधर मेकंग के पीछे वाली इस गुफा तक भी आया हुआ है।

काउन्ट०। अरे, ऐसा!

राज०। जी हाँ, यही बात है।

काउन्ट०। अच्छा तब?

राज०। त्रि-कंटक अब इन गुफाओं से इतना ज्यादा काम लेने लगे हैं जितना स्वयं युद्ध-देवता के पुजारी और आहों की गुफा के मूल निवासियों ने भी कभी सोचा न होगा। उन्ही की राह वे इधर से उधर आते जाते रहते है, उन्ही की राह खदान से निकलने वाले जवाहिरातों को ले जाकर अपने केन्द्र मे रखते हैं, उन्ही की राह उन्हे बाहर ले जाकर बेचते हैं, और उन्ही के अन्दर वही अर्थात् गुफाओं के उसी लंबे सिलसिले मे, किसी जगह ले जा कर छिपा भी आते हैं। उसमें एक जगह एक तिरमुहानी-सी पड़ती है और वही त्रि-कंटक का केन्द्र है। उस स्थान पर अगर आप कब्जा कर लें तो त्रिकंटक को सहज ही गिरफ्तार करके उसके यन्त्रो और यानों पर कब्जा कर सकते हैं और उस अपार धन-राशि को भी प्राप्त कर उसे मेरे हवाले कर सकते हैं जो वहाँ संगृहीत है।

काउन्ट०। (जिनकी आँखों से जरा देर के लिए एक विचित्र-सी चमक निकल पड़ी थी) अच्छा वह खदान कहाँ है जिसमें से वे रत्न त्रि-कंटक निकालते हैं?

राज०। वह इसी 'माती-पू' के बगल मे है मगर उसका ठीक-ठीक हाल मुझे अभी मालूम नहीं हो पाया है, केवल इतना पता लगा है कि उसी केन्द्र मे कोई एक नक्शा है जिसमे उस खदान का पूरा पता दिया गया है।

काउन्ट० । (जिनकी आंखें पुनः चमक उठी) और उन सब यन्त्रों को बनाने की तर्कीवें ? आपने कहा था कि मृत्यु किरण, आटोमैटिक पाइलट, ऐटमिक गन, और अलोपी वायुयान बनाने की तर्कीवें भी हमें मालूम हो जायेंगी । उन्हें हम लोग कैसे जान सकते हैं ?

राज० । उस केन्द्र में त्रि-कंटक में से कोई एक सदैव वर्तमान रहता है और वही वहां के कागज-पत्रों और धन-रत्नो की हिफाजत करता है। उन्हीं कागज-पत्रों में इनके सब आविष्कारों का पूरा हाल लिखकर इसलिए रक्खा गया है कि अगर किसी दुर्घटनावश त्रि-कंटक में से कोई या सब मर खप भी जायं तो दूसरा जो उसका स्थान ग्रहण करे वह उनसे काम ले सके । मैं आपको ठीक उस जगह तक पहुंचा सकता हूं मगर अवश्य ही हमारा आक्रमण इस तरह से होना चाहिए कि वे लोग होशियार होने या उन कागज-पत्रों को नष्ट करने न पावें ।

काउन्ट० । और इसकी क्या तर्कीब हो सकती है ?

राज० । बहुत सहज !

काउन्ट० । यानी ?

राज० । आप लोग कुछ बड़े-बड़े और खास-खास आदमी कुछ चुने हुए योद्धाओ को लेकर आहों की गुफा मे चले चलिए और वहां से उसी गुप्त सुरंग की राह भीतर ही भीतर उस केन्द्र तक पहुच जाइए ।

काउन्ट० । क्या ऐसा होना सम्भव है ? क्या त्रि-कंटक ने आहों की गुफा में अपने जासूस बैठा न रक्खे होगे ?

राज० । जरूर बैठाए हैं, पर उनको धोखा देकर हमें अपना काम करना होगा ।

काउन्ट० । वह कैसे सम्भव होगा ?

राज० । अकसर पर्व त्योहारो पर उस गुफा में हजारो आदमी युद्ध-देवता का दर्शन करने वास्ते जाते हैं । ऐसे ही किसी मौके पर हमलोग भी यात्रियों का भेष धर के उस गुफा में घुसेंगे और अपना काम साधेंगे ।

एक बात और भी है। वहां रहने वाले त्रि-कंटक के जासूसों में दो तीन मेरे खास आदमी हैं, उनसे भी हमें मदद मिल सकती है।

काउन्ट०। और उस गुफा मे जाना कैसे सम्भव होगा? वह श्याम राज्य के अन्दर पड़ती है जिसके साथ हमारा केवल युद्ध ही नही हो रहा है बल्कि जिसका राजा मंगर-सि हमारे देश मे घुस भी आया है।

राज०। मुझे मालूम है कि मंगर-सि 'नोम-पेन' तक आ गया है पर यह बात हमारे लाभ की ही है। ऐसी हालत मे समस्त राज-कर्मचारियों का ध्यान इधर उधर बँटा हुआ है और उनकी सीमा पर से उनकी दृष्टि एक दम ही हट गई है। हम लोगों का सीमा पार करके आहों की गुफा तक पहुंच जाना कुछ भी कठिन नही होगा क्योंकि दर्शनार्थी यात्री श्याम देश से भी कुछ कम 'माह-जोंग' तक नहीं जाते।

काउन्ट०। और यह पूरी मुहिम कितने दिनो की होगी? इसमें किस किस का जाना आप पसंद करेंगे? इसमे कितने सिपाहियो की दरकार होगी? आप जानते ही हैं कि हम लोग न तो ज्यादा दिनो के लिए यहां से हट ही सकते हैं और न ज्यादा सिपाही खाली ही कर सकते हैं।

राज०। सब काम पूरे अड़तालिस घंटों मे निपटाया जा सकता है अगर कुछ वायुयान भी हमारी मदद पर रहें। यहां, सैगन से, उत्तर पश्चिमी सीमा के किसी निर्जन स्थान तक पहुँच कर हम सीमा पार करेंगे और आहों की गुफा में पहुँच जायगे जहां से अगर कोई अण्डस न आ पड़े तो सिर्फ चार घण्टे मे उस केन्द्र तक पहुँचा जा सकता है। सिपाही हमे ज्यादा नही चाहियें, अगर पचास साठ भी कट्टर लड़ाके मिल जायेंगे तो बस हैं, हां उनके अफसर अच्छे विश्वासी तथा बुद्धिमान जरूर होने चाहियें।

काउन्ट०। किसको किसको साथ ले जाना आप पसन्द करेंगे?

राज०। आपका चलना तो जरूरी ही है, इनके सिवाय जेनरल श्र और आनरेबिल फराडे को भी चलना चाहिये। पर इनके अलावे भी मैं

कम से कम बीस पचीस बुद्धिमान और हिम्मती अफसर चाहूँगा।

काउन्ट०। बीस पचीस! इतने क्या होंगे?

राज०। ये गुफाएँ बड़ी ही पेचीली और साथ ही डरावनी भी हैं तथा इनके अन्दर कितने ही तरह के खतरे भरे हुए हैं। कहीं अजगर मिलते हैं तो कहीं साँप, कहीं बाघ तो कहीं घड़ियाल। साधारण लोगों का काम नहीं है कि उनके अन्दर जा के अपना काम बना लें।

काउन्ट०। (चिन्ता के साथ) मगर एक साथ ही हम तीनों व्यक्ति और ऊपर से इतने चुने हुए अफसर राजधानी से चले जायंगे तो यहाँ का क्या होगा? आप जानते ही हैं कि मंगर-सिं केवल आक्रमण ही नही कर रहा है बल्कि फतह करता हुआ बढ़ता भी चला आ रहा है। आपको शायद अभी मालूम नही हुआ है पर कह देने में हर्ज भी नही कि उसने 'नोम-पेन' पर कब्जा कर लिया और अब सीधा राजधानी की तरफ बढ़ रहा है।

राज०। अच्छा! मंगर-सिंह ने 'नोम-पेन' ले लिया!!

काउन्ट०। (अफसोस के साथ) हाँ, वहाँ का हमारा एक बड़ा अफसर दुश्मन से मिल गया जिससे हमे यह शिकस्त उठानी पड़ी।

राज०। (लापरवाही के साथ) खैर कोई हर्ज की बात नहीं। अभी उसे राजधानी तक पहुँचते हफ्तों लगेंगे। इस बीच में खुशी से हमलोग अपना काम करके लौट आ सकते हैं। आप ही सोच लीजिए कि अगर एक भी अलोपी वायुयान आपको मिल गया तो आप क्या मंगर-सिं को तहस नहस नहीं कर सकते? और फिर एक बात और भी है, अगर हमें......

राजकुमार श्री-पद्म काउन्ट शैवर के और पास खसक गये तथा उनके कान के पास मुँह कर धीरे धीरे न जाने क्या क्या कहने लगे। लगभग घड़ी भर तक इनकी बातें होती रहीं और इस बीच मे राजकुमार ने न जाने क्या कुछ कहा कि काउन्ट की हिचकिचाहट बिल्कुल ही जाती रही। राजकुमार की आखिरी बात सुन कर तो वे एक दम ही

खुश हो गये और उनका हाथ पकड़ के बोले, "वाह वाह, अगर ऐसा हो सके तो फिर क्या बात है, एक साथ ही अपने दो दो दुश्मनों को हम काबू मे कर लेंगे ! मगर क्या आप ऐसा कर सकते है ?"

राजकुमार गम्भीरता से बोले, "बेशक !" काउन्ट शैवर खुशी से भर्राये गले से बोले, "तब फिर कोई सोच विचार करने की जरूरत नही, मैं पूरी तरह से आपके कथनानुसार काम करने को तैयार हूँ !"

श्री-पद्म ने कहा, "ठीक है, तब आप आनरेबिल फराडे और जेनरल श्रू को बुलाइये और इसी वक्त अपना प्रोग्राम तय कर लीजिये, देर करने की जरूरत नही।"

"हरगिज नही !" कहते हुए हुए काउन्ट ने खुशी-खुशी घंटी पर हाथ रक्खा।

———

अजितसिंह

(१)

रात की काली अँधियारी ने उस घाटी की भीषणता को बहुत कुछ कम कर रक्खा है जिसके अन्दर की एक डरावनी गुफा मे हम अपने पाठकों को ले चलते हैं।

बाहर से तो यही जान पड़ता है कि इस गुफा मे कोई भी नहीं, कोई जंगली जानवर तक नही रहता, पर वास्तव मे ऐसा नही है। और समय चाहे इसमे कोई भी न रहता हो पर इस समय तो दो नौजवान इसके एक कोने मे दबके हुए इस तरह पड़े हैं मानो इनके बदन मे जान ही न हो। न तो इनके शरीर का कोई हिस्सा हिलता है, और न इनके साँस के आने जाने की ही आहट आती है। इनके काले कपड़े गुफा के अन्धकार से इस तरह मिल गये हैं कि एक दम इनसे चार कदम के भी फासले पर आकर कोई खड़ा हो तो इन्हे देख नही सकता या अगर देखे भी तो इन्हे पहिचानना तो एक दम ही असम्भव है। मगर हम खूब जानते हैं कि ये कौन हैं या किस इरादे से यहाँ इस तरह पड़े हुए हैं। ये फ्रांसीसियों के वे ही दोनों जान पर खेल के काम करने वाले जासूस और काउन्ट शैवर के विश्वास-पात्र साथी सिलवा और कोमष हैं जिन्हें अब तक हमारे पाठक सिग-ली

और को-तून के नाम से काम करते देख आए हैं और इस समय भी इनका रंग रूप बिल्कुल वैसा ही है जैसा अब तक हम देखते आये हैं, फर्क अगर कुछ है तो यही कि इस समय ये दोनों ही चुटीले तथा पस्त हुए भये हैं, फिर भी लगन के सच्चे इन दोनों ने अपनी हिम्मत इस हालत मे भी गँवाई नही है, जिसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि ये इस समय ऐसे ढंग पर ऐसी जगह मे मौजूद दिखाई पड़ रहे हैं जहां अगर कोई इनका दुश्मन इन्हे देख पाये तो देखते-देखते इनके बदन की धज्जियां उड़ जांय। आइये आगे बढ कर जरा इनके पास चलें और अगर मुमकिन हो तो इनकी बातें भी सुने ताकि कुछ पता लगे कि यह कौन सी जगह है या ये क्यों यहां इस तरह दुबके पड़े हुए हैं।

आह, अब इतना पास आने से मालूम हुआ कि ये दोनो क्यो इस तरह जमीन पर पड़े हुए है। यहां, इस गुफा के पथरीले फर्श में, एक लंबी बारीक दरार है जिसमे पारी पारी से आंख और कान लगाते हुए ये दोनों कुछ देख और सुन रहे हैं। दरार इतनी पतली है कि साधारण रीति से शायद दिन के चमकते हुए उजाले मे भी वह इधर से गुजरने वाले को दिखाई न पड़ती, इन दोनो ने इस अंधेरे मे कैसे इसे देख लिया यही सोच हमे ताज्जुब होता है, खास कर जब हम यह सोचते हैं कि इस समूची घाटी और गुफाओं के उस पेचीले सिलसिले मे जिससे यह घाटी भरी हुई है, रात दिन खूब सख्त पहरा पड़ता है, और इसी से इस बात पर भी हमे ताज्जुब होता है कि ये दोनो इस जगह तक पहुँच भी कैसे सके। खैर वह तो जो कुछ भी हो और ये जिस तरह भी यहां आए हों, हमे तो यही कौतूहल हो रहा है कि दरार मे ये क्या देख सुन रहे हैं, अस्तु हम भी देखना चाहते हैं कि वहां क्या है। आइये पाठक, इन दोनो की तरह हम-लोग भी अपने कानो और आंखों से काम लें और देखें कि क्या मामला है। आइये और इस तरह जमीन पर लेट जाइये कि इन्हें आहट न लगे, तब देखिये कि दरार के अन्दर क्या तमाशा दिखाई पड़ता है।

अरे, यह क्या बात है ! दरार के पास सिर आते ही यह गरम हवा क्यो गालों मे लगने लगी ? क्या यह इसी दरार मे से उठ रही है ? बेशक यही बात है ? इस दरार के नीचे की तरफ जरूर कोई दूसरी कोठरी गुफा या तहखाना है जिसमे से उठने वाली गरम हवा इस दरार की राह से निकल रही है ; मगर सिवाय इस बात के और कुछ तो मालूम नहीं होता । न तो आंख लगाने से कुछ दिखाई देता है, न कान लगाने से कुछ सुनाई ही पड़ता है । तब ये दोनो यहां क्या कर रहे हैं ? नही नही, हमारा खयाल गलत है, नीचे से जरूर कुछ आवाज आ रही है मगर साफ समझ मे नही आती, और हां कुछ कुछ रोशनी भी तो अब मालूम पड़ने लगी है । शायद कुछ देर मे आंख और कान अभ्यस्त हो जायें तो कुछ देख सुन भी सकें ।

ठीक है, अब कुछ नजर आने लगा । नीचे जरूर कोई बड़ी जगह है जिसमें कही दूर पर बलती हुई रोशनी नीचे के फर्श पर चलते फिरते कितने ही व्यक्तियो की अस्पष्ट आभा दिखला रही है । अवश्य ही वे कौन हैं या किसलिए वहां चल फिर रहे हैं यह तो पता नही लगता पर यह जरूर मालूम हो रहा है कि किसी तरह की परेशानी या घबराहट में ये लोग जरूर पड़े हुए हैं ।

हैं, यह सीटी की आवाज कैसी ? और नीचे से आई या बाहर कहीं से ? नही, आवाज बहुत ही पतली थी, इसलिए जरूर यह सीटी नीचे ही किसी ने बजाई और जरूर इसका कोई मतलब भी है, क्योंकि देखिये, इस सीटी की आवाज के साथ ही नीचे वाले आदमी अपना चलना फिरना बन्द कर कायदे से खड़े होने लगे हैं, फौजी कायदे से, परा बांध कर, मानों सीटी से कोई फौजी हुक्म दिया गया हो और वे सब फौजी सिपाही हों जो अपने अफसर का हुक्म पाकर पंक्ति-बद्ध होकर खड़े हो रहे हो । यह सब है क्या आखिर ? और नीचे वाले लोग अगर फौजी सिपाही ही हैं तो ये सिपाही किसके हैं ?

सब लोग कायदे से खड़े हो गये और अब एक अधेड़ व्यक्ति ने जिसकी पोशाक उसका कोई फौजी अफसर होना बताती है उस पंक्ति के सामने खड़े होकर कुछ कहना शुरू किया। इस अधेड व्यक्ति की सूरत शक्ल तो यद्यपि ऊपर से ठीक नही दिखाई पडती मगर उसकी बातें कुछ कुछ जरूर सुनाई पडती हैं मगर सो भी खंड-खड हो कर, इस तरह पर कि उनका ठीक-ठाक मतलब निकाल लेना कठिन है—"दुश्मन ने........ लिया . की........ गुफा .. .. है...और.... उसे....रोका... गया...क्योंकि हम लोगो...इसलिए चाहे जो भी हो...हरगिज न....।"

मगर ये बाते चाहे कैसी हो उखडी पुखडी या अधूरी क्यो न हों, पर मालूम होता है कि को-तून और सिग-ली ने इसका मतलब अच्छी तरह समझ लिया, क्योंकि जैसे ही सीटो की आवाज के साथ-साथ नीचे वाला वह दल एक तरफ को रवाना हुआ वैसे ही ये दोनो भी उठ खड़े हुए और आपुस मे कुछ बातें करने के बाद तेजी से गुफा के अन्दर की तरफ बढ़े। चारो तरफ यद्यपि घोर अन्धकार था फिर भी दोनो इस तरह बढे जा रहे थे मानो दिन रात आते जाते यह रास्ता इनको मश्क हो गया हो। आइये हम भी इनके पीछे चले और देखे कि ये कहां जाते या क्या करते हैं?

यह गुफा है कि शैतान की आंत। और इसमे गिरहे कितनी पड़ी हुई हैं! घूमती फिरती और चक्कर खाती हुई यह केवल इधर उधर नही घूमती बल्कि कही ऊपर तो कही नीचे, कही दाएँ तो कही बाएँ, झुकती हुई इस तरह जाती हैं मानो चूहो की बिलें हो, साथ ही इतनी अन्य सुरंगें जगह-जगह से आकर इसमे मिली हैं कि उनके पूरे सिलसिले में सैकडो नही बल्कि हजारों ही आदमी इस तरह छिप सकते हैं कि उन्हें खोज कर निकालना एक दम असम्भव होगा! हमें खास कर ताज्जुब तो इस बात का हो रहा है कि ये दोनो आदमी अन्धेरे मे ही किस तरह अपना रास्ता पहिचानते हुए जा रहे हैं कि जरा सा एक दफे भी कही हिचकिचाते नही और न इन्हे अपने पांव रोक कर कुछ सोचना ही पड़ता है।

खैर वह जो कुछ भी हो, को-तून और सिंग-ली लगभग बीस मिनट तक बराबर तेजी से यद्यपि दबे पाँव बढ़ते चले गये, और तब एक जगह पहुँच कर इन्होने अपने पैर रोके। इस समय जहाँ पर ये थे उस जगह यदि दिन का वक्त अथवा चाँदना होता तो हम देखते कि आगे का रास्ता दो तरफ को फूट गया है, एक दाहिने को और दूसरा बाएं को, और सामने की तरफ अनगढ पहाड़ी ढोकों की एक दीवार सी खड़ी दिखाई पडती है। मगर ये लोग इस दीवार के सामने क्यों खड़े हो गये हैं ?

धीरे-धीरे, एक एक करके, दोनों आदमी उन ढोकों पर पैर रखते हुए उस अनगढ दीवार पर चढने लगे, यहाँ तक कि कुछ ही देर बाद गुफा के फर्श से दस बारह हाथ ऊँचे पर दिखाई पड़ने लगे। आह, अब मालूम हुआ कि इनका इरादा क्या है! इस जगह, जमीन से इतने ऊँचे पहुँच कर, किसी बड़ी चिड़िया के घोसले की तरह, एक छोटी गुफा का पतला मुंह दिखाई पडा जिसके सामने लगे अनगढ पत्थर के ढोके को पीछे ढकेल ये दोनो रेंगते हुए उसके अन्दर घुस गए और भीतर पहुंच उस पत्थर को पुनः ज्यों का त्यों लगा दिया।

चार पाँच हाथ इसी तरह रेंगते हुए चले जाने बाद रास्ता कुछ प्रशस्त होने लगा और थोड़ी दूर और जाते जाते एक लम्बी चौड़ी गुफा के रूप मे बदल गया जिसमे इतनी जगह थी कि पचासो आदमी उसमें आराम से रह सकते थे। यद्यपि इस गुफा मे भी इस समय घोर अन्धेरा तथा सन्नाटा था तथापि इन दोनों के यहाँ पहुंचते ही किसी ने धीरे से पुकारा—"कौन ?" को-तून बोला, "दोस्त" और इसके साथ ही अन्धकार में से निकल निकल कर कितनी ही काली काली शक्लें इन दोनो के आस पास इकट्ठी होने लगीं जिनकी सूरत शक्ल के बारे में कुछ भी कहने की इजाजत यहाँ का घना अँधेरा हमें नही देता।

को-तून ने अपने बगल में किसी के आकर खड़े होने की आहट पाई और उसकी देह पर हाथ रखने से फौजी पौशाक ने उसका रुतबा प्रकट

किया। उसने अपनी उत्तेजना को दवाते हुए बड़ी मुश्किल से और बहुत ही धीमे स्वर मे कहा, "जेनरल कोमुरा, वडी अच्छी खवर है! हमारे काउन्ट शैवर ने वहुत से आदमियो को लेकर इस आहों की गुफा पर हमला कर दिया है !!"

"हैं, क्या सचमुच ?" कहते हुए जेनरल कोमुरा ने उत्कंठा से को-तून का हाथ पकड लिया। उसने जवाब दिया, "हां, बिलकुल सही बात है, और मालूम होता है कि काउन्ट का हमला वहुत भयंकर हुआ है क्यो कि दुश्मन मे इस खबर ने एकदम हलचल डाल दी है। सब तरफ से जुट कर लोग उनका मुकाबला करने के लिए जा रहे हैं।"

जेनरल कोमुरा उत्तेजना से बोले, "अरे! अगर यह वात है तो सोचना जरूरी है कि हम लोग किस तरह उन्हें मदद पहुंचा सकते हैं!" इसी समय उनके बगल से किसी ने कहा, "वेशक, क्योकि इसमे कोई शक नही कि काउन्ट को जरूर कोई गहरा भेद लगा है, तभी तो उन्होने यहा हमला किया है!" एक तीसरा आदमी बोला, "मगर हम लोग मदद कर ही क्या सकते हैं जो खूद चूहो की तरह बिलो में छिपे अपनी जान की खैर मना रहे हैं!"

को-तून बोला, "कुछ रोशनी करिए और एक जगह बैठ जाइए। मुझे और भी कुछ ऐसी बातें मालूम हुई हैं जिनसे अगर काम लिया जाय तो हम वेशक बहुत कुछ मदद काउन्ट को पहुँचा सकते हैं।"

जेनरल कोमुरा ने कुछ हुक्म दिया। एक बहुत हलकी सी रोशनी एक तरफ दिखाई पड़ी जो शायद किसी लालटेन पर काला कपड़ा ढांक देने के कारण इतनी धीमी हो रही थी कि उसकी मदद से किसी की सूरत तक अच्छी तरह देखना असम्भव था, पर इतनी रोशनी ने भी उस गुफा में इकट्ठे कितने ही आदमियों की छाया दिखला दी जो सब के सब को-तून को घेर कर खड़े थे। जेनरल ने कुछ इशारा किया। सब लोग जमीन पर बैठ गये और को-तून की बातें गौर से सुनने लगे जो स्वयं

उन सबों के बीच में बैठ गया था। मगर अभी उसने बोलने के लिए अपनी जुबान खोली ही थी कि किसी तरह की आहट उन लोगोंको लगी। गुफा के पिछले हिस्से में किसी तरह की आवाज हुई, इस तरह की मानों कोई कंकड़ी छत से जमीन पर गिरी हो। सब लोग चौक पड़े और साथ ही को-तून बोल पड़ा, "लीजिये, यह भी बहुत अच्छा हुआ जो हमारा दोस्त भी यहाँ आ पहुंचा। अब हम लोग बहुत मजे मे अपना काम कर सकेंगे। जेनरल, जरा किसी आदमी को भेजिये जो मदद देकर उसको यहाँ ले आवे।"

गुफा को छत की तरफ से किसी चीज के सहारे उतरते हुए एक आदमी को कुछ लोगो ने मदद देकर नीचे उतारा और जेनरल कोमुरा के पास ले आये। आते ही उसने अदब से जेनरल को सलाम किया जिन्होने उसका हाथ पकड़ कर अपने बगल मे बैठाते हुए प्रेम से पूछा, "हू-शान, तुम इधर कई रोज से कहाँ गायब हो गये थे? आओ और यहाँ बैठ कर बताओ कि तुम्हारी तरफ क्या हो रहा है?"

इस आदमी की सूरत हमने आज तक न देखी थी और न हम यही कह सकते हैं कि यह कौन है या कहाँ का रहने वाला है, फिर भी रंग-ढंग और अन्दाज से पता लगता है कि यह इन्ही लोगो का कोई जासूस है जो त्रि-कंटक के अदमियों मे मिला जुला बहुत दिन से अपना काम कर रहा है। जेनरल की बात सुन उनके पास ही बैठ एक बार उनके पैर छूने बाद वह आदमी बोला—

हू-शान०। मैं इसलिए नही आ सका कि मुझको एक जरूरी खत दे के सरहद पर भेज दिया गया था, फिर भी मैं आप लोगों की खोज खबर बराबर रखता था और मुझे मालूम था कि आप लोग अपनी जगह में आराम से छिपे पड़े हैं तथा दुश्मन को अभी तक आपका कुछ पता नहीं लगा है। मुझे अगर कुछ चिन्ता थी तो यही कि कहीं आप लोगों का रसद पानी न चुक गया हो।

जेनरल कोमुरा०। नहीं नहीं, सो सब तो काफी हम लोगों के पास

था, तुमने इतना सामान जुटा दिया था कि जो इतनी जल्दी खतम थोड़ी ही हो सकता था ! फिर हम लोग किफायत से भी काम चलाते थे, हाँ तब यह जरूर था कि यहाँ इस बिल में छिपे छिपे हम लोगो की तबीयत घबड़ा उठी थी और मन यही करता था कि बाहर निकले और कुछ करे, बारे वह मौका भी देखते है कि आ ही गया है, क्योंकि तुम्हारे दोस्त को-तून ने अभी एक अच्छी खबर हम लोगो को दी है।

हू-शान०। जी हाँ, इन्होंने जरूर आपसे कहा होगा कि काउन्ट शैवर ने इस 'आहो की गुफा' पर हमला कर दिया है। किस तरह की खबर पाकर उन्होंने ऐसा किया, अथवा यहाँ आ के वह क्या पाने की उम्मीद रखते हैं यह तो मैं नही कह सकता, पर इतना जरूर कह सकता हूँ कि इस मौके पर ऐसा कर काउन्ट और उनके सलाहगीरों ने सख्त गलती की।

जेनरल०। (चौक कर) सो क्या ?

हू-शान०। मंगर-सि फतह करता हुआ सैगन की तरफ बड़ी तेजी से बढा जा रहा है। कंबोज प्रान्त के केवल पुजारी और संन्यासियो ने ही नही, बल्कि खास फ्रान्सीसी फौज की बहुत सी देशी टुकड़ियों ने भी खुले आम विद्रोह कर दिया है और कितने ही तो मगर-सि से मिल उसे मदद भी पहुचाने लगे हैं। 'नोम-पेन' उसके हाथ मे पड़ गया और अब वह सीधा सैगन की तरफ बढ रहा है। कोई ताज्जुब नही जो वह आज ही कल मे सैगन भी कब्जे मे कर ले।

जेनरल०। (अफसोस और ताज्जुब से) है ! सैगन पर कब्जा कर ले ! मंगर-सि वहाँ तक बढ सकता है !!

हू-शान०। जी हाँ। मैं केवल सरहद ही नही बल्कि वहाँ से युद्धक्षेत्र तक गया था और उस जगह का समूचा रंग-ढंग देख कर आ रहा हूँ। फ्रान्सीसी फौज के आधे के लगभग नेटिव सिपाही इस समय मंगर-सि की फौज मे हैं और जिस समय मैं वहाँ से चला राजधानी सिर्फ कुछ मील दूर रह गई थी।

जेनरल० । (चिन्ता के साथ) मगर ऐसी हालत मे काउन्ट को राज-धानी छोड़ इधर आने की जरूरत क्या पड़ी फिर ? (कुछ सोच कर) नही नहीं, या तो तुम्हारी खबर मे कुछ अतिशयोक्ति है और या फिर इसके भीतर कोई गूढ रहस्य है । काउन्ट शैवर ऐसे कच्चे खिलाड़ी नही हैं कि अपनी राजधानी को खतरे में डाल व्यर्थ की किसी कोशिश में निकल पड़ें । अच्छा तुम्हें यह भी कुछ पता लगा कि काउन्ट के इस गुफा पर आक्रमण करने का अभिप्राय क्या है ?

हू-शान० । (सिर हिला कर) सिवाय आप लोगों की मदद करने के और मतलब हो ही क्या सकता है ! इस शैतान की आंत जैसी गुफा में रक्खा ही क्या है और ?

को-तुन० । (धीरे से) शायद काउन्ट उन वायुयानों पर भरोसा कर रहे हों जो फ्रान्स से आये हैं ?

जेनरल० । बहुत मुमकिन है, और हर हालत में बिना राजधानी की मजबूती और हिफाजत का पूरा प्रबन्ध किए काउन्ट इधर पाँव रखने वाले भी कब हैं । इस बात को मैं कभी मान नहीं सकता कि वे बिना आगा पीछा विचारे किसी मुहिम पर रवाना हो गये होंगे । मगर हाँ यह विचार जरूर मेरे मन मे उठ रहा है कि आखिर उनके सैंगन से इतनी दूर यका-यक इधर चले आने का सबब क्या है ! यद्यपि वे हम लोगों से वादा करके गए थे कि राजधानी पहुँचते ही हमारी मदद के लिए लोगों को रवाना करेंगे लेकिन वह काम तो अपने कुछ अफसरोंके जरिये भी वे कर सकते थे, तब फिर खुद ही इधर धावा कर देने का सबब मेरी समझ में कुछ नहीं आता ।

को तुन० । वह मैं आपसे कहने ही वाला था जब भाई हू-शान आ गये । मुझे जो कुछ पता लगा है वह अगर सही है तो जरूर काउन्ट के इधर चढ़ाई कर देने का सबब यही हो सकता है कि उन्हें भी किसी तरह उस बात की खबर लग गई है जो मुझे मालूम हुई है ।

जेनरल०। क्या वह कोई खास बात है ?

को-तून कुछ आगे को खसक आया और झुक कर धीरे से बोला, "मुझे निश्चय रूप से मालूम हुआ है कि इस 'आहों की गुफा' में से एक रास्ता केवल उस 'सांता-पू' के बांध ही तक नहीं गया है जहां से हम दोनों—मैं और सिग-ली—भाग कर यहां पहुचे बल्कि एक दूसरा रास्ता सीधा उस गुफा तक भी गया है जो मेकंग के प्रपात के नीचे निकली है और त्रि-कंटक के आने जाने का मुख्य मार्ग है। यही नही, यहां से एक तीसरी राह उस केन्द्र तक भी गई है जिसमे त्रि-कंटक का मुख्य खजाना रहता है।

जेनरल ०। (अविश्वास के साथ) नही नही, ऐसा भला कैसे हो सकता है ! मेकंग का जल-प्रपात यहां से कितनी दूर, बीसों कोस से भी ज्यादा दूर है, यहां से वहां तक कोई सुरंग कैसे हो सकती है ?

को-तून०। मगर ठीक उसी तरह वह सांता-पू का बांध भी तो,अगर ऊपर-ऊपर वहां जाने की चेष्टा की जाय,तो यहां से बीसो मील पर पड़ेगा जहां से भाग कर हम दोनों यहां पहुंचे थे। मगर जंगली और पहाड़ी चक्करदार राहो से जाने से तो फासला बढ़ जाता है। एक पहाड़ी के उस पार जाने मे दस पन्द्रह मील की राह तय करना कोई अजूबी बात नही होती जब कि एक कुछ ही फरलांग लम्बी सुरंग मनुष्य को पर्वत के इस पार से उस पार पहुंचा सकती है।

जेनरल कोमुरा को-तून की इस बात के जवाब में कुछ कहना ही चाहते थे कि यकायक इस गुफा के उसी कोने मे जहां से हू-शान वहां पहुँचा था पुनः कंकडियों के गिरने की आवाज सुन पडी। इसे सुनते ही हू-शान चमक पड़ा और आवाज पर गौर करके बोला, "मेरा साथी मुझे बुला रहा है ! अब मैं यहां रुक नही सकता, लोगो को शक हो जायगा, अस्तु जेनरल एक दूसरी भी बहुत जरूरी बात सुन लीजिए और तब मुझे जाने की आज्ञा दीजिये।"

जेनरल० । हाँ हाँ कहो और क्या कहना है तुम्हें ।

हू-शान० । वह बात मैं आपसे अकेले में ही कहना चाहता हूँ क्योंकि वह एक बडा ही गुप्त विषय है ।

जेनरल० । (ताज्जुब से) लेकिन यहाँ बाहरी कोई आदमी हई कौन ऐसा जिससे तुम्हें दुराव हो ? तुम्हें जो कुछ कहना हो बेखटके कह सकते हो ।

हू-शान० । फिर भी मैं चाहता हूँ कि आप उस बात को अकेले में ही सुन लें ।

शायद इतना कह हू-शान ने कोई इशारा भी किया जिसे केवल जेनरल ही देख सके क्योंकि फिर उन्होंने कोई उज्र न किया और उठ खड़े हुए । गुफा के एक अंधेरे कोने में जाकर कुछ देर तक इन दोनों में न जाने क्या बातें होती रहीं, जिसके बाद हू-शान बोला, "बस यही मैं कहना चाहता था । अब आपकी इच्छा हो तो इस बात को अपने ही तक रक्खें या चाहें तो सभों पर प्रकट कर दें ।"

जेनरल कोमुरा अभी बहुत कुछ हू शान से पूछना चाहते थे क्योंकि उसने कोई बहुत ही ताज्जुब पैदा करने वाली बात कही थी, मगर इसी समय कोने से पुनः कुछ कंकड़ियां गिरने की आहट सुन हू-शान जल्दीबाजी से बोला, "बस अब मैं रुक नहीं सकता,देरी करने से मुमकिन है लोगों को शक हो जाय । आपसे जो कुछ मैंने कहा उस पर विचार कीजियेगा और जैसा मुनासिब जान पड़े वैसा कीजिएगा । हो सका तो मैं शीघ्र पुनः आपसे मिल कर इस बारे में और जो कुछ मुझे पता लगेगा सो कहूँगा ।"

जेनरल बोले, "अब कब मिलोगे तुम ?" हू-शान ने जवाब दिया— "ठीक नहीं कह सकता, यह बाहर की स्थिति पर निर्भर है । काउन्ट शैवर का मुकाबला त्रि-कंटक किस तरह करते हैं और उस सम्बन्ध में मेरे सुपुर्द क्या काम दिया जाता है—इसे जाने बिना कुछ कहना मुश्किल है । अच्छा अब इजाजत दीजिये ।"

हू-शान जेनरल के पैरों की तरफ झुका जिन्होंने प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेर उसे विदा किया। दूसरे क्षण वह गुफा के काले अन्धकार मे कही गायब हो गया और जनरल कोमुरा न जाने क्या-क्या सोचते हुए उन बाकी लोगों के पास लौटे जो यह जानने के लिए व्याकुल हो रहे थे कि हू-शान ने कौन सी गुप्त बात उनसे कही।

(२)

'नोम-पेन' शहर के दक्खिन तरफ मेकग के किनारे जो बहुत लम्बा चौडा मैदान पड़ता है उसपर महाराज मंगर-सि का लश्कर पड़ा हुआ है।

तीन दिन के घोर युद्ध के पश्चात् जीते हुए इस शहर को घेर के पड़ी श्याम की सेना इस तीन पहर रात गए समय मे गहरी नीद मे गाफिल है, मगर उस बड़े खेमे के अन्दर रोशनी और अफसरो की आवा-जाही अभी भी जारी है जो अन्य सब डेरो से अलग एक टीले पर पड़े हुए कई खेमो के बीच मे अपना सिर ऊँचा किए खड़ा है। यह खेमा खास महाराज मंगर-सि का है और लश्कर भर को यह विश्वास है कि महाराज इस खेमे मे इस समय आराम कर रहे होगे, पर सो बात नही है और महाराज के यहाँ आराम करने की तो बात ही क्या वे इस खेमे मे हई नही हैं, आज संन्ध्या से ही न जाने कहाँ गए है! पर यह बात बहुत ही गुप्त रक्खी गई है और सिवाय कुछ खास खास ऊँचे और विश्वासी आदमियो के किसी को भी मालूम नही है कि महाराज लश्कर छोड़ कही अन्यत्र गए हुए है।

मगर यही बात उन कई अफसरों की चिन्ता और घबराहट का भी कारण बनी हुई है जो महाराज के खेमे के बगलवाले उस खेमे मे जो उनके दफ्तर के काम मे आता है एक गोल टेबुल के चारो तरफ बैठे हुए आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे है। खेमे में केवल दो तीन मद्धिम रोशनी के लंप जल रहे हैं और बाहर की तरफ सख्त पहरा पड़ रहा है, इसलिये कोई गैर आदमी नही जान सकता कि यहाँ कौन है या क्या हो

रहा है पर चूंकि यहाँ की बात हमारे मतलब की है इसलिए हम यहाँ चलते और सुनते है कि क्या बाते हो रही है।

एक वृद्ध सेनापति कह रहा है—

सेना०। महाराज ने कहा था कि वे बारह बजते बजते जरूर लौट आवेगे, और अब ढाई से ऊपर हो गया है!

दूसरा०।-मुझे तो कैसी कुछ एक आशंका सी जान पड़ती है!

तीसरा०। आशंका की बात ही है! एक तो इतने बड़े काम पर महाराज का अकेले जाना; दूसरे दुश्मन के घर मे, तीसरे इतनी बडी हवाई पलटन के मुकाबले में,—फिर आशंका न हो तो क्या हो!

चौथा०-। महाराज मे यह बड़ा ऐब है कि समझाने से मानो नहीं, जिस बात पर तुल जाते है उसे कर ही डालते है! इस तरह ऐन मौके पर क्या अकेले जाना कभी उचित था?

पाँचवाँ०। हरगिज नहीं! अगर ईश्वर न करे कुछ हो जाय, टाइगर बिगड़ जाय, या दुश्मनो के फन्दे मे ही पड जायँ तो क्या सब करा-कराया चौपट न हो जायगा!

छठाँ०। जरूर चोपट हो जायगा, और फिर यह भी तो सोचिए कि सैकड़ो जापानी वायुयानो के मुकाबले मे एक अकेला टाइगर कर ही क्या सकता है!

पहिला०। मैने तो कितना समझाया, कितना रोका, पर वे सुने तब तो! इस वक्त ... .

इन सभो की बातचीत यकायक बन्द हो गई और बाहर से कुछ सन्तरियों के कडक कर आवाज देने ने इनका ध्यान आकर्षित किया। साथ ही हवा का एक ऐसा कड़ा झोका आकर लगा जिससे खेमे का बन्द-बन्द हिल उठा। वृद्ध सेनापति ने एक नौजवान अफसर से कहा, "सुकीर्ति, जरा देखो तो क्या बात है?"

मगर सुकीर्ति अभी मुश्किल से दर्वाजे तक पहुँचा होगा कि ठिठक

गया और तब झुक कर अदब से सलामें करता हुआ पिछले पाँव हटा। एक नौजवान का हाथ पकड़े हुए महाराज मंगर-सिं तेजी से चले आ रहे थे।

महाराज को देखते ही सब के सब उठ खड़े हुए और वृद्ध सेनापति तो भर्राए स्वर मे बोल पडा, "महाराज, आप आ गए! ओह, ईश्वर को धन्यवाद है!!" मंगर-सिं खुशी-खुशी सब की सलामो का जवाब देते हुए बोले "हाँ सेनापति वापत, आपके आशीर्वाद से मैं राजी खुशी लौट आया और सफल हो के लौटा! अपने इस दोस्त की मदद से मैंने वह काम कर डाला कि जिसकी कभी आशा भी नही हो सकती थी!!"

इतना कहते हुए महाराज थकावट की मुद्रा से एक आराम-कुर्सी पर बैठ गए और अपने साथी को अपने बगल मे बैठने का इशारा करते हुए उन्होंने बाकी सभो को भी बैठने को कहा। हम बता दे कि महाराज का यह साथी और कोई नहीं हमलोगो का जाना पहिचाना बहादुर अजितसिंह ही है।

वृद्ध सेनापति वापत बोल उठे, "महाराज को आने मे बहुत देर हुई जिससे हमलोग तरह-तरह की आशंका कर रहे थे!"

महाराज०। बेशक मुझे बहुत देर हो गई, मगर काम की कठिनता भी आपको स्मरण रखनी चाहिए! (मुस्करा कर) इतने बड़े काम पर जब आप लोगों ने मुझे अकेले भेज दिया तो क्या फिर कुछ चिन्ता का बोझ भी नही उठाइएगा ?

वापत०। (कुछ नाराजी के से भाव से) महाराज की जिदद के आगे हमलोगो का क्या बस चल सकता था! पर आप क्या कर आए इसे जाने बिना हम लोगों को शान्ति न मिलेगी।

महाराज०। (हंस कर) मैं अभी बताता हूं, पर आप पहिले इधर का हाल जरा मुझे बता दीजिए। मेरे जाने बाद से अब तक कोई नई बात तो नही हुई ?

वापत० । शत्रु के दो एक छोटे मोटे हमले हुए थे जो भगा दिए गए, पर दो खबरें वहुत ही चिन्ता पैदा करने वाली सुनने मे आई हैं, उन्ही का अन्देशा मालूम होता है ।

महाराज० । वह क्या ?

वापत० । हमारे जासूस खवर लाए है कि 'काम-पूत' से जहाजी पलटन वहुत तेजी से इसी तरफ को वढ़ रही है और इधर उत्तार मे 'कंपन' से वहुत सी फौज रात दिन धावा करती हुई चली आ रही है । 'वनाम' से दुश्मन वढ़ा ही आ रहा है । इस प्रकार हमें तीन तरफ से घेर लेने की तैयारी हो रही है । लक्षणों से हमारे जासूसों को पता लगा है कि कल दोपहर ढलते-ढलते तीनों पलटने हमारे पास पहुँच कर हम पर हमला कर देंगी । हमारी सेना एकदम थकी हुई है और नुकसान भी वहुत उठा चुकी है, तीन तरफ की यकायक की मार सह सकेगी कि नही यही हमलोग चिन्ता कर रहे थे ।

महाराज ने यह सुन अजितसिह से आँखे मिलाई, तव शान्त भाव से पूछा, "और कोई वात ?" सेनापति वापत वोले, "वस और तो कोई वात नही है, हाँ जापानी और फ्रान्सीसी वायुयानों ... ."

महाराज० । जापानी वायुयानों का भय तो अव आप छोड़ दीजिए सेनापति वापत, हाँ फ्रान्सीसी वायुयान जो पेरिस से आ रहे है जरूर कुछ गड़वड़ी मचा सकते हैं ।

वापत० । जापानियों का क्या हुआ ?

महाराज० । जापान से मेरी सन्धि हो गई । उसके वायुयान अव हम लोगों का कोई नुकसान न करेंगे । वे सव के सव अपने केन्द्र को लौट गए ।

वापत० । (खुश होकर) अच्छा ! सो कैसे हो गया महाराज ?

महा० । (अजित की तरफ दिखा कर) इनकी मेहरवानी के सिवाय और क्या कहूँ ?

अजित०। (हँस कर) एक बात और कह सकते हैं—गोपालशंकर के वायुयान 'टाइगर' की कृपा !

महा०। बेशक सो बात तो हुई है। टाइगर अगर हम लोगों के पास न होता तो कुछ भी न हो सकता। गजब की ताकत है उसके इन्जिनों में भी ! और तुम उसको चलाने की कला भी खूब जानते हो अजित इसमें शक नहीं।

अजित०। और एक तीसरी छोटी सी बात और भी—आपकी हिम्मत और बहादुरी ! अकेले और रात के वक्त एक वायुयान से दूसरे वायुयान पर उतर जाना और ... .

महा०। अच्छा अच्छा, फजूल की बातें छोड़ो और मतलब पर आओ, देखते नहीं आप लोग सब हाल सुनने को किस कदर घबड़ा रहे हैं। जरा संक्षेप में सब किस्सा इनसे कह तो डालो।

अजित०। बहुत अच्छा (अफसरों से) तो फिर आप लोग सुनिए। हम लोग यहाँ से चल कर सीधे उसी तरफ को उड़े जिधर से जापानियों के वायुयानों के आने की हमारे जासूसों ने खबर दी थी और सरहद के पास पहुँच के उनको हमने पाया। जैसा कि आप लोगों को मालूम हुआ था वे सब के सब एक साथ परा बांधे हुए एक ही गिरोह में चले आ रहे थे। अलग अलग झुण्डों में होते या कई तरफ से हम पर हमला करने को बढ़ते हुए होते तो हमें बहुत मुश्किल पड़ जाती इसमें शक नहीं। खैर तो हम लोगों ने टाइगर को उनके साथ लगा दिया और अलक्ष्य होकर उनके ऊपर ऊपर उड़ते हुए इसी तरफ को बढ़ने लगे। थोड़ी ही देर बाद टाइगर के बेतार की तार के यन्त्रों ने हमें बता दिया कि इन सब वायुयानों का कमांडर उस बहुत बड़े वायुयान पर है जो उन जापानी वायुयानों के बीचोबीच में चल रहा है, क्योंकि उस पर से बराबर तरह तरह के हुक्म बेतार की तार से और अकसर कोड के इशारों में अन्य वायुयानों को भेजे जाते थे अस्तु हम लोगों ने अपना ध्यान उसी पर जमाया और उसीके संग

लग गये । गुप्त इशारो से वाते करके हमने यह भी समझ लिया कि हमारा एक साथी भी उस वायुयान पर मौजूद ही नही वल्कि एक जिम्मेदारी के ओहदे पर है, अस्तु हम लोगों का काम और भी सहल हो गया । जिस समय वे सब वायुयान वादलों के एक पर्दे के भीतर से होकर जा रहे थे हमने अपनी ऐटमिक गन उस बड़े यान के इन्जिनो को लक्ष्य करके चलाई ।

सेनापति वापत० । ऐटमिक गन, टाइगर पर ? तो क्या गोपालशंकर को . ...?

महाराज० । आपसे मैंने कहा नही था—टाइगर पर गोपालशंकर के वनाये अद्‌भुत् अस्त्र-शस्त्र तो सव थे ही ऊपर से हम लोगों ने त्रि-कंटक के अलोपी वायुयानो पर जो विचित्र अस्त्र-शस्त्र रहते है वे भी उस पर वैठा लिये थे जिससे वह अव एक वडी ही भयानक वस्तु वन गया है । इसी से तो केवल उस एक वायुयान ही को ले के मैं जापानियों का मुकावला करने चला गया, नही तो क्या कभी हिम्मत पड़ती !

वापत० । ठीक है, अच्छा तव ?

अजित० । ऐटमिक गन का सच्चा निशाना वैठने ही उस वायुयान के इन्जिन विगड़ने शुरू हुए, उसकी चाल कम हो गई, और वह कुछ नीचे भी उतर गया । हमे मौका मिल गया और हमने वेहोशी वाली एक गोली उस यान की कैविन को लक्ष्य करके चलाई ।

वापत० । वेहोशी वाली गोली ......?

अजित० । गोपालशंकर की ईजाद है । उन्होने अपने टाइगर पर इतने तरह के वेहोशी के गोले, वम, वंदूके और पिस्तौले लगा रक्खी है कि जिनका पूरा भेद जानने मे अव तक भी मैं समर्थ हो न सका । वह तो कहिए कि मैं कुछ दिनो तक गोपालशंकर की मातहती मे उनके वायु-यान 'श्याना' पर काम कर चुका था इससे उनका इस्तेमाल थोडा वहुत समझ और उनसे काम ले सकता हू । उनकी यह वेहोशी वाली वंदूक और

* नोट—रक्तमंडल नामक उपन्यास देखिये ।

उसकी गोली भी अजीव चीज है। किसी पर छोडते ही उसकी गोली उसके इधर उधर फुलझडी की तरह फुदकने लगती है और उसमे से निकलने वाली गैस इतनी कारी होती है कि जरा भी जहाँ किसी के नाक मे गई कि वह आदमी घण्टों के लिए गाफिल हुआ।

वापत०। अच्छा ! खैर तव ?

अजित०। इसके वाद जो किया गया उसकी वात भी सोच कर मैं सिहर उठता हू। एक रेशमी रस्सी के सहारे ये—महाराज मंगर-सि—टाइगर पर से दुश्मन के उस हवाई जहाज पर उतर गये।

वापत०। (घवडा कर) है, महाराज दुश्मन के यान पर उतर गये ! अकेले !!

अजित०। हाँ अकेले, और यह कितना खतरनाक काम है, खास कर आधी रात के अन्धेरे मे, इसे सव कोई नही समझ सकते, करना तो दूर की वात है। खैर, इतनी हिम्मत न होती तो आज ये इस रुतवे पर ही क्यो दिखाई पड़ते ! अस्तु मुख्तसर यह कि ये उस कैविन के अन्दर चले गए जहाँ सव अफसरो को इन्होने वेहोश पाया, और वहाँ से हमारे उस साथी की मदद से, जो तुंग-नाशी नामक हमारा खास आदमी था—उन सव अफसरो को इन्होने उसी डोर से वाँध टाइगर पर भेज दिया और अन्त मे आप भी राजी खुशी लौट आए। ओफ, अव भी जव मैं उस कार्रवाई की वात को सोचता हूँ तो मेरा कलेजा काँप उठता है।

कुछ रुक कर अजित फिर कहने लगा—

अजित०। खैर तो साहवो, किस्सा यह कि हम लोग उनके अफसरों को चुरा कर निकल गए और उस वायुयान पर के लोगों को खाक भी पता न लगा। अवश्य ही वे लोग अपने इन्जिनों को ठीक करने मे मशगूल थे पर एक मुख्य कारण तुंग-नाशी का वहाँ पर मौजूद रहना भी था जिसने अफसरो के हटते ही वैरन मिन्चुको की मातहती मे कुल जितने भी वायुयान थे सभो के चार हिस्से कर चारो को सैगन, हांकाग, सिगापूर, और पिली-

पाइन की तरफ भेज कर दूसरी आज्ञा मिलते ही उन स्थानों पर वम वरसाने वास्ते तैयार रहने को कहा, और तव मौका निकाल कर आप भी टाइगर पर चला आया। यहाँ हम लोगो ने वैरन मिन्चुको को होश मे लाकर दिखलाया कि अव क्या गजव होना चाहता है। एक साथ ही फ्रांस इंगलैण्ड और अमेरिका से दुश्मनी मोल लेने के खयाल से ही जापानी वैरन की आत्मा काँप उठी और वे रास्ते पर आ गए। नतीजा यह निकला कि कुछ वातचीत के वाद उनकी हमारी सुलह हो गई।

वापत०। किन शर्तो पर?

महाराज०। श्याम के दक्षिणी अन्तरीप मे से जगी जहाज निकल जाने लायक एक नहर जापान को वना लेने की इजाजत देकर मैने उनसे सुलह कर ली!

वापत और वहाँ मौजूद अन्य अफसर इतना सुनते ही उत्कंठा के साथ तरह तरह के सवाल करने लगे मगर उनका जवाव देने का मौका महाराज या अजितसिंह को न मिला क्योंकि उसी समय खेमे के दरवाजे पर पड़ा पर्दा हटा और एक एड-डी-कैम्प अपने हाथ मे कोई चीज लिए हुए आता दिखाई पडा। आगे वढ़ कर उसने वह चीज महाराज के सामने पेश की और अदव से कहा, "एक अजनवी आया है जिसने यह चीज महाराज के पास भेजी है और अर्ज किया है कि वह कोई वहुत ही जरूरी वात एक-दम अकेले मे फौरन महाराज से कहना चाहता है।"

न जाने वह कौन सी चीज थी कि उसे देखते ही महाराज मंगर-सिं चमक गए और अजित भी घवड़ा उठा, मगर महाराज ने तुरत अपने को सम्हाला और वहाँ मौजूद लोगों की तरफ देख कर कहा, "ये मेरे एक वहुत वड़े मेहरवान और दोस्त है। मुझे इनसे वातें करना जरूरी है, मगर अव आप लोगों का यहाँ रुकना वेकार है। रात करीव-करीव वीत चुकी है, आप लोग जाएँ, थोड़ी देर आराम करे, सुवह फिर वाते होंगी।" सव लोग इतना सुनते ही उठ खड़े हुए और महाराज खेमे के वाहर निकल

कर उस तरफ बढे जिधर पेड़ों के अन्धकार में लम्बे कद का एक आदमी इधर से उधर टहल रहा था। मंगर-सिं जाते ही उसके पैरों की तरफ झुके मगर उसने उन्हे अपने कलेजे से लगा लिया और गदगद कंठ से कहा, "धन्य हो मंगर-सिं, धन्य हो! आज तुमने जिस हिम्मत बहादुरी और चालाकी से काम लिया उसकी तारीफ नही हो सकती!"

कुछ सकुचा कर महाराज बोले, "मगर आपको उसकी खबर कैसे लगी?" हँस कर अजनबी बोला, "मेरे आदमी बराबर तुम्हारे साथ थे। क्या तुम समझते हो कि तुम्हे ऐसी भयकर मुहिम पर अकेले भेज कर मैं निश्चिन्त बैठ रहा था? मगर खैर, इस वक्त मैं यहाँ तुम्हारी तारीफ करने नही आया हूँ बल्कि कुछ खास काम से आया हू।"

महाराज०। आज्ञा?

अजनबी०। अजित है?

महाराज०। हाँ देखिए वह खडा है। लेकिन अगर कुछ बात ही करनी है तो मेरे खेमे मे चले चलना क्या अच्छा न होगा?

अज०। नहीं, वहाँ की बनिस्वत यह खुला मैदान मुझे ज्यादे हिफाजत का जान पड़ता है, और यहाँ मेरे आदमी भी मौजूद है। अजित को भी इसी जगह बुला लो, यही बैठ कर बाते होंगी।

किसी खयाल से, शायद यह समझ कर कि कुछ गुप्त बाते हो रही हो, अजित इन दोनो से कुछ दूर ही रुक गया था। अब महाराज मंगर-सिं का इशारा पा वह आगे बढा और अजनबी के पैरो पर गिर पड़ा जिसने उसे उठा कर कलेजे से लगा लिया और फिर तुरत ही अलग करके कहा, "इस समय मै एक बहुत ही जरूरी काम से आया हूँ और काम करके तुरत ही चला भी जाऊँगा, अस्तु बैठ जाओ और जो कुछ मै कहता हूँ उसे गौर से सुनो।"

पाठक शायद ताज्जुब करते होगे कि यह कौन आदमी है जिसकी सभी लोग इतनी इज्जत करते है अस्तु हम इस अजनबी का इसी जगह

परिचय दे देते हैं। यह अजनबी और कोई नहीं खुद राणा नगेन्द्रनरसिंह हैं जिनकी त्रि-कंटक तक इज्जत करते हैं और जो अपने मतलब की धुन में इस तरह भेष बदले चारो तरफ घूम रहे हैं कि जल्दी उनको पहिचान लेना कठिन है। अगर वे अपना खास निशान न भेजते तो मुमकिन था कि महाराज और अजित भी उनको पहिचान न सकते।

राणा की बात सुन दोनों आदमी उसी जगह जमीन पर बैठ गए और तब इन तीनो मे आधे घंटे तक न जाने किस विषय मे बहुत ही गुप्त बाते होती रही जिनका अन्त अजितसिंह की इस बात ने किया—"आप सब तरह से निश्चिन्त रहिए सरदार, मैं ऐसी कारीगरी से काम करूँगा कि किसी को रत्ती भर तो शक होगा ही नही। और मुझे पहिचान लेना क्या हँसी खेल है? हां वह चीठी जरूर तैयार हो जानी चाहिए, उसके विना कुछ न हो सकेगा।"

मंगरसिंह यह सुन बोले, "उस जासूस के हाथ की कोई लिखावट मिल भर जानी चाहिए। मेरे दोस्त बाबू द्वारिकानाथ सलामत रहे, चीठी तो वह लिख जायगी कि खास उन जासूसराम की भी उसे देख के अक्ल चक्कर मे आ जायगी!"

राणा नगेन्द्रनरसिंह ने अपने जेब मे हाथ डाला और एक कागज निकाल महाराज की तरफ बढ़ा कर कहा, "यह चिट्ठी उसने काउन्ट शैवर के पास भेजनी चाही थी, किसी तरह मेरे हाथ लग गई। बस इसके सिवाय और कोई लिखावट मैं दे नही सकता।" महाराज बोले, "खैर इसी से काम चलाया जायगा।" राणा ने कहा, "तो मै फिर इस तरफ से निश्चिन्त हो जाऊँ?" दोनों आदमी जवाब में बोले, "बिल्कुल हम लोग सब काम ठीक तरह से अंजाम देंगे, आपको कुछ भी चिन्ता करने की जरूरत नही।"

राणा नगेन्द्रनरसिंह ने कुछ बातें और भी समझाई और तब इन दोनों से विदा होकर एक तरफ को रवाना हो गए। उस समय पूरब तरफ का आसमान सुफेदी पकड़ चुका था।

(३)

राजकुमार श्री-पद्म बोले, "यहाँ तक तो आप लोग एक तरह पर निर्विघ्न चले आए, पर अव आगे का रास्ता खतरनाक है, यहाँ वहुत सम्हल कर चलना पड़ेगा।"

दो पहाड़ियो के बीच मे से कई सौ साधुओ की एक मंडली के आगे आगे काउन्ट शैवर और राजकुमार श्री-पद्म आ रहे है। स्वयम् उनके और कुछ अन्य व्यक्तियो के ही नही वल्कि इस मंडली के वाकी के सभी आदमियो के भी कपड़े गेरुए है, सभी के कंधो पर उनके मुख्तसर सामान झोलो मे भरे लटक रहे है, और सभी के हाथो मे वड़े वड़े छाते है। इन सभो के सिर घुटे हुए और नंगे, हाथो मे मालाएँ या जप-चक्र* और सभी नंगे पॉव है। कुछ थोडे से आदमी जिनका यह भेष नही था, इस जमात के आगे चल रहे है, और इनके भी दो दल है, कुछ तो अपने कंधो पर काठ को एक चौकी उठाए चल रहे है, और इनकी पौशाके उस तरह क है जैसी राजा के खिदमतगारो या कहारो वगैरह की होती है। इस चौकी पर एक कुरसी रक्खी हुई है जिसके ऊपर छत्र लगा है और उस कुरसी पर शाही ठाट से एक वृद्ध आदमी वैठे हुए है जिन्हे गौर की निगाह से देख कर तो आप अवश्य ही पहिचान जाएंगे कि ये और कोई नही हमारे काउन्ट शैवर ही है और उनकी कुरसी के पीछे राज-कुमार श्री-पद्म खड़े है। इन सिंहासन लिए चलने वाले आदमियो के आस पास और भी वहुत से वर्दी वाले आदमी चल रहे है जिनमे से प्राय-

---

* जप चक्र—छोटे छोटे गोल डिब्वे जिनके ऊपर का हिस्सा नुकीला और नीचे एक छेद वना रहता है। इस डिब्वे पर मंत्र खुदे या लिखे रहते हैं। वीच के छेद मे एक लकड़ी डाल उसी के सहारे इसे घुमाया जाता है। एक वार घुमाने से एक माला जप करने का पुण्य घुमाने वाले को होता है। तिब्वत चीन और जापान के साधुओ के हाथो मे अकसर रहा करता था।

सभी के हाथ मे कोई न कोई चीज है, कोई उगालदान लिए है, कोई छाता लिए है, कोई अतरदान लिए हुए है, तो कोई मोरछल, और वाकी के लोगों के हाथो मे तरह तरह के पुराने आधुनिक अस्त्र-शस्त्र हैं जो प्रत्येक ऊँची-ऊँची लाठियों के सहारे इस तरह लटकाए हुए है कि सिंहासन-सवार जव चाहे इनमे से जिन्हे भी इच्छा हो सहज मे ले सकता है। इस सिंहासन और उसे उठाए तथा घेरे हुए चलने वालों के पीछे पीछे उन्ही सैकड़ों गेरुए कपड़े वाले साधुओं की जमात है जिनका हम ऊपर जिक्र कर आए है और ये सव के सभी धीरे धीरे किसी देवता का नाम जप रहे है जिससे एक हलकी गूँज सी उठ रही है। जहाँ तक निगाह जाती है, आगे और पीछे कोसो तक इसी तरह के सौ सौ दो दो सौ सावुओं का गिरोह देवता का नाम लेते हुए चले जा रहे है, पर सिंहासन-सवार केवल इसी गिरोह मे एक दिखाई पडता है और यह समूचा काफिला उन पहाड़ों की परिक्रमा करने निकला है जिसके अन्दर 'आहो की गुफ़ा' और 'युद्ध-देवता' का मन्दिर है और जो इस देश मे 'त्रिकुट' के नाम से प्रसिद्व है।

इस जगह हम संक्षेप मे यदि इस परिक्रमा का आशय भी वता दे तो शायद अनुचित न होगा। जैसा कि हम पहिले कह आए है, श्याम देश के मुख्य त्योहार तो विशाखा और वासन है, पर इनके सिवाय भी और कितने ही त्यौहार यहाँ मनाए जाते हैं जिनमे से सव से प्रसिद्ध है—'ठट-क्री थिन' जिसके माने होते हैं—'पवित्र दान'। यह त्योहार श्याम देश के ग्यारहवे चाँद मास में मनाया जाता है जो लगभग अंगरेजी अक्टूबर या नवम्बर मास में पड़ता है और पूरे एक मास तक चलता रहता है। इस त्योहार का तात्पर्य यह है कि श्याम देश मे जितने मुख्य-मुख्य देवता या मन्दिर है, खास कर राजवंश द्वारा वनवाए या स्थापित किए हुए, उनमे वसने वाले सव साधू महात्माओं को आगामी वर्ष के लिए पहिनने के वस्त्र का दान करना। साधुओं को वस्त्र-दान करने का माहात्म्य श्याम

देश मे वहुत समझा जाता है और इसमे पुण्य और सुकीर्ति दोनो ही मानी जाती है। कई मुख्य-मुख्य मन्दिरो मे तो राजा को स्वयम् जाकर अपने हाथ से मूर्ति को तथा वहाँ वसने वाले मुख्य मुख्य साधू महात्माओ को वस्त्र देने पड़ते है, और नियम तो यही है कि सब मन्दिरों के सब साधुओं को राजा स्वयं जा के अपने हाथ से वस्त्र-दान करे पर ऐसा होना कठिन है, अस्तु होता यह है कि मुख्य मन्दिरो मे तो राजा खुद जाके वस्त्र देता है और वाकं मन्दिरो मे, खास कर जो बहुत दूर, सरहद पर, या पहाडो के अन्दर पडते है, उनमे राजा के प्रतिनिधि-स्वरूप राज्य के वड़े-वड़े अधिकारी मन्त्री, सरदार राजकुमार या राजा के कुटुम्वी लोग जाते और राजा की ओर से साधुओ को वस्त्र देते है। स्वयम् राजा जब वस्त्र-दान को जाते हैं तो पूरा राजशाही ठाट से जाते है इसीलिए उनके प्रतिनिधि लोग भी उसी तरह, ठाट से, सिंहासन पर बैठ कर, और पचासो नौकर चाकरो और आसा-वल्लमदारो की फौज से घिर कर वलते है और उस दल की एक विशेषता यह रहती है कि वंश के जितने भी प्राचीन अथवा अर्वाचीन अस्त्र-शस्त्र है वे सव या उनमे से मुख्य मुख्य भी उनके साथ चलते है सम्मान के लिए या भूतों को भगाने के लिए, यह हम ठीक नही कह सकते। यह युद्ध-देवता का मन्दिर भी श्याम-राजवंश द्वारा प्रतिष्ठित मुख्य मंदिरो मे से था पर राजधानी से बहुत दूर उत्तरी सीमा और पहाडों के वीच मे पडने के कारण, यहाँ तक राजा का आना वहुत कठिन था खास कर आजकल जब कि वे युद्ध मे लगे थे अस्तु इधर के साधुओ को वस्त्र देने के लिए राजा मंगर-सिं के प्रतिनिधि हो कर उनके एक वृद्ध चाचा बकक से रवाना हुए थे, पर उनकी जगह कब और कैसे काउन्ट शैवर आ कर जम गये यह हमे कुछ मालूम नहीं है। अवश्य ही इसमे राजकुमार श्री-पद्म का हाथ होगा। हम सिर्फ इतना पता है कि युद्ध-देवता के मंदिर मे वस्त्र-दान क्रिया समाप्त कर के वे चाचा जब उन पवित्र पर्वतो की परिक्रमा यानी त्रिकुट की यात्रा करने निकले थे तो उसी

समय किसी तरह और किसी मौके पर यह उलट-फेर हो गया था। इन पर्वतों पर भी जगह-जगह शिखरों पर, तरहटी मे, और गुफाओं के अन्दर छोटे-मोटे मंदिर थे जिनमे साधू लोग रहा करते थे और श्याम देश की प्रजा का साधारण विश्वास यही था कि इन पर्वतो की गुफाओ मे कितने ही सिद्ध महात्मा तपस्या किया करते हैं जिनमे से बहुतों मे अलौकिक सिद्धि है। अस्तु सैकड़ो नही हजारो ही व्यक्ति इन पर्वतो की परिक्रमा और साधु-दर्शन के लिए निकला करते थे जिनमे सब के सब केवल अमीर या उच्च कुल के नहीं होते थे बल्कि बहुत से मध्यम वृत्ति के और इनसे भी ज्यादा साधुगण ही हुआ करते थे जिनकी यह खोज रहा करती थी कि कोई संत महात्मा या पहुँचा हुआ फकीर कहीं मिल जाय तो उनके सब सन्ताप दूर हो जाएँ। अकसर ऐसा भी होता था कि जब कही किसी राज-प्रतिनिधि की सवारी मिल जाती थी तो उसके साथ बहुत से साधू लोग लग जाया करते थे क्योकि उस हालत मे उन्हे भोजनाच्छादन की विशेष चिन्ता रह न जाती थी—अस्तु।

इस समय राज-प्रतिनिधि बल्कि राजा के चाचा बन कर, काउन्ट शैवर सिंहासन पर बैठे चले जा रहे थे और साथ मे उनके मुख्य मुख्य अफसर लोग भी वैसे ही श्यामी लिवास और शाही ठाठ मे मगर पैदल और नंगे पाँव चले जा रहे थे। आगे पीछे उनके पचासो बहादुर सिपाही भेप बदले, कोई नौकर, कोई चोवदार, कोई प्यादा तथा अधिकाश साधू बने हुए चले जा रहे थे, मगर ये सभी लोग अपने अपने हर्बे हथियारो से एकदम दुरुस्त थे और उन्हे इस तरह से अपने कपडो झोलों और सामानो के अन्दर छिपाए हुए थे कि यद्यपि कौतूहल या सन्देह की आँखे उन्हे खोज न सकती थी पर आवश्यकता पड़ने पर वे तुरत काम मे लाए जा सकते थे। जैसा कि हमने पहिले कहा काउन्ट शैवर के पीछे, और उसी सिंहासन पर, उनके नकीब या, चँवरवरदार बने हुए राजकुमार श्री-पद्म खडे थे और उन्होंने वह वात कही थी जो पाठको ने सुनी अर्थात्—"यहाँ

तक तो आप लोग एक तरह पर निर्विघ्न चले आये, पर अव आगे का रास्ता खतरनाक है, यहाँ वहुत सम्हल कर चलना पड़ेगा।"

इधर उधर देखते हुए काउन्ट वोले, "किस तरह के खतरे से आप का मतलव है ?" राजकुमार वोले, "यहाँ से एक तरह पर त्रि-कंटक की अमलदारी शुरू हो जाती है और उनके गुप्तचर सर्वदा सव तरफ फैले रहते है जिनकी निगाह वचा कर हमे जाना होगा। नमूने के लिए वह देखिए वह ऊँची चट्टान पर, गुफा के मुहाने के वाहर, जो पद्मासन लगाए महात्माजी आँखे मूँद वैठे हुए हैं न वे कोई साधू-सन्त नही, त्रि-कंटक के जासूस है, मैं कई वार उनसे वाते कर चुका हू।"

काउन्ट ने वड़े गौर से उधर देखा। लम्वी चौड़ी सुफेद दाढ़ी और जटाएँ किसी पहुँचे हुए वृद्ध साधू के होने का गुमान दिलाती थी पर उसके वदले वह आदमी त्रि-कंटक का जासूस है यह जान उन्हे कुछ कौतूहल भी हुआ और साथ साथ कुछ भय भी। उन्होने श्री-पद्म से कहा और कितनी दूर हम लोगो को इस तरह जाना पड़ेगा ?" श्री-पद्म ने जवाब दिया "वस सिर्फ थोडी दूर और उस पहाडी के पास पहुँचते ही हमारा यह लाव लश्कर रुक जायगा। वहाँ एक अंधेरी गुफा के अन्दर 'नाग-राज' का मंदिर है जहां आपको पैदल जाना पड़ेगा और उसी जगह से हम लोग यह रास्ता छोड गुफाओ का सिलसिला पकड लेंगे।" शैवर ने फिर पूछा, 'और वह स्थान कहाँ है जिसे आप त्रि-कंटक का केन्द्र' कहते है ?" श्री-पद्म वोले अगर गुफाओं के अन्दर ही अन्दर जांय तो करीव पाँच मील।" काउन्ट ने आश्चर्य से कहा ओफ इतनी दूर ? आप तो वोले थे वस आ गया !" श्री-पद्म ने जवाव दिया "अगर ऊपर ऊपर और पहाडों को लांघते हुए जायं तो कम से कम पचीस कोस पड़ेगा उसकी अपेक्षा गुफाओ के रास्ते इतना नजदीक हो जायगा इसी आशय से मैंने वैसा कहा था।" काउन्ट फिर कुछ न बोले मगर कौतूहल के साथ चारो तरफ निगाहें दौड़ाते रहे।

पहाड़ की तलहटी खतम हुई और यह गिरोह उसके बाहर निकल कर उस छोटे मैदान में पहुँचा जिसे तय करने बाद फिर एक लंबा ऊँचा पहाड़ मिलता था। इस मैदान मे इस समय सैकड़ों ही आदमियों के डेरे पड़े हुए थे और छोटे छोटे अनगिनती तम्बू जगह जगह लगे दिखाई पड रहे थे जो और कुछ नहीं उन साधुओं के बड़े बड़े छाते ही थे जिनको धूप से बचने के लिए लगा कर वे चलते हैं और मौका पड़ने पर उन्ही के चारो तरफ घोती या कोई और कपड़ा लपेट कर उनका तम्बू सा बना रात भी उन्ही के अन्दर काट लेते है। जैसा अकसर हमारे देश में वैरागियों को लेकर चलते आपने देखा होगा,करीब करीब वैसेही ये छाते भी होतेहै मगर वजन में उनसे बहुत हलके और कुछ खूबसूरत भी रहते हैं। अस्तु उसी तरह के सैकड़ों छातों से सामने का मैदान भरा देख काउन्ट ने पूछा, "ये इतने लोग इस मैदान मे डेरा डाले क्यों पड़े हुए हैं ?" श्री-पद्म ने जवाब दिया, "नाग-राज का यह प्राचीन मन्दिर या तो सुबह को खुलता है या फिर शाम को। अब संध्या होने के पहिले देवता का दर्शन नही हो सकता इसी से ये लोग यहाँ पड़े हैं। हम लोगों को भी थोड़ा आगे बढ़ कर डेरा डाल देना पड़ेगा और यह अच्छा ही होगा, रात के पहिले अंधेरे मे हम अपने रास्ते लग जायँगे।"

वास्तव मे ऐसा ही हुआ और पहाड़ी के पास पहुँच कर इन लोगों ने अपना डेरा उन तम्बुओ मे डाल दिया जो राजा के कर्मचारियों ने राजा के चाचा के लिए पहिले ही से डाल रक्खा था। काउन्ट शेवर को आराम करता छोड़ राजकुमार श्री-पद्म यह कह उनसे अलग हुए, "अब संध्या होने से पहिले यहाँ से आगे बढ़ना न होगा अस्तु आप आराम करे, और मैं जरा बाहर निकल कर टोह लगाता हूं कि दुश्मनों को हमारे आने की कोई खबर तो नही हुई है। मैं दो घन्टे के अन्दर ही लौट आऊँगा।' काउन्ट ने कहा, "जाइए मगर होशियार रहियेगा, ऐसा न हो कि कोई पहिचान ले।" श्री-पद्म बोले, "ऊँह, उसका डर मुझे नही है और न मैं

वैसा होने ही दूँगा, आप निश्चिन्त रहिए।" इसके बाद वे खेमे के बाहर निकल गये।

× × ×

श्री-पद्म ने कहा, "बस काउन्ट, अब आप यह बाना उतार दीजिए और अपनी मामूली पोशाक मे हो जाइए। अब यहाँ से आगे या तो खतरा ही खतरा है और या फिर फतह ही फतह!"

एक अँधेरी और बहुत ही लम्बी चौडी गुफा मे काउन्ट शैवर का समूचा लाव-लश्कर भरा हुआ था जिसके मुहाने को न जाने किस तरकीब से श्री-पद्म ने बन्द कर दिया था। उनके कहने से कई मशालें भी बाल ली गई थी मगर यह स्थान इतना बृहत् था कि उनकी रोशनी यहाँ के समूचे अन्धकार को दूर करने के लिए काफी न थी।

काउन्ट ने अपने साथियो को कुछ इशारा किया और तब अपना भारी लबादा उतार कर अलग कर दिया जिसके अन्दर से उनकी फौजी पोशाक निकल पडी। उनकी देखीदेखी और लोगो ने भी ऐसा ही किया और कुछ ही देर बाद वहाँ साधुओं और बल्लमबरदारो के बदले कितने ही चुने हुए और बहादुर फ्रांसीसी जवान हथियारो से लैस दिखाई पड़ने लगे। इस बीच मे श्री-पद्म ने कहीं से एक बडा सा कागज निकाला जो वास्तव मे नकशा था और उसे जमीन पर बिछा काउन्ट को दिखाते हुए बोले "काउन्ट, अब आगे का काम बहुत होशियारी और चालाकी से करने की जरूरत है। इन अँधेरी और तंग गुफाओं मे से पचासो आदमियों के गिरोह का दुश्मन की निगाह बचा के निकल जाना असम्भव है अस्तु हम लोगो को इस जगह से कई टुकडों मे बँट जाना पडेगा अतएव अब जो मैं कहता हू उसे आप लोग खूब गौर से सुन कर मन मे अच्छी तरह बैठा लीजिए। आइए, इस जगह बैठ जाइए और इस नकशे को देखिए—"

काउन्ट शैवर और उनके सभी खास खास अफसर राजकुमार के

आसपास बैठ उस नकशे को देखने लगे। राजकुमार फिर बोले, "यह नक्शा त्रिकंटक ने तैयार करवाया था पर मैंने मौका पा इसकी यह नकल उतार ली। इसमें इन पहाड़ियों के भीतर वाले रास्ते बताए गए हैं। यद्यपि सब तो नहीं पर उनमें से मुख्य मुख्य या जिनका पता लग चुका है वे गुफाएँ इसमे आ गई हैं, पर इनके इलावे भी और न जाने कितनी होंगी कौन जानता है। खैर तो यह देखिए यह तो वह 'नाग-राज' का मंदिर है जहाँ से हम लोग इस पहाड़ी सिलसिले के अन्दर घुसे थे, और यह देखिए यह वह स्थान है जहाँ हम लोग इस समय छिपे बैठे हैं, और हमें जाना है यह देखिए यहाँ। यह जो लाल निशान बना है यही त्रिकंटक का वह केन्द्र है जिसमें वे अपना सब धन-रत्न जवाहिरात और अपने ईजाद बहुत से अस्त्र-शस्त्र और उनके बनाने की तर्कीबें छिपाए हुए हैं। यह देखिए वह 'सांता-पू' का बाँध है जिस पर बम बरसाने को आपके चालाक जासूस को-तून ने कहा था : यह देखिए, यह मेकंग का वह जल-प्रपात है जिसके पीछे छिपे इस रास्ते से साधारण-रीत्या त्रिकंटक के आदमी आते जाते हैं और इधर यह देखिये यह 'आहो की गुफा' और 'युद्ध-देवता' का मन्दिर है। मोटे तौर से इतनी बातें तो आप लोगों ने समझ ली न? अच्छा अब आगे सुनिये, मेरी योजना यह है कि......"

देर तक और कुछ विस्तार के साथ राजकुमार ने त्रि-कंटक के उस केन्द्र को कब्जे में करने के विषय में अपने विचार इन लोगो को बताये और उन्होंने जो कुछ कहा उसे सब लोगों ने बहुत ही पसन्द भी किया। संक्षेप में राजकुमार की योजना यह थी कि काउन्ट शैवर के साथ जितने आदमी थे उनके दो टुकड़े हो जाँय, आधे आदमी तो सीधे केन्द्र की तरफ चलें—प्रकट रूप से, और बाकी के आधे पाँच छः टुकड़ियो में विभक्त हो कर भिन्न-भिन्न गुफाओं के रास्ते केन्द्र की तरफ बढ़ें। राजकुमार का विचार यह था कि केन्द्र पर प्रत्यक्ष रूप से हमला होने की बात सुन कर वहाँ के आदमी, केन्द्र में कभी भी बहुत ज्यादा आदमी नही रहा करते थे,

घवड़ा कर इन लोगों का मुकाबला करने या अपने मददगारों को बुलाने की फिक्र मे पड़ जायेंगे और बीच में चार पाँच तरफ से पहुँच कर हमारी ये बाकी टुकड़ियाँ उस जगह पर कब्जा कर लेंगी। काउन्ट शैवर और उनके सहायकों ने राजकुमार की बताई तर्कीब पसन्द की और अब उनसे रास्तो के बारे में दरियाफ्त करने लगे। जमीन पर फैले नक्शे की मदद से राजकुमार ने यह बात भी उन सभों को अच्छी तरह समझा दी बल्कि नक्शे के कई टुकड़ों की नकल कर के उन अफसरो को दे भी दिया जिनकी मातहतो मे वे भिन्न भिन्न टुकड़ियाँ रवाना होने को थी, और इस प्रकार सब तरह से उन लोगो को तैयार करके कूच का हुक्म दिया।

आधे आदमियों को लेकर जेनरल श्रू तो राजकुमार के बताये रास्ते से केन्द्र पर प्रत्यक्ष हमला करने के लिए रवाना हो गये, और तब बाकी बचे लोगो के छः टुकड़े छः चतुर अफसरों की मातहती मे छः अन्य रास्तों से उसी तरफ रवाना कर दिये गये। अब वहाँ पर केवल काउन्ट शैवर और पाँच छः चुनिन्दा लोग रह गये जिनको साथ लेकर राजकुमार खुद एक बहुत ही गुप्त रास्ते से केन्द्र की तरफ बढ़े।

इतनी पेचीली वे सुरंगें थी और ऐसा चक्करदार वह रास्ता कि थोडी ही दूर जाते जाते काउन्ट शैवर तो एकदम से अकचका गये। यद्यपि राजकुमार श्री-पद्म बेधड़क बढ़े जा रहे थे पर काउन्ट और उनके साथियो के लिए कुछ ही आगे जाने बाद इतना भी कहना कठिन हो गया कि आगे को जा रहे हैं या पीछे लौट रहे हैं, फिर भी उन्होने कुछ पूछना या शंका करना उचित न समझा और राजकुमार के पीछे पीछे बढ़ते ही चले गये।

लगभग आधे घण्टे तक राजकुमार तेजी से चले गये, इसके बाद एक ऐसी जगह पर पहुंच कर जहाँ से रास्ता तीन तरफ को फूट गया था यानी तीन सुरंगें तीन तरफ को चली गई थी, वे कुछ हिचक कर रुक गये और न जाने क्या सोचने लगे। उन्हे कुछ चिन्तित देख काउन्ट शैवर

ने पूछा, "क्या बात है ? आप किसी फिक्र में पड़ गये हैं !" श्री-पद्म बोले, "मुझे कुछ अन्देशा हो आया है ।" काउन्ट ने पूछा, "अन्देशा ! सो किस बात का ?" श्री-पद्म ने कहा, "इस जगह बराबर पहरा पड़ा करता था, इसीलिये मैं आप लोगों को बार बार शान्तिपूर्वक आने को कह रहा था, पर इस समय यहाँ कोई भी दिखाई नहीं पड़ रहा है जिससे ताज्जुब होता है ।" काउन्ट के—"तब क्या करना मुनासिब है ?" पूछने पर श्री-पद्म बोले, "आपलोग जरा यही रुके रहिये, मैं आगे बढ कर देखूँ क्या मामला है । मुमकिन है पहरेदार अन्यत्र कही चले गये हों !"

इतना कह उत्तर की राह न देख राजकुमार आगे बढ़े और तीनों में से बाईं तरफ वाली गुफा के अन्दर घुस गये । काउन्ट और उनके साथी वही रुक कर बेचैनी के साथ उनकी राह देखने लगे मगर उन्हें ज्यादा रुकना न पड़ा क्योंकि थोड़ी ही देर बाद वे लौटते नजर आये और आते ही बोले, "जो मुझे आशंका थी वही हुआ, मगर खैर कोई भय की बात नहीं है ।" काउन्ट ने पूछा, "क्या आशंका आपको थी और क्या हुआ ?" श्री-पद्म ने जवाब दिया, "हमले की खबर यहाँ वालों को हो गई और सब लोग इकट्ठे होकर सलाह मशविरा कर रहे हैं । बात यह है कि यहाँ ज्यादा आदमी कभी रहते नही क्योंकि कोई दुश्मन कभी इस रास्ते उन पर हमला करेगा इसका कभी त्रिकंटक गुमान भी नही कर सकते थे । आज वैसी ही असम्भव बात हो जाने से वे सब लोग एकदम घबड़ा गये है ।" काउन्ट बोले, "तब हमे क्या करना उचित है ?" राजकुमार ने कहा, "इन लोगों को मुख्य दुश्मन अर्थात् जेनरल थ्रू का मुकाबला करने को चले जाने दीजिये । मैदान साफ हो जाने पर हमलोग बढ़ेंगे । तब तक आइये आड़ में हो जाइये, क्योंकि मुमकिन है वे लोग इसी तरफ से जायें ।"

इन लोगों के पीछे की तरफ एक अन्धेरी और तंग गुफा का सकरा मुहाना दिखाई पड़ रहा था । राजकुमार सभों को लिये हुए उसके अन्दर

घुस गये और यह भी अच्छा ही हुआ क्योंकि मुश्किल से आखिरी आदमी भीतर पहुंचा होगा कि सामने से खटरपटर की आवाज आई और तब कोई चालीस पचास नौजवान तेजी के साथ दौड़ते हुए और कुछ परेशानी की सी हालत में एक तरफ से दूसरी तरफ को निकल गये। राजकुमार बोले, "इस तरफ इतने आदमी होंगे इसका मुझे गुमान न था, खैर जरा देर और रुक कर देख लीजिये तब फिर आगे बढ़ेंगे। मगर अब आप लोग अपने हरबों से लैस हो जाइये, बहुत सम्भव है कि दुश्मन से मुकाबला करना पड़ जाय।" काउन्ट शैवर ने पूछा, "जहाँ हमे जाना है वह जगह यहाँ से कितनी दूर रह गई है अब ?" श्री-पद्म बोले, "ज्यादा से ज्यादा पन्द्रह मिनट का रास्ता है।"

कुछ देर राह देखने पर भी जब कोई आहट न लगी और न कोई आता जाता दिखा तो राजकुमार के इशारे पर सब लोग गुफा के बाहर निकले और फिर उसी रास्ते लगे। जिस गुफा मे पहली बार राजकुमार गये थे उसी में पुनः उन्होंने पैर रक्खा और बाकी लोग उनके पीछे पीछे जाने लगे।

दस बारह मिनट से ज्यादा जाना न पड़ा और गुफाओं का पेचीला सिलसिला यकायक खतम हो गया। इन लोगों को अपने सामने की तरफ एक मैदान दिखाई पड़ा जिसे चारो तरफ से छोटी-छोटी पहाड़ियो ने घेरा हुआ था। इस मैदान के बीचोबीच मे बहुत ऊँची कुरसी देकर न जाने किस जमाने की एक बहुत प्राचीन इमारत बनी हुई थी जिसकी बनावट ऐसी थी कि ठीक-ठीक उसके बारे में यह कहना कठिन था कि वह मन्दिर है या समाधि, फिर भी इतना पता जरूर लगता था कि पुरानी होते हुए भी इमारत मजबूत बहुत है।

उंगली से उस तरफ दिखा कर राजकुमार बोले, "देखिये, यही वह केन्द्र है जिसके अन्दर त्रिकंटक की सारी जमा पूंजी रक्खी हुई है। हम लोग वक्त से जरा जल्दी यहाँ पहुंच गये हैं। और दो एक दल भी आ

जायँ और उनका इशारा मिले तो सब तरफ से एक साथ ही इस केन्द्र पर हमला करके इसे कब्जे मे कर लिया जाय।" काउन्ट शैवर ने पूछा, "इस जगह की हिफाजत का क्या इन्तजाम है? कोई सिपाही या पहरेदार तो यहाँ दिखाई नही पड़ते?" राजकुमार बोले, "इस सम्बन्ध में ठीक-ठीक कुछ मैं नही जानता, पर इतना सुनने में आया है कि इस केन्द्र की हिफाजत का कोई बहुत बड़ा प्रबन्ध नही किया गया है।" काउन्ट ने ताज्जुब से पूछा, "इसका क्या सबब? यहाँ की तो सब से ज्यादा हिफाजत होनी चाहिये!" राजकुमार कुछ जवाब देना ही चाहते थे कि रुक गये और तब चमक कर बोले, "लीजिये हमारी एक मंडली तो आ पहुची, वह उस गुफा के अन्दर देखिए—बस दो एक दल और आ जायँ तो सब तरफ से एक साथ ही हल्ला बोल दिया जाय।"

सचमुच ही सामने के मैदान को पार करके दूसरी तरफ जो पहाड़ी नजर आ रही था उसकी एक गुफा के अन्दर से कोई सुफेद चीज सिर्फ एक बार झलक दिखा कर फिर छिप गई थी। यह इन लोगों का बँधा हुआ इशारा था। जवाब मे इधर से भी एक सुफेद रूमाल हिला कर दिखाया गया और तब सब कोई राह देखने लगे कि और तरफो से इशारे मिलें और गुफा से बाहर हो उस बीचवाली इमारत पर हमला कर दिया जाय। राजकुमार श्री-पद्म ने इधर-उधर की पहाड़ियो के बीच मे अपना काला मुँह खोले कई गुफाओं की तरफ दिखा कर बताया—"उन्ही में से हमारे आदमी आवेंगे" अस्तु सब का ध्यान उन्हीं की तरफ लग गया।

(४)

गुफा के कोने में को-तून कह रहा था, "जो कुछ भी हो, मुझे तो रंग कुछ कुरंग दिखाई पड़ता है।"

सिंग-ली ने जवाब दिया, "यही खयाल मेरा भी है। जेनरल कोमुरा का ढंग ठीक नहीं नजर आता।" को-तून, बोला "बेशक हू-शान ने वह नहीं कहा जो जेनरल बताते हैं, जरूर उसने कोई ऐसी बात कही है जिसे

वह हम लोगों से बताना नही चाहते पर जिसे सुन कर काउन्ट की मदद करने का उन्हे जरा भी उत्साह नही रह गया है।"

कुछ देर चुप रह कर सिग-ली बोला, "लेकिन वह बात है क्या आखिर ? और हम लोगो को अब क्या करना चाहिये ?" को-तून गम्भीर भाव से सोचता हुआ बोला, "कुछ समझ मे नही आता कि हू-शान ने जेनरल से क्या कहा, पर हमें जो करना चाहिये वह स्पष्ट है। इस जगह छिपे बैठे रहने से अब कोई लाभ नही, हमे बाहर निकल कर टोह लगाना और खबर लेना चाहिए।" सिग-ली ने कहा, "यही इच्छा मेरी भी है, मगर मैं एक बात कहता हूं। जिस राह हू-शान गया है उस राह से हम लोग भी क्यो न बाहर हों और देखें कि उधर का क्या रंग रवैया है ?" कुछ संदेह की मुद्रा से को-तून बोला' "हू-शान तो दुश्मनो से मिला और उनका विश्वासी बना हुआ है, सम्भव है वह उधर से आवे जाये और किसी को शक न हो पर हमारे आने जाने से शायद भंडा फूट जाय ?" सिग-ली जवाब दिया, "अगर कोई खतरा देखेंगे तो लौट आवेंगे, मगर जिधर से हम आते-जाते है उधरसे तो सिवाय गुफाओ के उस लम्बे सिल-सिले के बाहर निकल जाने का कोई अन्य रास्ता तो दिखाई नही पड़ता।"

आखिर बहुत कुछ सोच-विचार कर दोनों ने अपना दिल मजबूत किया और उस जगह से उठे। उनके अन्य साथी गाफिल पड़े हुए थे और किसी का इधर ध्यान न था अस्तु ये दोनों बेखटके उस कोने में पहुंचे जहां से हू-शान आया और फिर चला गया था। को-तूनके पास एकछोटी सी बिजली की बत्ती थी। उसकी मदद से उसने देखा कि गुफा की अन-गढ दीवार मे जगह जगह गड्ढे बने हुए हैं और ऊपर की तरफ एक छोटी-सी खुली हुई जगह दिखाई पड़ती है। सिग-ली की मदद से और उन्ही गड्ढो पर पैर रखता हुआ को-तून ऊपर चढ़ गया और उस मुहाने के बाहर सिर निकाल देखने लगा। जब कोई खतरे की बात दिखाई न पड़ी तो ऊपर चढ़ गया और तब सहारा दे सिग-ली को भी ऊपर कर लिया।

इस जगह को-तून या सिंग-ली दोनों में से कोई भी अभी तक एक बार भी आया न था, और इसीलिए यह कौन-सा या किस तरह का स्थान है यह कुछ उनकी समझ मे न आया। अन्दाज से जो कुछ पता लगता था वह इतना ही कि यह किसी पहाड़ों का ऊपरी हिस्सा है क्योंकि सिर के ऊपर तारे दिखाई पड़ रहे थे और सामने मैदान और पहाड़ियाँ। जिस मुहाने से ये दोनो बाहर हुए थे उनके बगल ही में पत्थर की एक पटिया पड़ी हुई थी जो शायद उस मुहाने को बन्द करने के काम मे आती होगी। दोनों उसी पर बैठ गए और अपने चारो तरफ देखने लगे।

यकायक सामने के मैदान की तरफ दिखा कर सिंग-ली बोला, "वह क्या है?" को-तून बोला, "वही तो मैं भी सोच रहा हूँ। कोई मन्दिर सा जान पड़ता है, पर भीतर कुछ आदमी चल फिर भी रहे हैं, मुमकिन है कोई मकान हो। मगर एक और बात तुमने देखी!" सिंग-ली ने पूछा "क्या?" एक गुफा की तरफ जो इनके ठीक सामने पड़ती थी और बहुत दूर भी न थी उँगली उठा कर उसने कहा, "उसके अन्दर कुछ आदमी हैं हैं जो बार बार झाँक कर बाहर देखते और फिर हट जाते हैं।" सिंग-ली थोड़ी देर गौर करता रहा तब बोला, "सिर्फ वही नहीं उधर की तो कई गुफाओं में मुझे आदमी इकट्ठे जान पड़ते हैं, वह देखो उस बाईं तरफ वाली गुफा मे, और उस तरफ वाली में भी देखो, वह किसी ने रूमाल या कोई कपड़ा हिलाया! जरूर इसमे कोई रहस्य है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि ये लोग हमारे काउन्ट के ही आदमी हों?"

यकायक को-तून ने सिंग-ली का हाथ दबा कर उसे चुप रहने का इशारा किया बल्कि उसे खींच कर एक चट्टान की आड़ में कर लिया। उसे अपने सामने मगर कुछ नीचे की तरफ खड़े दो आदमी नजर आए थे जो अचानक ही न जाने कहाँ से आकर वहाँ मौजूद हो गये थे, और साथ ही उनकी बात चीत की भी कुछ आहट लगी था। पहिले तो कुछ समझ मे न आया, पर बाद में कुछ-कुछ सुनाई पड़ने लगा। एक कह रहा था।—

"कुल एक सौ बीस आदमी हैं, आधे सामने वाले रास्ते से आ रहे हैं, बाकी के कई टुकड़े होकर भिन्न-भिन्न गुफाओ मे मौजूद हैं। स्वयम् काउन्ट शैवर वह देखिये उस दक्खिन वाली गुफा मे खड़े है और मेरे इशारे की राह देख रहे हैं।"

"अच्छा ! इतने आदमी हैं !! मुझे इसका गुमान न था। मगर काम इन लोगो ने बेशक बड़ी होशियारी से किया। यहां वालो को अभी कुछ ही देर हुई इस बात की खबर लगी है और उस पर भी यह पता अभी तक भी नही लगा है कि उन्हे कितने आदमियों का मुकाबला करना पड़ेगा। अभी तो जहाँ तक मै समझता हूँ इनके आदमी इधर-उधर की गुफाओं में दुश्मन की खोज ढूँढ ही करते फिर रहे हैं।"

"मगर ऐसा क्यों सरदार ? क्या आपने सभों को खबर नहीं दे दी थी ?"

"नहीं नही, सब को खबर दे देता तो फिर मजा ही क्या रह जाता ? इसमे तो कोई शक ही नही कि जहाँ इतने आदमी काम कर रहे है वहाँ कुछ न कुछ दुश्मन के जासूस भी भेष बदले हुए जरूर ही घुसे हुए होंगे। वे अगर जान जाते और किसी तरह उन्होने काउन्ट को होशियार कर दिया होता तो सब सोचा विचारा चौपट हो जाता न ? अब अगर वे लोग जान भी ले तो कुछ कर नही सकते। यही सोच मैंने सिर्फ खास-खास आदमियों को इत्तिला दी और सो भी भेद गुप्त रखने की खूब ताकीद कर के।"

"ठीक है, लेकिन उस हालत मे अगर यहाँ मुकाबला करने की पूरी तैयारी न हुई होगी तो मुमकिन है कि इतने ज्यादा आदमियों के यकायक हमला कर देने से कुछ वास्तविक गड़बड़ी मच जाय।"

"नही उसका भय तुम मत करो। इसके लिए पूरा इन्तजाम कर रक्खा गया है, तुम बस अब यह बताओ कि तुमको अपने काम मे कहाँ तक सफलता मिली ?"

"करीब-करीब जितना आपने कहा था वह सभी काम मैंने पूरा कर

वाला। राजधानी के आधे के करीब ऊंचे अफसर इस मुहिम में काउन्ट के साथ यहाँ आ गये हैं। उधर पैरिस से आने वाले हवाई जहाजों को हमारे रवाना होने के पहिले ही सांता-पू पर बम नही बरसाने का हुक्म भेज दिया गया था मगर फिर क्या हुआ मुझे खबर नही। रहा जापानियों का मामला, सो उन्होंने फ्रांसीसियों का साथ छोड़ दिया है और उनके वायुयान टोकियो लौट गये हैं। मंगर-सिं मेकंग के पास पहुँच गये हैं और अब दक्षिणी समुद्र-तट की तरफ बढ रहे हैं। अब बाकी रह गया...."

इसके बाद की बातचीत ऐसे धीमे स्वर मे हुई कि कुछ सुनाई न दिया, पर अन्त की यह बात अवश्य सुन पड़ी—

"तो बस ठीक है, जो कुछ मैं चाहता हूँ उसके लिए ठीक वायुमंडल तुमने बना दिया है, अच्छा तो फिर आओ।"

दोनो आदमी तेजी से चलते हुए पहाड़ी के नीचे उतर गये। इधर को तून और सिग-ली मे बातें होने लगी—

सिग-ली०। यह आखिर क्या मामला है ?

को-तून०। जरूर हमारे काउन्ट को किसी तरह का गहरा धोखा दिया गया है।

सिग-ली०। बेशक और वे किसी खास मतलब से सैगन से यहाँ फँसा लाए गये हैं, उन्हें होशियार करना चाहिए।

को-तून०। लेकिन अगर ऐसा किया भी जा सके तो अब उससे फायदा ही क्या होगा ? खैर इन आदमियों को तुमने पहिचाना जो बातें कर रहे थे ?

सिग-ली०। नही तो, क्या तुमने पहिचाना ?

को-तून०। कम से कम एक को तो जरूर पहिचान गया, वह बाईं तरफ वाला तो जरूर अजितसिंह था।

सिग-ली०। कौन अजितसिंह ? वही जिसके बारे में सुना जाता है कि कभी फांसी पर से छूट कर निकल भागा था ?

को-तून० । हाँ वही ।

सिग-ली० । तुमने उसे कैसे पहिचाना ?

को-तून० । जब वह त्रिकंटक का एलची बन कर बंकक राजदर्बार में आया था.... ...

दोनो आदमी यकायव चौक कर बातें करना बन्द कर इधर-उधर देखने लगे क्योंकि इसी समय कही से एक सीटी की हलकी आवाज सुन पडा और साथ ही चारो तरफ की पहाड़ी गुफाओं मे से कितने ही आदमी निकल निकल कर उस बीच वाली इमारत की तरफ झपटे । सिग-ली अचानक बोल उठा, "वह देखो काउन्ट शेवर जा रहे हैं ? चलो उनके साथ हो ले और कम से कम इतना तो उनसे कह ही दें कि उन्हे धोखा दिया गया है ।" को-तून बोला, "व्यर्थ तो होगा मगर फिर भी चलना जरूरी है ।"

दोनो आदमी झपटते हुए पहाड़ी के नीचे उतरे और काउन्ट की तरफ चले, मगर फिर भी उन तक पहुंचते पहुँचते काउन्ट और उनके आदमी करीब करीब आधा मैदान पार कर उस बीच वाली इमारत के पास पहुँच गये थे । अपने बगल से किसी नये आदमी की आहट पा जैसे ही काउन्ट ने घूम के देखा, को-तून सलाम करके बोल उठा "मैं हूँ, कोमर और मेरे साथ यह सिलवा है, मगर काउन्ट, यह क्या हो रहा है आखिर ? आप सैगन छोड़ यहाँ कहाँ, और यह हमला किस पर किया गया है ?"

कुछ हाँफते हुए काउन्ट बोले, "कोमर, सिलवा ! तुम लोग आ गये ? अच्छा ही हुआ । मैं तो तुमसे मिलने की आशा ही छोड़ चुका था । यह सब तुम लोगों ही के कहे मुताबिक तो हो रहा है !"

कोमर आश्चर्य से बोला, "हमारे कहे मुताबिक !" काउन्ट ने कहा, "हाँ और क्या ? तुम्ही ने न खत देकर राजकुमार श्री-पद्म को मेरे पास भेजा था और लिखा था कि जैसा ये कहें वैसा करना ?"

कोमर के ताज्जुब का ठिकाना न रहा । वह घबड़ा के बोला, "मैंने

कब किसको भेजा ?" मगर अब बातें करने का मौका ही कहाँ रह गया था ? छापा मारते हुए सब लोग उस बीच वाली इमारत के पास पहुँच गये थे और उस ऊँचे चबूतरे पर चढ़ने लगे थे जो उसके चारो तरफ बना हुआ था। कोमर यह भी नही समझ सका कि काउन्ट ने उसकी बात सुनी भी कि नही पर लाचारी वह भी काउन्ट के साथ हो लिया और सिलवा उनके दूसरी तरफ हो गया।

वह मुख्य दल जो जेवरल श्रू की मातहती मे गुफा से रवाना हुआ था वह तो न जाने कहाँ रह गया था पर बाकी के दलो मे से चार ठीक समय पर पहुँच गये थे और राजकुमार श्री-पद्म के इशारे पर चारो दलों ने चार तरफ से इस इमारत पर हमला कर दिया था जिसकी हिफाजत करने वाला अभी तक भी कोई नजर न आया था।

वह इमारत एक ऊँचे चबूतरे पर थी जिस पर चढ़ने के लिए चारो तरफ चार चौड़ी २ सीढ़ियाँ बनी हुई थी जिनकी कुल ऊँचाई बीस बाईस डंडो से कम किसी तरह न होगी। काउन्ट और उनके सब साथी और सिपाही ये सीढियाँ चढ़ ऊपर वाले चबूतरे पर पहुच गये मगर वहाँ इन्हें रुक जाना पड़ा क्योंकि इसके आगे बढ़ने का कोई रास्ता कही दिखाई न पड़ता था। यद्यपि जब ये लोग दूर गुफाओ मे थे तो कई दर्वाजे जगह-ब-जगह दिखाई पड़ रहे थे, पर अब कही एक सूराख तक नजर न आता था ! दो तीन बार समूची इमारत का बेकार चक्कर लगा चुकने पर कुछ घबड़ा कर काउन्ट ने कहा, "राजकुमार श्री-पद्म, आप कहाँ हैं ? अब हम लोगों को क्या करना है बताइये ? इस इमारत में घुसने का तो कोई रास्ता ही नजर नही आता !"

मगर राजकुमार श्री-पद्म वहाँ कहाँ थे जो बोलते ! काउन्ट और उनके घबराये हुए साथी सब तरफ उन्हें खोज हारे और तब आपुस में सलाह करने लगे कि अब क्या करना चाहिये। इसी समय कोई व्यक्ति बोल पड़ा, "अरे यह क्या मामला है ! वे सीढ़ियाँ सब कहाँ चली गईं !"

सचमुच ही ताज्जुब की बात थी। अभी अभी जिन सीढ़ियों पर से चढ़ कर ये लोग इस जगह इतने ऊँचे चबूतरे पर आ पहुँचे थे वे सब की सभी न जाने कहां गायब हो गई थी! अब चारो तरफ चबूतरे की साफ सीधी खड़ी दीवार ही सिर्फ दिखलाई पड़ रही थी, जहां से यदि नीचे उतरना भी चाहें तो उतरने का कोई जरिया रह न गया था सिवाय इतने ऊपर से कूद कर हाथ पांव तुड़ा लेने के। यह क्या मामला है? कोई इन्द्रजाल है क्या, या जादू का कोई करिश्मा दिखलाई पड़ रहा? घबराहट मे भरे हुए काउन्ट उस लम्बे चौड़े चबूतरे पर चारो तरफ घूम आये मगर कही कोई भी रास्ता नजर न पड़ा। उनकी बेचैनी का कोई ठिकाना न रहा।

कोमर और सिलवा यद्यपि खुद भी घबराये हुए तथा परेशान थे फिर भी गौर से सब मामला देख रहे थे। काउन्ट की घबराहट देख कोमर से रहा न गया और वह उनके पास जा कर हिचकिचाता हुआ बोला, "काउन्ट, यह सब आखिर क्या तमाशा है, कुछ मुझे भी तो बतलाइये कि आप यहां क्यो आये और किस मकसद से, तथा अब क्या करना चाहते हैं?"

अपनी तलवार की मूठ पर दोनो हाथ रख दीवार का ढासना ले काउन्ट एक तरफ खड़े हो गये और निराशा के भाव से बोले, 'तुम्ही ने तो यह सब किया और तुम्ही जब पूछते हो तो फिर मैं क्या बताऊँ?"

कोमर शान्ति से बोला, "आखिर कुछ भी तो कहिये? मैं तो कह रहा हूँ न कि मैंने किसी का आपके पास नही भेजा और न कोई...."

कुछ झुँझला कर काउन्ट बोले, "तुमने अपनी पहिली चीठी में यह लिखा था कि पैरिस से जो हवाई जहाज आवें उनसे कहिये कि सांता-पू के बांध को बम गिरा कर एक दम नष्ट-भ्रष्ट कर दें! उतना हो जाने से कम्बख्त त्रि-कंटक मय अपनी सब शैतानी मशीनो के समाप्त हो जायेंगे। ऐसा ही तुमने लिखा था, और यह भी लिखा था कि जहां पर बम गिराने चाहियें वहां तुमने बिजली के लट्टुओं से इशारा करने का बन्दोबस्त कर लिया है!"

कोमर० । हाँ जरूर मैंने ऐसा लिखा था मगर अपनी जान पर खेल कर जो कुछ भी मैंने किया उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया और वे सब के सब वायुयान............

शॅवर० । कैसे ध्यान दिया जाता ! इसके बाद वाले अपने दूसरे ही खत मे तुमने राजकुमार श्री-पद्म का जिक्र करते हुए यह लिख भेजा कि इन्हें दुश्मन का कोई वहुत ही गुप्त भेद मालूम हुआ है और मेरी पहिली चीठी के अनुसार काम न करके अगर इनको राजी करके इनके कहे मुताबिक कारँवाई की जायगी तो और भी ज्यादा फायदा होगा।

कोमर० ! (चमक कर) हरगिज नही ! अपनी दूसरी चीठी में तो मैंने यह लिखा था कि अगर मेरे पहिले खत के अनुसार कारँवाई न होगी तो वड़ा गजव हो जायगा और फिर पूर्व में कही भी फ्रांस का पैर कायम रहना एकदम असम्भव हो पड़ेगा, क्योंकि ये लोग एक नई और वहुत ही भयानक मशीन खडी कर रहे हैं जो 'मृत्यु-किरण' नामक ऐसी किरणें बनाती है जिनसे.........

शॅवर० । पागल हो तुम ! हो क्या गया है तुमको ! तुम्हारी वह चीठी अभी तक मेरे पास मौजूद है और उसमे तुमने क्या लिखा है सो यह देखो और पढ़ो । खुद ही सव काम चौपट किया, मुझे इतनी दूर सैकड़ मील दौड़ाया, और अब वातें बनाते हो !!

झुंझलाए और वफरे हुए काउन्ट शॅवर ने अपनी जेब से एक चीठी निकाल कर कोमर के हाथ पर रख दी जो खुद ही यह सोच सोच परेशान हो रहा था कि काउन्ट आखिर यह सव क्या बक रहे हैं ! अपने हाथ वाली बिजली की टार्च की रोशनी में कोमर वह चीठी पढ़ गया और तव पागलों की तरह अपने बालों को नोचता हुआ बोला, "ओह, मेरे होश-हवास ठीक हैं या नहीं ? यह चीठी जरूर मेरे ही हाथ की लिखी हुई है मगर यह मजमून वह हरगिज नहीं है जो मैंने लिखा था ! मैं तो जानता भी नही कि यह राजकुमार श्री-पद्म कौन बला है ! उस नाम के किसी आदमी

को आज तक मैंने कभी कहीं देखा तक नहीं—देखना तो दूर ऐसा नाम तक कभी नहीं सुना ! लो सिलवा तुम भी देखो तो ।"

सिलवा ने वह चीठी ले ली और पढ कर कहा, "लिखी हुई तो वेशक तुम्हारे ही हाथ की है, मगर ऐसा मजबूत तुमने लिख कैसे दिया और क्यों !"

दोनों हाथों से अपना सिर पीट कर कोमर वोला, "मैं कहता हूँ कि मैंने लिखा ही नहीं और तुम भी कहते हो....कि ...!"

यकायक ये तीनों ही आदमी चौंक पड़े। उनके पीछे किसी के खिल-खिला कर हँसने की आवाज उठी थी। घूम के देखा तो पीछे वाली इमारत की दीवार में एक छोटा मोखा नजर आया जिसके अन्दर कोई काली शकल खड़ी नजर आ रही थी। तीनों ताज्जुब से उसी तरफ देखने लगे। काली शकल हंसती हुई वोली, "जिस चीठी ने आप लोगों को इतना परेशान किया उसके अक्षर भले ही इन मियां कोमर के हाथ के से हों पर उसका लिखने वाला कोई दूसरा ही है जो जाली नोट बनाने के जुर्म बहुतमे दिनो तक अंग्रेजी जेलखाना आवाद कर चुका है। उससे अगर मिलना चाहते हो तो मैं आप लोगों की मुलाकात भी करा सकता हूँ—पर खैर उस वात को जाने दीजिए। काउन्ट शैवर, आपको हम लोगों के दरवाजे पर कुछ देर खड़े रहना पड़ा इसके लिए माफ कीजिएगा, हम लोग सिर्फ आपके जेनरल थ्_ के आने की राह देख रहे थे और वे यहाँ आ भी गये। अब काउन्ट आप कृपा कर भीतर आ जायें तो जिस मकसद से हमलोगों ने आपको यह तकलीफ दी है वह आप पर जाहिर कर के हम लोग यह वखेड़ा एकदम से खतम कर दें।"

वोलने वाले की आवाज वन्द होने के साथही खटके का एक शब्द हुआ और तब ठीक उसी जगह जहाँ वह मोखा नजर आ रहा था एक दर्वाजा दिखाई पड़ने लगा जिसके दूसरी ओर वह काली शकल खड़ी थी। काउन्ट को भीतर आने का इशारा करती हुई वह शकल वोली, "आइये

काउन्ट शैवर, कृपा कर भीतर आ जाइये।"

यह क्या तमाशा है ? अभी अभी जहाँ पत्थर की साफ दीवार थी वहाँ दर्वाजा कैसे वन गया ? ये लोग जादूगर भी हैं क्या ? यह सब सोचते हुए काउन्ट शैवर हिचक हो रहे थे कि काली शकल फिर बोल उठी, "डर लगता है अन्दर आते काउन्ट ? मगर कोई डरने की वात नहीं है, आप बेखटक चले आइये !!"

सुनते ही क्रोध से तड़प कर काउन्ट बोल उठे, "ओह, मैं तुम जादूगरों से नही डरता, कहो क्या करना है तुम्हे !" और तब उन्होने दर्वाजे के अन्दर पैर रक्खा। यद्यपि उन्होने किसी से कुछ कहा नही, तो भी उनके साथ साथ तीन चार और भी बड़े अफसर तथा कोमर और सिलवा भी दरवाजे के अन्दर घुस गये, मगर इससे ज्यादा लोग जा न सके कारण पुनः एक खटके की आवाज हुई और लोहे का एक जंगलेदार दर्वाजा उस मुहाने पर आ कर बैठ गया जिसे खोल कर भीतर जाना तो असंभव था मगर जिसकी राह भीतर का हालचाल बहुत कुछ देखा जा सकता था। बाहर उस मकान के चारो तरफ के चबूतरे पर फैले हुए आदमी भी इसी जंगले के पास सिमट आए और यह देखने की कोशिश करने लगे कि भीतर क्या होता है।

एक विचित्र दृश्य काउन्ट की आँखों के सामने था।

एक बड़ी मगर अंधेरी और काली कोठड़ी थी जिसमें चारों तरफ के फर्श दीवारों यहाँ तक कि छत पर भी काला कपड़ा लगा हुआ था। कोठड़ी के बीचो-बीच मे एक बड़ा तिकोना टेबुल रक्खा हुआ था। इस टेबुल पर भी काला ही कपड़ा बिछा हुआ था जिसके नोक की तरफ काले कपड़े से ढँकी तीन कुर्सियो पर तीन ऐसे व्यक्ति बैठे हुए थे जिनका तमाम बदन यहाँ तक कि मुँह भी काले कपड़े से ढका हुआ था। टेबुल पर तीन मोमबत्तियों का एक शमादान जल रहा था जिसकी रोशनी यहाँ के अन्धकार को दूर करने को काफी न थी फिर भी उसकी मदद

से इस टेबुल के पीछे की ओर वाली दीवार के साथ खड़े बहुत से आदमी देखे जा सकते थे तथा वे लोग भी जो काउन्ट को अपने दोनों बगल नजर आ रहे थे। इन्हें काउन्ट देख ही नहीं पहिचान भी सकते थे और पहिचान कर ताज्जुब भी कर सकते थे, क्योंकि उनमे कुछ ऐसी शकलें उन्हें दिखाई पड़ीं जिनके देखने की कुछ भी आशा न हो सकती थी। उनमे जेनरल श्र., मार्शल फाक, जेनरल कोमुरा, प्रोफेसर साऊ-चूकू तथा कैप्टेन रिचार्ड तो थे ही साथ साथ जिनको यहां देख कर काउन्ट को अजहद ताज्जुब हुआ वे थे आनरेबिल लूई फराडे और दो अन्य अधेड़ फ्रांसीसी फौजी अफसर जो उनके पीछे की तरफ थे। इन आनरेबिल लूई फराडे को तो काउन्ट शैवर अपनी जगह पर सैगन का शासक बना कर छोड़ आए थे और वे जो अन्य दो अफसर थे उनसे यद्यपि इधर काउन्ट की भेंट न हुई थी पर उनको पैरिस मे वे बहुत बार देख चुके और अच्छी तरह जानते थे कि ये फ्रांस की हवाई फौज के बहुत ही ऊँचे अफसर हैं, और यह भी उन्हे खबर थी कि वहां से जो हवाई जहाज हमारी मदद को आए हैं वे इन्ही दोनो की मातहती मे आए हैं। लूई फराडे के साथ साथ इन दोनो को भी उस जगह देख काउन्ट को अजहद ताज्जुब हुआ और वे घबड़ा कर बोल पड़े--"हैं, आनरेबिल लूई फराडे, एयर-मार्शल नाकून्हे, और कमाण्डर सेकिन ! आप लोग यहां कैसे !"

इनके पहिले कि इन तीनों मे से कोई कुछ कह सके, टेबुल की नोक की तरफ बैठे तीनों आदमियो मे से एक बोल उठा, "हां काउन्ट शैवर, हम लोगों ने सैगन से उन सभी को यहां बुला लेना मुनासिब समझा जिनके भरोसे पर आप अपनी राजधानी छोड़ आये थे—इसलिए कि हमारी बातें सुन कर कदाचित आपको उनसे सलाह करने की जरूरत आ पड़े। पर खैर, कुछ देर के लिए वह सब खयाल छोड़ आप हमारी तरफ मुखातिब हूजिये और जो कुछ हम कहते हैं उसे गौर से सुनिये।"

काउन्ट०। (गुस्से के भाव से) कहिये !

वह० । यह बताने की तो शायद जरूरत न पड़ेगी कि हम लोग कौन हैं क्योंकि अगर औरों ने नहीं तो कम से कम आपने और मार्शल फाक ने तो जरूर ही हमें पहिचान लिया होगा ।

काउन्ट० । जी हां, मैं समझ गया कि आप ही लोग शायद वे मशहूर त्रि-कंटक हैं जिन्होंने आधी दुनिया को परेशान कर रक्खा है ।

वह० । ठीक है, अब थोड़े में यह भी सुन लीजिए कि आज आप इतने आदमियों को इकट्ठा करने की जरूरत हमें क्या पड़ी ?

काउन्ट० । मैं वह जानने को अत्यन्त उत्सुक हूँ ।

त्रिकं० । मार्शल फाक के जरिए कुछ महीनों पहिले हम लोगों ने एक संदेसा भेजा था । हमने आपको लक्ष्य करके समस्त पश्चिम को कहलाया था—"एशिया से अपना हाथ अलग रक्खो !" पर पश्चिम ने हमारे संदेसे पर कोई ध्यान न दिया, कम से कम फ्रांस ने—आप लोगों ने—हमारे कहने पर कुछ भी ध्यान न दिया और न अपना शैतानी कदम ही इस जम्बू-द्वीप पर से हटाया ।

काउन्ट शैवर की आंखों में गुस्से की एक लाल चमक दिखाई पड़ी पर जमाना देखे हुए बूढ़े ने अपनी जुबान खोलना मुनासिब न समझा । वह व्यक्ति कहता चला गया—

त्रिकं० । आप लोगों के अत्याचार की मात्रा बढ़ती ही गई और काले आदमियों का खून चूसने की आपकी प्रवृत्ति में कुछ भी अन्तर न पड़ा । लाचार हमें भी अपनी धमकी पूरी करनी पड़ी । हमने इधर के पूर्वी देशों की सहायता से ग्यारह आदमियों की एक कुमेटी कायम की जिसने 'पूर्व-गौरव संघ' के नाम से आपलोगों की अच्छी तरह मरम्मत की । आपकी फौजी ताकत को तोड़ने में इस 'पूर्व-गौरव-संघ' ने जो कुछ किया आपको बताने की जरूरत नहीं, मगर सब से बड़ी बात जो इसने की वह थी श्याम देश के पुराने राजा को हटा कर एक ऐसे नए राजा को सिंहासन पर बैठाना जिसकी तलवार की ताकत पर भरोसा किया जा सकता था ।

मंगर-सि ने तख्त पर बैठते ही जिस तरह से जो कुछ किया वह आपकी आखो के सामने है ।

बोलने वाला कुछ देर के लिए रुक गया । शायद उसने सोचा था कि काउन्ट उसकी बात के जवाब मे कुछ कहेगे, पर काउन्ट ने सिवाय एक बार सिर झुकाने के मुँह न खोला । वह व्यक्ति पुन: कहने लगा—

त्रिक० । आप लोगो को अपनी राजधानी से रवाना हुए काफी देर बीत चुकी है, इसलिए युद्ध-क्षेत्र की आखिरी खबरे अवश्य ही आप न जानते होगे, वह मै आपको सुनाता हूँ ।

काउन्ट और उनके साथियो की कौतहलाकृष्ट आखे बोलने वाले की तरफ उठ गईं और वह गम्भीर स्वर मे कहता चला गया—

त्रिकं० । राजा मंगर-सि की सेना ने 'कम्पन' 'कामपूत' और 'बनाम' से आने वाली आपकी सेनाओ को इस कदर कडी शिकस्त दी है कि उनके आधे से ज्यादा आदमी मारे गए या जख्मी हुए और बाकी के या तो भाग गए या कैद हुए । अब उनकी विजयी सेना 'छ्यान-डक' और हा-तीन' को अपने कब्जे मे कर 'सैगन' की तरफ बढ़ रही है ।

काउन्ट ने अपने को सम्हालने की बहुत कोशिश की फिर भी उनके और साथ साथ कई अन्य फौजी अफसरो के मुंह से निकल ही पडा– है, हमारी हार हो गई ! हा-तीन दुश्मन के हाथ चला गया !!" वह व्यक्ति बोला—

त्रिकं० । जी हा, और बहुत जल्दी ही आप यह भी सुन लीजिएगा कि 'सैगन' पर मगर-सि का झंडा फहरा रहा है ।

कुछ क्रोध के साथ कई फौजी अफसरो के मुँह से निकला 'हम लोगो को इस तरह धोखा दे वहाँ से दूर हटा के अब आप लोग जो चाहे कर सकते है !" वह व्यक्ति भी अपनी आवाज जरा ऊँची करके बोला ' धोखा दे के ? आप लोग क्या धोखे मे पड के यहां आए है ? या सुफेद जाति की चिर-सहचरी 'लालच' आपको यहाँ घसीट लाई है ? और फिर पूर्व

मे आज जहाँ कही भी पश्चिम की नाक घुसी हुई है क्या उसका एक एक चप्पा बेईमानी दगाबाजी और फरेब से नही लिया गया है ? क्या पूर्व की एक इंच जमीन भी कोई ऐसी है जिसके बारे में पश्चिम कह सके कि—इसे हमने अपनी तलवार की ताकत से जीता है ? तो फिर आप ही के अस्त्र से अगर पूर्व आपके खिलाफ लडता है तो आप क्यों भवें चढ़ाते हैं ? अपका शैतानी अस्त्र-शस्त्र धोखा और फरेब अगर आप ही के ऊपर चलाया जाता है तो आप क्यों बुरा मानते है !''

कितने ही फ्रांसीसी अफसरो की भृकुटियाँ चढ़ गईं कितने ही हाथ तलवारों की मूठ पर चले गये—पर काउन्ट के इशारे ने सभों को ठंढा किया जो अपनी उसी स्वाभाविक शान्त आवाज से बोले—

काउन्ट० । आप ठीक कह रहे है महोदय, युद्ध मे उपाय नही देखे जाते है, फल देखा जाता है । मैं स्वीकार करता हूँ कि आपकी सहायता पाकर मंगर-सिं ने हम लोगो को अच्छी शिकश्त दी है । मैं यह भी मंजूर करता हूं कि अगर यही हालत बनी रही तो मंगर-सिं मैगन क्या समूचा फ्रेन्च-इन्डो-चायना ले सकता है, पर यह अभी तक मेरी समझ मे न आया कि हम लोगों को यहाँ बुलाने ...?

त्रिकं० । आप लोगो को यहाँ बुला लेने से ही मंगर-सि की विजय हुई ऐसा आप न सोचिए काउन्ट ? वह तो जीतता ही क्योंकि हमारी मदद उसको थी । आप रहते तब भी जीतता और आप नही है तब भी जीत रहा है पर आपको बुलाने से हम लोगो का अभिप्राय कुछ दूसरा ही है ।

काउन्ट० । वह क्या है इसे जानने को मै बहुत देर से व्यग्र हूं ।

त्रिकं० । वह यही है कि हम चाहते हैं कि अब आपमे और मंगर-सिं मे, अथवा जो एक ही बात है—आपमे और हममे, संधि हो जाय ।

(कम्वोडिया) आपसे छीन लिया, वह तो अब आपके पास लौटता नही, पर हम चाहते है कि आप अब अपनी रजामन्दी सें अपने वर्तमान राज्य का एक हिस्सा हम लोगों को दे दे । मेरा अभिप्राय उस प्राचीन चम्पा राज्य से है जो आजकल आनाम देश के नाम से आपके फ्रेन्च-इन्डो-चायना का पूर्वीय भाग बना हुआ है ।

काउन्ट० । (जो बडी कोशिश से अपने गुस्से को दवाए हुए थे) आनाम ? आप चाहते है कि मंगर-सिं से डर कर हम बिना लडे भिड़े आनाम उसको दे दें ?

त्रिकं० । विना लड़े भी नही, और मंगर-सिं को भी नही ! आप जानते ही हैं कि कुछ ही वर्पों पहिले चम्पा एकदम स्वतन्त्र राज्य था । शताब्दियो तक वहा के प्राचीन राजाओ की कीर्तिध्वजा ऊँची फहराती रही है । समय के फेर से उस प्राचीन राज्य के टुकडे-टुकडे हो गये । कुछ चीन ने ले लिया और कुछ आप फ्रासीसी लोग उदरस्थ कर गये, पर फिर भी वहाँ की प्रजा अपनी स्वाधीनता के लिये अब तक भी आप सभों से लड रही है । हाल ही मे वहाँ के कई शहरो मे जो उपद्रव हुए हैं वह न आप से छिपे हैं और न हमसे । खास 'हनोई' का वलवा आप किसी तरह भूल नहीं सकते हैं । अगर मंगर-सिं अपनी सेना वहाँ न भेजे तो भी क्या आप यह नही समझ सकते कि उनकी विजय का हाल सुनने मात्र से चम्पा की प्रजा किस तरह उत्साहित हो उठेगी । और जब प्रजा एक बार सचमुच ही स्वतंत्र होने का निश्चय कर ले तो क्या कोई भी हुकूमत उसे दवाए रख सकती है काउन्ट शैवर ?

काउन्ट कुछ बोले नही । पहिली बात तो यह कि इधर बहुत समय से झंझटो मे पडे रहने के कारण उन्हे उत्तरी प्रातो की अवस्था कुछ ठीक ठीक मालूम न रह गई थी दूसरे यह कि वे खुद भी कम से कम इतना तो सोच ही सकते थे कि इस व्यक्ति का कहना बहुत कुछ सही था । मंगर-सिं की जीत का हाल सुन विद्रोही प्रजा जो कुछ भी अनर्थ न कर उठे ।

त्रिकं० । पर हम लोग यों ही मुफ्त में आपसे वह प्राचीन राज्य ले लेना नही चाहते । लड़ कर ले लेने की पूरी ताकत रखते हुए भी हम आपसे वह भू-भाग पूरी कीमत दे के खरीदने को तैयार हैं । आप अपना तुषाराच्छादित पश्चिम छोड़ हजारों कोस दूर इस शस्य-श्यामल पूर्व मे जो आए हैं वह केवल एक कारण से—धन की खोज मे वही धन काफी मात्रा मे अगर आपको घर बैठे मिल जाय तो मैं समझता हू कि आपको पूर्व से पुनः पश्चिम लौट जाने मे कोई भी उज्र न होगा । हम लोग आप को चम्पा अर्थात् आनाम देश की पूरी नक्द कीमत देते है आप उसे छोड़ दीजिए । मंगर-सिंह को दे दीजिए सो हम नही कहते, आप उसे पुनः एक स्वतंत्र राज्य बन जाने दीजिए ।

ताज्जुब के मारे काउन्ट के मुँह से बड़ी कठिनता से निकला—

आप रुपया दे के उतना बड़ा भू-भाग हमसे खरीद लेना चाहते हैं !!"

उस व्यक्ति ने जवाब दिया— जी हाँ, आप बिल्कुल ठीक समझ गये ।"

कुछ देर तक सन्नाटा रहा, दोनो एक दूसरे को देखते रहे । एक बार काउन्ट की आँखें अपने साथियों की तरफ भी घूम गईं जिनकी लाल आँखें और गुस्से से काँपते होंठ अपना संदेसा आप कह रहे थे कितनो ही के हाथ उनके शस्त्रो की मूठ पर थे कई क्रोध से मोछें चबा रहे थे ।

फिर भी काउन्ट ने अपने को बहुत शान्त रक्खा शान्ति से ही उन्होंने कहा—

काउन्ट० । मैं कुछ समझ नही पाता कि आप मुझसे कोई मजाक कर रहे हैं या कोई गम्भीर बात कह रहे हैं । आज तक सब जगह सभी मुल्क तलवारों की कीमत पर ही खरीदे और बेचे जाते रहे हैं, अभी तक कहीं भी मैंने यह न सुना कि रुपयों ने कोई मुल्क खरीदा हो ।

त्रिक० । (कुछ हँस कर) ठीक ही है, अस्तु आप यही समझ लीजिए कि हम आप एक नई परिपाटी कायम करने जा रहे हैं । हमारी तलवार तो हमेशा आपकी सेवा में प्रस्तुत हुई है, पर मैं देखना

चाहता हूँ कि हमारा जेन भी आपके कुछ काम आ सकता है कि नही ! इधर कुछ समय के अन्दर काफी खून-खराबा मच चुका है, अगर बिना और खून बहाए काम चल जाय तो क्या अच्छा नही होगा ? खैर आप कम से कम हमारा प्रस्ताव सुन लीजिए और तव अपना निर्णय कीजिए ।

काउन्ट० । वहुत अच्छा, कहिए !

त्रिकं० । आप सभी लोग किसी न किसी लालच मे पड कर यहाँ आए थे । आपको काउन्ट, हमारा दूत कुछ लालच दे के यहाँ लाया, और आप लोगों को (लूई फराडे मार्शल नाकून्हे और कमाडर सेकिन की तरफ घूम कर) भी कुछ लालच ही यहाँ तक खीच लाई । अस्तु ठीक अगर आपके मन की चीज नही तो उससे ब-त कुछ मिलती जुलती चीज, वह चीज जो सुफेद जाति को वडी प्रिय है, अगर मैं आपको दूँ तो आपको रोष न होना चाहिए ! हम आप लोगो को धन देते हैं । पूरे आनाम देश को स्वतन्त्र कर देने की कीमत देते है । पूर्व-गौरव-संघ' को आपसे मोर्चा लेन लायक बनाने के लिए हम लोगो ने केवल अपने कुछ अस्त्र-शस्त्र ही नही दिए थे, कुछ धन दिया था, पर उसे खर्च करने की उसको जरूरत न पड़ी । मैं चाहता हूं कि आप वह धन ले लीजिए और आनाम अर्थात् चम्पा देश छोड दीजिए, तथा इस प्रकार हमारी आपकी सुलह हो जाय । वह धन कीमती नही है—वह है पचास अरब डालर ।

"पचास अरब डालर !" 'पचास अरब डालर !!" कितने ही गलों से अस्पष्ट रूप मे ये शब्द निकल गए । बोलने वाले ने कहा, 'जी हाँ, पचास अरब डालर—नगद चाँदी और सोने के रूप मे ।"

उसने अपने हाथ का एक इशारा किया, साथ ही कमरे के बाईं तरफ वाला काला पर्दा यकायक हट गया । सभो की निगाहे उधर ही को घूम गईं काउन्ट और उनके साथियो ने देखा कि उधर जमीन से ले के छत तक चाँदी और सोने की सिले लदी हुई है जिनकी संख्या इतनी अधिक है कि उनकी एक दीवार सी ही बन गई है ।

कितनी ही मुग्ध दृष्टियाँ एकटक उस धन-राशि को देखती रह गईं, मगर काउन्ट शैवर केवल एक ही निगाह उधर डाल कर बोले— आप चाहते हैं कि हम यह धन ले ले और आनाम बेच दें ?"

त्रिकं० । जी हाँ—यहाँ पैंतालिस अरब डालर का सोना और पाँच अरब डालर की चाँदी है ! अगर हमारा प्रस्ताव आपको स्वीकार हो तो इसी जगह आपकी और हमारी एक संधि हो जाय । आप यह दौलत ले के चल दें और चम्पा राज्य अपना शासन अपनी इच्छानुसार करने को स्वतंत्र हो जाय ।

काउन्ट० । और अगर हमें यह प्रस्ताव न स्वीकार हो तब ? आप हमें मार डालेंगे यही न ?

त्रिकं० । नहीं नहीं नहीं, यह मत डरिये कि आपमें से किसी का भी एक बाल भी बाँका होगा । आप लोगों को हम बहुत इज्जत के साथ जहाँ से लाए थे वहीं पहुँचा देंगे मगर साथ साथ पूर्व-गौरव-संघ' को और अधिक बल देंगे । और तब वह नए सिरे से तलवार से आपका मुकाबला करेगा । वह आपसे मोर्चा लेगा और चम्पा देश के बलवाइयों को उभाड़ कर उन्हें स्वतंत्र कराने की कोशिश करेगा । फल जो कुछ होगा वह आप समझ ही सकते हैं । थोड़ी फ्रांसीसी जानें जायँगी, थोड़ा पूर्वी खून बहेगा—मगर जीत हमीं लोगों की होगी यह आप विश्वास रखिये । हाँ, इस वक्त खाली आपका चम्पा राज्य अर्थात् आनाम आपसे जाता, बाकी सब प्रान्त फ्रेन्च-इन्डो-चायना का दक्षिणी और पूर्वी पूरा हिस्सा आपके पास ही रह जाता मगर उस वक्त क्या होगा नहीं जानते—शायद आपको पचास अरब डालर जुर्माने के तौर पर हमें दे के दो चार जहाजों पर ही चढ़ कर अपने देश को लौट जाना पड़े—अगर आपके पास उतने भी जहाज रह जाय तब तक !

कुछ देर सन्नाटा रहा । काउन्ट कुछ निश्चय कर न सके कि क्या उत्तर दें । बार-बार उनकी निगाहें अपने साथियों की तरफ उठने लगीं ।

यकायक वह व्यक्ति फिर बोल उठा—

"अवश्य ही सोच विचार और सलाह के लिये आपको कुछ मौका मिलना चाहिये। यह विषय ऐसा नही है कि आप तुरत कुछ जवाब दे सकें या अकेले अपनी जिम्मेदारी पर कोई बात कह ही सके, अस्तु बारह घंटे का अवसर आपको दिया जाता है। बाहर मैदान मे आप लोगों के रहने के लिये डेरे खेमो का इन्तजाम कर दिया गया है। आप लोग वहां जायँ, कुछ देर आराम करें और आपुस मे सलाह बात करें। शायद आपको पैरिस और सनाई तथा सैगन से बातें करने की जरूरत जान पड़े। कई टेलीफ़ोन वहा आपको मिलेंगे उनसे बेखटके काम लीजियेगा। बारह घंटे बाद फिर हमारी आपकी बातें होगी।"

काउन्ट कुछ कहना चाहते थे पर मौका न पा सके। यकायक उनके और बोलने वाले के बीच मे एक मोटा काला पर्दा आ गिरा और त्रि-कंटक तथा उसके पीछे खडे लोग काउन्ट और उनके साथियो की दृष्टि से लोप हो गये। साथ ही पीछे वाले दर्वाजे के खुलने की भी आवाज आई। काउन्ट लाचार होकर चुप रह गए और तब धीरे-धीरे वे तथा उनके साथी उस जगह के बाहर आ गये।

चबूतरे के नीचे उतरने की जो सीढ़ियाँ पहिले गायब हो गयी थी, ताज्जुब की बात थी कि अब वे सब फिर दिखाई पड़ने लगी थी और उससे भी ज्यादा ताज्जुब की बात यह थी कि नीचे वाले साफ सरपट मैदान मे जो कुछ ही देर पहिले एकदम निर्जन था, अब कई तम्बू दिखाई पड़ रहे थे जिनमे जगह ब जगह रोशनी हो रही थी और कुछ आदमी भी चलते फिरते नजर आ रहे थे। साथियों से पूछने पर मालूम हुआ कि काउन्ट वगैरह के भीतर जाने के बाद ही नीचे के मैदान मे बहुत से आदमी नजर आये जिन्होने ये तम्बू खड़े किये थे और अभी भी उसी काम मे लगे हुए थे। काउन्ट समझ गये कि यह इन्तजाम त्रि-कंटक की ओर से उन्ही के लिये किया गया है अस्तु बिना अपने साथियों से कोई भी सलाह किये वे

और उनके पीछे पीछे बाकी के सब लोग उस चबूतरे के नीचे उतर गये ।

× × ×

थोड़ी देर के लिए इन लोगों का साथ छोड़ हम पुनः उसी जगह लौटते और उस काले पर्दे के पीछे वाली एक छोटी कोठड़ी मे चलते हैं जिसमे इस समय केवल वे तीनों काली पौशाकों वाले व्यक्ति ही दिखाई पड़ रहे हैं जिन्हे हम ऊपर त्रि-कंटक के नाम से सम्बोधन कर आये हैं । इस समय भी इनके चेहरे काली नकाबों से ढके हैं इसलिए हम इनकी सूरत शक्ल के बारे मे तो कुछ कह नही सकते पर इनकी बातें अवश्य सुन सकते हैं । ये तीनों तीन आराम-कुर्सियों पर पड़े हैं और इनके सिवाय इस छोटे कमरे मे और कोई भी दिखाई नही पडता है । तीनो में आपुस में धीरे धीरे बातें हो रही हैं—

एक० । (सिर हिला कर) जो कुछ भी हो पर मुझे तो विश्वास नही होता कि ये लोग हमारा प्रस्ताव स्वीकार करेंगे ।

दूसरा० । मेरा भी यही खयाल है, काउन्ट तो गम्भीर आदमी हैं, उनके चेहरे को देख कुछ समझना कठिन है, पर उनके फौजी साथियों और नौजवान अफसरों की आकृति देख के स्पष्ट समझा जा सकता है कि हमारे प्रस्ताव को सुन उनके स्वाभिमान को बहुत कड़ी चोट लगी हैं और दुर्योधन की तरह वे लड़ कर मिट जाना पसन्द करेंगे पर एक चप्पा भूमि भी देने को राजी न होंगे ।

तीसरा० । मगर देने का तो सवाल नही है, सवाल है बेचने का ?

दूसरा० । मगर क्या राज्य भी कुंजड़िन के आलू है कि इस तरह बेचे जायें ? आखिर आत्म-सम्मान भी तो कोई चीज है ?

पहिला० । मैंने यही बात तो सरदार से कही थी, पर वे अपनी राय पर कायम रहे । उनकी जिद्द से ही लाचार होकर हमे यह सब नाटक रचना पड़ा, पर लक्षणों से यही पता लगता है कि यह समूचा परिश्रम व्यर्थ जायगा ।

दूसरा०। पर सरदार तो अब भी अपनी राय पर कायम है और कहते है कि फ्रान्सीसी लोग हमारा प्रस्ताव जरूर मान लेंगे !

तीसरा०। न जाने क्या समझ कर वे ऐसा कहते है ? शायद उन्हे किसी ऐसी गुप्त बात की खबर हो जिसे हम लोग न जानते हों ?

पहिला०। बहुत सम्भव है। उनके जासूस बड़े तेज है और सच तो यह है कि उनकी बुद्धि इतनी प्रखर है कि केवल अपनी विचार-शक्ति की सहायता से बहुत सी बातों की जड़ तक जितनी जल्दी वे पहुँच जाते है हम लोग कदापि नही पहुँच पाते। एक नही कितनी ही दफे हमारा उनका मतान्तर हुआ है पर बराबर उनकी राय ही ठीक देखने मे आई।

तीसरा०। खैर और कुछ हो या न हो यह तो निश्चय ही है कि इन लोगो को धोखा या लालच दे के राजधानी से दूर हटा देने का नतीजा कम से कम इतना तो जरूर ही होगा कि मंगर-सि के लिये सैगन पर कब्जा करना सहज हो जायेगा। इन लोगों की गैरहाजिरी से फ्रान्सीसी सेना पस्तहिम्मत हो जायगी और श्यामी सेना का मुकाबला पूरे दिल से कभी न कर सकेगी।

दूसरा०। इसमे क्या शक है! मुझे तो ऐसा भास होता है कि ताज्जुब नही कुछ ही समय मे हम सैगन के पतन का समाचार सुने।

पहिला०। भास क्या मुझे तो इसका निश्चय है। पहिले जरूर कुछ सन्देह था—उन वायुयानो की बात को सोच के जो पैरिस से आये थे, पर जब उन सभो के मुख्य मुख्य अफसर भी हमारी चाल मे पड कर यहाँ चले आये तो अब मुझे विश्वास हो गया है कि मंगर-सि जरूर सैगन ले लेगा।

दूसरा०। उन वायुयानो का तो मुझे अब भी डर बना ही हुआ है। यद्यपि यह सही है कि मार्शल नाकून्हे और कमाडर सेकिन आदि के हमारे जाल मे फँस जाने से उनका ज़ोर बहुत कुछ कम हो जायगा, फिर भी केवल इन्ही लोगो के हाथों मे सब बात तो नही न है, आखिर और

अफसर भी तो बचे है जो अपनी राजधानी जाती देख जान होम कर देगे।

तीसरा०। तो मंगर-सि भी इस विषय मे ऐसा कमजोर नही है कि बिल्कुल पंगु कहा जा सके। हमारे भेजे हुए कई अलोग। यान तो उसके पास हई हैं, ऊपर से गोपालशंकर का टाइगर भी उसके पास है जो अकेला दो सौ यानो से टक्कर ले सकता है।

पहिला०। इसमे क्या शक है! टाइगर का यह गुण बड़ा अद्‌भुत है कि वह आकाश में जहाँ चाहे वहाँ स्थिर होकर खड़ा रह सकता है। हमे भी अपने वायुयानो मे वह तर्कीब लगानी पड़ेगी।

दूसरा०। जरूर, यह बड़ी भारी........

बोलने वाला यकायक रुक गया। उसके सामने की दीवार में एक छोटा सा आला था जिस पर अद्‌भुत किस्म का एक यंत्र रक्खा हुआ था जो कुछ-कुछ टेलीफोन की तरह का था। इसके ऊपरी हिस्से मे लगा हुआ एक लाल लट्टू अभी-अभी जल कर बुझ गया था जिस पर उस व्यक्ति का ध्यान गया था। उसने कहा, "काउन्ट टेलीफोन के जरिए पुनः बातें करने लगे हैं। सुनना चाहिए किससे क्या बातें करते है?"

वह उठ कर आले के पास आया और उस यंत्र के एक हिस्से में कान लगा कर सुनने लगा। जो कुछ उसने सुना वह जरूर कोई ताज्जुब की बात थी, क्योंकि सुनते ही उसके चेहरे से आश्चर्य प्रकट होने लगा। उसके दोनों साथियों ने देखा कि उसने और भी गौर से सुनना शुरू किया तथा देर तक सुनता रहा, और जब वहाँ से हटा तो माथे पर इस तरह हाथ फेरता हुआ मानों कोई असम्भव बात उसने सुनी हो। उसके साथी उसका यह रंग ढंग देख आश्चर्य से बोल पड़े, "क्या मामला है, जरूर कोई ऐसी बात तुमने सुनी है जिसके सुनने की उम्मीद न थी?" वह व्यक्ति बोला "बेशक ऐसा ही है। काउन्ट शैवर फ्रांस के प्रेसीडेन्ट से बाते कर रहे थे जिसने ... दी है कि त्रि-कंटक का प्रस्ताव

ज डालर ले के आनाम पर से ५

जाय वशर्ते कि उतनी दौलत पूरी की पूरी कब्जे में आ जाय।"

बाकी दोनो के मुँह से एक साथ ही निकल पड़ा, "है! फ्रास के प्रेसिडेन्ट ने ऐसी आज्ञा दी! मगर इसका सबब?" उस आदमी ने जवाब दिया, "यूरोप की शक्तियो मे महा-समर आरम्भ होना ही चाहता है! फ्रास का वगली दुश्मनी जर्मन अकस्मात् विना सूचना दिये उस पर हमला कर देना चाहता है। फ्रास को द्रव्य की जरूरत है और साथ ही वायुयानों की भी। प्रेसीडेन्ट का कहना है कि जैसे भी हो सके यहाँ शान्ति प्राप्त की जाय और यहाँ से भेजे गये सब वायुयान मय उस दौलत के फौरन वहाँ वापस कर दिये जायँ।"

कुछ देर के लिये वहाँ एकदम सन्नाटा छा गया। यह एक ऐसी खवर थी कि जिसे सुनने की किसी को भी आशा न थी। योरोप मे महासमर छिड़ जाने की कोई सम्भावना न थी, पर छिड़ जाने की हालत मे उसकी प्रतिक्रिया यहाँ तथा फ्रेन्च-इन्डो-चायना मे होना भी जरूरी ही था।

तीनो चुपचाप बैठे यही सोचने लगे—"क्या हमारे सरदार को पहिले ही से मालूम हो गया था कि फ्रास घोर युद्ध मे पड़ना चाहता है? और क्या यह जान के ही उन्होंने वह असम्भव प्रस्ताव काउन्ट शैवर के आगे रखने की आज्ञा दी थी?" पर इन तीनो की चिन्ता-धारा मे फिर व्याघात पहुँचा। टेवुल पर पड़े एक छोटे टेलीफोन की घंटी मद्धिम आवाज मे वज उठी। एक व्यक्ति ने चोगा उठा कर कान से लगाया और तुरत ही आग्रह के भाव से वोल उठा, "सरदार आप हैं! कहाँ से बोल रहे हैं? जी हाँ, हम तीनो ही यहाँ मौजूद हैं और वडी बेचैनी के साथ आपकी राह देख रहे हैं।"

पतली आवाज मे जो ऐसा जान पडता था मानो बहुत दूर से आ रही हो उत्तर मिला, "मैं यहाँ मंगर-सि के शिविर मे हू। किसी झंझट मे ऐसा फँस गया हू कि आ नही सकता, इस लिये अब मेरा इन्तजार तुम लोग न करो, फिर भी कभी भेंट करूँगा। उधर का क्या हाल है?"

त्रि० । अच्छा ही है । काउण्ट वगैरह से अंतिम बातें तो अभी नहीं हुई हैं पर रंग-ढंग से पता लगता है कि वे लोग आपका प्रस्ताव स्वीकार कर लेंगे । अभी-अभी फ्रांस के प्रेसीडेन्ट ने उनको आज्ञा दी है कि त्रि-कंटक का प्रस्ताव स्वीकार कर लो । उन्होंने पैरिस से आए हुए सब वायुयानों को भी इस धन के साथ जो हम लोगों ने प्रस्तावित किया है वापस माँगा है, कारण उनका कथन है कि यूरोप मे महासमर छिड़ना ही चाहता है और फ्रांस को अपने शत्रु के भीषण आक्रमण का भय है जिससे वहाँ की स्थिति व त नाजुक हो गई है, इस कारण से फ्रेन्च-इण्डो-चायना मे, चाहे जैसे भी हो, शान्ति स्थापित करना जरूरी हो पड़ा है ।

सर० । ठीक है, यही मेरा भी अनुमान था । तब तो जान पडता है अब आप लोग चम्पा राज्य को सहज मे, बिना एक बूँद भी खून बहाए, स्वतंत्र कर सकेंगे ?

त्रि० । जी हाँ ऐसा ही तो अब जान पड़ता है ! मगर राणा, जरा यह तो बताइए कि क्या इस बात को जान के ही आपने ऐसा प्रस्ताव करने को हम लोगों से कहा था ?

उत्तर मे उधर से राणा नगेन्द्रनरसिंह के हँसने की महीन आवाज आई. तब उत्तर मिला :—

सर० । अफसोस कि इतनी मोटी बात तुम लोग समझ न सके ! अब तो तुमको विश्वास हुआ न कि तुम्हारे जासूसों से मेरे जासूस कहीं अधिक गहरे की खबर रखते है !

इसके बाद फिर हँसी की आवाज उठी । त्रि-कंटक ने भी हँस कर कहा, "आप खुद ही जब हमसे इतने गहरे मे डूबे रहते है तो आपके जासूस क्यों न गहरे होंगे ! मगर सचमुच राणा, हमलोगो की समझ मे नहीं आ रहा था कि आप वह कैसा प्रस्ताव दुश्मन के सामने रख रहे हैं और सो भी फ्रांस जैसे घमंडी दु मन के सामने ! हमारे एक साथी तो अभी अभी कह रहे थे कि—'राज्य भी क्या कुँजड़िन के आलू है जो इस तरह बेचे

जायँगे !' पर देखते हैं कि आपकी बुद्धि से सो ही हो गया है और विना एक बूंद भी खून वहाए इतना वडा हजारो वर्गमील और करोड़ों की जन-संख्या वाला प्राचीन राज्य स्वतन्त्र हुआ चाहता है !

सर० । तो इसमे ताज्जुब की कौन सी वात है ! जब हमलोगो मे—पूर्वी जातियो मे—आपस मे फूट थी और नित्य मार-काट हुआ करती थी तो पश्चिमी जातियाँ हमारे पवित्र देश मे घुस आई थी, अब जब पासा पलटा है और पश्चिम मे फूट पैदा हुई है तो पूर्व का तरक्की करना स्वाभाविक ही है । विना समय आए तो कोई काम होता ही नही न ! रथ का चक्र ऊपर जाता है तो फिर नीचे भी तो आता ही है !

त्रि० । ठीक ही है, मगर समय आ गया इस वात को पहिचानने वाले विरले होते हैं !

सर० । खैर अब उस जिक्र को रहने दो और एक वात जो मैं कहता हूँ सुनकर मुझे छुट्टी दो क्योकि अभी मुझे यहाँ वहुत काम पड़ा हुआ है ।

त्रि० । कहिए कहिए—आज्ञा दीजिए ।

सर० । काउन्ट से इस चंपा राज्य के विषय मे जब फैसला हो तो इसका ध्यान रखना कि वहाँ की प्रजा को आत्म-निर्णय का पूरा अधिकार फ्रास दे दे । अवश्य ही वे लोग यह तो प्रकट होने देना पसद ही न करेगे कि पचास अरब पर आनाम त्रि-कंटक के हाथ वेचा गया है ?

त्रि० । सो कैसे करेगे ? मैं तो समझता हूं कि उनका प्रस्ताव यही होगा कि वह रुपया उन्हे दे दिया जाय और वे आनाम की स्वाधीनता की घोपणा कर देते हैं ।

सर० । ठीक है, ऐसा ही सही, इसमे भी कोई हर्ज नही । पर उस घोपणा-पत्र का मजमून तुम लोग अपने सामने ठीक कराना और उसमे चम्पा की प्रजा को आत्म-निर्णय का पूरा अधिकार और अपने देश मे जिस तरह का भी शासन-प्रवन्ध वे लोग चाहे कायम करने का अधिकार ले लेना ।

त्रि० । ठीक है, ऐसा ही होगा, पर क्या इस सम्बन्ध में आपका विचार कुछ बदल गया है ?

सर० । हाँ कुछ थोड़ा । वहाँ के कुछ प्रतिनिधि अभी अभी मुझसे मिले थे । उस लोगों का कहना है कि चम्पा की अधिकांश प्रजा लोकतंत्री शासन के विरुद्ध है क्योंकि वह बेहद खर्चीला ही नही होता बेईमानी जूआखोरी और दगाबाजी भी सिखाता है । वह चाहती है कि वहाँ के प्राचीन राज-वंश का कोई आदमी राजा बना कर सिंहासन पर बैठा दिया जाय जो प्राचीन ढंग पर मन्त्रियो की सहायता से वहाँ का शासन करे ।

त्रि० । खैर अगर वहाँ की प्रजा की यही इच्छा है तो हमे क्या उज्र हो सकता है पर जिस देश के राजवंश का पाँच सौ वर्षो से नाम निशान तक मिटा हुआ है उसका कोई वंशज क्या अभी मिलना सम्भव है ?

सर० । शायद वही हुआ है और इसी कारण ये लोग अब अपने यहाँ राजा और राज-परिषद तथा मन्त्री-सभा की स्थापना किया चाहते है । चम्पा की अन्तिम प्राचीन चाम-जाति के आर्य-राजा सिंहवर्मन* के खानदान का कोई अभी तक जीवित है जिसे वे अपने राज-सिंहासन पर बैठाना चाहते हैं ।

---

* चामराज 'सिंहवर्मन' की कथा इतिहास-ग्रन्थों मे पाठको को मिलेगी और वही प्राचीन चम्पा राज्य की गाथा भी वे पावेगे जो वर्तमान समय मे 'आनाम' कहलाता है । संक्षेप मे और केवल कौतूहल शमनार्थ हम उसका थोड़ा सा विवरण यहाँ दे देते हैं ।

किसी समय मे, आज से करीब पाँच हजार वर्ष पहिले, चम्पा एक विशाल और प्रतापी राज्य था । शौर्य विक्रम और तेज मे इसका मुकाबला उस काल का कदाचित ही कोई देश कर सकता था । इसकी सेनाओ ने कई बार उत्तर में चीन, पश्चिम मे वर्मा और बंगाल, दक्षिण में समुद्र तथा पूर्व में अमेरिका तक अपनी विजय-पताका फहराई थी । इस राज्य

त्रिकं० । (आश्चर्य से) सिहवर्मन के वंश का कोई अभी तक मौजूद है ! नही नही राणा, यह भला कैसे सम्भव हो सकता है ?

राणा० । ठीक ऐसी ही बात है, और इसी को जान कर मेरा भी विचार बदल गया, जैसा कि मैंने कहा । अगर इतने प्राचीन राज-वंश का चिन्ह अब तक मौजूद है तो उसकी रक्षा करके प्राचीन पद गौरव की मर्यादा बढ़ाना अच्छा ही होगा यही सोच मैंने चम्पा राज्य के उन प्रति-

---

के निवासियों की जाति 'चाम' थी और इसके राजा 'चामूपति' या 'चामराज' कहलाते थे, जिनका महाभारत तक में विवरण मिलता है ।

यह चाम जाति कहाँ से आई या कौन थी इसका ठीक ठीक पता तो नही लगता पर इतिहासज्ञों का अनुमान है कि इनके पूर्वज प्राचीन आर्य-जाति की ही एक शाखा से थे और किसी समय में भूमध्यसागर के आस पास निवास करते थे । इनकी यह शाखा ईजिप्ट और मेसोपोटामिया से होती हुई सिन्धु-तट तक आई और वहीं इनकी इतनी उन्नति हुई कि जिसकी हद नही । मिस्र का प्रसिद्ध 'फरऊन' (फराओ) वंश इसी जाति का था और वर्तमान समय में हरप्पा और मोहेन्जोदड़ो में खुदाई होने से जो प्राचीन नगर निकले हैं वे भी इन्ही लोगों के बसाए हुए थे ऐसा भी बहुत से इतिहासज्ञो का अनुमान है । खैर, यही जाति घूमती फिरती और भारत को पार करती हुई किसी तरह उस चम्पा देश में पहुँची और वहाँ बस गई और यहाँ इसका नाम 'चाम' जाति पड़ा । चम्पा पहुँच कर जैसा कि हमने पूर्व में कहा, इस जाति ने बहुत अधिक उन्नति की और कई हजार वर्षों तक यह संसार की मुख्य जाति और राज्य-वंश रही पर फिर धीरे-धीरे काल-प्रभाव से इसका तेज नष्ट होने लगा और आज कल तो केवल आनाम के दक्षिणी भागों में इस जाति का अवशेष थोड़ा बहुत पाया जाता है ।

चामराज 'सिंह वर्मन' चम्पा राज्य का अन्तिम वीर पर साथ ही साथ कुछ-कुछ मूर्ख और अत्यन्त विषयी राजा था । चम्पा राज्य और चाम

निधियों की वात स्वीकार कर ली है अर्थात् उन्हे अपने देश मे राजा और मन्त्रिसभा स्थापित कर शासन चलाने की अनुमनि दे दी है, वशर्ते कि फ़ान्स वहाँ का शासन-प्रवन्ध हमे दे सके। क्या तुम लोगो को इसमे कोई आपत्ति है ?

त्रिकं०। नही नही, जव आपने स्वीकार कर लिया तो हम लोगों को भला क्या आपत्ति हो सकती है और क्यो होगी ही, पर वह है कौन व्यक्ति ? क्या हम लोग उसे जानते हैं ?

वंश को नष्ट करने मे करीव-करीव वही हाथ इसका था जो भारत के प्राचीन गौरव को समाप्त करने मे पृथ्वीराज का कहा जाता है। यह राजा चौदहवी शताब्दि में चम्पा की राजधानी सिंहपूर मे (वर्तमान त्रा-कियू वही स्थान है ऐसा कुछ लोग अनुमान करते है) राज्य करता था। इसे अपनी महारानी से जो मलय जाति की एक राजकुमारी थी प्रेम न था और यह अपने राज्य की उत्तरी सीमा पर के एक छोटे राजा की राजकुमारी से प्रेम करता था जो 'अन्नम्' वंश की थी। अन्नम् वंश जव सहज में अपनी राजकुमारी का विवाह इसके साथ करने को राजी न हुआ तो इस स्त्री-प्रेम-व्याकुल राजा ने अपने राज्य के दो वहुत वड़े वड़े उत्तरी प्रान्त अन्नम्-राज को दे के उसे राजी किया और उस राजकुमारी से व्याह किया, पर इसके कुछ ही दिन वाद उसकी मृत्यु हो गई। उस समय वह राजकुमारी अपने पति का घर छोड पिता के देश को लौट गई जिसने कन्या के साथ उन दोनों प्रान्तों को भी रख लिया। इस पर चम्पा राज्य के साथ अन्नम्राज का झगडा आरम्भ हुआ जो अन्त मे इतना वढ़ा कि चम्पा राज्य के नाश का ही कारण वन गया, क्योंकि जव १४७१ ई० मे चम्पा के राजा 'ली थान्तो' ने उन प्रान्तों को वापस पाने के लिये वहुत कलह मचाया तो अन्नम्राज ने 'ली-थान्तों, पर हमला करके उसे वुरी तरह पराजित ही नही किया वल्कि चम्पा की उस समय की राजधानी 'विजया' लूट ली, वहाँ के मन्दिर और राजमहल तोड़ डाले, पुस्तकालय जला

राणा० । हाँ, पर उसका नाम वताना अभी उचित नही, पहिले तुम लोग काउन्ट और उनके साथियो को ठीक रास्ते पर ले आओ तव वह प्रकट करना अधिक उचित होगा ।

त्रिकं० । उन्हे तो अव आप रास्ते पर आया हुआ ही समझिये सरदार, फिर भी हम लोग वात करके सव कुछ तय कर लेंगे और आनाम मे जैसा वहाँ वाले चाहे वैसा ही शासन-प्रवन्ध रखने की उनसे घोषणा करा लेंगे ।

दिये और कला-मन्दिर फूँक डाले । चामराज्य की कितनी ही पटरानियो और पुरोहितो को जिनमे अधिकाश व्राह्मण थे, अन्नम्राज लोहे के सिक्कडो से वाँध कर अपनी राजधानी मे ले गया और सच पूछिये तो उसी दिन से चम्पा राज्य का नामो-निशान मिट गया । वह अन्नम् राज्य ही आज कल का आनाम है ।

इतिहास-प्रेमी पाठक अगर चम्पा राज्य का इतिहास खोजे तो आर्यो के प्राचीन गौरव का हाल उसमें भी पढ कर अचम्भित होगे क्योंकि किसी वहुत ही प्राचीन समय मे आर्य जाति ने इस भू-भाग मे पहुँच कर इस पर अपना कव्जा किया था और यहाँ के उस समय के निवासियो को आर्य वना कर यहाँ आर्य-धर्म स्थापित किया था । अभी भी वहाँ वहुत वड़े-वड़े और विशाल शिव तथा दुर्गा के मन्दिर भग्नप्राय अवस्था मे पडे हुए मिलते है जिनमे पाण्डुरग का प्रसिद्ध शिव-मन्दिर तो अव भी अच्छी हालत मे और एक दर्शनीय स्थान है । कहा जाता है कि ऋषि अगस्त्य ने भारत से चल कर पहिले यही पहुँच कर आर्य-धर्म का उपदेश दिया और चाम-जाति को आर्य वनाया, तथा वाद मे इसी जगह से समुद्र को लाघ अमेरिका पहुँचे जहाँ की प्राचीन 'मय' जाति को धर्मोपदेश दे उन्होने आर्य वनाया । इस 'मय' जाति के वनवाए हुए प्राचीन मन्दिर जो विल्कुल आर्य-मंदिरो के प्रकार के है अव तक दक्षिणी अमेरिका के जगलो मे भग्नप्राय अवस्था मे पाये जाते है और इतिहासज्ञो तथा पर्यटको के कौतूहल की वस्तु है ।

राणा० । बस तो ठीक है अच्छा तो अब मैं विदा होता हूं ।

त्रिकं० । आपसे कब भेट होगी ?

राणा० । कुछ ठीक कह नहीं सकता । यहाँ भी बहुत झंझटें हैं, उनको निपटा कर ही तुम लोगों की तरफ आने का अवसर पा सकूँगा ।

त्रिकं० । अच्छी बात है, मगर दया करके जहाँ तक जल्दी हो सके आइयेगा । हाँ यह कहिये, मंगर-सि की क्या स्थिति है ? उनकी सेना कहाँ तक पहुँची ?

राणा० । सैगन को तीन तरफ से उन्होंने घेर रक्खा है ।

त्रिकं० । (आश्चर्य और खुशी से) अच्छा ! सैगन तक वे पहुँच गये !

राणा० । हाँ और कोई ताज्जुब नहीं जो आज ही कल में आप सैगन की विजय के समाचार सुने । मगर . .

त्रिकं० । हाँ हाँ कहिये ।

उधर की आवाज कुछ मद्धिम सी पड कर बन्द हो गई । ऐसा जान पड़ा मानो राणा अपने पास वाले किसी अन्य व्यक्ति से कोई बात करने लगे हों ।

थोड़ी देर बाद फिर उनकी आवाज आई ।

राणा० । हाँ, तो मैं यह कह रहा था—

त्रिकं० । जी हाँ कहिये हम लोग सुन रहे है ।

राणा० । दुश्मन को कुचल डालने की जितनी जरूरत है उतनी ही उसे सन्तुष्ट कर रखने की भी हैं, इसलिए काउन्ट शैवर से बातें करती समय फ्रेन्च-इण्डो-चायना के दक्षिणी प्रान्तो विशेष कर सैगन के विषय मे, अगर तुम लोग उन्हें दु.खी अथवा चिन्तित पाओ तो यदि चाहे तो सैगन तथा मेकंग के उत्तर और पूर्वी तट का समस्त भूभाग, अवश्य ही चंपा यानी आनाम को छोड़ के, उनको वापस कर देने का भी वचन दे सकते हो ।

त्रिकं० । फ्रान्सीसियों के स्वाभिमान पर हुए भये भीषण घाव पर यह बात जरूर मल्हम का काम करेगी, मगर क्या महाराज मंगर-सि इसे

स्वीकार करेंगे ? क्या वे इतने कष्ट और जनव्यय से जीती हुई भूमि वापस करने को तैयार हो जायंगे ?

राणा० । हाँ वे मंजूर कर लेंगे, मैंने उनसे पूछ लिया है ।

थोडी देर तक राणा नगेन्द्र नरसिंह से त्रिकंटक की बातें और होती रही, इसके बाद टेलीफोन रख कर तीनो व्यक्ति उठ खडे हुए ।

× × ×

ठीक इसी समय मामूली बिछावन पर पड़े हुए काउन्ट शैवर उदास भाव से कह रहे थे—

"ओफ यूरोप मे भी क्या बेमौके आग छिड़ी है ! फ्रान्स पर यकायक इतना जबर्दस्त हमला होगा इसे क्या कोई स्वप्न मे भी गुमान कर सकता था ?"

मार्शल फाक० । मालूम होता है हमारे यूरोपीय दुश्मन इसी बात की राह देख रहे थे कि इधर पूर्व मे हमारे ऊपर आफत आवे और हमारी शक्ति इधर बटे कि वे वहाँ हम पर आक्रमण कर दें ।

जेनरल श्रू० । मगर बड़े अफसोस की बात है कि यहाँ तक आफत मच जाय और पैरिस के अधिकारियों को इस बात की कुछ भी सूचना न मिले ! मैं तो इसे उन लोगो की असावधानी ही कहूंगा ।

लूई फराडे० । बेशक असावधानी तो हुई है, अगर वहाँ की हालत इतनी नाजुक हो गई थी तो उनको अपने हवाई जहाज इधर भेजने ही न थे जो अब दुश्मन के हमले शुरू हो चुकने पर वे हमे उनको वापस करने को कह रहे हे ! भला अब जब सैगन पर घेरा पड चुका है तो हम उन हवाई जहाजो को वापस ही कैसे कर सकते हैं ?

शैवर० । हरगिज नही कर सकते, और फिर अब वापस करने से भी क्या वे पैरिस पहुँचने पावेगे ?

फाक० । और जब तक पहुँचेंगे तब तक क्या वहाँ की काया पलट न हो चुकी होगी !

श्रू० । फिर वे थोड़े से वायुयान होते ही क्या हैं, सुना नहीं आपने कि यूरोप में दुश्मनों के तीन हजार वायुयान हम पर हमला करने की तैयारी कर रहे हैं । भूल की, पैरिस ने भूल की जो स्थिति को पहिले से ही पहिचान कर काबू में न किया !

फराडे० । मगर इसमें भी शक नहीं कि कंबख्त त्रि कंटक को यह बात पहिले से मालूम हो चुकी थी ।

शैवर० । इसमे भी भला कोई शक है ! इस बात को जान के ही तो उन्होने वैसा असंभव प्रस्ताव हमारे आगे रक्खा कि जिसे माने तो बेइज्जती और न माने तो बरबादी । खुदा गारत करे इस त्रि-कंटक को, हम फ्रान्सीसियों की इज्जत को इसने धूल मे मिला दिया !!

श्रू० । भला कोई कभी सपने मे भी सोच करता था कि श्याम फ्रांस पर हमला करेगा और कंबोडिया छीन लेगा ? क्या सैगन पर कभी श्यामी सेना घेरा डालेगी इसका स्वप्न मे भी अनुमान हो सकता था ? यह सब इन्हीं कम्बख्तो के सबब से हुआ !

कुछ देर तक सब लोग त्रि-कंटक और उसके अस्त्र-शस्त्रो को गालियाँ देते रहे, इसके बाद काउन्ट ने कहा—

काउन्ट० । खैर सो सब तो जाने दीजिये और यह सोचिये कि अब करना क्या चाहिये । त्रि-कँटक के प्रस्ताव का क्या उत्तर उसे हम लोग दे ?

फराडे० । सिवाय मंजूर करने के और कर ही क्या सकते है । जब हमारे प्रेसीडेन्ट ने वैसा करने की आज्ञा दे दी तो अब बात ही क्या रह जाती है ?

फाक० । आनाम स्वतन्त्र कर दिया गया, कम्बोडिया मंगर-सिं ने ले लिया, सैगन का पतन आज कल मे होना चाहता है, तो अब बचता ही क्या है ? क्यों न हम लोग बाकी बचा हुआ अंश भी छोड़ यहा से फ्रास को रवाना हो जायँ ? स्वराज्य देना ही है तो पूरे फ्रेन्च-इन्डो-चायना को दे देने की घोषणा कर दीजिए और हवाई जहाजों पर बैठ के पैरिस चले चलिए !

कोई आदमी बोल उठा, "मगर हवाई जहाज तो मंगर-सिं के कब्जे मे पड चुके है ! पैरिस पहुँचियेगा कैसे ?" जिसे सुन सब के सब पुन. त्रि-कंटक और मंगर-सिं को कोसने लगे ।

× × ×

मगर काउन्ट और उनके साथियों का भय निर्मूल था और त्रि-कंटक को इन लोगो ने एक दाना दुश्मन पाया । जिसमे फ्रास के मन मे हार और वेइज्जती का कोई भी भाव न रह जाय इसके लिए न केवल उसने यही तय कर दिया कि फ्रास केवल कम्वोडिया और आनाम की स्वतंत्रता की घोषणा मात्र कर दे वाकी का सव प्रवन्ध वे स्वयम् कर लेगे, वल्कि यह भी मंजूर कर लिया कि राजधानी सैगन फ्रासीसियो को वापस कर दी जायगी, और वे वायुयान भी जो फ्रास से आये थे और न जाने किस तरह का धोखा दे के कब्जे मे कर लिए गये थे, वे भी वापस कर दिये जायेंगे । यही नही, मेकंग के उत्तर-पूर्व की ओर का वह समस्त भू-भाग भी जिस पर मंगर-सिं की सेना का कब्जा हो चुका था उन्हे वापस कर दिया जायगा । फ्रास ने मेकंग को अपनी पश्चिमी सीमा स्वीकार कर लिया, और कम्बोज तथा आनाम की स्वतन्त्रता की घोषणा कर के वदले मे त्रि-कंटक की मित्रता और पचास अरव की रकम पाई और इस तरह दोनो प्रतिद्वन्द्वियो का द्वन्द समाप्त हुआ ।

इसके बाद की बाते इतिहास-प्रसिद्व हैं । किस प्रकार सैगन की सन्धि हुई और किस प्रकार उसमे कम्बोडिया और आनाम को स्वाधीन कर देने की घोषणा की गई यह सभी लोग जानते है, अस्तु उसका वर्णन यहाँ करने की आवश्यकता नहीं । *

---

* पाठको को भूलना न चाहिये कि यह सब लेखक की कपोल-कल्पना है और फ्रेन्च-इण्डो-चायना का कोई भी भाग इस उपन्यास के लिखने तक स्वतंत्र नही हुआ (यद्यपि आज ठीक वही हो चुका है) ,

हमारा उपन्यास भी इस प्रकार समाप्त हो जाता है कारण अब हमे इस सम्बन्ध में और कुछ लिखना बाकी नहीं है। अब केवल अन्त की एक छोटी सी घटना को लिख कर हम पाठकों से विदा लेते है।

(५)

घोड़ो पर सवार दो व्यक्ति जिनमे से एक मर्द और दूसरी औरत है, धीरे-धीरे आहो की गुफा की ओर बढ़ रहे है।

पाठक इन दोनो ही को पहिचानते है क्योंकि वह मर्द तो है अजित-सिह और औरत है तारा। सुन्दरी तारा का स्वास्थ्य अब बिल्कुल ठीक हो गया है और प्रोफेसर साऊ-चूकू के दुष्ट प्रयोगों का कोई भी असर उस पर नजर नही आता है। इसी से वह इस समय बड़ी ही सुन्दरी भी जान पड़ती है, खास कर अजित की आँखो मे, जो इस तरह घुल-घुल कर उससे बाते कर रहा है कि मानों उसे अपने सफर की कुछ फिक्र ही नही है और न दुनिया की कोई परवाह। उसने कोई बात सुन्दरी तारा से पूछी है और उसी का उत्तर सुनने के लिए बड़े आग्रह से उसकी ओर देख रहा है। मगर उसका प्रश्न न जाने कैसा है कि उसको सुन तारा का मुखड़ा लाल हो आया है और कुछ उत्तर न दे उसने अपनी गरदन झुका ली है।

आखिर कुछ देर राह देख अजित ने अपने घोड़े को और पास कर के फिर पूछा, 'बताओ न तारा, चुप क्यों हो रही ?" तारा ने अपनी बड़ी बड़ी आँखे अजित की तरफ उठाई मगर वे फिर नीची हो गई और उसके गले से एक अस्पष्ट धीमी आवाज निकली तथा उसका चेहरा और भी लाल हो आया। मगर उसकी वह अस्पष्ट बात ही अजित के प्रश्न का उत्तर थी जिसने बरजोरी उसका हाथ पकड़ लिया और होठो तक उठाया।

मगर यकायक अजित चमक गया। उसके कानों मे कोई नया शब्द गया था। उसने अपनी गरदन घुमाई और साथ ही दो सवारों को देखा जो बगल की पहाडी पर से उतरते हुए चले आ रहे थे। ये कौन है और

इस तरह आने मे इनका अभिप्राय क्या है अजित यह सोच ही रहा था कि दोनो सवार पास आ पहुँचे। अजित की ओर कुछ भी ध्यान न दे वे दोनो तारा की तरफ बढे और पास पहुँच घोडो से उतर उन्होने उसके कदम चूमे, तव एक लाल कागज निकाल कर उसके सामने किया।

ताज्जुब करती हुई तारा ने वह कागज ले लिया और पूछा, "कहिये आप लोग कौन है और यह कागज कैसा है?" उनमे से एक व्यक्ति ने कोई जवाब दिया, जिसे सुन कर भी अजित कुछ समझ न सका, क्योंकि वह किसी अजीब भाषा मे था, पर तारा उस उत्तर को सुनते ही चमक पडी। उसने एक बार गहरी निगाह से उन दोनो को देखा, तव उस लाल कागज को माथे से लगाया, इसके बाद खोल कर पढने लगी।

ज्यो ज्यो तारा उस कागज को पढती जाती थी उसका चेहरा अजीव रंग पकडता जाता था। उस पर पहिले तो आश्चर्य का भाव आया तव प्रसन्नता का इसके बाद कुछ परेशानी और तव घबराहट उससे जाहिर होने लगी। समूचा कागज पढते पढते तो वह एकदम बौखला-सी गई और कुछ पूछने के लिए अजित की तरफ घूमी मगर उन दोनो आदमियों ने यह देखते ही गरदन हिला कर फिर अपनी विचित्र भाषा मे कुछ कहा मानो अजित से वाते करने से मना किया।

अजित ने देखा कि तारा कुछ देर तक चिन्ता मे पडी रही इसके बाद वह अपना घोडा वढा कर उन आदमियो के पास हो गई और उसी अजीब भाषा मे उनसे न जाने क्या क्या वाते करने लगी। ऐसे समय मे जव कि वह इतने जरूरी काम के लिए तारा को साथ लेकर जा रहा था, अजित को इन आदमियो का आकर विघ्न डालना वहुत अखरा मगर अपने पर काबू कर वह चुप रहा, कुछ बोला नही।

वाते कुछ देर तक होती रही, और यद्यपि अजित की समझ में उनका एक अक्षर भी न आया फिर भी उसको ऐसा भास हुआ मानो तारा के

भाव मे आग्रह, प्रसन्नता, और घबराहट तीनों ही है और यह भी जान पड़ा कि वह उसके यानी अजित के बारे में भी कुछ उन दोनों से कह रही है क्योंकि कई बार उसने गरदन घुमा के इसकी तरफ इशारा किया। लेकिन इन बातों का अन्त जो कुछ हुआ उसके लिये अजित बिल्कुल ही तैयार न था, क्योंकि उसने देखा कि बातें यकायक समाप्त हो गईं, वे दोनों आदमी अपने घोड़ों पर सवार हुए, तारा ने एक बार घूम कर अजित की तरफ देखा और हाथ उठा कर कुछ इशारा किया, और तब अपना घोड़ा तेज कर बेतहाशा पीछे की ओर भागी। वे दोनों सवार भी उसके पीछे पीछे जाने लगे।

अजित के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा। तारा यह इस तरह कहाँ को चल पड़ा? और बिना उससे कुछ भी कहे! उसने घबड़ा के कई आवाजे दी और जब कोई जवाब न पाया तो जोर से यह कह कर कि— "तारा ठहरो, पहिले मुझे बता दो कि यह क्या मामला है और तुम कहाँ जा रही हो?" अपना घोड़ा भी उसी तरफ को बढ़ाया, मगर दो चार कदम से ज्यादे न जा सका। न जाने कहाँ से निकल कर चार सवार उसके रास्ते मे अड़ कर खड़े हो गये जिनके मुँह से यद्यपि आवाज तो कोई न निकली मगर जिनकी भावभंगी साफ बताती थी कि ये उसे तारा की तरफ बढ़ने की इजाजत न देगे।

उन पहिले वाले दोनों सवारों की तरह इन चारो सवारो को भी अजित पहिचानता न था, हाँ शक्ल सूरत और पौशाक से इतना समझ सकता था कि ये भी उन्हीं पहिले दोनों के साथियों में से ही होंगे। मगर इन सभों के इस तरह उसके रास्ते में आ खड़े होने से उसे गुस्सा आ गया। उसने अपनी पिस्तौल निकाल ली और डपट कर कहा 'खबरदार, हट जाओ मेरे रास्ते से, नही तो अच्छा न होगा।"

जवाब मे उन सवारों ने भी कुछ कहा, पर अजित उनकी भाषा समझ न सका, हाँ उसने यह देखा कि उसकी तरह उन चारों ने भी अपनी

अपनी राइफिले हाथों मे ले ली है और इस तरह पर यह जाहिर कर रहे है कि वे उससे लडने को तैयार है।

अजित वहादुर और हिम्मतवर था, मगर वेवकूफ न था। वह खूब समझता था कि चार चार आदमियो से लड़ कर और उन्हे शिकस्त देकर तारा का पीछा करना असम्भव है, जो तब तक वहुर दूर निकल जा चुकेगी। उसने एक बार निगाह उठा कर तारा की तरफ देख मगर वह एक टीले के बगल से घूमती हुई अब आड मे हो रही थी। उसके देखते देखते तारा ने फिर एक वार उसकी तरफ देखा और हाथ उठा कर उसे वापस जाने का इशारा किया, तव टीले के पीछे जा उसकी निगाहो की ओट हो गई। अजित को यह समझने मे कुछ बाकी न रहा कि स्वयम् तारा की ही इच्छा नही है कि वह उसका पीछा करे। तरह तरह की वाते सोचता हुआ वह उसी जगह खडा रह गया।

यकायक किसी जगह से आती हुई एक सीटी की आवाज अजित के कानो मे पडी। वह चौका, एक बार सिर उठा उसने पुन उधर देखा जिधर तारा गई थी, तब एक लम्बी साँस ली और अपने घोड़े का मुँह घुमा कर जिधर पहिले जा रहा था उसी तरफ को रवाना हो गया। उसके जाते ही वे चारो सवार भी कही गायव हो गये।

× × ×

"वाह भाई अजीत, तुमने इतनी देर कहाँ लगा दी? सब कोई बैठे तुम्हारी ही राह देख रहे हैं!"

वोलने वाले राजकुमार प्रजादीपक थे जिन्होने आगे बढ़ कर अजित का हाथ पकड लिया, मगर उसकी सूरत देखते ही चौक कर कहा, "लेकिन यह क्या, तुम इतने उदास क्यो हो रहे हो? और तारा कहाँ है? तुम तारा को लेने न गये थे?"

अजित ने जो कुछ हुआ था वह राजकुमार प्रजादीपक से कह

सुनाया । सुन कर उन्हें भी ब त ताज्जुब हुआ, मगर वे भी कुछ समझ न सके कि वे सवार कौन थे या तारा क्यों इस तरह यकायक विना कुछ कहे सुने उनके साथ चली गई । आखिर वे वोले, "यह तो वड़े ताज्जुब की वात तुमने सुनाई ! मगर खैर चलो, सरदार आ गये है, उनसे यह वात कह कर पूछा जाय, शायद उन्हे कुछ मालूम हो और वे इस वारे में कुछ वता सके ।"

दोनों आदमी युद्ध-देवता के मन्दिर मे पहुँचे जहाँ देव-मूर्ति के सामने किनने ही लोग वैठे हुए थे । उनमे अजित ने राणा नगेन्द्रनरसिंह और महाराज मगर-सिं को वीचोवीच ऊँची गद्दी पर वैठे पाया और उनके पास ही अपने अन्य साथियो और मित्रो सहित गोपीनाथ इकराम त्याग सुरसकुई नाथन आदि को भी वैठे देखा ।

मगर इन्ही लोगों के वीच मे यह हम किन्हे वैठ देख रहे है ? अरे, क्या ये वावू द्वारिकानाथ है ! हाँ वे ही तो है । ये यहाँ इन लोगों के वीच मे ? सच है, इनकी सहायता से, इनके जाली अक्षर वनाने की कला से, महाराज मंगर-सि ने अपना वहुत कुछ काम निकाला है अस्तु इनका आदर होना भी उचित ही है । कभी-कभी ऐव भी हुनर हो जाता है, खास कर राजदर्वारों मे !

अजित को देखते ही महाराज मंगर-सि वोल उठे, "अरे आओ जी अजितसिंह तुम्हारी हम लोग कव से राह देख रहे है ! सरदार ने अभी अभी प्रकट किया है कि तुम्हीं राजकुमार श्री-पद्म वन कर काउन्ट शैवर को फँसा लाए थे इसलिए सब लोग किनने आग्रह से तुम्हारी राह देख रहे हैं और तुम्हीं इतनी देरी कर रहे हो !!"

अजित के पहुँचते ही सब लोगों ने उसकी तारीफ के पुल वाँधने शुरू कर दिये मगर इससे भी उसके दिल की कली न खिली । तारा के चले जाने से वह बहुत ही सुस्त और उदास हो गया था और उसका मन किसी

तरफ लग नहीं रहा था। उसकी यह हालत देख बहुतों को ताज्जुब हुआ मगर राणा नगेन्द्रनरसिंह एकदम खिलखिला कर हँस पड़े और उसका हाथ पकड कर अपने बगल मे खींचते हुए बोले "आओ तुम यहाँ बैठो और अपनी उदासी कम करो। क्या तुमने श्यामदेश की वह प्रसिद्ध कहावत नही सुनी कि—औरत और नदी का कभी विश्वास न करना चाहिये ?"

अजित ने कुछ कहने को मुँह खोला, मगर उसके मुँह से कोई आवाज न निकली और वह उनकी बगल मे जा चुपचाप उदास मन से बैठ रहा। राणा यह देख और भी हँसे और तब लोगों की तरफ घूम कर बोले, "बेचारे अजित की हालत बहुत खराब हो रही है जिससे मुझे इस पर दया आती है। इसकी उदासी का कारण तो सिर्फ इतना ही है कि तारा इसके साथ आते आते रास्ते मे इसे छोड न जाने कहाँ चली गई, पर वह कहाँ गई या क्यो चली गई यह बात कह के मैं इसका गम दूर कर देना चाहता हूँ, साथ ही आप लोगों के भी उस सवाल का जवाब दे देना चाहता हूँ जो आप बहुत देर से मुझसे पूछ रहे है। (अजित का हाथ पकड कर) अजित, तुम परेशान न हो। तारा तुम्हारी ही है और तुम्हारी ही रहेगी, मगर इस समय घटना-चक्र मे पड कर कुछ समय के लिए उसे तुमसे अलग होना पड़ा है जिसके लिए घबडाने की जरूरत नही। तुम सिर्फ इतना बता दो कि उसकी राह देखने को तैयार हो तो ?"

अजित जिसका मुँह राणा की बात सुन कुछ हरा हो आया था बोला, "मैं मृत्यु-पर्यन्त उसकी राह देखने को तैयार हूँ !" राणा ने फिर पूछा, "और उससे विवाह करने को भी तैयार हो ? यह समझ लो कि वह एक विदेशी और अज्ञात-कुल-शील की बालिका है !" अजित उत्साह से बोला, "वह चाहे जो भी हो, मैं उससे प्रेम करता हू और वह सच्चे दिल से मुझे चाहती ही नहीं है बल्कि अभी कुछ ही देर पहिले उसने मुझसे विवाह

करना स्वीकार भी कर लिया है, अस्तु वह मुझे जब मिलेगी तभी मैं उससे विवाह करूँगा।" राणा कुछ मुस्कुरा कर बोले, "देखो, खूब समझ कर यह बात कहो! क्या हर हालत मे तुम उससे व्याह करने को तैयार रहोगे ?" कलेजे पर हाथ रख अजित बोला, "हर हालत मे!"

राणा नगेन्द्रनरसिंह हँस पड़े, तब उपस्थित मंडली की तरफ देख कर उन्होंने कहा, 'साहबों, जो बात आप इतने समय से पूछ रहे थे उसका अब मैं जवाब देता हूं। महाराज सिंह-वर्मन के जिस वंशज को चम्पा देश ने अपने राज्य-सिंहासन पर बैठाने का निश्चय किया है वह इनकी यह तारा ही है!"

सभों के मुँह से ताज्जुब के साथ निकला, "हैं, क्या तारा ही चम्पा-देश के राज्य-सिंहासन पर बैठेगी ?" राणा बोले "हाँ, यह राजा वीरभद्र की लड़की है जो महाराज सिंहवर्मन की वंश-परम्परा मे थे। पापा किंग-ही बच्चेपन ही मे इसे चुरा लाया था। राजा वीरभद्र के मरने से लोग समझते थे कि महाराज सिंहवर्मन का वंश लोप हो गया, पर अब किंग-ही के मुँह से इसकी कथा सुन और उसका सबूत भी पा चम्पा राज्य वाले इसे ही अपने राज्य-सिंहासन पर बैठाने के लिए पागल हो उठे हैं। तारा को इस समय वे ही लोग ले गये है, मगर वह अजित की है और इन्हें अवश्य मिलेगी, बशर्ते कि ये चम्पा की अधीश्वरी से विवाह करने को तैयार हो जायँ।"

कहते हुए मुस्कुरा कर राणा ने अजितसिंह की तरफ देखा, जो उनकी बातें सुन इतने ताज्जुब मे पड़ गया था कि उसके मुँह से कोई आवाज न निकल रही थी।

सब लोग तरह-तरह की बातें करने लगे, मगर खुशी के इस सिल-सिले मे कुछ नये आदमियों के आ जाने से विघ्न पड़ गया। न जाने कहाँ से आते हुए तीन नकाबपोश अभी-अभी वहाँ पहुँचे थे जिन्हे देखते ही

राणा नगेन्द्रनरसिंह उत्साह से बोल उठे, "आहा, लीजिये त्रि-कंटक भी आ ही पहुँचे। आइए साहबों, आप लोग इधर आइये। आज आपका पर्दा फाश होना चाहता है !"

तीनो आदमियों के बैठते ही राणा नगेन्द्रनरसिंह ने अपने हाथ से तीनो की नकावे उलट दी और कहा, 'चूँकि अब हम लोगो ने निश्चय कर लिया है कि कुछ दिनो तक इस तरह की सब कार्रवाई बन्द रहेगी, इसलिए अब इस पर्दे की जरूरत नही। लीजिये महाशयो, आप लोगो का बचा खुचा शक भी मैं दूर किये देता हू। त्रि-कंटक के पर्दे में जो लोग हैं उन्हे देखिये और पहिचानिये !"

हैं। ये तो और कोई नही वे रघुनाथ और गुरुवक्शसिंह आदि ही है जिनके बारे मे हम लोग बहुत कुछ जानते हैं * मगर यह बात क्या है। यह लम्बी सुफेद दाढी और उडते हुए सन जैसे बाल हमे किसकी शक्ल दिखा रहे है ? क्या ये बूढे केशवजी है। नही-नही, वे कहाँ हो सकते हैं। वे तो मेकंग के प्रपात मे डूब कर मर न गये ? मगर वे नही तो और ये हो ही कौन सकते है ?

और लोग तो इस बात पर ताज्जुब कर ही रहे थे पर राजकुमार प्रजादीपक से न रहा गया। इन लोगो को देखते ही वे उछल कर इनके पास जा पहुँचे और केशवजी का हाथ पकड़ कर बोले, 'हैं, केशवजी ! क्या सचमुच आप ही है, या मेरी आँखे मुझे धोखा दे रही है !!"

केशवजी मुस्कुराते हुए बोले "नही नही राजकुमार, आपकी आँखे बिल्कुल ठीक बता रही है।" प्रजादीपक गद्गद् कंठ से बोले "तो मेकंग मे डूब कर आपकी जान नही गई ?" केशवजी ने जवाब दिया, "नही ईश्वर ने मेरी जान बचाने के लिए इन राणा नगेन्द्रनरसिंह को ऐन मौके

---

* प्रतिशोध और रक्त-मंडल नामक उपन्यासो मे इन लोगो की कार्रवाई का हाल पाठक पढ चुके होगे।

पर न जाने कैसे वहाँ भेज दिया जिन्होंने मेरी जान बचाई और इन्ही की सलाह से मैंने प्रकट होने के बजाय छिपे रहता ही पसन्द किया। आज इनका हुक्म पाकर मुझे प्रकट होना पड़ा।"

राणा नगेन्द्रनरसिंह ने यह सुन कहा, 'शुरू शुरू मे गोपाल शंकर फ्रांसीसियो का साथ दे रहे थे इसी से मुझे इस मौके पर इन्हे गायब कर देने की सूझी, क्योकि वह इन्हें अच्छी तरह पहिचानते थे। मेरं सलाह से ये विदेश चले गये और वही रहकर काम करते रहे। त्रि-कंटक का जो सदस्य बाहर रह कर पन्नों और अन्य रत्नो को वेचने का काम करता था वह यही महाशय थे।"

महाराज मंगर-सि ने ताज्जुब से पूछा, "तो अब तक त्रि-कंटक के काले पर्दे में जो तीन आदमियो को हम लोग देखा करते थे उनमे वह तीसरा व्यक्ति कौन था?" कुछ दूर पर बैठे हुए इकराम की तरफ उँगली उठा कर राणा बोले, "वे ये हजरत इकराम थे। इनकी गम्भीर प्रकृति और अद्‌भुत बुद्धि देख रघुनाथ और गुरुबक्शसिंह ने इन्हें अपने मे शामिल कर लिया था।

सब की निगाहे इकराम की तरफ घूम गई जिसने अपना सिर नीचा कर लिया, मगर रघुनाथ और गुरुबक्शसिंह तुरत बोल उठे, "और हम बहुत प्रसन्नता से कहते है कि इनकी चतुर बुद्धि और सुलझी हुई अक्ल ने कई मौकों पर हम लोगो की बडी मदद की।"

राणा की तरफ देख रघुनाथ ने फिर कहा, "मेरी प्रार्थना है सरदार कि इन इकराम खाँ को आप हम लोगों मे मिलाकर हमारा बहुत पहिले का घाटा पूरा कर हमे फिर से 'भयानक-चार' बन जाने दीजिए?" मगर सिर हिला कर राणा बोले, "नही, जमाने ने बहुत तेजी से पलटा खाया है और पूर्व अपने पैरों पर खड़ा होकर पश्चिम से अपना बदला लेने को उद्यत हो गया है। अब न 'भयानक-चार' की जरूरत है, न 'त्रि-कंटक'

की। आप लोगों ने बहुत दिन युद्ध किया, अब कुछ दिन शान्ति से रहिए।"

प्रिय पाठक महाशय, अब हमें भी सिवाय इसके और कुछ नही कहना है कि उचित समय पर तारा चम्पा राज्य के राज-सिंहासन पर वैठी और इसके कुछ दिन बाद अजित से उसने विवाह कर लिया। अब एक तरह पर अजित ही चम्पा देश का राजा है।

॥ इति ॥

७वां संस्करण ११०० प्रति [१९७६

मुद्रक—लहरी प्रेस वाराणसी।